सत्र-04 09 जनवरी, 2026

खण्ड- 08 .... शुक्रवार, ...

अंक- 22 19 पौष,1947(शक्)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

आठवीं विधान सभा

चौथा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-08 सत्र-04 में अंक 18 से 22 तक सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विभान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-54

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

रंजीत सिंह

सचिव

RANJEET SINGH

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-4 शुक्रवार, 09 जनवरी, 2026/19 पौष,1947(शक्)अंक-22

दिल्ली विधान सभा

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	4-5
2.	सदन में अव्यवस्था	6-7
3.	विशेष उल्लेख(नियम-280)	8-18
4.	माननीय मंत्री का वक्तव्य (नियम 270)	19-25
5.	अनुपूरक अनुदान मांगें(2025-26)	26-34
6.	दिल्ली विनियोजन(सं-1)विधेयक,2026(2026 का विधेयक संख्या-4)	35
7.	माननीय उपराज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा	36-93
8.	समिति के प्रतिवेदन पर सहमति	94-101
9.	विधेयक का प्रस्तुतिकरण,विचार एवं पारण	102-117
10.	माननीय मंत्री का वक्तव्य(नियम-270)	118-214

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-4 शुक्रवार, 09 जनवरी, 2026/19 पौष,1947(शक्)अंक-22

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

क्रं.सं.	सदस्य का नाम	क्रं.सं.	सदस्य का नाम
1.	श्री अहिर दीपक चौधरी	36.	श्री प्रद्युम्न सिंह राजपूत
2.	श्री आले मोहम्मद इकबाल	37.	श्री प्रवेश साहिब सिंह
3.	श्री अभय कुमार वर्मा	38.	श्री पवन शर्मा
4.	डॉ. अजय दत्त	39.	श्रीमती पूनम शर्मा
5.	श्री अजय कुमार महावर	40.	श्री प्रवेश रत्न
6.	श्री अनिल झा	41.	श्री प्रेम चौहान
7.	श्री अनिल कुमार शर्मा	42.	श्री पुनरदीप सिंह साहनी
8.	श्री अरविन्दर सिंह लवली	43.	श्री राज करन खत्री
9.	श्री आशीष सूद	44.	श्री राज कुमार भाटिया
10.	श्री अशोक गोयल	45.	श्री राज कुमार चौहान
11.	श्री चन्दन कुमार चौधरी	46.	श्री राम सिंह नेताजी
12.	चौधरी जुबैर अहमद	47.	श्री रवि कांत
13.	डॉ. अनिल गोयल	48.	श्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह
14.	श्री गजेन्द्र दराल	49.	श्री रविन्दर सिंह नेगी
15.	श्री गजेन्द्र सिंह यादव	50.	श्रीमती रेखा गुप्ता

16.	श्री गोपाल राय	51.	श्री सही राम
17.	श्री हरीश खुराना	52.	श्री संदीप सहरावत
18.	श्री इमरान हुसैन	53.	श्री संजय गोयल
19.	श्री जरनैल सिंह	54.	श्री संजीव झा
20.	श्री जितेन्द्र महाजन	55.	श्री सतीश उपाध्याय
21.	श्री कैलाश गहलोत	56.	श्री श्याम शर्मा
22.	श्री कैलाश गंगवाल	57.	श्री सोम दत्त
23.	श्री करनैल सिंह	58.	श्री सुरेन्द्र कुमार
24.	श्री करतार सिंह तंवर	59.	श्री सूर्य प्रकाश खत्री
25.	श्री कुलदीप कुमार	60.	श्री तरविन्दर सिंह मारवाह
26.	श्री कुलदीप सोलंकी	61.	श्री तिलक राम गुप्ता
27.	श्री कुलवन्त राणा	62.	श्री उमंग बजाज
28.	श्री मनजिंदर सिंह सिरसा	63.	श्री वीर सिंह धिंगान
29.	श्री मनोज कुमार शौकीन	64.	श्री विजेन्द्र गुप्ता
30.	श्री मोहन सिंह बिष्ट	65.	श्री वीरेन्द्र सिंह कादियान
31.	श्री मुकेश कुमार अहलावत		
32.	श्रीमती नीलम पहलवान		
33.	श्री नीरज बैसोया		
34.	श्री ओम प्रकाश शर्मा		
35.	श्री पंकज कुमार सिंह		

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

आठवीं विधान सभा, सत्र-4 शुक्रवार, 09 जनवरी, 2026 /19 पौष 1947(शक)

सदन पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेंद्र गुप्ता) पीठासीन हुये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मेरा सभी सदस्यों से अनुरोध है कि आज जो इस सत्र का एक अतिरिक्त दिन हमने बढ़ाया है, आप सबसे अनुरोध रहेगा की शांति बनाए रखें और कार्यवाही को आगे बढ़ने दें बहुत सारे, आज पोलुशन पर डिस्कशन होना है, आज आदरणीय मंत्री श्री प्रवेश साहिब सिंह जी का पानी की सप्लाई पर स्टेटमेंट होना है, आज रिवाइज एस्टीमेट भी सदन के समक्ष प्रस्तावित हैं, 280 पर मैं चाहूंगा सभी सदस्य अपनी बात कह सके उसके लिए भी, तो इसलिए ऑलरेडी सदन के दो दिन हमारे कार्यवाही के नहीं हो पाए लेकिन आज हम विस्तार से सारी चीजों को करेंगे। अब 280 शुरू करेंगे श्री सतीश उपाध्याय जी।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : आप बैठ जाइए अभी, अभी एक मिनट शुरू होने दें, मैंने बोला है अभी रूको आप, माननीय सदस्य श्री सतीश उपाध्याय। अभी मैं कराऊंगा आपसे बात।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अगर आप देखिए मैं आपको वॉर्निंग दे रहा हूं आपको पहले ही, आपको मैंने 3 दिन के लिए किया था आज आप फिर गत्ते लेकर आएं हैं, अगर आप गत्ते लेकर आएंगे, आप गत्ते लेकर आएंगे मैं आपको फिर शेष सत्र के लिए, आप बैठ जाइए। नहीं आप, मार्शलस संजीव झा जी को, रिमेंडर सैशन के लिए मार्शल आउट किया जाता है, बाकी सत्र के लिए आपको आउट किया जाता है। ऐसे नहीं, सतीश जी आप शुरू करिए। शुरू करिए।

श्री संजीव झा : ये गुंडागर्दी से सदन नहीं चलती है....

...व्यवधान...

(माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार मार्शल्स द्वारा श्री संजीव झा को सदन से बाहर किया गया।)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है, शुरू करिए ।

...व्यवधान...

श्री सतीश उपाध्याय: आदरणीय अध्यक्ष जी

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए, आप बैठिए। अभय जी। शुरू करिए। शुरू करिए आप।

श्री सतीश उपाध्याय: अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी ये मेरा।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: अध्यक्ष जी एक मिनट के लिए बोलूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मैं किसी को इजाजत नहीं दूंगा सिर्फ माननीय सदस्य सतीश उपाध्याय जी बोलेंगे, कार्यवाही को शुरू करने दीजिए। करिए।

श्री सतीश उपाध्याय: अध्यक्ष जी मेरा कहना है कि सबसे पहले तो।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: देखिए अगर तख्तियाँ लेकर आएं हैं तो मैं बिल्कुल अलाउ नहीं करूंगा और मैं तुरंत सदन से उसको निष्कासित करूंगा। बैठिए, शुरू करिए।

श्री सतीश उपाध्याय: अध्यक्ष जी सबसे पहले।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आपकी डिमांड पर मैंने विडियो फॉरेंसिक साइंस लैब को भेज दिया है, आपने ही मुझे आकर के बोला था कमरे में, अध्यक्ष के कक्ष में आकर स्वंय उपनेता ने मुझसे ये मांग की थी मैंने उसको पूरा कर दिया। अब आप शुरू करिए।

श्री सतीश उपाध्याय: अध्यक्ष जी सबसे पहले तो, सबसे पहले।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : आप बैठ जाइऐ अभी। आप कार्यवाही आगे बढ़ने दीजिए। शुरू करिए।

श्री सतीश उपाध्याय: अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिये-बैठिये।

श्री सतीश उपाध्याय: अध्यक्ष जी, सबसे पहले तो मैं अपनी आपत्ति दर्ज कराना चाहता हूं।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए, बैठिए आप। शुरू करिये।

श्री सतीश उपाध्याय: मैं सबसे पहले तो अपनी आपत्ति दर्ज कराना चाहता हूं जिस प्रकार से सदन प्रारम्भ होते ही संजीव झा जी ने ये कहा कि आप गुंडागर्दी से सदन चला रहे हैं। इस तरह की भाषाओं का प्रयोग और अभी-भी इसमें जो टिप्पणी इन्होंने की कि बिल्कुल ठीक कहा, मुझे लगता है कि अध्यक्ष जी इस तरह की चीजों पर आपको संज्ञान लेना चाहिए और सदस्यों को कोई अधिकार नहीं है पीठासीन अधिकारी के साथ...,

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए, देखिए प्रदूषण के मामले पर आज चर्चा मैं करवा के रहूंगा। इसलिए विपक्ष से मेरा अनुरोध है शांति बनाए रखें सभी सदस्य शांति बनाए रखें। आज प्रदूषण जैसे मुद्दे पर भी, महत्वपूर्ण पर यहां विस्तार से चर्चा होने वाली है और आप सबको उस में भाग लेना है। शुरू करिए।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए, बैठिए, बैठिए, बैठिए, बैठिए। शुरू करिए आप।

...व्यवधान...

विशेष उल्लेख (नियम-280)

श्री सतीश उपाध्याय: मैं 280 के अंतर्गत मेरे क्षेत्र में विशेषकर के पिछली सरकार के समय से और आज तक ये आदरणीय जल मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहता हूं मेरे यहां एक बी-3 ब्लॉक है, मैट्रो कोई बनी थी जिसके कारण से वहां पिछले दो-ढ़ाई साल से कंटेमिनेटिड वॉटर आ रहा है, ये इस सरकार का नहीं है, लेकिन उस समय से लेके आज तक उसका कोई निदान हुआ नहीं है। ये हमारे लिए गम्भीर समस्या है और इस तरह की चीजें हमारे यहां अधचीनी गांव है, अर्जुन नगर है, मस्जिद मोठ है, बेगमपुर है, खिड़की विलेज है, हौजरानी है। यहां पर इस तरह के कंटेमिनेशन की प्रोब्लम आज की नहीं है। इसमें मेरा आपसे अनुरोध है कि अधिकारियों को आप निर्देशित करें कि इनके कारणों को चिंहित करना चाहिए कि इनके कारण क्या हैं, किस कारण से इस तरीके से हो रहा है। मेरा मानना है कि पिछले 10 वर्षों में लगभग 40-50 वर्ष पुरानी जो सीवर लाइन है और 10 वर्षों में पानी की लाइन की लाइफ पूरी हो जाती है लेकिन वो 25-30 सालों से चेंज नहीं

हुई है, उसके कारण से घरेलू कनैक्शनों में पानी मिलकर के आता है इसपर संज्ञान लिया जाना चाहिए, ये बहुत बड़ी गम्भीर समस्या है जिससे लोगों को साफ पानी देने में हम सफल हो पाएं। मेरी विधानसभा में दो कैंप भी हैं जिसमें एक इंद्रा कैंप है और उसमें एक बाल्मिकी कैंप है। इंद्रा कैंप में हर घर के अंदर नल लगा हुआ है, लेकिन बाल्मिकी कैंप में 4 घर के ऊपर, तीन घरों के ऊपर एक नल है आप अधिकारियों को निर्देशित करें कि हर घर जो प्रधानमंत्री जी की योजना है उस योजना को साकार करते हुए हर घर के अंदर नल लगना चाहिए और हर झुग्गी में पानी मिलना चाहिए, ये उनके साथ न्याय होना चाहिए। उसके बाद अंत में मैं ये कहना चाहता हूं कि मेरी विधानसभा में पानी का जो डिस्ट्रिब्यूशन है वो डिस्ट्रिब्यूशन तर्कसंगत नहीं है। कहीं पानी 4 घंटे मिल जाता है, कहीं पानी दो घंटे मिल जाता है और कहीं पानी कम प्रेशर से केवल आधा घंटे ही आता है और कहीं पर 15 मिनट भी आता है। तो इसलिए वो सुबह-शाम मिलाकर रात को मिलाकर के है। इसलिए,.... हां वो सारा मैं इसलिए, 4 घंटे ऐसे नहीं है, मंत्री जी ऐसे नहीं है वो, वो कभी आधा घंटे आ गया, कभी सुबह आ गया, कभी दिन में आ गया। तो मेरा केवल इतना कहना है कि पानी का न्यायसंगत बंटवारा (डिस्ट्रीब्यूशन) प्रोपर्ली होना चाहिए अधिकारियों को आप पुरानी लाइनों को बदलने के लिए निर्देषित करें और खासकर के पीने के पानी की लाइन जिनकी लाइफ 10 साल से ऊपर हो चुकी है उनको तुरंत बदलवाना चाहिए ये पिछली सरकार की करनी थी जिसका खामियाजा आज हम भुगत रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री हरीश खुराना जी।

श्री हरीश खुराना: धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय पर्यावरण मंत्री का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मेरी विधानसभा मोतीनगर के अंदर।

श्री अजय दत्त: स्पीकर साहब फर्जी वीडियो जा रही है फर्जी वीडियो बनाते हैं

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैं आपको वार्निंग दे रहा हूं आप लगातार सदन को, बैठ जाइये, बैठ जाइये। मार्शल्स इनको बाहर ले जाइये। मार्शल्स कुलदीप कुमार को बाहर ले जाइये रिमंडर सैशन के लिए।

...व्यवधान...

श्री हरीश खुराना: पोल्यूशन से क्यों डर रहे हो।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बाहर ले जाइए। मार्शल्स जरनैल सिंह को बाहर ले जाइए, जरनैल सिंह को रिमंडर सैशन के लिए बाहर ले जाइए। चलिए, आगे शुरू करिए। हरीश खुराना जी बोलिए शुरू करिए आप।

श्री हरीश खुरानाः मैं आपका ध्यान अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः हरीश खुराना जी। दोनों को रिमंडर सैशन के लिए बाहर, चलिए,

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए आप, बैठिए, बैठिए, हरीश खुराना जी शुरू करिए आप।

(माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार मार्शल्स द्वारा श्री कुलदीप कुमार और श्री जरनैल सिंह को सदन से बाहर किया गया।)

श्री हरीश खुरानाः अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से, माननीय पर्यावरण मंत्री जी का ध्यान मेरे क्षेत्र में जवाहर कैंप और चूना भट्ठी के अंदर चल रहे अवैध मार्बल कटिंग का जो व्यवसाय चल रहा है उसकी तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले कई वर्षों से जवाहर कैम्प और चूना भट्टी की सेवा बस्ती के अंदर अवैध रूप से मार्बल कटिंग का धंधा चल रहा है और जिसकी वजह से वहां पर गंभीर पर्यावरण की दृष्टि से बहुत तीखे, कहते हैं ना कि, रिजल्ट आ रहे हैं। बच्चों को, महिलाओं को उनकी वजह से कण-कण उनकी सांसों में जा रही हैं। मैं आपके माध्यम से पर्यावरण मंत्री जी को निवेदन करूंगा कि तुरंत से तुरंत वहां पर कार्रवाई की जाए और जो बिल्डिंगें वहां चल रही हैं, जो घर वहां पे अवैध रूप से मार्बल कटिंग के रूप में वहां चल रहे हैं उनको सील भी किया जाए और जिनके संरक्षण में ये चल रहे हैं उन पर तुरंत कार्रवाई होनी चाहिए। मैं आपके माध्यम से पर्यावरण मंत्री जी से ये गुजारिश करूंगा कि ये एक्शन तुरंत होना चाहिए ताकि उस क्षेत्र के अंदर पर्यावरण से संबंधित जो समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं वो दूर हो सकें। धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः देखिये मैं सभी सदस्यों से ये अनुरोध करूंगा आज पॉल्यूशन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा होनी है और विपक्ष से विशेष रूप से अनुरोध है कि वो पॉल्यूशन पर चर्चा होने दे, दिल्ली इस सदन से अपेक्षा करती है कि हम विस्तार से इस पूरी समस्या के बारे में यहां से चर्चा हो और सदस्य उसमें भाग लें और उस पर मुख्यमंत्री जी भी पूरी विस्तार से बातचीत कहें। तो इतना महत्वपूर्ण विषय है। सदन की कार्यवाही पहले ही एक दिन हमें बढ़ानी

पड़ी है इसलिए क्योंकि सदन चल नहीं पाया। आज भी फिर वही स्थिति अगर विपक्ष यहां पर करेगा या कोई भी सदस्य करेगा तो उसको टॉलरेट नहीं किया जाएगा।

श्री अभय कुमार वर्मा, माननीय मुख्य सचेतक: अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य- कुलदीप कुमार डेस्क पर चढ़ रहे थे इस पर आप संज्ञान लीजिए ना।

श्री श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: वो ले लिया, वो रिमेंडर ऑफ द सेशन के लिए जो है वो सभी को यहां से, दोनों को निष्कासित कर दिया गया है। आगे चलिए। माननीय सदस्य- श्री उमंग बजाज जी।

श्री उमंग बजाज: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से दिल्ली के खेल मंत्री जी व शिक्षा मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। अध्यक्ष जी, दिल्ली की आबादी में से लगभग 40 परसेंट आबादी युवा शक्ति की है और ये वो युवा शक्ति है जो हमारे देश का भविष्य भी है परंतु जब इनके खेलने के या फिजिकल एक्टिविटिस के स्थान की बात आती है तो इनके लिए न के बराबर स्थान हैं। ज्यादातर जितने भी पार्क्स हैं ऑर्नामेंटल घोषित हो चुके हैं, जितने खाली ग्राउंड्स थे वो जिन विभाग के हैं उनके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे हैं। तो आपके माध्यम से मेरा खेल मंत्री जी और शिक्षा मंत्री जी से ये निवेदन है कि दिल्ली सरकार के जितने भी स्कूल हैं जहां पर प्ले ग्राउंड की सुविधा है तो स्कूल टाइमिंग के बाद मेरे इन भाई बहनों को वहां पर खेलने की, फिजिकल एक्टिविटी की अनुमति दी जाए। इसके लिए पॉलिसी बनाई जाए या फिर जो जोनल डीडीस हैं उनके द्वारा आदेश किये जायें क्योंकि ये बहुत प्रभावशाली युवा पीढ़ी है तो इनको इस चीज का लाभ मिलना चाहिए। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य- श्री मनोज कुमार शौकीन।

श्री मनोज कुमार शौकीन: आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए धन्यवाद करता हूं। अध्यक्ष जी, पिछले लगभग 11 महीने से प्रत्येक स्कूल में गए हम और जो सरकार विश्व स्तरीय स्कूल बनाने के दावे कर रही थी और जिस सरकार ने हजारों करोड़ के घोटाले किये, जब मैंने जाकर के बिल्डिंगों को देखा तो उसका हाल ये निकला। (माननीय सदस्य द्वारा फोटो दिखाए गए।) ये टॉयलेट ब्लॉक के बाहर बच्चे नीचे से जा रहे हैं, जर्जर हालत में बिल्डिंग है और टॉयलेट ब्लॉक जो है वो खतरनाक पोजीशन में है, कभी भी वहां बड़े से बड़ा हादसा हो सकता है। मैं कोड भी बताउंगा स्कूल का, सुल्तानपुरी रोड पर है। दूसरा ज्वालापुरी अमलवास स्कूल है उसका एक फ्लोर तो बंद ही कर दिया और बाहर से देखोगे तो चमचमाता हुआ है, अच्छा गेट

लगा हुआ है और भवन की जगह पर केवल खंडहर है। अनेकों पिक्चर ऐसी, विडियों मैंने माननीय मंत्री जी को, शिक्षा मंत्री जी को भी ये भेजी। मैं ये कहना चाहता हूं माननीय अध्यक्ष जी आपके माध्यम से 11 महीने निकल चुके हैं और इसमें अभी हमें कार्रवाई करने की जरूरत है। ये देखिये अध्यक्ष जी कितनी खतरनाक पोज़ीशन है, कभी भी 500, 700 बच्चे मर सकते हैं। मैं आपको ये टेबल भी करूँगा। मैंने 280 के तहत ये दिया भी था। मैं ये चाहता हूँ कि पीडब्ल्यूडी को भी हमने बहुत बार लिखा है और क्योंकि देखरेख पीडब्ल्यूडी करती है सभी स्कूलों की। और माननीय मंत्री जी के माध्यम से, माननीय मुख्यमंत्री जी को भी और शिक्षा मंत्री जी को भी ये कहना चाहता हूँ कि बगैर किसी डिले किये ऐसे स्कूल जिनकी बिल्डिंग जर्जर हालत में हैं उनको तुरंत रिपेयर किया जाए। और एक स्कूल तो इनमें से सीएम-श्री बनाया हमने, अगर मान लो वो सीएम-श्री स्कूल जो हमने बनाया है और उसको ठीक से देखरेख नहीं की गई और कोई हादसा हो गया तो किस प्रकार से सरकार के ऊपर सवाल उठेंगे। जो पिछलों ने जो गड्ढे खोदे हैं उसको भरने में हम ज़्यादा समय ना लगाएं और इसके ऊपर तुरंत जो है पीडब्ल्यूडी कार्रवाई करे, ये मेरी आप के माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन है। धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य, श्री अजय कुमार महावर जी।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद आदरणीय अध्यक्ष जी आपने 280 पे बोलने का मौका दिया। मैं लोक निर्माण विभाग मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूँ और उनसे पूछना चाहता हूँ, घोंडा विधानसभा का एक महत्वपूर्ण स्थान है, चौक है जो करावल नगर विधानसभा से भी एडजॉइनिंग है, खजूरी चौक, हमारी जनता की, पूरे क्षेत्र की जनता की, पूरे नॉर्थ ईस्ट डिस्ट्रिक्ट की जनता की ये मांग है कि इस चौराहे का नाम भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री, राष्ट्र नायक, कवि हृदय, भारतरत्न, आदरणीय श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम पर इस चौक का नाम अटल चौक रखा जाए और उस चौक पर चूंकि पर्याप्त स्थान है गोल चक्कर पर, अटल जी की एक भव्य प्रतिमा उस पर लगाई जाए। जो अटल जी राष्ट्रसेवा, सुशासन, लोकतांत्रिक मूल्य, उसकी विरासत को सम्मान देते हुए और जिस प्रकार से उन्होंने राजनीति में राजनीतिक मूल्यों का जीवन भर पालन किया तो हम चाहते हैं, हमारे क्षेत्र की जनता चाहती है कि इस चौक का नाम अटल चौक किया जाए। मेरा सरकार से निवेदन है संबंधित विभाग से समन्वय करके नाम परिवर्तन कर अटल जी की प्रतिमा की औपचारिक प्रक्रिया प्रारंभ की जाए और समयबद्ध कार्ययोजना प्रस्तुत की जाए ताकि हमारी घोंडा

विधानसभा और नॉर्थ ईस्ट डिस्ट्रिक्ट के सभी जनता की भावनाओं का सम्मान हो सके और यह हमारे क्षेत्र की एक प्रेरक पहचान बन सके। धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, श्री संजय गोयल जी।

श्री संजय गोयल: माननीय अध्यक्ष जी, आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मैं अपनी विधानसभा- शाहदरा के एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गंभीर जनहित के जुड़े विषय की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ और माननीय मंत्री-लोक निर्माण विभाग जी के समक्ष रखना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ बड़ा इंडस्ट्रियल एरिया हैं, फ्रेंड्स कॉलोनी इंडस्ट्रियल एरिया और झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया और इसमें रोड नम्बर 58 और रोड नंबर जो 64 है, मेट्रो फ्लाइओवर और रोड अंडर ब्रिज के नीचे से जा रही है, उसके चौड़ीकरण और विकास हेतु प्रस्तावित थी। और 2005 से लेकर 2010 तक का ये केस चला, जो संजय गोयल वर्सिस यूनियन ऑफ इंडिया जो कि मैंने स्वयं माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष रखा था और उस समय बेंच- माननीय डबल बेंच थी, वो स्वयं आए और आकर उन्होंने देखा और देखने के बाद में कहा कि इस रोड को पूरा किया जाए और इकट्ठा एक ही साथ किया जाए। लेकिन वो रोड को उस समय की राजनीतिक, उस समय कांग्रेस सरकार थी, उसके बाद में आम आदमी पार्टी सरकार आयी लेकिन कुछ लोगों को बेनिफिट पहुंचाने के लिए मात्र एक हिस्सा जहाँ फैक्ट्रियों को ध्वस्त करके चौड़ी रोड कर दी गई, चलिए ठीक है, विकास का कार्य है क्योंकि यह रोड उस समय कॉमनवेल्थ गेम्स थे और कहा गया कि ये स्वामी दयानंद हॉस्पिटल, जीटीबी हॉस्पिटल, इहबास हॉस्पिटल, राजीव गाँधी हॉस्पिटल को जोड़ती है, लेकिन एक ऐसा बॉटलनेक है जो 27 फुट मात्र, 150 फुट चौड़ी रोड आगे आकर 27 फुट पर रह जाती है और 27 फुट चौड़ी रोड से इतना जाम लगा रहता है सुबह, दोपहर, शाम को, क्योंकि वहां इंडस्ट्रियल एरिया होने बावजूद आज तक वो लिंक रोड नहीं बनी। 2010 में जबकि ये केस माननीय उच्चतम न्यायालय में भी गया, वहां भी पीडब्लूडी के उस समय विभाग ने ये एफिडेविट दिया कि हम इसको पूरा करेंगे लेकिन उस कोर्ट की कंटेंप्ट ऑफ कोर्ट के लिए भी हमने अप्लाइ किया लेकिन आज तक वो रोड चौड़ी नहीं हुई जिसकी वजह से वहाँ कई बार एंबुलेंस हैं वो फंस जाती हैं, प्लस जाम रहता है। मैं मान्य लोक निर्माण विभाग के मंत्री जी से आग्रह करूँगा, निवेदन करूँगा कि इस लिंक रोड को जो कि मात्र 200 मीटर की वो लिंक रोड है जो 150 फुट होनी है उसको पूरा किया जाए जिससे की वहाँ का रोड का जो ट्रैफिक है वो आवागमन सुचारु रूप से हो सके। आगे आने वाले समय में कोई एंबुलेंस फंसी होने की वजह से सही समय पर मरीज को हॉस्पिटल ले जाया जा सके

और साथ में मैं ये चाहूंगा कि जो उस समय फैक्ट्री ध्वस्त हुई थी कहा गया था कि हम प्लाट देंगे उन फैक्ट्री वालों को और उनको प्लाट भी इंडस्ट्रियल प्लाट दिये जाएं जिससे और क्योंकि अभी तक ऐसे कई फैक्ट्री ओनर्स हैं जिनको अभी तक मुआवजा नहीं मिला है। मात्र 2000 रुपये मीटर का मुआवजा मिला है जबकि वहां 3 लाख रुपये मीटर के रेट हैं और ये मैं चाहूंगा कि वो मुआवजा भी तुरंत वो दिया जाए बढ़ाकर और साथ में प्लाट भी दिये जाएं, आपका धन्यवाद ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब माननीय सदस्य श्री संदीप सहरावत जी।

श्री संदीप सहरावत: धन्यवाद आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान अपनी विधानसभा मटियाला की तरफ देना चाहता हूं जिसमें अनाथराइज कालोनियां और आथोराइज कालोनियां हैं। तो उसमें बहुत सारे एरिया हैं जैसे श्याम विहार फेज-1,2, कुतुब विहार, नंगली विहार, अर्जुन पार्क, भवानी नगर, राणा जी इन्कलेव और ऐसी कालोनियां जिन कालोनियों में एक गली, दो गली जो छूटी हुई हैं यूडी नक्शे में नहीं हैं क्योंकि हम वहां पर गलियां बनाने जाते हैं, नाली बनाने जाते हैं, पानी की लाइन डालने जाते हैं तो सीधा हमें सिर्फ क्वेश्चन मार्क यही आ जाती है कि ये गली यूडी नक्शे में नहीं है। तो मेरा आपसे निवेदन है कि इन गलियों को दोबारा से क्योंकि पहले जो ड्रोन सर्वे हुआ था उसमें बहुत सारी कमियां रही थी क्योंकि दिल्ली सरकार किसी और के पास थी कि और उन्होंने अपने माध्यम से वहां पर दोनों सरकारों का समन्वय नहीं बैठा इस वजह से वे गलियां और वे कालोनियां छूटी हुई हैं तो मेरा आपसे ये निवेदन है क्योंकि उन गलियों को जोड़ा जाए क्योंकि फिलहाल अभी कुछ दिन पहले एक श्याम विहार फेज-2 में हमारी डीडीए द्वारा एक डेमोलिशन हुई और आप देखेंगे कि वहां पर पिछली सरकार ने वहां पर रोड बनाए, नालियां बनाईं, सड़के बनाई, बिजली भी दी और तब भी वहां पर हुई क्योंकि वहां पर वो नक्शे में नहीं थी। तो मेरा निवेदन है कि हमारी विधानसभा में जो गलियां छूटी हुई हैं क्योंकि उन लोगों का अधिकार है जो वहां पर मूलभूत सुविधाएं उनको मिलनी चाहिए उसके लिए इन गलियों को और इनको चैक किया जाए, धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्रीमती नीलम पहलवान जी।

श्रीमती नीलम पहलवान: माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी को अपनी नजफगढ़ विधानसभा क्षेत्र के बिजली विभाग से संबंधित समस्याओं से अवगत करवाना चाहूंगी। बिजली जो कि आज के समय में मूलभूत आवश्यकता बन चुकी है। नये मीटर के लिए अव्यवहारिक शर्तें हैं जिनमें नये रसोईघर बनाने की अनिवार्यता गांव में 500 गज से अधिक के घरों पर 25

गज भूमि ट्रांसफार्मर हेतु मांगना अव्यवहारिक एवं अनुचित है। कृपया इस नियम में जल्दी बदलाव किया जाए। मेरी विधानसभा में लगभग 30-40 अनाथराइज कालोनियों में बिजली की सुविधा बिलकुल भी नहीं है वहां जल्द से जल्द बिजली की सुविधा प्रदान की जाए। जिन गांवों में लाल डोरे के बाहर हो चुकी बसावट को बीएसईएस द्वारा लैंड पूलिंग क्षेत्र बताकर मीटर लगाने की अनुमति नहीं दी जा रही जिससे नागरिक बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। अधिकांश मीटर आवेदन यह कहकर निरस्त किये जा रहे हैं कि वे लैंड पूलिंग एरिया में आते हैं। कृपया या तो डीडीए से एनओसी दिलाई जाए या बीएसईएस को मीटर लगाने की स्पष्ट अनुमति प्रदान की जाए क्योंकि जनता इस समस्या से लंबे समय से परेशान है तथा गांव के लाल डोरे का विस्तार किया जाए ताकि इस समस्या से भी लोगों को निजात मिल सके। मेरी विधानसभा में बहुत सारी कालोनियां व गांवों में ट्रांसफार्मर बहुत नीचे स्थित है जिससे दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। कृपया नये पोल लगाकर उनकी उंचाईयों को बढ़ाया जाए। समस्त कालोनियों और गावों में लगे लोहे के विद्युत के पोल जर्जर अवस्था में हैं जिन्हें जल्द से जल्द बदलवाया जाए और उनकी जगह सीमेंटेड पोल किये जाएं। बहुत सारी कालोनियों में नालियों के अंदर बिजली के पोल बहुत जगह स्थित हैं जिसके कारण कालोनियों में जलभराव की समस्या उत्पन्न होती है और बीएसईएस द्वारा ये पोल शिफ्ट नहीं किये जा रहे है। इन पोलों को भी जल्दी से जल्दी उचित स्थान पर शिफ्ट किया जाए। किसान अपने खेत के लिए बिजली का कनेक्शन बीएसईएस आफिस जाकर अप्लाई करते हैं तो उन्हें लगभग 6 महीने घुमाया जाता है उसके बावजूद भी बिजली का कनेक्शन नहीं दिया जाता। कालोनियों में पहले हाईटेंशन लाइन एचटी लाइन के पास जो मीटर कनेक्शन अंडरग्राउंड दिये जाते थे उन पर भी रोक लगा दी गई है वे दोबारा से चालू करवाए जाएं। इस समस्या से जल्दी लोगों को निजात दिलाई जाए। माननीय जी, पिछले 10 वर्षों के दौरान आम आदमी पार्टी की सरकार भ्रष्टाचार में इतनी अधिक उलझी रही कि जनता की समस्याओं, आवश्यकता और हितों पर ध्यान ही नहीं दिया जिससे ये छोटी-छोटी समस्याएं बड़ी विकराल रूप लेकर विधानसभा को परेशान करती हैं। मैं आशा करती हूं कि माननीय मंत्री जी उपरोक्त समस्याओं पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए शीघ्र सकारात्मक कार्रवाई करेंगे धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: जी। माननीय सदस्य एवं डिप्टी स्पीकर श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्ट : आदरणीय अध्यक्ष जी, मुझे आपने रूल 280 के तहत अपनी बात रखने का मौका दिया इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, करावल नगर विधानसभा व मुस्तफाबाद विधानसभा दोनों के लिए भजनपुरा से लेकर के करावल नगर, करावल नगर से लेकर के शिव विहार तिराहा और शिव विहार तिराहा से लेकर के ब्रजपुरी तक एक रोड जाती है और जिस रोड को लाइफ लाइन रोड के नाम से जाना जाता है और दोनों विधानसभाओं के बीचोंबीच में है। अध्यक्ष महोदय, इस रोड की स्थिति को देखते हुए वर्ष 2008 के अंदर मेरे द्वारा इस रोड का चौड़ीकरण का कार्य किया गया था जो कि दयालपुर तक ये रोड चौड़ी की गई थी। अध्यक्ष महोदय, ये दयालपुर से लेकर के शिव विहार तिराहा बीच में 40 से लेकर के 45 फीट की रोड है और दोनों विधानसभाओं की लाइफ लाइन रोड होने की वजह से यहां अधिकतर लोग यहां से पलायन होकर के अन्य जगहों पर जा रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, यही नहीं यहां पर शराब के ठेके भी खुले हुए हैं दोनों तरफ और यदि हम शाम की स्थिति को देखते हैं तो यहां जाम से लोग अपने घरों को नहीं जा सकते हैं। मेरा आपसे ये करबद्ध प्रार्थना है आपके माध्यम से मंत्री जी से की दयालपुर से लेकर के शिव विहार तिराहा का जो शेष रोड रह गया था अब सारी परिस्थितियां अनुकूल हैं, लोग काम करवाना चाहते हैं जल्दी से जल्दी इस रोड को पूरा किया जाए। यही नहीं अध्यक्ष महोदय, इस रोड का डिमार्केशन वगैरह सारा हो गया है और डिमार्केशन के बाद इस रोड को तोड़ा जाना है। मेरा आपसे एक निवेदन है कि इस रोड को दयालपुर से शिव विहार तिराहे तक जब डिमार्केशन पूरा हो चुका है। दोनों साइडों में लोगों ने अधिकतर लोगों ने अपने मकान तोड़ दिये हैं और मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से चाहता हूं कि तुरंत इस पर कार्रवाई की जाए, इस रोड को चौड़ा किया जाए जिससे लोगों का पलायन होने से बच सके। आपने मुझे बोलने का मौका दिया आपका आभार।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री जितेन्द्र महाजन। (अनुपस्थित)। अब मैं कुछ समय और 280 पर माननीय सदस्य श्री गजेन्द्र दराल।

श्री गजेन्द्र दराल: आदरणीय अध्यक्ष जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद आपने 280 के तहत मुझे बोलने का मौका दिया। मैं अपनी मुंडका विधानसभा के साथ-साथ पूरी दिल्ली के अंदर जो हमारे माननीय मंत्री जी के द्वारा और माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा जो स्पोर्ट्स के खिलाड़ियों के लिए बहुत अच्छी एक राशि जो दी गई उसके लिए भी धन्यवाद करता हूं लेकिन साथ में मैं दिल्ली के अंदर अर्जुन अवार्डी, द्रोणाचार्य अवार्डी और ध्यानचंद अवार्डी लगभग हमारी दिल्ली के अंदर 40 से

50 ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने दिल्ली के अंदर हमारा मान और सम्मान बढ़ाया है। इन लोगों का यह कहना है कि अन्य स्टेट के अंदर सभी खिलाड़ियों को अवार्डियों को एक पेंशन योजना के तहत कुछ सम्मान राशि दी जाती है तो उसी सम्मान राशि के लिए मैं अपने खेल मंत्री से आवेदन करता हूं कि वो इस पर संज्ञान लेकर और इन खिलाड़ियों के मान-सम्मान को लौटाए, धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य डॉक्टर अनिल गोयल जी।

डॉ. अनिल गोयल: माननीय अध्यक्ष जी, आपने 280 में बोलने के लिए मुझे अवसर दिया मैं इसका धन्यवाद करना चाहता हूं और अपनी विधानसभा में 280 के तहत माननीय मंत्री जी उद्योग मंत्री जी का ध्यान कृष्णा नगर विधानसभा सहित दिल्ली के रिहायशी इलाकों में चल रहे Household industries की समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। वर्तमान नियमों के अनुसार इन क्षेत्रों में केवल 10 किलो वॉट और 10 कर्मचारियों तक ही काम करने की अनुमति है। यह दशकों पुराने नियम आज की आधुनिक मशीनों और बढ़ती जरूरतों के लिये अपर्याप्त हैं। इन प्रतिबंधों के कारण लघु उद्योग पड़ोसी राज्य हरियाणा और उत्तर प्रदेश की ओर पलायन कर रहे हैं जिससे दिल्ली को राजस्व का नुकसान और युवाओं को बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा है अत: मेरा आग्रह है कि इस समय की मांग देखते हुये घरेलू उद्योगों हेतु बिजली लोड की सीमा बढ़ाकर 15 किलो वॉट और कर्मचारियों की सीमा कम से कम 15 या 20 तक करने हेतु नियमों में आवश्यक संशोधन किया जाये क्योंकि व्यापार के पलायन से दिल्ली सरकार को राजस्व का भी नुकसान हो रहा है और रोजगार के अवसर स्थानीय युवाओं को निश्चित रूप से कम हो रहे हैं यदि समय रहते इन नियमों में बदलाव नहीं किया गया तो दिल्ली का लघु उद्योग समाप्त हो सकता है। अध्यक्ष जी, मैं एक बार फिर आपसे अनुरोध करता हूं कि आपके माध्यम से मंत्री जी इस मामले में हस्तक्षेप करें और घरेलू उद्योगों को 15 किलो वॉट 15-20 person करने की अनुमति दें, धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक तो मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा डा. साहब जो नोटिस आपने दिया था उससे आप अलग बोल रहे हैं कृपया जो नोटिस आप देंगे उसी विषय पर ही बोलना है आपने जो लिखकर आपने दिया है। आज मैंने allow कर दिया गजेन्द्र जी को भी और अनिल जी को भी। लेकिन,...... नहीं-नहीं जो आपने आज ड्रा में डाला था उस पर ही आपको करना है।

डॉ. अनिल गोयल: ठीक है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री प्रद्युम्न सिंह राजपूत।

श्री प्रधुम्न सिंह राजपूत: अध्यक्ष महोदय आपने बोलने का।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक सैकेंड मैं इसको और स्पष्ट कर दूं क्योंकि यहां विषय जब बोलने के लिये allow किया जाता है तो वो जो आपने ड्रा में सब्मिट किया है आपको उसी पर ही बोलना है। पक्ष और विपक्ष दोनों तरफ के सदस्यों को मैं कहना चाहता हूं अगर आपने सब्मिट जो विषय किया है उससे अलग आप बोलेगें तो ना तो एलाउड होगा बल्कि वो एक्शनेबल होगा तो इसका जरूर ध्यान रखें। माननीय सदस्य श्री प्रद्युम्न सिंह राजपूत जी शुरू करेंगे।

श्री प्रधुम्न सिंह राजपूत: अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया धन्यवाद। अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से स्वास्थ्य मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। दिल्ली के अंदर स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जैसा की हम सबको पता है पहले दिल्ली में आम आदमी पार्टी की जो सरकार रही उसने हैल्थ सैक्टर में कोई काम नहीं किया, बहुत नज़दीकी से हमने देखा। कोरोना काल के अंदर किस तरह से सरकार कितनी उस समय वो दारू की पॉलिसी बना रही थी बजाय लोगों के स्वास्थ्य की चिंता करती। उस समय हमने मोहल्ला क्लीनिक में भी देखा इनका जो मोहल्ला क्लीनिक का जो मॉडल है वो किस तरह का था। उसमें मोहल्ला क्लीनिक के अंदर कुत्ते नज़र आते थे, जानवर नजर आते थे बहुत नज़दीकी से हमने देखा। अध्यक्ष जी दिल्ली देश की राजधानी है लाखों लोग यहां हर साल आते हैं और हैल्थ सैक्टर के अंदर बहुत काम करने की जरूरत है नये हॉस्पिटल खोलने की जरूरत है लेकिन उन सबमें समय अभी लगेगा बनने में, दिल्ली सरकार काम कर रही है मगर मैं ये कहना चाहता हूं कि इस समय वर्तमान के अंदर ओपीडी के अंदर 9.00 बजे से लेकर 2.00 बजे तक का समय है उस समय को बढ़ाया जाये ताकि लोगों को लाभ हो, साथ में छुट्टी का दिन और या बीच में संडे का दिन हो उस दिन भी ये जो है सुविधा दी जाये ताकि हॉस्पिटल के अंदर लम्बी-लम्बी लाइन ना लगें लोगों को परेशानी ना हो मैं ये मांग आप लोगों से करता हूं और ये दो शिफ्टों के अंदर ओपीडी कर दी जाये। आपने बोलने का समय दिया, धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री करनैल सिंह जी।

श्री करनैल सिंह: धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मेरा गला खराब होने की वजह से मैं शायद आज ठीक से ना बोल पाऊं इसके लिये माफ़ी चाहता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आपका माननीय सदस्य का जो वक्तव्य है वो पढ़ा हुआ माना जायेगा और कार्यवाही का हिस्सा रहेगा।

श्री करनैल सिंह: धन्यवाद। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय कानून मंत्री महोदय का ध्यान दिल्ली में जबरन धर्मांतरण के मामलों की ओर दिलाना चाहता हूं। यह समाज की एकता, सामाजिक सौहार्द्, संविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़ा हुआ है। दिल्ली में समय-समय पर ऐसे मामले सामने आते हैं, जहां कमजोर, गरीब और अशिक्षित वर्ग को प्रलोभन, दबाव अथवा धोखे के माध्यम से धर्मांतरण के लिये विवश किया जाता है। दिल्ली में इस समस्या से निपटने हेतु वर्तमान में कोई कानून मौजूद नहीं है, जबकि राजस्थान, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों में जबरन एवं अवैध धर्मांतरण पर रोक लगाने के लिये कानून बनाये गये हैं, जिनसे ऐसी गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण संभव हुआ है। संविधान धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करता है, परंतु बल, लालच या छल से धर्मांतरण की अनुमति नहीं देता। यह आवश्यक है कि दिल्ली में भी जबरन धर्मांतरण को रोकने हेतु कानून बनाया जाये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री संजीव झा जी चूंकि वो उनको मार्शल आउट किया गया है इसलिये, अब माननीय मंत्री.....

श्री अभय कुमार वर्मा, माननीय मुख्य सचेतक: 5 मिनट में आ रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अच्छा तो।

श्री अभय कुमार वर्मा, माननीय मुख्य सचेतक: adoption of bill का कर लेते हैं reports, adoption of reports

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: तो फिर अब हम।

श्री अभय कुमार वर्मा, माननीय मुख्य सचेतक: आ गयें।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री श्री प्रवेश साहिब सिंह जी नियम 270 के अन्तर्गत पेय जल आपूर्ति के संबंध में वक्तव्य देंगे। इस पर कोई चर्चा नहीं होगी सिर्फ मंत्री जी का स्टेटमेंट होगा।

<u>पेय जल आपूर्ति के संबंध में माननीय मंत्री का वक्तव्य (नियम 270)</u>

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं कि आपने ये हमारी सरकार को मौका दिया कि जो हमारे माननीय सदस्यों द्वारा भी कई बार उनके क्षेत्रों में पानी गंदा आ रहा है इसकी शिकायत होती है। अभी भी सदस्यों द्वारा ये मामला 280 में उठाया गया है तो मैं हमारी सरकार की तरफ से ये स्टेटमेंट देकर हमारी सरकार की मंशा क्या है इसको स्पष्ट करना चाहता हूं। दिल्ली सरकार व दिल्ली जल बोर्ड, भारत सरकार के सहयोग

से हर घर तक स्वच्छ, समान और निरन्तर जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये पूरी तरह प्रतिबद्ध है लेकिन आज हमें जल की गुणवत्ता और विश्वसनियता सुनिश्चित करने में जो चुनौती आ रही है ये सब पिछली सरकार की वर्षों की उपेक्षा, अनिर्णय और देरी का परिणाम है। वर्तमान सरकार ने जल विभाग की कमान ऐसी विकट और उपेक्षित स्थिति में संभाली जो वर्षों की लापरवाही का परिणाम है। हमने एक जर्जर जल ढ़ाचा विरासत में लिया है। कुल 16 हजार किलोमीटर पाइप लाइन में से 5 हजार 200 किलोमीटर से अधिक वर्ष 30 साल से पुरानी पाइप लाइन हैं, 2 हजार 700 किलोमीटर 20 से 30 साल पुरानी पाइप लाइनें हैं जिसके कारण जगह-जगह रिसाव, पाइप फटना, दूषण का खतरा और 45 प्रतिशत तक गैर राजस्व पानी यानि की नॉन रेवेन्यु वॉटर की हानि हो रही है। 2011 से प्रस्तावित बड़े सुधार प्रोजेक्ट चंद्रावल और वजीराबाद कमांड क्षेत्रों के टेंडर रद्द होने के कारण इनकी पुनः टेंडरिंग होने के कारण और फंडिंग एजेंसियों की आपत्तियों के कारण ये सारे प्रोजेक्ट वर्षों तक लटके रहे, जिससे लागत में भारी वृद्धि हुई और लाखों नागरिक 24X7 स्वच्छ जल से वंचित रहे। सीवर नेटवर्क से वंचित कॉलोनियों में septage प्रबंधन पूरी तरीके से अनुपस्थित था जिससे over flow septic tanks का गंदा पानी नालों में बहकर यमुना को प्रदुषित कर रहा था और जल स्त्रोतों में मिक्सचर का गंभीर खतरा पैदा कर रहा था। कई दशकों से trunk sewers की सफाई नहीं हुई, ये सभी अति गंभीर समस्याओं का पूरा बोझ अब वर्तमान सरकार पर आया है लेकिन हम इन विरासत से मिली चुनौतियों से पार पाने के लिये दृढ़ संकल्पित हैं। पीछे की सरकारों ने जो मुख्य इश्यू खड़े किये 2011 में Japan International Cooperation Agency यानि की JICA दोबारा तैयार जल आपूर्ति मास्टर प्लान 2021 के तहत चंद्रावल और वजीराबाद WTP command क्षेत्र में शुरू की गई प्रमुख सुधार परियोजनायें वर्षों तक लम्बित रहीं। चन्द्रावल कमांड एरिया प्रोजेक्ट जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य था अध्यक्ष जी। ये 96 स्कावायर किलोमीटर 22 लाख पोपुलेशन को कवर करता है। 2020 में टेंडर रद्द हो गया, कई बार टेंडर को पुनः आमंत्रित किया गया। 2021 में वित्तीय बोली खुलने तथा JICA की सहमति के बावजूद प्रमुख पैकेजों को कार्य समय पर आवंटित नहीं किया गया। 2023 में आवंटित हुआ केवल एक पैकेज फरवरी 2023 में आवंटित हुआ बाकी सारे लम्बित रहे। ये सारे विलम्ब होने के क्या कारण रहे। डीपीआर में बार-बार बदलाव कर देते थे। Scope और scheduled rates में संशोधन कर देते थे। सारे टेंडर डॉक्यूमेंटस की बार-बार तैयारी और रिटेंडरिंग का प्रोसेस करते थे। 24-09-2020 को पैकेज दो-तीन-चार के टेंडर को रद्द कर दिया गया। JICA guidelines का उल्लंघन किया गया JICA के विरोध

के बावजूद DJB guidelines थोपने की कोशिश की गई ताकि काम अपने चहेतों को दिया जा सके। 23.07.2021 को फाइनैंशल बिड खुलने के बाद भी कार्य का आवंटन नहीं किया गया। पैकेज तीन को रिइन्वाइट करने के बाद भी अवॉर्ड नहीं किया गया और पैकेज चार को पूरी तरह लंबित किया गया और ऐसे ही वजीराबाद वाटर ट्रीटमेंट प्लांट कमांड एरिया प्रोजेक्ट में भी जो की 123 वर्ग किलोमीटर और 30,00,000 जनसंख्या को सेवा देता है। पिछली सरकार की अनिर्णयता लालच और उपेक्षा के कारण भी परियोजना को नुकसान उठाना पड़ा। इससे परियोजना लागत में भारी वृद्धि हुई। लागत 2243 करोड रूपये से बढ़कर 3715 करोड रूपये हो गई। दिल्ली के निवासियों को 24x7 आपूर्ति *एनआरडब्ल्यूए* के 15% तक कम करने तथा डीएमए और यूजीआर जैसी नई संरचना से वंचित रखा गया। सबसे बड़ी बात ये हुई अध्यक्ष जी की 22.10.2020 को ऐडीबी ने अपनी फन्डिंग वापस ले ली और पूरा प्रोजेक्ट एकदम से ठप हो गया। इन सबके भी वही कारण रहे जो चंद्रावल प्रोजेक्ट में रहे 2017 से लगातार प्रोजेक्ट को टालना, मल्टिपल रिटेंडरिंग डिस्पाइट एडीबी क्लीयरैंस ताकि काम अपने चहेतों को दिया जा सके। ये सब केवल इसलिए हुआ क्योंकि कुछ लोगों ने लाखों दिल्लीवासियों के हितों से ऊपर अपने निजी स्वार्थ को माना और लोगों के घरों में साफ पानी आए इससे जरूरी अपना घर पैसों से भरना समझा। हमारी सरकार ने 11 महीने में माननीय अध्यक्ष जी, क्या क्या कदम उठाए , अब मैं वो बताना चाहता हूँ। मैं इस सदन के समक्ष इन सभी मुद्दों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करना चाहता हूँ और बताता हूँ कि हमारी सरकार ने पिछले 11 महीनों में जनहित में कौन कौन से महत्वपूर्ण त्वरित और निर्णायक कदम उठाए हैं। 94 मेजर वर्क जो की 1 करोड से ज्यादा की वैल्यू के रिलेटेड टू वाटर पाइप लाइन सीवरेज नेटवर्क एसटीपी 7212 करोड रूपये के प्रोजेक्ट पिछले 11 महीने में हमारी सरकार ने अप्रूव किये हैं जिनके ऊपर में काम होना शुरू हो गया है। नवंबर 2025 में हमने चंद्रावल परियोजना के शेष पैकेज को तुरंत आवंटित किया जिसकी कुल लागत 2406 करोड रूपये है मतलब सरकार का 303 करोड रूपये से 713 करोड रूपये। 399 करोड रूपये जो पिछली सरकार ने सारे कार्यो को लंबित किया इससे सरकार को नहीं दिल्ली की जनता को 399 करोड रूपये का अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ा। इससे 1044 किलोमीटर लाइनों को डालना जो हमने यह कार्य को अभी मंजूर किए हैं और काम करना शुरू किया है। इससे 1044 किलोमीटर नई पाइप लाइन डलेंगी। 21 यूजीआर का निर्माण होगा जिससे अंतिम छोर तक 22 मीटर दबाव के साथ 24x7 आपूर्ति सुनिश्चित होगी। अध्यक्ष जी, इन कार्यों से नौ विधानसभा क्षेत्रों में जो मैंने आपको बताया ये वाला चंद्रावल प्रोजेक्ट इससे नौ

विधानसभाओं को फायदा मिलेगा। ये नौ विधानसभाएँ हैं पटेल नगर, चांदनी चौक, मटियामहल, बल्लीमारान, मॉडल टाउन, सदर बाजार, करोल बाग, राजेंद्र नगर, आरके पुरम और मैं कहना चाहता हूँ कि विधानसभा में सारी बीजेपी के विधायक नहीं हैं। इनमें से हमारे विपक्ष के भी विधायक हैं, जिनमें ये सारे पानी की समस्या ठीक होगी और यह नौ विधानसभाओं में जो प्रमुख क्षेत्र आते हैं वो आते है सराय रोहिल्ला, गुलाबी बाग, पटेल नगर, शादीपुर, नारायणा विहार, नेहरू नगर, बलजीत नगर, पंजाबी बस्ती, सदर बाजार, करोलबाग, पहाड़गंज, झंडेवालान, बापानगर, देव नगर, ओल्ड राजेंद्र नगर, कश्मीरी गेट और इनके अंदर में आने वाले हॉस्पिटल और कॉलेज आरकेपुरम, दिल्ली कैंट, ओल्ड डेली रेड फोर्ट, जामा मस्जिद, रामलीला ग्राउंड, तुर्कमान गेट, दरियागंज ये सारे क्षेत्रों को इस वाले प्रोजेक्ट से फायदा होगा। आपके यहाँ पे साफ पानी आएगा और पानी की सप्लाई बढ़ेगी। वजीराबाद के लिए हमने 3715 करोड रूपये की परियोजना को एडीबी की सहायता के साथ में पुनर्जीवित किया। मैं आपके ध्यान में ये लाना चाहता हूँ, जैसे चंद्रावल प्रोजेक्ट है वैसे ही वजीराबाद प्रोजेक्ट है। जैसे चंद्रावल प्रोजेक्ट को जायका फंड कर रहा था, वैसे ही वजीराबाद प्रोजेक्ट को एडीबी फंड कर रहा था। मगर एडीबी ने पिछली सरकार चाहे वो कमीशन के चक्कर में चाहे उनकी गलत नीतियों के चक्कर में एडीबी ने अपनी फन्डिंग वापस ले ली थी और मैं यह पूरे सदन को दिल्ली को बताना चाहता हूँ कि हमारी सरकार बनते ही खुद एडीबी ने हमको अप्रोच किया और केवल सरकार बनने के एक महीने के बाद में हमने उनके साथ बैठक करके इस पूरी योजना को दोबारा चालू किया। हमारी सरकार फरवरी में बनी थी और 28 अप्रैल 2025 को हमने पहली बैठक कर ली थी। ये योजना से क्या फायदा होगा ? 1697 किलोमीटर पाइप लाइन नई डाली जाएगी। 14 यूजीआर का पुनर्निर्माण होगा और जो लोन प्रोसेसिंग है, आज वो एडवांस स्टेज में पहुँच गया है। भारत सरकार की उसमें हम को मदद मिल रही है। इसमें अंतिम छोर तक 17 मीटर दबाव के साथ 24x7 यानी की अभी हमारे माननीय सदस्य सतीश जी कह रहे थे की दो घंटा, चार घंटा, तीन घंटा आती है। हम जो योजना पर काम कर रहे हैं 24x7 पानी की सप्लाई दिल्ली को मिलेगी। वजीराबाद योजना में कौन कौन से क्षेत्रों को फायदा होगा ? मैं एक बार वो बताना चाहता हूँ। इससे 11 असेंबली को फायदा होगा। पहले नौ असेंबली ये 11 असेंबली यानी केवल दो प्रोजेक्ट से 20 विधानसभा क्षेत्रों को फायदा होगा। ये 11 असेंबली है आदर्श नगर, मॉडल टाउन, तिमारपुर, मादीपुर, शालीमार बाग, वजीरपुर त्रीनगर, शकूर बस्ती, बुराड़ी, रिठाला और बादली और इनमे जो प्रमुख क्षेत्र होंगे संजय गाँधी ट्रांसपोर्ट नगर, बुराड़ी के क्षेत्र, मॉडल टाउन, केशवपुरम, पंजाबी बाग,

शकूर बस्ती, जहांगीरपुरी, पीरागढ़ी, अवंतिका, पीतमपुरा, शालीमारबाग ये सारे क्षेत्रों को ये हमारे वजीराबाद प्रोजेक्ट से फायदा होगा। बाकी ये हो गई 20 विधानसभा क्षेत्र की बात। बाकी पूरी दिल्ली को भी अध्यक्ष जी। बाकी पूरी दिल्ली को भी अध्यक्ष जी, इसके बाद हमारी योजना को हमने शेष दिल्ली को छः ज़ोन में विभाजित किया है। ईस्ट, नॉर्थ ईस्ट, नॉर्थ वेस्ट, वेस्ट, साउथ, साउथ वेस्ट। जो पुरानी डीपीआर बनी थी, उसमें हमने नए कंसल्टेंट की नियुक्ति प्रक्रिया चालू कर दी है। इससे 4200 किलोमीटर नई लाइनों का प्रतिस्थापन 54 यूजीआर नये बनेंगे। 1346 डीएमए नये बनेंगे और सभी का उद्देश्य शहर व्यापी 24x7 आपूर्ति एनारडब्ल्यूए का 15% तक कम करना और स्काडा से निगरानी करने का है। ये कामों से बहुत ही जल्दी आने वाले दो तीन सालों में 16,000 किलोमीटर नई पाइप लाइन में से 16,000 किलोमीटर जो दिल्ली में पाइपलाइन है, उसमें से 7000 किलोमीटर आने वाले दो-तीन सालों में सारी पाइपलाइनों को चेंज कर दिया जाएगा, नया डाल दिया जाएगा। मैं आपको हमारी सरकार की कुछ जो हमारी प्रमुख उपलब्धियां हैं उसके बारे में जो काम हो चुके हैं। तीन हमने नए प्राथमिक यूजीआर चालू किए गए। इसमें एक पल्ला में किया गया जिसमें 37 एमएलडी और ये यूजीआर से खेड़ाकलां, नंगलीपूना, लिबासपुर, कादीपुर, इब्राहीमपुर, बख्तावरपुर, ताजपुर कला, अकबरपुर माजरा, पल्ला, झंगोला, सुंगरपुर, होलंबी कलां। ये सारे क्षेत्रों को फायदा मिलेगा। दूसरा यूजीआर बिजवासन में 9 एमएलडी का इससे बिजवासन, कापसहेड़ा, सलापुर और समालखा आदि क्षेत्रों को फायदा मिलेगा और तीसरा सिरसपुर में 12 एमएलडी का इससे खेड़ाकलां, नंगलीपूना, कादीपुर, लिबासपुर, इब्राहीमपुर ये सारे क्षेत्रों को फायदा मिलेगा। अध्यक्ष जी हमारी सरकार बनने के बाद में अनाधिकृत कॉलोनी में वो कौन कौन से क्षेत्र है जहाँ पे हमने वॉटर पाइप लाइन को कमिशन कर दिया है? ये क्षेत्र हैं- नांगलोई जलापूर्ति क्षेत्र में निम्नलिखित कॉलोनियों को हमने अधिसूचित किया। कोटला विहार फेस टू, कोटला विहार फेस वन, आकाश विहार, रनोला, ये वाला विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र में इसके बाद में प्रताप विहार, सत्यम विहार फेस टू। हमारी सरकार ने 11 महीने में 262 नए ट्यूबवेल चालू कर दिए हैं, जिससे 9 एम.जी.डी. हमको ज्यादा पानी मिल रहा है और इसी के साथ-साथ 200 किलोमीटर की नई पाइप लाइन पिछले 11 महीनों में डाल दी गई है , शुरू हो गई है, बाकी पाइपलाइनों को डालने का काम चालू हो गया है। बहुत सारे टेंडर हमारे हो गए हैं और जल्दी हमारे काम चालू हो जाएंगे। इसके साथ जो बहुत ही महत्वपूर्ण था ट्रंक सीवर दिल्ली में कई दशकों तक इसकी सफाई नहीं हुई। 15-15 सालों से एक बार भी ट्रंक सीवर की सफाई नहीं हुई। हमारी सरकार ने सरकार बनते ही 170 करोड रूपये की लागत से 100

किलोमीटर ट्रंक सीवर पाइप लाइन की सफाई और डीसिल्टिंग का काम शुरू कर दिया है। अध्यक्ष जी, दिल्ली में लाखों घर है जो कि unauthorised colony और गांव में है। जहाँ पर सीवर लाइन अभी तक पिछली सरकार नहीं डाल पाई थी और सबके घरो में सेप्टिक बने हुए हैं वो सेप्टिक टैंक का भी हमारी सरकार ने संज्ञान लेते ही पहले प्राइवेट टैंकर आते थे, 3-3 हजार रूपये लेते थे, उनका गंद उठाते थे और गंद उठाकर हमारी गाइडलाइन ये होती थी कि सबको एसटीपी प्लांट में डाला जाए। मगर वह एसटीपी पे उनको नहीं लेकर जाते थे और वो आसपास के नालों में डालते थे जिससे यमुना का भी प्रदूषण बढ़ता था और हमारे भूजल का भी प्रदूषण बढ़ता था। हमारी सरकार ने आते ही बहुत बड़ा कदम उठाया। 300 नए टैंकर की नियुक्ति बहुत ही जल्दी हो जाएगी। इससे दिल्ली वासियों को जो उनका सेप्टिक टैंक साफ कराना पड़ता है, हम उनको फ्री फैसेलिटी देंगे। किसी को ₹3000 देने की जरूरत नहीं है। हमारी सरकार का ये संकल्प है कि जब तक पूरे दिल्ली को सीवर लाइन से एक-एक घर को अनॉथराइज कॉलोनी में, गांव में, झुग्गी झोपड़ी में एक-एक घर को सीवर लाइन से नहीं जोड़ दिया जाता तब तक उन लोगों को एक भी रुपया सेप्टिक टैंक को साफ करने के लिए देने की जरूरत नहीं है। दिल्ली जल बोर्ड, दिल्ली सरकार पूरी तरीके से ये सेवा उनको मुफ्त में देने जा रही है। इसके अलावा मशीन की अगर मैं बात करूं तो हमने 506 सीवर सफाई मशीनें तैनात की। इनमें 30 सुपर सकर मशीनें और 16 जेटिंग कम सक्शन मशीन भी शामिल है ताकि सीवर सिस्टम की नियमित सफाई सुनिश्चित हो और जल दूषण के जोखिम को न्यूनतम किया जा सके। पानी की उपलब्धता के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि हमारे जो 9 डब्ल्यूटीपी हैं इनमें से हमको 865 एमजीडी पानी मिलता है और जो हम ये सारे ट्यूबवेल के जरिए भूजल से निकालते हैं। हमको 135 एमजीडी यानी कि 1000 एमजीडी पानी रोज दिल्लीवासियों के लिए उपलब्ध होता है। मगर इसमें 250 एमजीडी का गैप है। इसके लिए भारत सरकार, हमारे प्रधानमंत्री जी, हमारे गृह मंत्री जी, हमारी मुख्यमंत्री जी एक दर्जन से ज्यादा बैठक कर चुके हैं। और जो हिमाचल प्रदेश के साथ में 2019 में हमारा एमओयू साइन हुआ था जिसमें हिमाचल प्रदेश ने हमको 113 एमजीडी पानी अतिरिक्त देने के लिए कहा था, वो भी लंबित हो गया था। उसके लिए भी हमने बैठक करी है और अगर ईश्वर का आशीर्वाद रहा तो बहुत जल्दी हमको हिमाचल से 113 एमजीडी अतिरिक्त पानी मिलेगा। इसके साथ-साथ हमारी हरियाणा और उत्तर प्रदेश के राज्यों से उनके मुख्यमंत्री से चीफ सेक्रेटरी से बात हुई है ताकि जो उनके क्षेत्रों में इरीगेशन पर्पज के लिए ड्रिंकिंग वाटर का यूज होता है। हमने कहा है कि हम आपको अपने एसटीपी का अच्छा

क्योंकि अभी हमने क्वालिटी अपग्रेडेशन भी किया है, हम आपको अच्छा साफ पानी देंगे आपके इरीगेशन पर्पज के लिए। मगर जो पानी वहां से गंगा यमुना में से वो अपने इरीगेशन पर्पज में लेकर आते हैं कृपया उस पानी को हमको पीने के लिए दे दें और हमारे ट्रीटेड वाटर को अपने इरीगेशन पर्पज के लिए ले लें। इसके लिए इसके लिए 51 क्यूसेक पानी के लिए हमारी उनसे बात चल रही है। मैं आपको बताना चाहता हूं अध्यक्ष जी कि मुनक नहर जहां से हमको यमुना का पानी मिलता है डीएसबी सीएलसी कैनाल के द्वारा हमारी सरकार बनते ही मुख्यमंत्री जी ने कई बार इसके ऊपर में बैठक करी और अभी वो बैठक इतनी साकार हो रही है कि बहुत जल्दी उनके ऊपर में काम शुरू होने वाला है कि उसमें से जो एक हमारी नई कैनाल है सीएलसी उसमें पहले 40% तक वाटर लॉस होता था उसकी लाइनिंग होने के बाद में आज उसका वाटर लॉस केवल 5% है। ऐसे ही जो पुरानी कैनाल है डीएसबी आज उसमें 40% वाटर लॉस हो रहा है। हमारी मुख्यमंत्री जी ने कहा है कि इसकी भी पूरी लाइनिंग कराई जाए ताकि वो 40% लॉस को भी 5% तक लेकर जाए। उससे भी दिल्ली की जनता को अतिरिक्त पानी उपलब्ध होगा और इसके लिए ये पूरा जो पानी आ रहा है नहर से उसके लिए conduit पाइप लाइन फिजिबिलिटी के लिए हमारी आईआईटी रुड़की को हमने काम दिया है। उसके ऊपर में स्टडी चल रही है। जैसे ही रिपोर्ट आएगी आगे के कदम उठाए जाएंगे और इसके अतिरिक्त इसी गर्मी से पहले 20 एमजीडी के ट्यूबवेल को शुरू करने की योजना है। जिससे द्वारका ट्रीटमेंट प्लांट जो हमारा द्वारका हमारा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट है उसकी कैपेसिटी को 20 एमजीडी बढ़ा रहे हैं। तो इसी गर्मी से पहले नए ट्यूबवेल लगाए जाएंगे। जिनमें से 20 एमजीडी पानी लगाकर वो हम तो उससे द्वारका ट्रीटमेंट प्लांट को 20 एमजीडी ज्यादा पानी मिलेगा जिससे आसपास के क्षेत्रों में, मटियाला में, नजफगढ़ में, विकासपुरी में, आपके द्वारका में, बिजवासन में और आपके उत्तम नगर में, पालम में ये सारे क्षेत्रों में उससे फायदा मिलेगा। अध्यक्ष जी, ये सभी लंबित मुद्दे हल करने का पूरा दबाव वर्तमान सरकार पर आया था। मगर हम यह दृढ़ संकल्पित हैं कि दिल्ली जल बोर्ड कमजोर पाइप लाइनों की गहन जांच ऑडिट और मरम्मत तेज कर रहा है ताकि जल की गुणवत्ता सुरक्षित रहे। हम विभिन्न परियोजनाओं में 6941 किलोमीटर से यानि कि लगभग 7000 किलोमीटर की अधिक पुरानी लाइनों के प्रतिस्थापन और जो असीवरेज जहां पर सीवर नहीं है ऐसे क्षेत्रों में नेटवर्क विस्तार और हर उपभोक्ता तक स्वच्छ जल पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा दिल्ली की जनता को विश्वास

दिलाना चाहता हूं कि हम विरासत में मिली चुनौतियों पर विजय प्राप्त करेंगे और आधुनिक विश्वसनीय जल आपूर्ति प्रणाली प्रदान करेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अनुदानों की पूरक मांगे 2025-26

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अब अनुदानों की पूरक मांगे 2025-26 अब श्रीमती रेखा गुप्ता माननीय मुख्यमंत्री वित्त वर्ष 2025-26 के लिए सप्लीमेंट्री डिमांड पेश करेंगी।

श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीया मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष महोदय, मैं वित्त वर्ष 2025-26 के लिए सप्लीमेंट्री डिमांड फॉर ग्रांट्स का पहला भाग सदन में प्रस्तुत करती हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अब सदन सप्लीमेंट्री डिमांड पर डिमांड वाइज विचार करेगा। डिमांड नंबर एक लेजिसलेटिव असेंबली जिसमें रेवेन्यू में 2 लाख तथा कैपिटल में 8 करोड़ 7 लाख रूपए हैं। कुल राशि 8 करोड़ 9 लाख रूपए सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 1 पास हुई।

डिमांड नंबर तीन एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जस्टिस जिसमें रेवेन्यू में 16 लाख 10 हजार रूपए हैं तथा कैपिटल में 33 लाख 90 हजार रूपए हैं। कुल राशि 50 लाख रूपए सदन के सामने हैं।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 3 पास हुई।

डिमांड नंबर चार फाइनेंस जिसमें कैपिटल में 5 लाख रूपए हैं। सदन के सामने हैं।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 4 पास हुई।

डिमांड नंबर पांच होम जिसमें रेवेन्यू में 2 लाख रूपए हैं तथा कैपिटल में 60 करोड़ 88 लाख 20 हजार रूपए कुल राशि 60 करोड़ 90 लाख 20 हजार रूपए सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 5 पास हुई।

डिमांड नंबर 6 एजुकेशन जिसमें रेवेन्यू में 3 अरब 68 करोड़ दो लाख 61 हजार रूपए हैं तथा कैपिटल में 9 अरब 74 करोड़ 63 लाख 54 हजार कुल राशि 13 अरब 42 करोड़ 66 लाख 15 हजार रूपए सदन के सामने हैं

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 6 पास हुई।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: डिमांड नंबर 7 मेडिकल एंड पब्लिक हेल्थ, जिसमें रेवेन्यू में 7 अरब 1 करोड़ 3 लाख 5 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 26 लाख रूपये कुल राशि 7 अरब 1 करोड़ 29 लाख 5 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 7 पास हुई।

डिमांड नंबर 8 सोशल वेलफेर, जिसमें रेवेन्यू में 21 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 21 करोड 48 लाख रूपये, कुल राशि 21 करोड 69 लाख रूपये सदन के सामने हैं।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 8 पास हुई।

डिमांड नंबर 9 लेबर ऐंड एंप्लॉयमेंट, जिसमें रेवेन्यू में 2 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 8 करोड 54 लाख रूपये, कुल राशि 8 करोड 56 लाख रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 9 पास हुई।

डिमांड नंबर 10 रिवेन्यू, जिसमें रेवेन्यू में 5 अरब 52 करोड 18 लाख 44 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 40 करोड 30 लाख रूपये, कुल राशि 5 अरब 92 करोड 48 लाख 44 हजार रूपये सदन के सामने हैं

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 10 पास हुई।

डिमांड नंबर 11 अर्बन डेवलपमेंट, जिसमें रेवेन्यू में 18 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 20 अरब 12 करोड 70 लाख 11 हजार रूपये, कुल राशि 20 अरब 12 करोड 88 लाख 11 हजार रूपये है सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 11 पास हुई।

डिमांड नंबर 12 जनरल एडमिनिस्ट्रेशन, जिसमें रेवेन्यू में 2 करोड 85 लाख 62 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 2 करोड 90 लाख रूपये कुल राशि 5 करोड 75 लाख 62 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 12 पास हुई।

डिमान्ड नंबर 13 सर्विसेज, जिसमें कैपिटल में 3 लाख रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 13 पास हुई।

डिमांड नंबर 14 ऐड्मिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्मस, जिसमें कैपिटल में 75 लाख रूपये हैं, सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 14 पास हुई।

डिमांड नंबर 16 इन्फॉर्मेशन एंड पब्लिसिटी, जिसमें रेवेन्यू में 7 लाख रूपये हैं, सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 16 पास हुई।

नंबर 17 सेलेक्शन बोर्ड, जिसमें रेवेन्यू में 8 करोड 90 लाख 50 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 30 लाख रूपये कुल राशि 9 करोड 90 लाख 50 हजार रूपये, सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 17 पास हुई।

डिमांड नंबर 18 इलेक्शन, जिसमें रेवेन्यू में 42 करोड 03 लाख रुपए है तथा कैपिटल में 76 लाख रुपए कुल राशि 42 करोड 79 लाख रुपए सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 18 पास हुई।

डिमांड नंबर 19 प्लानिंग, जिसमें रेवेन्यू में 1 लाख रुपए है तथा कैपिटल में 8 लाख रुपए कुल राशि 9 लाख रुपए सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 19 पास हुई।

डिमांड नंबर 20 इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी जिसमें रेवेन्यू में 2 लाख रुपए है तथा कैपिटल में 45 लाख रुपए कुल राशि 47 लाख रुपए सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 20 पास हुई।

डिमांड नंबर 21, आर्ट, कल्चर ऐंड लैंग्वेज, जिसमें रेवेन्यू में 60 करोड 11 लाख 16 हजार रुपए तथा कैपिटल में 97 लाख रुपए कुल राशि ₹61 करोड 08 लाख 16 हजार रुपए रुपए सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 21 पास हुई।

डिमांड नंबर 22 ट्रांसपोर्ट, जिसमें रेवेन्यू में 9 अरब 26 करोड 56 लाख रुपए हैं तथा कैपिटल में 20 अरब 74 करोड 41 लाख रूपये हैं कुल राशि 30 अरब 97 लाख रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 22 पास हुई।

डिमांड नंबर 23 इंडस्ट्रीज़, जिसमें रेवेन्यू में 7 करोड 5 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 3 करोड 19 लाख रूपये कुल राशि ₹10 करोड 24 लाख रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 23 पास हुई।

डिमांड नंबर 24 टुरिज़म, जिसमें रेवेन्यू में 68 करोड 35 लाख 50 हजार रूपये हैं सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 24 पास हुई।

डिमांड नंबर 25 सिविल सप्लाइज, जिसमें रेवेन्यू में 38 करोड 89 लाख 50 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 1 करोड 16 लाख रूपये हैं कुल राशि 40 करोड 05 लाख 50 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 25 पास हुई।

डिमांड नंबर 26 डेवलपमेंट, जिसमें रेवेन्यू में 18 करोड 91 लाख 75 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 4 लाख रूपये कुल राशि 18 करोड 95 लाख 75 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 26 पास हुई।

डिमांड नंबर 27 को-ऑपरेटिव, जिसमें रेवेन्यू में 2 करोड 65 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 18 लाख 95 हजार रूपये कुल राशि 2 करोड 83 लाख 95 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 27 पास हुई।

डिमांड नंबर 28 इरिगेशन एंड फ्लड, जिसमें रेवेन्यू में 60 करोड 46 लाख 65 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 1 करोड 3 लाख रूपये कुल राशि 61 करोड 49 लाख 65 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 28 पास हुई।

डिमांड नंबर 29 इन्वायरमेंट ऐंड फॉरेस्ट, जिसमें रेवेन्यू में 1 अरब 48 करोड 45 लाख 76 हजार रूपये हैं तथा कैपिटल में 1 अरब 39 करोड 78 लाख रूपये कुल राशि 2 अरब 88 करोड 23 लाख 76 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 29 पास हुई।

डिमांड नंबर 30 पब्लिक वर्क्स, जिसमें रेवेन्यू में 5 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 1 अरब 6 करोड 74 लाख 59 हजार रूपये है कुल राशि 1 अरब 6 करोड 79 लाख 59 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

डिमांड नंबर 30 पास हुई।

डिमांड नंबर 31, लैन्ड एण्ड बिल्डिंग जिसमें रेवेन्यू में 1 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 82 लाख रूपये कुल राशि 83 लाख सदन के सामने है-

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

डिमांड नंबर 31 पास हुई।

डिमांड नंबर 32, पावर जिसमें रेवेन्यू में 4 अरब 39 करोड 67 लाख रूपये हैं तथा कैपिटल में 24 करोड 3 लाख 50 हजार रूपये कुल राशि 4 अरब 63 करोड 70 लाख 50 हजार रूपये सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

डिमांड नंबर 32 पास हुई।

डिमांड नंबर 34 पेंशन्स, जिसमें रेवेन्यू में 6 अरब 20 लाख रूपये हैं सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

डिमांड नंबर 34 पास हुई।

सदन ने कुल मिलाकर रेवेन्यू में 40 अरब 47 करोड़ 13 लाख 64 हजार रूपये और कैपिटल में 54 अरब 84 करोड 89 लाख 79 हजार रूपये कुल राशि 95 अरब 32 करोड 03 लाख 43 हजार रुपयों की सप्लीमेंट्री डिमांड को मंजूरी दे दी है।

अब श्रीमती रेखा गुप्ता माननीय मुख्यमंत्री दिल्ली विनियोजन (नंबर एक) विधेयक, 2026 (2026 का विधेयक संख्या चार) को हाउस में इंट्रोड्यूस करने की परमिशन मांगेंगी।

श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीया मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं दिल्ली विनियोजन (नंबर एक) विधेयक, 2026 (2026 का विधेयक संख्या चार) को इंट्रोड्यूस करने के लिए सदन की अनुमति चाहती हूँ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मुख्यमंत्री जी का प्रस्ताव सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पास हुआ।

अब मुख्यमंत्रीजी बिल को सदन में इंट्रोड्यूस करेंगी।

श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीया मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं दिल्ली विनियोजन (संख्या 1) (2026 का विधेयक संख्या 4) विधेयक को सदन में इंट्रोड्यूस करती हूँ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब बिल पर क्लॉजवाईज विचार होगा। प्रश्न है कि खंड दो खंड तीन व शेड्यूल बिल का अंग बने,

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

खंड दो खंड तीन एवं शेडयूल बिल का अंग बन गए हैं।

प्रश्न है कि खंड-1, प्रिएंबल और टाइटल बिल का अंग बने,

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

खंड-1, प्रिएंबल और टाइटल बिल का अंग बन गए।

अब मुख्यमंत्री जी प्रस्ताव करेंगी कि दिल्ली ऐप्रोप्रियेशन (बिल नंबर-1) (2026 का बिल नंबर-फ़ोर) को पास किया जाए।

श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीया मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूँ कि दिल्ली विनियोजन (संख्या 01) विधेयक 2026, (2026 का विधेयक संख्या-4) को पास कर दिया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मुख्यमंत्री जी का प्रस्ताव सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में हैं वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता हां पक्ष जीता।

द दिल्ली एप्रिपरेशन नंबर वन बिल, 2026 (बिल नंबर फ़ोर ऑफ 2026) पास हुआ। सभी को बधाई। अब उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा। अब श्री रविन्द्र इंद्राज सिंह माननीय मंत्री द्वारा दिनांक 6 जनवरी 2026 को प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में सदस्य

भाग लेंगे कि, ''यह सदन दिनांक 5 जनवरी 2026 को उपराज्यपाल महोदय द्वारा विधानसभा को दिए गए अभिभाषण के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।'' चर्चा की शुरुआत आज जो कॉन्टिन्यू है, लेकिन आज इसकी शुरुआत करेंगे माननीय सदस्य श्री कुलवंत राणा।

माननीय उप-राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा

श्री कुलवंत राणा: अध्यक्ष महोदय, एल जी साहब के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव रविन्दर जी माननीय मंत्री द्वारा लाया गया उसपे मुझे आपने बोलने का अवसर दिया उसके लिए आपका बहुत बहुत आभार। माननीय उपराज्यपाल महोदय ने दिल्ली में पिछले 10 महीनों में सरकार के द्वारा उठाए गए जनहित के कदमों की चर्चा उसमें हुई। साथ में आगामी वर्षों में हम क्या करने वाले हैं दिल्ली कैसे बेहतर होगी और दिल्ली के लोगों को एक अच्छा शासन कैसे प्राप्त होगा, इसकी सारी व्यवस्था उसकी व्याख्या उस में की गई है। दिल्ली में जब से मैं देख रहा हूँ दिल्ली को बिगाड़ने का काम जब महानगर परिषद समाप्त हो गई और दिल्ली के अंदर 15 वर्ष राष्ट्रपति शासन रहा और दिल्ली में दो बहुत बड़े कांग्रेस के नेता जिनका बहुत प्रभाव था दिल्ली में, एक आउटर दिल्ली में एक यमुना पार में। अध्यक्ष जी मैं तो इसलिए इस पर आपका संज्ञान ला रहा हूँ कि दिल्ली का स्वरूप बिगाड़ने में किन लोगों ने बड़ा काम किया। दिल्ली में डीडीए 1958 में आया और डीडीए का गठन का उद्देश्य एक ही था कि दिल्ली बेहतर कैसे हो, शहर का विकास कैसे हो और डीडीए ने भी अपना प्रभुत्व बनाए जाने के लिए और निजी क्षेत्र के लिए कोई व्यवस्था नहीं रखी और न जोनिंग में बांटा दिल्ली को और वो व्यापारी बन गया डीडीए। सेवाभाव का दृष्टिकोण जो था या सरकार का और विभागों का सरकारी विभागों का एक ही एजेंडा होता है कि हम लोगों को उनको बेहतर सेवा कैसे प्रदान करें, जनहित के लिए काम किया जाता है, व्यक्तिगत हित के लिए विभाग कभी काम नहीं करते। ये व्यवस्था हमारे प्रजातंत्र में हमारे संविधान की गई। अध्यक्ष महोदय अनअथोराईज्ड कालोनियों का निर्माण हुआ और गांव की अनदेखी हुई और दिल्ली का स्वरूप बिगड़ता चला गया। अनआथोराईज्ड कालोनियां विकसित हुई जो कि बढ़ती चली गई। गांव की हालत खराब हो गयी और पर कैपिटा सेवाओं के अंदर बड़ा अंतर आ गया। खुराना साहब ने लड़ाई लड़ी, भारतीय जनता पार्टी ने लड़ाई लड़ी कि दिल्ली को राज्य का दर्जा मिले, कोर्ट तक भी गए, कोर्ट से निर्णय आया और निर्णय आने के बाद दिल्ली में सरकार का गठन हुआ। 93 में चुनाव हुआ। भारतीय जनता पार्टी का शासन आया। हमारे यहां एक दो कोर्ट थी पटियाला हाउस और

तीस हजारी कोर्ट। हमारे डीसी तीस हजारी में बैठते थे। सारी कोर्ट्स यहीं थी। पूरी समूची दिल्ली यहीं पे आती थी। कश्मीरी गेट या पटियाला हाउस में सब रजिस्ट्रार ऑफिस भी दो या तीन थे। ज्यादा नहीं थे। तो सारी सेवाओं का विकेंद्रीकरण किया, लोगों तक उनके दरवाजे तक सेवाएं जाएं और दिल्ली में उस समय भी ट्रैफिक की भरमार थी और एक समय था लवली जी आपको याद होगा कि आँखों में जलन होती थी। इतनी ट्रैफिक की तादाद हो गई थी। सरकार ने बहुत सारे काम किए, इन्फ्रास्ट्रक्चर पर रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर, उसके साथ अनआथोराईज्ड कालोनियों की चिंता की वो कैसे नारकीय जीवन जी रहे थे, वो काल मैंने देखा है कि अनआथोराईज्ड कालोनियों के लोगों का जीवन मुझे भी अवसर मिला उनको नारकीय जीवन से निकलने का। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री खुराना साहब ने यातायात की चिंता करते हुए प्रदूषण कैसे कम हो उसकी चिंता करते हुए वो बाहर के देशों में गए वहां उनको मेट्रो देखने को मिला कि लंदन में यह किस प्रकार से कामयाब है। यहाँ मेट्रो ले के आये। साहिब सिंह साहब, मुख्यमंत्री बने, एक पीड़ा होती थी पहले के नेताओं के अंदर, जनता के प्रति दायित्व समझते थे और हाई कोर्ट में स्वयं पेश होकर के अनआथोराईज्ड कालोनियों के अंदर जो सर्विसेज देने में रोका टोकी करती थी, सरकार कहती थी हम नहीं दे पाएंगे सेवाएं। इतनी बड़ी आबादी हो गयी, उनको पानी भी चाहिए था वो मानव हैं पशु नहीं थे। बिजली भी चाहिए, उनको ये सीवर भी चाहिए और उनके लिए बेहतर सड़क भी हो उसकी चिंता की और वो हाईकोर्ट से उनको ढंग से पक्ष रखने में कामयाब हुए और कोर्ट ने उसको अनुमति दी। उसके बाद में अनआथोराईज्ड कालोनियों में विकास का कार्य प्रारंभ हुआ और वो सिलसिला जारी है। बहुत सारा काम हुआ उसके बाद कोर्ट्स का जितनी भी कोर्ट्स हैं, रोहिणी कोर्ट है, द्वारका कोर्ट है साकेत कोर्ट कोर्टों का विस्तार, डिविजनल ऑफिस का विस्तार, सब रजिस्ट्रार आफिस का विस्तार, अस्पतालों का निर्माण, कॉलेजों का निर्माण, सड़कों का निर्माण, गौशालाओं का निर्माण, अस्पतालों का निर्माण। इतनी तादाद में काम हुआ और दिल्ली को पर कैपिटा के हिसाब से सेवाएं देने में उस समय की सरकार कामयाब सरकार रही। कांग्रेस का शासन भी आया। कांग्रेस का शासन आने के बाद कांग्रेस ने भी उस काम को आगे बढ़ाया। फिर उसके बाद में 11 वर्ष पूर्व एक साफ सुथरी व्यवस्था देने वाली सरकार आई जो कल भी पंजाब में उन्होंने बयान दिया है दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने कि हम राजनीति में आए हैं साफ सुथरी व्यवस्था देने के लिए। साफ सुथरी व्यवस्था इन 11 वर्षों में देखने को मिल रही है। सीवर का बेड़ा गर्क, सड़कों का बेड़ा गर्क, सड़कों की हालत अभी हमारी सरकार ने मरम्मत करके ठीक की हैं। प्रदुषण का वो भी एक बड़ा कारक रहा है।

उसके बाद गंदा पानी, ट्रैफिक जाम, दिल्ली में सडकों पर चलना मुश्किल, मुश्किल से दिन में होता है एक काम। एक काम कोई.. नई दिल्ली में मिटिंग में जाने में अखरता है कि सारा दिन बर्बाद हो जायेगा। दो-दो, ढाई-ढाई घंटे सडकों पर जाम में रहो और दिल्ली की जनता अध्यक्ष महोदय बीपी का शिकार है, तनाव का शिकार है। झगडे हो रहे हैं और उनकी सरकारों के समय में जो डीडीए ने अभी फ्लैट बनाये। पार्किग की, कार पार्किग की व्यवस्था भी नहीं की और दिल्ली में कार पार्किंग की सोची भी नहीं कि इनके पास कार भी होगी बेचारों के पास। दिल्ली की अर्थव्यवस्था आगे बढी। लोगों की per capita income भी बढी और योजना भी बहुत अच्छी बनाई उस समय के लोगों ने बहुत छोटी-छोटी सडकें बना दी। उसका का भी ये कारण है हमारी योजना का और देश की अच्छी योजनाओं के साथ दीर्घकालीन योजना नहीं बना पाये। उसमें भी नाकामी रही है। अध्यक्ष महोदय, जब भावना अच्छी हो और सोच अच्छी हो तभी आगे काम बढता है। दिल्ली की स्थिति बहुत बिगड गई। पिछले ग्यारह वर्षो में और जो साफ सुथरी व्यवस्था देने को आये थे वो खुद भ्रष्टाचार में लिप्त हो गए। अस्पतालों की स्थिति बडी खराब रही। शिक्षा की क्रान्ति की बात करें। मेरे क्षेत्र में पुराने क्षेत्र में शाहबाद डेरी एक स्कूल भवन का निर्माण हुआ और एक साल में वो जर्जर हो गया और गिर गया और मेरे यहां भी एक स्कूल रिठाला गांव का उसकी इमारत का निर्माण हुआ और वो इमारत के निर्माण में इतनी खामियां बरती गई कि वो बिल्डिंग भी अच्छी स्थिति में नहीं है। अस्पतालों के अंदर एक बहुत बड़ा रैकेट काम करता था। जवाहर रोगी कल्याण समिति का गठन शीला जी के समय में हुआ। जो भी स्थानीय एमएलए जिसके यहां भी एक अस्पताल होता है उसका वो चेयरमैन होता है। रोगी कल्याण के लिए काम होता है। उन लोगों ने क्या किया अध्यक्ष महोदय ईडब्ल्यूएस की एक व्यवस्था बनाई कि जो गरीब लोग है उनका इलाज सरकारी अस्पताल में नहीं हो पाता तो उनको प्राईवेट अस्पताल दें। 25 परसेंट का कोटा प्रावधान है कि जो डीडीए से लैंड प्राप्त हस्पताल हैं उन में इलाज की व्यवस्था कानून में की हुई है।

......व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नाम भेजो आप। बैठो आप। नाम भेजिये, नाम भेजो आप। आपको मौका मिलेगा। नहीं चर्चा के बाद। बैठिये। बैठिये। मैं माननीय सदस्य से अनुरोध कर रहा हूं अपना स्थान लें। आप जारी रखिये। आप बैठिये। आप बैठिये। बैठिये बैठिये ।

......व्यवधान......

श्री कुलवंत राणा: वो वीडिओ तुम देख लो घर जा करके आराम से असली है वो।

......व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैं आपको चेतावनी दे रहा हूं।

श्री कुलवंत राणा: वो वीडियो असली है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अजय जी बैठ जाईये, बैठ जाईये। बैठ बैठ जाईये। आप बैठिये बहुत शांति से सदन चल रहा है। अभी पॉल्यूशन पे चर्चा शुरू होने वाली है। आप उसमें अपना वक्तव्य रखिये, आप प्रदूषण अब आप के लिए विषय नहीं है क्या? प्रदूषण विषय नहीं है? प्रदूषण पर चर्चा नहीं चाहते क्या आप? दिल्ली के लोग सुनना चाहते है, आप बैठिये। बैठिये-बैठिए। बैठिये-बैठिए। बैठिये-बैठिए। प्रदूषण पर चर्चा नहीं चाहते आज ये और ना ही नेता, विपक्ष यहाँ पर उपस्थित हैं। बहुत ही दुख की बात है ये प्रदूषण पर चर्चा नहीं चाहते अब ये ।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: ये प्रदूषण पर भागना चाहते है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब सरकार जवाब देना चाहती है, विपक्ष उसमें चर्चा नहीं चाहता।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: प्रदूषण पर चर्चा नहीं करना चाहते हैं। ये प्रदूषण पर चर्चा नहीं करना चाहते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिये। बैठिये।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: जिस वीडियो को फर्जी कह रहे हैं वही वीडियो आतिशी अपने फेसबुक पर डाल रही हैं। वही वीडियो यूट्यूब पे डाली है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: जारी रखिए आप।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: और आप बताइयें क्योंकि प्रदूषण से भागना चाहते हैं इसलिए सब कुछ कर रहे हैं।

श्री कुलवंत राणा: अध्यक्ष महोदय मैं उस साफ सुथरी व्यवस्था का एक उदाहरण दे रहा हूं। मेरे यहाँ पर .....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप जारी रखिये।

श्री कुलवंत राणा: मेरे यहाँ पर अध्यक्ष महोदय...

......व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिये। आप बैठ जाईये। अभी आप आप चर्चा में भाग लीजिये, आपको मौका दे रहा हूँ मैं बोलने का। आप डिस्टर्ब कर रहे हैं हाउस को। हम आपको मौका दे रहे है। मैं आपको मौका दे रहा हूँ बोलने का, आप डिस्टर्ब कर रहे हैं, आप बैठिए आप।

......व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब बैठिये आप। चर्चा को आगे बढ़ने दीजिए।

श्री कुलवंत राणा: अध्यक्ष जी इनको बाहर निकालो। अध्यक्ष जी इनको बाहर ये डिस्टर्ब कर रहे हैं हाउस को। ये विघ्न डाल रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चर्चा को आगे बढने दीजिए। आप बैठिये।

श्री कुलवंत राणा: अरे व्यवस्था क्या मांगोगे, तुम्हारी व्यवस्था खराब है तुम जाओ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: वो देखिये अब बैठिये। नेता, प्रतिपक्ष को सदन में होना चाहिए। वो पिछले 3 दिन से नहीं आ रहे हैं।

---व्यवधान---

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिये। बैठिये।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: अध्यक्ष जी, मेरा वो नहीं आ पाया। अध्यक्ष जी, आज क्या बोल रहे हैं। गुरु तेग बहादुर जी की मान मर्यादा का सवाल नहीं है। कह रहे हैं, हमारी आतिशी की मान मर्यादा का सवाल है। आप देखिये, ये इनकी मानसिकता है। इस घटिया मानसिकता के कारण इन लोगों ने ऐसी बाते करी है। आज कह रहे आतिशी जी की मानसिकता, आप बता रहे हैं उनकी मान मर्यादा का। आप गुरुओं की मान मर्यादा को भूल रहे हैं। आप गुरुओं की मान मार्यादा को भूल रहे हैं। आप गुरुओं की मान मर्यादा को छोड़कर आप एक विशेष आदमी की मान मर्यादा की बात कर रहे हैं। आप एक विशेष आदमी की मर्यादा की बात कर रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही को चलने दें।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: आप गुरूओं की मर्यादा को छोड़कर आप आदमियों की मर्यादा की बात कर रहे हैं

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बहुत दुख की की बात है शान्तिपूर्वक सदन चल रहा है।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: आपको सोचना चाहिए बोलने से पहले आप क्या बोल रहे है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः और विपक्ष मजबूर कर रहा है चेयर को कि वो कार्रवाई करें। आप कार्रवाई के लिए मजबूर मत करिए मुझे, बैठ जाईये। मैं चाहता हूँ सदन शांति से चलें, प्रदूषण पर चर्चा हो। मुख्यमंत्री जी उस पर अपना वक्तव्य देना चाहती है। आप अपनी बात कहिए, अभी अभिभाषण पर चर्चा हो रही है उसमें आप भाग लीजिए। आपने अभी तक एक नाम नहीं भेजा है मेरे पास, आप नाम भेजिए विपक्ष का। तीन लोगो को। तीन लोगों को बाकी सत्र के लिए निष्कासित किया गया है जिसमें कुलदीप कुमार, जरनैल सिंह माननीय सदस्य और संजीव झा माननीय सदस्य। ठीक है।

----व्यवधान---

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अब आप बैठ जाइये। अब आप बैठ जाईये। कसूर ये ही है जो आप कर रहे हैं अब आप। अब आप डिस्टर्ब कर रहे हैं, बैठिये। बैठिए। बैठिये मैं प्रेम जी, माननीय सदस्य अपनी कुर्सी पर जाइए, कुर्सी पर जाईये। कुर्सी पे जाइए। शुरू करिए कुलवन्त राणा जी। मेरा सदस्यों से अनुरोध है कार्यवाही को चलने दे, बैठ जाईये, बैठ जाईये। हाँजी शुरू करिये।

श्री कुलवंत राणा: अध्यक्ष महोदय मैं कैसे वक्तव्य दे पाऊंगा अपना।

----व्यवधान---

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बैठ जाईये। बैठ जाईये। मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ। मेरा आपसे अनुरोध है आप बैठ जाईये। कार्यवाही को आगे बढ़ने दीजिये। बहुत अच्छी तरह सदन चल रहा है, आप इसको अव्यवस्था ना बनाएं। बैठिए, बैठिए। मैं अनिल जी, अगर यहां पर डिस्आर्डर क्रिएट किया गया या बैठ जाईये, बैठ जाईये। बैठ जाईये। बैठ जाईये। बैठिए। कुलवन्त राणा जी।

श्री कुलवंत राणा: अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय, हाउस को आर्डर में लाओ अध्यक्ष महोदय।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः आप बैठिये अनिल जी आप बैठिये। माननीय सदस्य अनिल शर्मा जी आप बैठिये। अनिल शर्मा जी आप बैठिये।

----व्यवधान---

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः चलिए शुरू करिये।

श्री कुलवंत राणा: अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी। आप बहुत अच्छी इंगलिश बोलते हो, प्लीज, बैठ जाओ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः सदन का समय खराब ना करे।

श्री कुलवंत राणा: हाउस को चलने दो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बहुत बढ़िया सदन चल रहा है। हर विषय पर चर्चा हो रही है। जनहित के मामलों पर बात हो रही है आपने एक 280 सबमिट नहीं करा। बैठिए आप।

----व्यवधान---

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः आप फिर सदन को गुमराह कर रहे हैं। आप ने नहीं दिया, आपने नहीं दिया। मेरे पास पूरी सूची है। कल छोड़िये, आज क्यों नहीं दिया। बैठिए, आप बैठिये। सत्तारूढ़ दल की तरफ से 16 सदस्यों के नोटिस आए। विपक्ष की तरफ से एक सिर्फ।

----व्यवधान---

श्री कुलवंत राणाः इसको बाहर करो अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अब आप बताईये। ना विपक्ष चर्चा में भाग लेना चाहता है, ना विशेष उल्लेख में भाग लेना चाहता हैं। कोई मुद्दा उठाना नहीं चाहते आप। बैठिए आप।

----व्यवधान----

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः सब लोग बैठ जाएं, बैठ जाएं सब बैठ जाएं। बैठिये नहीं ।

----व्यवधान----

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः मुझे नहीं सुननी। आप बैठिये सब बैठिये। आप भी बैठिये। बैठिये, बैठिये बैठिये आप बैठिये, मैं कह रहा हूँ। सब बैठेंगे, कोई नहीं खड़ा रहेगा। सिर्फ कुलवन्त राणा जी के अलावा

श्री कुलवंत राणाः अध्यक्ष जी मैं बता रहा था कि इन्होंने जो....

----व्यवधान----

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः कुलवन्त राणा जी ।

श्री कुलवंत राणाः ईडब्ल्यू एस के उपचार में भी कैसे घोटाला किया। अध्यक्ष महोदय अस्पतालों के अंदर इनके लोग इन्होंने बैठा दिए और वहाँ जो भी कोई गरीब आदमी, उसको बोलो, तेरा में इलाज करा दूंगा। अस्पताल में प्राइवेट में इतना पैसा खर्च होगा, इतने पैसे मुझे दे दो और प्राइवेट अस्पताल में उसको भिजवा देते थे। ऐसा गोरखधंधा भी इन्होंने चलाया। साफ सुथरी शासन देने वाले ये साफ सुथरी पूर्ववर्ती केजरीवाल सरकार के मैं कारनामें बता रहा हूँ। आपके सामने शराब घोटाला आया सबके समक्ष है। उसके साथ-साथ मेरे यहाँ अध्यक्ष महोदय ऐसे ही पूरी दिल्ली में में हुआ होगा। मेरे यहां विकास कार्य कराते समय, सड़क निर्माण के समय में जब सडक का

एस्टीमेट बनाया, नाले का भी एस्टीमेट बनाया और सच कह रहा हूँ जो मेरे बनाए हुए नाले थे, उसके ऊपर एक ईंट नहीं लगाई। सौ करोड के कम से कम टेंडर थे और ....

(समय की घंटी)

श्री कुलवंत राणा: ठेकेदारों ने बिना नालों पर ईंट लगाये इनकी मिलीभगत के कारण उनसे पैसा वसूल कर लिया और और सड़क भी दो माह के अंदर टूट गई। ये उदाहरण दे रहा हूं साफ सुथरी सरकार का। प्रशासनिक स्तर के ऊपर कितना भ्रष्टाचार था इनको मालूम होगा, शर्म आनी चाहिए इनको। तो ये साफ सुथरी व्यवस्था देने वालों की चर्चा कर रहा हूँ और इन लोगों ने शहर को बिगाड दिया अध्यक्ष महोदय और हम सब लोगों को दिल्ली की जनता ने चुना माननीय मोदी जी में, अमित शाह जी में विश्वास प्रकट किया। हमारे नेतृत्व में विश्वास प्रकट करके जब हमारी सरकार दिल्ली में आई तो हमारा दायित्व है जिसकी अभिभाषण के अंदर एलजी साहब ने चर्चा की है। बताया है कि हम एक बेहतर दिल्ली बनाने की जिम्मेदारी हमको दी है। इसमें पानी भी स्वच्छ और अच्छा हो और सड़कें भी अच्छी हो, यातायात व्यवस्था भी अच्छी हो, प्रदूषण भी ना हो। यमुना भी बेहतर, स्वास्थ्य सेवाएं भी अच्छी हो और शिक्षा व्यवस्था भी अच्छी हो। लॉ एंड ऑर्डर भी अच्छा हो और जन जीवन बेहतर हो और हर आदमी गर्व महसूस करे ये मेरा शहर है, ये दिल्ली मेरी है। सबके धर्मों के सम्मान की रक्षा भी हो, सबके त्यौहारों की व्यवस्था की चिंता भी दिल्ली की सरकार ने की है।

(समय की घंटी)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री कुलवंत राणा: उनको कम से कम प्रॉब्लम हो। तो मुख्य जो बात मैं कहना चाह रहा हूं, अध्यक्ष महोदय मैं उन विषयों पर तो आया ही नहीं हूँ, आपने घंटी बजाना शुरू कर दिया। तो मेरा मूल उद्देश्य कहने का है कि हम सब, हमारी सरकार, भाजपा की सरकार, दिल्लीवालों ने एक अपेक्षा की है हमसे, हमने पहले भी डिलिवर किया है, पूरे देश में भी हो रहा है और दिल्ली में फिर से एक बेहतर सरकार हमारी, जो बेहतर सेवा देने का संकल्प के साथ सरकार आगे बढ़ रही है, बहुत अच्छी योजनाएं हैं सारी। एक एक योजना महत्वपूर्ण है और आने वाले समय जो हमारी सड़कें हैं, इन्फ्रास्ट्रक्चर, रोड का जो लिंकेज है यूइआर टू हुआ, द्वारका एक्सप्रेस वे हुआ, यूईआर वन का बनना शेष है। खेखड़ा सिटी से जोड़ना शेष है, ट्रॉनिका सिटी से जोड़ना शेष है और जितने भी हमारे बड़े नाले हैं, इनके ऊपर भी हमें सड़क बनानी पड़ेगी क्योंकि दिल्ली को ज्यादा सड़कें चाहिए। दिल्ली

को सड़कों की आवश्यकता ज्यादा है क्योंकि दबाव ट्रैफिक का ज्यादा है और ट्रैफिक संतुलन ठीक रहे, ट्रैफिक व्यवस्था से अच्छे से चले। हमें लेन बढ़ाने की भी आवश्यकता है। सड़कों पर लेन निर्धारण नहीं है, कोई कहीं चल रहा है कोई कहीं चल रहा है इसके कारण भी झगड़े होते हैं। तो हमको काम बहुत करना है। दिल्ली की जनता का स्पोर्ट चाहिए और हमारी सरकार का चिंतन बहुत है। उस चिंता के साथ साथ सारा प्रारूप रोडमैप तैयार किया है। तो मैं इस अभिभाषण में जो बहुत सारे विषय लाया था लिख करके मैं बोलना नहीं चाहता लंबा हो जाएगा क्योंकि आगे की कार्रवाई भी होनी है। तो निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में एलजी अभिभाषण में जो पूरा रोडमैप तैयार किया है, बेहतर दिल्ली बनेगी और हमारी सरकार इस पर बहुत अच्छा काम कर रही है। उसके लिए बधाई देता हूँ रेखा सरकार को, उनके मंत्रिमंडल को और हमारे अधिकारियों को बहुत अच्छा काम आगे बढ़ा और आगे बढ़ेगा और हमारे दिल्ली के लोगों की सपनों की दिल्ली का निर्माण होगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री कुलवंत राणा: इसी बात के साथ ही माननीय मोदी जी, शाह जी, योगीजी के नेतृत्व में,

''बदला उत्तर प्रदेश, बदला राजस्थान, बदला हरियाणा,
रेखा सरकार ने भी ठाना अब बेहतर करके तानाबाना,
सुंदर होगी दिल्ली नहीं होगा बहाना,
हम सबका बस एक ही संकल्प है
मोदी जी की दिल्ली को विश्वस्तर का शहर बनाना
ये हम सबने है ठाना, देखेगा सारा ज़माना
आओ मिलकर गाये विकास का गाना।''

और साफ सुथरी व्यवस्था और झूठे नारे लगाने वाले, साफ सुथरी व्यवस्था देने में नाकाम हुए और साफ सुथरी व्यवस्था की चर्चा वे ना करें, उनके लिए ठीक नहीं है। उनकी व्यवस्था सारे देश ने और दिल्ली ने देख ली है। उनको शर्म आनी चाहिए और पंजाब की व्यवस्था भी उन्होंने बिगाड़ दी है। वो व्यवस्था भी हम ही सुधारेंगे।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद। अब मैं माननीय सदस्य- श्री रवि कांत जी।

श्री कुलवंत राणा: तो ज्यादा ना बोलते हुए आपने मुझे इस अभिभाषण में चर्चा करने का अवसर दिया उसके लिए हार्दिक रूप से आपका बहुत-बहुत आभार, पुन: रेखा सरकार और उनके मंत्रिमंडल को बहुत बहुत बधाई।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद। अब माननीय सदस्य रवि कांत जी।

श्री रवि कांत: सर्वप्रथम इस सदन में उपस्थित माननीय अध्यक्ष जी, दिल्ली की यशस्वी मुख्यमंत्री और हमारे सभी माननीय मंत्रीगण, माननीय सभी विधायकगण सभी को मेरा सादर प्रणाम। अध्यक्ष जी, आज जो एलजी अभिभाषण के लिए आपने मुझे प्रस्ताव रखने के लिए मौका दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद। मैं माननीय उपराज्यपाल महोदय द्वारा प्रस्तुत अभिभाषण का धन्यवाद पूरे समर्थन के साथ करता हूँ। आज इस सदन पटल पर जो दस्तावेज माननीय एलजी साहब द्वारा रखा गया है, वह केवल पन्नों का पुलिंदा नहीं बल्कि मेरी दिल्ली, विकसित दिल्ली का ब्लूप्रिंट है। जिसमे ऐतिहासिक एक लाख करोड़ रुपये का बजट 2025-26 में जो दिल्ली के विकास के लिए दिया गया, उसके लिए माननीय मुख्यमंत्री जी का भी बहुत बहुत धन्यवाद कि उन्होंने दिल्ली को सशक्त, समृद्ध, शिक्षित और विकसित दिल्ली बनाने के लिए दिल्ली के लिए जो काम किया उसके लिए दिल से धन्यवाद। साथ साथ हमने कई सारी चीजें इसमें देखी है की चाहे ड्रेनेज सिस्टम की बात हो, जैसा मुझे ध्यान है कि 1976 में जो दिल्ली का ढांचा, जो दिल्ली की आबादी थी, लगभग साठ लाख के आसपास थी और आज 2025 में दिल्ली ढ़ाई करोड़ से ऊपर की आबादी में हैं। तो दिल्ली को ड्रेनेज सिस्टम, उसका मास्टर प्लान में लाने का काम जो देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के सेवा पखवाड़े के तहत जो किया गया उसके लिए केंद्र सरकार के साथ मिलकर 57,000 करोड़ रुपये का जो ये राशि दिल्ली को दी गई है, सच्चे मायने में दिल्ली का जो ड्रेनेज सिस्टम है उसको ठीक प्रकार से करने का काम हमारी सरकार ने किया। माँ यमुनाजी की सफाई की बात हो, चाहे अनुसूचित वर्ग के लिए जो एक एतिहासिक फंड एक एससी एसटीज के लिए जो दिया गया है उसके लिए भी मैं बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ। साथ में जो एजुकेशन बिल जो बढ़ते हुए प्राइवेट स्कूलों की मनमानी थी, उसको किस प्रकार से रोकने का काम किया है, उसके लिए भी मैं धन्यवाद करता हूँ। चाहे वो सीएम श्री के तहत हर एक बच्चे तक शिक्षा पहुंचे और दिल्ली का हर एक छात्र छात्राएं विकसित हों, शिक्षित हो उसके ऊपर ध्यान दिया गया है। चाहे कोर्ट फीस की जो अभी एक अमेंडमेंट बिल 2026 का आ रहा है। जनविश्वास बिल पर भी अभी हम चर्चा करेंगे। उसके साथ साथ जन आरोग्य मंदिर जो मोहल्ला क्लिनिक जो पहले हुआ

करते थे उनकी सारी स्थिति अभी मुझ से पूर्व कुलवंत राणा जी ने भी आपके सामने रखी। दिल्ली की जो स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ थी, सारी की सारी चरमरा गई थी, सारी की सारी खराब हो गई थी, उनको जनआरोग्य में करके लोगों तक सुविधाएं पहुंचाए, उस पर काम किया। उसके साथ साथ अध्यक्ष महोदय, मैं ये बात करना चाहता हूँ पैरा नंबर 60 जो नगर निगम को दिल्ली सरकार द्वारा जो ये इतनी बड़ी राशि दिल्ली को विकसित दिल्ली बनाने के लिए दी गयी है, उसके ऊपर चर्चा करना चाहता हूँ। अध्यक्ष महोदय वर्षों से दिल्ली प्रदूषण और गंदगी की दोहरी मार झेल रही थी। पिछली सरकारों ने केवल वादे किए, लेकिन हमारी सरकार ने ग्राउंड जीरो पर काम किया है। मुझे गर्व है कि उपराज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण के पैरा नंबर 60 में जिस क्रांतिकारी कदम का जिक्र किया है वह दिल्ली की तस्वीर बदलने वाला है। हम सब जानते हैं कि दिल्ली के प्रदूषण में धूल का एक बहुत बड़ा हाथ है। आज हमारी सरकार ने सुनिश्चित किया है कि एमसीडी को संसाधनों की कमी ना हो। इस अभिभाषण में स्पष्ट किया गया है कि सैनिटेशन व्यवस्था को सुदृढ़ करने और प्रदूषण नियंत्रण करने के लिए सरकार ने जो एमसीडी को लगभग 23 सौ करोड़ रुपए का जो वित्तीय सहायता देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है, उसके लिए पूरी दिल्ली और हम सब लोग मिलकर माननीय मुख्यमंत्री जी का बहुत बहुत आभार व्यक्त करते हैं। उसके साथ साथ अध्यक्ष महोदय जो तकनीक का उपयोग इसमें किया गया है यह 21वीं सदी का भारत है यहां सफाई अब आधुनिक मशीनों से भी की जाएंगी। हमारे सफाई कर्मचारियों को एक बहुत बड़ा इसमें मतलब एक योगदान मिला है कि वो सफाइयाँ झाड़ू से करते थे, लेकिन आज उन्हें मशीनों को भी, मशीनें दी जा रही है जिससे की वो एक एक जगह एक एक कोने तक जाकर सफाई व्यवस्था दिल्ली की मजबूत कर पाएंगे। इस 2300 करोड़ के बजट में हम दिल्ली की सड़कों पर 70 एमआरएस मशीनें उतारने जा रहे हैं, ये मशीनें सड़कों की धूल को हवा में घुलने से रोकेंगी इसके साथ ही एक हजार लिटर पिकर मशीन्स का भी प्रावधान है। अब दिल्ली के कोने-कोने से कचरा बीनने का काम तकनीक के माध्यम से होगा जिससे हमारे सफाई कर्मचारियों को भी सम्मानजनक कार्यस्थिति मिलेगी। हमारी सरकार हमेशा लॉन्ग टर्म विजन पर काम करती है, हम सिर्फ वो नहीं करते कि गडढे भरे और काम को खत्म कर दिया, हमारा काम है कि विजन पर काम करना, उस मिशन पर काम करना जिससे कि हमारी सरकार की नीति अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। तो लॉन्ग टर्म विषय की मैं बात करूँ ये सहायता कोई 1 दिन की नहीं बल्कि यह सहायता अगले 10 वर्षों के लिए सुनिश्चित की गई है, यह दर्शाता है कि हमारी सोच तत्कालिक नहीं बल्कि दूरगामी है।

माननीय अध्यक्ष जी, इसके अंदर जो 70 बड़ी मशीनें और छोटी मशीनें जब दिल्ली की सड़कों पर उतरेंगी तो प्रदूषण भी कम होगा, दिल्ली चमकेगी भी और दिल्ली का जो स्वपन है दिल्ली समृद्ध और सशक्त बने उसको भी हम मिलकर साकार करेंगे।

अभी लगभग ईवी पॉलिसी के माध्यम से 10 महीने के अंदर जो 1450 जो हमारी इलेक्ट्रिक बसेस हैं वो जो दिल्ली को दी गई हैं, सच्चे मायने में दिल्ली के लिए यह एक राहत वाला विषय बन चुका है क्योंकि दिल्ली धरातल तक आकर एक एक व्यक्ति वहाँ पर जाकर उसको देखता है।

(समय की घंटी)

श्री रवि कांत: यह कदम प्रमाण है कि समस्याओं का रोना हम रोते नहीं हम समाधान करते हैं। मैं इस ऐतिहासिक पहल के लिए माननीय उपराज्यपाल और दिल्ली की यशस्वी मुख्यमंत्री, हमारी सरकार का अभिनंदन करता हूँ कि इस प्रकार की योजनाओं से दिल्ली को सशक्त करने का जो काम दिल्ली सरकार ने किया उसके लिए धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष जी, एक जन आरोग्य मंदिर जो हमारे दिल्ली के लिए एक स्वास्थ्य सेवा को समृद्ध करने के लिए काम करता है, हमारी सरकार से मेरा निवेदन है कि उसमें अगर हम इस काम को कर सके तो करना चाहिए। अंत्योदय के जिस मूल मंत्र को लेकर हमारी भारतीय जनता पार्टी और हमारी सरकार काम करते हुए चल रही है, हमनें स्वास्थ्य सेवाओं को हर गरीब की चौखट तक पहुंचाने का काम किया है।

महोदय, हम लोग कभी भी संतोष करके नहीं बैठते, हम निरंतर सुधार और विकास को अगले स्तर पर ले जाने में विश्वास रखते हैं। एक युवा प्रतिनिधि होने के नाते मेरा मानना है कि हमें इनफ्रास्ट्रक्चर के साथ साथ टेक्नोलॉजी को भी अगली क्रांति की ओर बढ़ाना होगा। माननीय प्रधानमंत्री जी का जो सपना है 'डिजिटल इंडिया' और 'स्वस्थ भारत' उसी सपने को साकार करने के लिए हमें इसके अंदर जन आरोग्य मंदिर में एआइ क्योस्क का एक वो लगाना चाहिए सेटअप जिससे कि एक मिनट के अंदर बहुत सारी ऐसी सुविधाएं हैं, क्योंकि टेक्नोलॉजी इस भारत का एक विज़न बनना चाहिए, टेक्नोलॉजी हम तकनीक से आगे बढ़ें, ऐसा भी मैं आपसे आग्रह करता हूँ, क्योंकि ये सारा जितना भी जिसमें बहुत सारी सुविधाएँ हैं, जो एआइ के थ्रू हम एक एक व्यक्ति तक दे सकते हैं। मेरा माननीय मंत्री जी से भी आग्रह है कि हमारी सरकार हमेशा नवाचार का स्वागत करती है, एआई के पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर अपनाएं और हम 'विकसित भारत' और 'डिजिटल भारत' के रूप में अपनी दिल्ली को भी लेकर आए। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया,

उसके लिए मैं बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। हमारी दिल्ली सशक्त और एक मजबूत दिल्ली के रूप में उभर के आएगी पूरे विश्वास के साथ इस बात को कहता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आप सबको विदित है कि अब नेवा के माध्यम से कार्यवाही, पेपरलेस कार्यवाही है और ऑनलाइन कार्यवाही है। कोई पेपर अभी तक इस सत्र में भी, पिछले सत्र में भी हार्डकॉपी हमने सप्लाइ नहीं किया है। आप से भी अनुरोध है कि आप अपनी स्पीच को भी अगर अपने स्क्रीन के माध्यम से, जैसे मैं अपने स्क्रीन के माध्यम से बातचीत कर रहा हूँ, आप भी करेंगे तो और अच्छा होगा।

दूसरा जो अटेन्डेन्स का विषय है, जैसे कल हमारे दो माननीय सदस्य, श्री कुलवंत राणा जी और नीरज बैसोया जी वो आये थे सदन में, क्योंकि उन्होंने अपना सिस्टम ऑन नहीं किया तो उनकी अटेन्डेन्स नहीं लगी, मतलब वो आज भी हमारे बीच में जो सदस्य आए हैं और नहीं लगी उसमें एक कुलदीप कुमार- माननीय सदस्य और संजीव झा- माननीय सदस्य, इन्होंने अपना सिस्टम ऑन नहीं किया था। तो मैं सचिव महोदय से कहूंगा कि इनकी अटेन्डन्स जो है वो, क्योंकि ये सॉफ्टवेर में हम अपने हाथ से चेंज नहीं कर सकते इसको। तो नीरज जी कल जैसे आपको कॉल भी किया गया था, तो आप लिख के दे दीजिये तो उसको हम उसी तरह से कर लेंगे। आज जो सदस्य अभी तक मेरे पास जो है शेडयूल उसमें आले मोहम्मद इकबाल, अमानतुल्लाह खान- माननीय सदस्य, माननीय- नेता विपक्ष- आतिशी जी, माननीय सदस्य- श्री गोपाल राय जी, माननीय सदस्य और मंत्री- श्री कपिल मिश्रा जी, माननीय सदस्य- श्री कुलदीप कुमार जी, माननीय सदस्य- श्री पुनरदीप सिंह साहनी जी, माननीय सदस्य- राम सिंह नेताजी, माननीय सदस्य- श्री संजीव झा जी, माननीय सदस्य- श्रीमती शिखा राय जी और माननीय सदस्य- विशेष रवि जी, इन सबकी ऐब्सेंट इसमें लगी हुई है और इसमें दो सदस्य जो आयें थे जिन पर कार्रवाई हुई है, छोड़ करके सबकी अटेन्डेन्स यहाँ पर लगी हुई है। पुनरदीप जी आ गए हैं तो एक मिनट, पुनरदीप जी आपका, अब पुनरदीप जी की अटेन्डेन्स आ गयी है।

तो अब कार्यवाही को आगे बढ़ाते हैं और अगला नाम, माननीय सदस्य- श्री अशोक गोयल जी अपनी बात कहेंगे। विपक्ष के सदस्यों से मेरा अनुरोध है वो भी नाम दे दें इस चर्चा में अपनी बात कहने के लिए।

.... व्यवधान .....

श्री मुकेश कुमार अहलावत: अध्यक्ष जी....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: जी।

श्री मुकेश कुमार अहलावत: सर, आपने कल.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं आप बैठिये, ये देखिये, अभी ना वो विषय खत्म हो चुका है, फॉरेन्सिक साइंस लैब को आपके कहने से दिया था। अशोक जी शुरू करिये आप।

.... व्यवधान .....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, मैं इस पर बिल्कुल एलॉउ नहीं करूंगा आज। जो बात खत्म हो चुकी उसको और फिर आप, आपके ही द्वारा कहा गया था, आपके ही, आप स्वयं आएं थे मेरे कमरे में, आपने ही रखा था यह प्रस्ताव।

.... व्यवधान .....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, विपक्ष के उपनेता स्वयं मेरे कक्ष में आए, उनके साथ वहाँ पर श्री संजीव झा आए, दोनों ने यह मांग रखी कि वो जो रिकॉर्डिंग है उसकी फॉरेन्सिक जांच कराई जाए। आपकी मांग पर मैंने फॉरेन्सिक साइंस लैब को भेजा है। आज आप उसी विषय को फिर, जब आपकी मांग मान ली गई है, फिर क्यों?

.... व्यवधान .....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य- श्री अशोक गोयल जी। बैठिये। बैठिये। बैठिये-बैठिये।

.... व्यवधान .....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मार्शल, सोमदत्त जी को बाकी सत्र के लिए बाहर किया जाता है। इनको बाहर ले जाओ।

(माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार माशर्ल्स द्वारा माननीय सदस्य- श्री सोमदत्त को सदन से बाहर ले जाया गया।)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही 15 मिनट के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही 15 मिनट के लिए स्थगित की गई।)

सदन पुनः अपराह्न 12.59 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता) पीठासीन हुए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः श्री अशोक गोयल जी, शुरु करिये।

श्री अभय कुमार वर्मा, माननीय मुख्य सचेतकः माननीय अध्यक्ष जी।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः नाम ले दो।

श्री अभय कुमार वर्मा, माननीय मुख्य सचेतकः .... संजीव झा, कुलदीप कुमार, जरनैल सिंह और सोमदत्त जी को पूरे सत्र से बाहर किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः ठीक है, धन्यवाद। हां जी, शुरु करिये। बैठ जाइये, बैठ जाइये, बैठ जाइये।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बैठ जाइये। आप चर्चा होने दीजिए। सदन चल रहा है, सब लोग भाग ले रहे हैं आप नाम तक नहीं भेज रहे बोलने के लिए। नेता, विपक्ष सदन में नहीं आ रही हैं यह अच्छी बात नहीं है।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बैठिये, आप शुरु कर दीजिए, शुरु कर दो आप।

..... व्यवधान ....

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्रीः ये पोल्यूशन पर भागना चाहते हैं, इनको पोल्यूशन पर चर्चा नहीं करनी पर आप इनको भागने मत देना। हमने पोल्यूशन पर चर्चा करनी है और ये पोल्यूशन की चर्चा से भागना चाहते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः मैं तभी कार्यवाही नहीं कर रहा। मैं चाहता हूं पोल्यूशन की चर्चा में आप रहें। आप चाहते हैं मैं कार्यवाही करुं और आपको निष्काषित करूं जबकि मैं चाहता हूं आप चर्चा में रहें, प्रदूषण की चर्चा में आप भाग लें। अब आप प्रदूषण की चर्चा से क्यों भाग रहे हैं। अब बैठिये आप।

..... व्यवधान ....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: अध्यक्ष जी, ये माननीय सदस्य, ये बार-बार कहते हैं आपके लोग। आप जब अध्यक्षीय आसन पर बैठे हैं तो ये सदन में आप ये सब आपके हैं मगर ये इतना असंसदीय और असंवैधानिक वक्तव्य देते हैं कि 'आपके लोग'।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अजय जी, अगर आपने अब के बाद ये मैंने बता दिया है आपको। आपके उपर सख्त कार्यवाही होगी। अगर आप संसदीय प्रणाली को चुनौती देंगे व्यवस्था को, ये व्यवस्था का प्रश्न है, व्यवस्था के प्रश्न पर कोई कंप्रोमाइज नहीं होगा चेयर से, समझ लीजिए आप। बैठ जाइये आप। मेरा आपसे अनुरोध है आप चर्चा में भाग लीजिए। आप कृपया करके बैठिये । आप माननीय सदस्य हैं, चुनकर के आए हैं। जनता की आपसे अपेक्षा है, बैठिये आप। आप भाग लीजिए, आपको जो क्रिटिसाइज करना है करिये गवर्नमेंट को, मैं आपको अलाउ करूंगा न।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: और आप बताइये। एक फेयर डिस्कशन हम चाहते हैं यहां पर। आप विपक्ष के सदस्य हैं, आपको जो कहना है आप कहिये मैं आपको समय दूंगा फिर आप उसके बाद भी शोर मचा रहे हैं आप। आपको मौका मिलेगा, आपको अपनी बात कहने का मौका मैं दूंगा। यहां घड़ी लगी हुई है। जितना समय सत्ता पक्ष के सदस्यों को दिया जा रहा है, उतना समय मैं आपको दूंगा आप अपनी बात कहिये क्यों बात से भाग रहे हैं। अब बैठिये आप।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप क्यों इतना। आपने जो कल कहा मैंने उसको कर दिया अब बैठ जाइये अब आप क्या है, बैठिये।

..... व्यवधान ....

श्री मोहन सिंह बिष्ट, माननीय उपाध्यक्ष: अध्यक्ष जी, मेरा पाइंट आफ आर्डर है।

..... व्यवधान ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही लंच तक के लिए पौने 2 बजे हम फिर मिलेंगे। 45 मिनट का लंच ब्रेक है।

(सदन की कार्यवाही अपराह्न 1.45 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

सदन अपराह्न 01.49 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेंद्र गुप्ता) पीठासीन हुये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री अशोक गोयल जी, समय का सभी को ध्यान रखना होगा क्योंकि आज एजेंडे पे बहुत सारी आइटम्स हैं और 5 मिनट प्रत्येक सदस्य के लिए सुनिश्चित किए गए हैं।

श्री अशोक गोयल: माननीय अध्यक्ष जी माननीय उपराज्यपाल जी के अभिभाषण पर माननीय मंत्री श्री रविन्द्र इन्द्राज जी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव पर आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। माननीय उपराज्यपाल जी का अभिभाषण केवल शब्दों का संकलन नहीं बल्कि विकास सुशासन और जन कल्याणकारी रेखा गुप्ता जी की सरकार का स्पष्ट रोड मैप है। रेखा गुप्ता जी की सरकार गरीबों को समर्पित सरकार है, युवाओं के सपनों को साकार करने वाली सरकार है। महिलाओं के नेतृत्व में दिल्ली का विकास करने वाली सरकार है और व्यापारियों को सुरक्षा प्रदान करने वाली सरकार है, साथ ही साथ सनातन संस्कृति को मजबूत करने वाली सरकार है। एक तरफ रेखा गुप्ता जी की सरकार सनातन संस्कृति को मजबूत कर रही है और दूसरी तरफ जो विपक्ष है वो गुरू तेग बहादुर साहब गुरूओं का अपमान करने में सबसे आगे है और मैं माननीय अध्यक्ष जी जिस तरह से विडियो को ये लोग फर्जी बता रहे हैं और जिस तरीके से सदन का अपमान कर रहे हैं।.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः मुद्दे पर, मुद्दे पर बात करिये।

श्री अशोक गोयलः इनके ऊपर सख्त कारवाई होनी चाहिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अभिभाषण पर बात, मैं कोई और बात अलाउ नहीं करूंगा।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः करिये।

श्री अशोक गोयलः माननीय अध्यक्ष जी, पहली बार, पहली बार दिल्ली में 1 लाख करोड़ का ऐतिहासिक बजट दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी ने प्रस्तुत किया और मैं साथ ही साथ एक और बात कहना चाहता हूं कि उन्होंने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के साथ जो.. एमओयू किया है और आरबीआई को आधिकारिक रूप से दिल्ली सरकार का बैंकर बनाया है। यह एक बहुत

बड़ा कदम है। इससे दिल्ली को कम ब्याज पर पैसा मिलेगा। दिल्ली का कैश मैनेजमेंट बहुत बेहतर होगा। दिल्ली का जो भी कैश है उसको ऑटोमेटिकली रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया निवेश करेगा और यह हमारे कैश मैनेजमेंट के अंदर एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर साबित होगा। माननीय अध्यक्ष जी 6 जनवरी 2026 को इससे पहले माननीय मुख्यमंत्री जी ने कई बैठकें हमारे देश की माननीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जी के साथ की और 6 जनवरी 2026 को यह जो समझौता हुआ है। ऐसे सुधार की आवश्यकता लंबे समय से थी लेकिन पिछली सरकारें इसको करने में नाकामयाब रही लेकिन हमारी दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री जी ने इसको करके दिखाया और उन्होंने बताया यकीन है तो रास्ता निकलता है। यकीन है तो रास्ता निकलता है। हवा की ओट लेकर भी दिया जलता है। यह माननीय रेखा गुप्ता जी ने हमारी इस आरबीआई के साथ समझौता करके दिल्ली के कैश मैनेजमेंट को बेहतर करने का प्रयास किया है। दिल्ली के स्वास्थ्य की चिंता उन्होंने 13% बजट दिल्ली के स्वास्थ्य को दिया। दिल्ली के गरीब लोगों को दिल्ली के मध्यमवर्गीय लोगों को 70 वर्ष से जो ऊपर के लोग थे, जो बुजुर्ग थे, जिनको के एक सहारे की जरूरत थी। उसको रेखा गुप्ता जी की सरकार ने आयुष्मान भारत योजना से जोड़ा। 20 फरवरी 2025 को जब उन्होंने कैबिनेट उनकी मंत्रिमंडल की पहली कैबिनेट की मीटिंग हुई उसी में उन्होंने यह फैसला लिया कि हम आयुष्मान भारत योजना दिल्ली में लागू करेंगे और दिल्ली के जो गरीब लोग हैं जो कि पिछले कई वर्षों से वंचित थे। पूरे देश में इस योजना का लाभ मिल रहा था लेकिन दिल्ली में नहीं मिल रहा था और 70 वर्ष से ऊपर के भी जो हमारे बुजुर्ग लोग थे उन पर भी यह उन्होंने योजना लागू करने का पहला पहले ही दिन फैसला किया। 672551 आयुष्मान भारत कार्ड अभी तक दिल्ली में बन चुके हैं। 70 वर्ष से ऊपर के लोगों के लिए 262383 कार्ड बन चुके हैं। 188 हॉस्पिटलों में इलाज हो रहा है। जिसमें से 137 निजी हॉस्पिटल हैं जो कि बड़े हॉस्पिटल हैं। 51 सरकारी हैं। और मुझे यह बताते हुए गर्व है कि 19,287 मरीजों का अभी तक इस योजना के अंतर्गत इलाज माननीय अध्यक्ष जी हो चुका है। और एक सबसे बड़ी बात ईडब्ल्यूएस कैटेगरी में निजी अस्पतालों में अभी तक जो इलाज हो रहा था सिर्फ 2 लाख 20 हजार जिनकी मासिक आय थी उनका होता था। यानी कि 18 हजार 333 रूपये जिनकी मासिक आय है 2 लाख 20 हजार रूपये सालाना आय लेकिन उसको बढ़ाकर 5 लाख रूपये तक करना यानी कि अब जिनकी मासिक आय 41 हजार 666 रूपये है वह भी निजी हॉस्पिटलों में जो हमारे मध्यम वर्गीय परिवार के लोग हैं जो हमारे दिल्ली के जो लोग हैं वह इलाज करा सकेंगे। एक बड़ा फैसला दिल्ली की सरकार ने लिया है।

(समय की घंटी)

श्री अशोक गोयल: 37 हॉस्पिटलों में हॉस्पिटल इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट सिस्टम लागू हो गया है। 16 डायलिसिस सेंटर खुले जिसमें 300 मशीनों में निशुल्क और किफायती रेट पर यह योजना लागू है। और मैं अब यह कह सकता हूं कि इलाज के अभाव में माननीय अध्यक्ष जी:

''इलाज के अभाव में अब सांसे टूटती नहीं है।
गरीबों की जेबें अब अस्पताल में टूटती नहीं है।
आयुष्मान का कवच है, रेखा जी और मोदी जी का साथ है।
10 लाख का बीमा हर गरीब हर पीड़ित हर
मध्यम वर्गीय परिवार के और बुजुर्ग के पास है।''

और....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद धन्यवाद ।

श्री अशोक गोयल: माननीय अध्यक्ष जी मैं सिर्फ दो मिनट में अपनी बात को समाप्त करूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: 2 मिनट नहीं , 5 मिनट पूरे हो गये।

श्री अशोक गोयल: अटल कैंटीन एक बड़ी योजना माननीय अध्यक्ष जी हमारी दिल्ली की मुख्यमंत्री ने शुरू की। अटल इरादा के कोई भूखा ना सोए उसके लिए, हमारा गरीब है, रेहडी मजदूर वाला है, मजदूर है, फैक्ट्री में काम करने वाला है। उसके लिए दाल, चावल और रोटी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये धन्यवाद, धन्यवाद , धन्यवाद।

श्री अशोक गोयल: माननीय अध्यक्ष जी,

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब मैं....

....व्यवधान...

श्री अशोक गोयल: मैं अपनी बात एक मिनट में समाप्त करूंगा। शिक्षा को लेकर मैं हमारे शिक्षा मंत्री और माननीय अध्यक्ष जी ने 19% का बजट दिया और पिछली सरकारों ने शिक्षा को लेकर जिस तरीके से काम किया......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद भाईसाहब, धन्यवाद। अब मैं अगले वक्ता को बुला रहा हूं। माननीय सदस्य श्री अनिल झा।

....व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: हो गया, हो गया। अभी तो आपको....

....व्यवधान...

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी, ये मान नहीं रहे आप इनको भी तो बाहर निकाल दो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप देखो मुझे लग रहा है आप अपना नंबर लगवाना चाह रहे हो आज।

....व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बार-बार आप अच्छा खासा हाउस चल रहा है

डॉ. अजय दत्त: आप सबके लिए एक है ना

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अभी शांति रखिए आप। मेरी बिना इजाजत के कृपया मत बोलिए। आप माननीय सदस्य हैं, सीनियर मेंबर हैं कितनी बार आप चुनकर आ चुके हैं फिर भी आप

डॉ. अजय दत्त: आदरणीय अध्यक्ष जी फेयर रखा करो it should be fair

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अनिल जी शुरू करिये।

डॉ. अजय दत्त: करिए, करिए, करिए।

श्री अनिल झा: आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने एलजी के प्रस्ताव पर मुझे बोलने का मौका दिया है मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं और इस सदन में मैं अत्यंत खेद के साथ गंभीर विषयों के साथ-साथ उपराज्यपाल महोदय के प्रस्तुत प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। महोदय, मैं यह प्रयास करूंगा सत्ता पक्ष के मेरे साथी जो अभी नए-नए साथी हैं कृपया वह सदन की गरिमा और महिमा को भी सीख लें। सदन के अंदर सत्ता पक्ष और विपक्ष अपने-अपने विषय रखता है। और मैं व्यक्तिगत रूप से सरकार के किसी व्यक्ति के खिलाफ कोई बात नहीं कर रहा। लेकिन जो नियमावली है खासकर प्रदूषण को लेकर के जो विषय पर चर्चा पिछले डेढ़ दो महीने से चल रही है, हम उस पर चर्चा कर रहे हैं। प्रस्ताव जब एलजी साहब के द्वारा रखा गया दिल्ली की डेवलपमेंट को लेकर के हमें लग रहा था दिल्ली के साथ न्याय होगा। उपराज्यपाल जी जब प्रस्ताव रखते हैं तो हम समझते हैं वह अपना एक विशेष विचार रख रहे हैं दिल्ली को अच्छी तरक्की पर ले जाने के लिए। लेकिन ऐसा लगता था वो एक दस्तावेज पढ़ रहे हैं जो उनके हाथ में दे दिया गया है। दिल्ली के अंदर प्रदूषण का मामला इतना गंभीर है कि बुजुर्गों की तबीयत खराब हो रही है। सबसे बड़ा बात है अध्यक्ष जी टूरिज्म कोलैप्स हो रहा है। टूरिज्म कोलैप्स हो गया। विदेशी मेहमान आना नहीं चाह रहे हैं। पहले साइबेरिया से लाखों की तादाद में पक्षी आते थे प्रदूषण के

कारण से उन पक्षियों तक ने दिल्ली में आना बंद कर दिया है। महोदय, मेरा यह मानना है कि प्रदूषण को लेकर के सरकार की तरफ से जो गंभीर प्रयास किए जाने चाहिए थे प्रयास किया होगा। सिरसा जी ने प्रयास किया होगा पर्यावरण मंत्री के नाते लेकिन मैं देख रहा था कई बार, कई बार

....व्यवधान.....

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय मंत्री: आप अपनी छत पर बैठकर के अब उनकी गिनती कर रहे हैं। आपके पास में कोई आंकड़ा है साइबेरियन बड्र्स नहीं आ रहे।

....व्यवधान.....

श्री अनिल झा: अध्यक्ष जी, मैं मंत्री जी के सम्मान में बैठ गया। अध्यक्ष जी, इजाजत दो मंत्री जी के सम्मान में बैठ गया था मैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं, आप बोलो।

श्री अनिल झा: तो मेरा मेरा हमारे पास आंकड़ा है। डेढ़ लाख के आसपास साइबेरियन पक्षी आते थे। इस बार 10,000 भी नहीं आए हैं। आप गिनवा लीजिए उसको मंत्री जी। आपके पास सरकार है, आंकड़े है, सब कुछ है। मेरा यह मानना है हेल्थ को लेकर के जो एलजी साहब को अपना विषय रखना चाहिए था। जितने भी मोहल्ला क्लीनिक थे एक ईगो सेटिस्फेक्शन हुई उसको आरोग्य धाम करके अच्छी बात है सरकारें अपना काम करेंगी लेकिन मेरे किराड़ी के अंदर जहां पर लगभग 35 मोहल्ला क्लीनिक थे उसमें मात्र एक भी आरोग्य धाम नहीं बनाया गया ऐसे ही दिल्ली की अनॉथराइज कॉलोनियों में ना जाने कितनी क्षेत्रों में हुआ अनॉथराइज कॉलोनियों में आदरणीय अध्यक्ष जी 60 लाख लोग रहते हैं झुग्गियों में लगभग लगभग 20 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं अगर झुग्गियों और अनॉथराइज कॉलोनी के अंदर आरोग्य मंदिर अगर समय पर ठीक से बन जाए जो आप बनाना चाहते हैं स्वास्थ्य मंत्री जी, तो इसके लिए सारी जनता आपको बहुत-बहुत आभार व्यक्त करेगी और धन्यवाद देगी।

दिल्ली के अंदर तीसरा सबसे बड़ा विषय है पानी का। आदरणीय अध्यक्ष जी देश के अंदर यह देखा गया है इंदौर के अंदर लोग दूषित पानी पी के मरे हैं। गुजरात के अंदर लोगों को टाइफाइड हुआ है। गांधीनगर जैसे क्षेत्र में हुआ है। हम दिल्ली के अनाधिकृत बस्तियों में पवन शर्मा जी बैठे हुए हैं। पूछ लीजिए उनके सीवर लाइन का प्रोजेक्ट का क्या हाल हुआ है, वहां पर पानी की क्या दशा है। यहां पर किसी व्यक्ति के खिलाफ नहीं हैं हम। लेकिन आदरणीय, आदरणीय अध्यक्ष जी मैं मंत्री जी से आपके माध्यम से आग्रह करके हाथ जोड़ना चाहता हूं। दिल्ली की सारी

जनता जनार्दन आपके लिए है। अनॉथराइज कॉलोनियों के साथ कम से कम ये भेदभाव नहीं होना चाहिए। झुग्गियों के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए, जहां पूर्वांचल के लोग रहते हैं, वहां भेदभाव नहीं होना चाहिए, जहां पर दलित लोग रहते हैं, वहां भेदभाव नहीं होना चाहिए, जहां फॉरवर्ड कास्ट के गरीब रहते हैं, वहां भेदभाव नहीं होना चाहिए। ऐसा सरकार को प्रतीक नहीं होना चाहिए, ना दिखना चाहिए कि सरकार पूंजीपतियों की सरकार है। सामंतियों की सरकार है। अगर पूंजीपति और सामंती लोग मिलकर के गरीब-गुरवा का शोषण करेंगे तो वो न्यायोचित नहीं कहलाता है। मेरा अध्यक्ष जी।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण मंत्री: माननीय सदस्य केवल एक बात का जवाब दे दें। आपको किराड़ी विधानसभा के मतदाता सुन रहे हैं। 11 साल आपके किराड़ी मतदाताओं को कोई भी परेशानी नहीं हुई ना जल बोर्ड से। आपके किराड़ी में हर घर में 24 घंटे साफ पानी आया। सीवर की सारी लाइनें डल गईं। क्या ऐसा हुआ या नहीं हुआ केवल इतना बता दें।

श्री अनिल झा: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय मंत्री जी के जो शब्द मेरे मुंह से कहलवाना चाहते हैं, मैं बोलूंगा ही नहीं। आदरणीय मंत्री जी बहुत ही ओजस्वी मंत्री हैं, उनकी प्रशंसा है वो अपना सार्थक प्रयास कर रहे हैं। मेरा ये कहना है के पिछले आठ महीनों में जो दूषित पानी जल बोर्ड की अकर्मण्यता के कारण से दिक्कत आ रही है, उसे साफ किया जाए। एलजी के भाषण के अंदर जल, जंगल, जमीन, जानवर, सड़क, शिक्षा, सुरक्षा इन सब की चर्चा होनी चाहिए थी। तो हमने कहा यमुना के प्रदूषण पर चर्चा क्यों नहीं होनी चाहिए? यमुना का ऑक्सीजन लेवल जीरो हो गया है। मैंने पिछले प्रस्ताव में भी कहा था क्या जब हरियाणा राज्य में भाजपा की सरकार थी तो यमुना में 'बिसलेरी' बहता था और जब उत्तर प्रदेश में गया तो 'किनले' बहने लगा उसके अंदर। खाली 11 वर्षों के अंदर यमुना के अंदर दूषित पानी दिल्ली में ही था।

(समय की घंटी)

श्री अनिल झा: उसके बाद दिल्ली के 600 तालाब हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में एक-एक तालाब प्रदूषित हो गए हैं। वाटर का जो रिचार्ज लेवल होना चाहिए उस पर कोई विषय और चर्चा नहीं करना चाहता है। डीडीए के पास सारे के सारे तालाब चले गए। डीडीए को उसका इस्टीमेट बनाना चाहिए। एलजी साहब के पास सीधे डीडीए उनके पास काम कर रही है। एक भी प्रस्ताव जो है तालाबों का नहीं बनाया गया है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद, बहुत बढ़िया, धन्यवाद।

श्री अनिल झा: और आदरणीय अध्यक्ष जी, विषय तो बहुत लंबा है। आप सत्ता पक्ष के लोग आपकी बात...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं- नहीं समय कम है ना। धन्यवाद। बहुत-बहुत धन्यवाद। अनिल जी का बहुत-बहुत धन्यवाद। अब माननीय सदस्य,

....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: देखिए प्लीज, चर्चा को चलने दीजिए। माननीय सदस्य अनिल शर्मा जी।... कोई नहीं बैठिए, कोई नहीं, कोई नहीं बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया ऐसे ही, एक ऐसे ही सदन में सब लोग समय का ध्यान रखेंगे बहुत अच्छी चर्चा हुई। शुरू करिए, चलिए बैठिए अनिल जी शुरू करिये, माननीय सदस्य अनिल जी शुरू करिये, अब आप बैठ जाइए बस। बैठ जाइए, बैठ जाइए, चलिए।

श्री अनिल कुमार शर्मा: माननीय अध्यक्ष जी मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूं कि एलजी साहब के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर मुझे आपने बोलने का अवसर दिया। मैं आज समस्त दिल्लीवासियों को माननीय मुख्यमंत्री जी को, माननीय मंत्रीगणों को, माननीय सभी विधायकगणों को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। ये वर्ष दिल्ली के लिए नई दिशा और दशा का प्रतीक बनेगा। लेकिन साथ ही यह वर्ष हमें पूर्ववर्ती जो 'आप' सरकार रही है उसके जो घोटाले भी याद दिलाता रहेगा चाहे वो पीडब्ल्यूडी घोटाला हो, चाहे वो शराब घोटाला हो चाहे, चाहे वो शीशमहल घोटाला हो ऐसे शिक्षा घोटाले, ऐसे बहुत से घोटाले जो इनके शासन काल में हुए हैं वो पूरे दिल्ली की जनता को याद आते रहेंगे। नववर्ष की नई किरण और दिल्ली को विकास, पारदर्शिता और जवाबदेही के पथ पर ले जाने का अवसर है। जहां घोटालों की नहीं भरोसे की राजनीति होगी, इस बार भरोसे की राजनीति होगी। आज जब हम दिल्ली का विकास, जन कल्याण विजन की बात करते हैं तो हमें गर्व होता है कि हमारी सरकार देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में व माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में प्रत्येक क्षेत्र में बहुत अच्छा काम कर रही है। ये एक विचित्र विडंबना है। जो लोग 2-2 लाख रूपए के मास्क लगा के आए थे यहां पर पहले दिन और वो दो-दो लाख के मास्क जो लगा के आए मैं इनसे पूछना चाहता हूं जब ये 11 वर्षों तक इनकी सरकार रही इन्होंने एक दो काम जरूर करे। एक ओड-इवन जिससे कि दिल्ली की जनता को तकलीफ हुई। एक रेड लाइट को ऑन ऑफ करना। इसके अलावा गाड़ियों

को वहां रेड लाइट पे ऑन ऑफ करना इसके अलावा एक जरूर स्मॉग टावर लगाया था और मैं बताना चाहता हूं अध्यक्ष जी आपके माध्यम से दिल्ली की जनता को वो जितने की पैसे लगे थे ना स्मॉग टावर की उससे 10 गुना ज्यादा इन्होंने ऐड पर खर्च किए थे और हमारी दिल्ली की सरकार माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हमारे माननीय सिरसा जी जो एनवायरमेंट मिनिस्टर हैं और हमारे सभी मंत्रीगणों ने मिलकर इसके अंदर बहुत सा काम किया है। मैं उस काम का थोड़ा जिक्र करना चाहता हूं। हमने 3500 इलेक्ट्रॉनिक बसें चलाने का काम किया है। मिस्ट स्प्रे 700 लगाए हैं, जो 2500 तक लगेंगे। एमसीडी को अत्याधुनिक एमआरएम मशीनों के लिए बजट दिया है। 1000 लीटर पिकर लगाए गए हैं और 250 हमारे sprinkler मशीनें लगाई जा रही हैं। जहां एक उससे भी बहुत बड़ी बात बताना चाहता हूं अध्यक्ष जी मैं आपको। जहां एक तरफ 'एक पेड़ मां के नाम' जैसे सांस्कृतिक व पर्यावरणीय अभियानों से हर नागरिक को जोड़ा गया है, वहीं आवश्यकता पड़ने पर हमारी सरकार ने कठोर कदम भी उठाए हैं। अगर पीयूसी सर्टिफिकेट को अनिवार्य करके वाहनों से निकलने वाले धुएं पर रोक लगाई है। 'नो पीयूसी सर्टिफिकेट नो फ्यूल' इसका काम भी हमारी सरकार ने किया है। हमारे मंत्री लगातार रोडों पर हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी रोड पर हैं और लगातार जहां पर मिट्टी ज्यादा है उन चीजों को देख रहे हैं और लगातार काम कर रहे हैं। हमारी सरकार ने दिल्ली के हाई मास्ट बिल्डिंगों में एंटी स्मॉग गन लगाई है। 19,000 नए उज्जवला गैस कनेक्शन दिए हैं। माननीय रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में ये सरकार सिर्फ भाषण नहीं देती। एक्शन लेती है और ये ही हमारी जन जवाबदेही की असली पहचान है। मैं माननीय अध्यक्ष जी इस सदन के माध्यम से ये बात और कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार की प्राथमिकता है अंतिम पंक्ति में खड़े उस नागरिक का सशक्तिकरण जो झुग्गी में रहता है। हमारी सरकार माननीय मोदी जी का जो सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास की प्रेरणा और माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में हमारी सरकार ने जो झुग्गी बस्तियों के समग्र विकास के लिए 700 करोड़ रूपए रखे हैं। हमारे माननीय मंत्री आशीष जी उस मंत्रालय को देखते हैं। मैं बताना चाहता हूं माननीय अध्यक्ष जी आज जितने भी हमारी झुग्गी बस्ती है जब भी आम आदमी पार्टी की सरकार पहले थी ये सिर्फ ये बोलती रही है कि बीजेपी आएगी झुग्गी तोड़ेगी, हम लोगों ने वहां विकास किया है। नाली, गली, खडंजा जितने पहले कभी नहीं बने थे उतने बने हैं। आज मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमारे यहां पर आर के पुरम में भी 22 क्लस्टर हैं। हर क्लस्टर के अंदर आज नाली,गली, खडंजा, टॉयलेट बन रहा है। मैं धन्यवाद करना चाहता हूं हमारे जल मंत्री का जिनके

माध्यम से हर जगह वहां पानी की नई लाइन डली है, वहां पानी के कनेक्शन हुए हैं इस बात को भी मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं। साथ ही एक सबसे बड़ा मुद्दा जिसका जिक्र अभी अशोक भाई साहब कर रहे थे। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में देश भर में सुशासन गरीब कल्याण का जो नया अध्याय लिखा जा रहा है, उसकी आधारशिला आदरणीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपने कार्यकाल में रखी थी। आज 'प्रधानमंत्री आवास योजना', 'आयुष्मान भारत उज्जवला योजना', 'जल नल,' 'गरीब कल्याण योजना' ऐसी बहुत सी योजनाएं चल रही हैं। उसी को देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में अटल कैंटीन अंत्योदय योजना के संकल्प से प्रेरित होकर उसको प्लान किया गया है। मैं बताना चाहता हूं ये कैंटीन ही नहीं बल्कि एक गरीब के सम्मान और शोषण का प्रतीक है। ये इतना सम्मान और पोषण हो रहा है इससे गरीब व्यक्ति जिसको 5 रूपए में थाली खाने को मिल रही है। उससे पहले ऐसा कभी किसी सरकार ने नहीं किया। आम आदमी पार्टी की जब सरकार थी तो इन्होंने भी ये अपनी घोषणा जरूर की थी कि हम कोई कैंटीन खोलेंगे पर मैं अध्यक्ष जी आपके माध्यम से बताना चाहता हूं। इन्होंने सिर्फ एक कैंटीन खोली थी और हम अभी 10 महीने के अंदर 45 खुल चुकी हैं। आने वाले दो-तीन महीने के अंदर 100 कैंटीन खुलेंगी और आने वाले पूरे 5 साल जब होंगे तो बहुत सारी अटल कैंटीन खुलेंगी और खाली अटल कैंटीन से 3 लाख से अधिक लोग इसको अभी तक लाभ ले चुके हैं। 25,000 लोग हर रोज इसमें भोजन करते हैं और इसकी जांच भी लगातार अलग-अलग जो सरकारी एजेंसियों के माध्यम से हो रही है जिससे खाने की गुणवत्ता भी हमारी बनी रहे। मैं साथ ही ये भी धन्यवाद करना चाहता हूं माननीय मुख्यमंत्री जी का मेरी खुद की विधानसभा में भी दो अटल कैंटीन खुली है और दोनों के अंदर हमारी वहां की जो पूरी जनता है वो बड़ी खुश हो के उस खाने को खा रही है। माननीय अध्यक्ष जी मैं विपक्ष को केवल ये बताना चाहता हूं। विपक्ष ने केवल खोखले वादे किए। हमारी सरकार ने जो कहा वो किया, निरंतर कार्य कर रही है, अटल जी ने राजनीति को सेवा सुशासन करते हुए संवाद का माध्यम बनाया। उन्होंने कहा था, राजनीति में सत्ता साधन हो सकती है, उद्देश्य नहीं। माननीय अध्यक्ष जी, मैं इस शताब्दी वर्ष में हम सबकी जिम्मेदारी है, अटल जी के विचारों को सिर्फ पुस्तकों में नहीं नीति और नियत में उतारें, उनका जो एक कविता है जो सभी हम लोग अच्छी तरह जानते हैं,

''हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं, गीत नया गाता हूं।''

ये सर हमारी सरकार इसको चरितार्थ कर रही है। मैं इस सदन के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी का आभार प्रकट करना चाहता हूं जिनके दृढ़ नेतृत्व में दिल्ली आज विकास, सुशासन, जन कल्याण के नए प्रतिमान स्थापित कर रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज दिल्ली की पहचान घोटालों से नहीं उपलब्धियों से हो रही है। पूर्ववर्ती सरकार ने केवल घोषणाएं की, जबकि हमारी सरकार ने विकास को धरातल पर उतारा है।

(समय की घंटी)

श्री अनिल कुमार शर्मा: मैं एक बार फिर से माननीय मुख्यमंत्री का धन्यवाद करता हूं

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री अनिल कुमार शर्मा: और आश्वस्त, एक सेकंड बस। आश्वस्त करता हूं कि हम सभी विधायक साथी इस विकास यात्रा में कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे। जय हिंद, जय भारत। बहुत-बहुत धन्यवाद। भारत माता की जय।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य एवं उपसभापति मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्ट : आदरणीय अध्यक्ष जी आपने मुझे माननीय उपराज्यपाल के अभिभाषण तथा धन्यवाद प्रस्ताव के लिए समय दिया, वास्तव में मैं इसके लिए आपका आभारी हूं, धन्यवादी हूं। अध्यक्ष महोदय, यह सत्यता है कि दिल्ली के अंदर हमारी सरकार फरवरी में जब आई तो दिल्ली की जनता ने हमको प्रचंड बहुमत के साथ आशीर्वाद भी दिया है। अध्यक्ष महोदय, यह सत्य है यदि सरकार में हिम्मत हो, साहस हो तो निश्चित रूप से अपना लेखा वह प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। यह लेफ्टिनेंट गवर्नर साहब के माध्यम से इन पिछले 10 वर्षों के अंदर दिल्ली की जो यह बुरी दशा हुई, उसमें हमारी सरकार आने के बाद एक चुनौती के रूप में हमने इसको स्वीकार किया। हम आभार जताने चाहते हैं इस देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी का, अमित शाह जी का जिनके सहयोग से और भारतीय जनता पार्टी के लाखों-लाखों कार्यकर्ताओं के आशीर्वाद से हमको यह जनादेश प्राप्त हुआ। यहीं तक नहीं अध्यक्ष महोदय, जनादेश पाने के बाद निश्चित रूप से मेरी सरकार ने दिल्ली के लोगों के हित में काम करने के लिए एक योजना बनाई और योजना ही नहीं इस दिल्ली को 1 लाख करोड़ का बजट के प्रावधान के साथ दिल्ली के विकास को आगे बढ़ाने का काम किया। अध्यक्ष महोदय, यह सत्यता है, हमने पिछले वर्षों की सरकारों को भी देखा, अब की भी सरकार को हम देख रहे हैं, मेरी एक ऐसी सरकार है जिसने इतना बड़ा बजट लाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा जो उन्होंने कहा था 'सबका साथ, सबका विकास, सबका

प्रयास', तो उस के साथ इसमें मेरी सरकार ने जो इस बजट के अंदर 10 बिंदुओं को तय किया था। 10 प्रमुख बिंदु तैयार किए गए, कैसी योजनाएं बनाई जाए, योजनाओं को कैसे इंप्लीमेंटेशन किया जाए, 'इज ऑफ डूइंग बिजनेस' के तहत व्यापारिक प्रतिष्ठानों को किस प्रकार से उनको लाइसेंसिंग व्यवस्था में, श्रम व्यवस्था में, उनकी मदद की जाए, इस प्रकार रहा। अध्यक्ष महोदय, यही नहीं ease of doing business के तहत 24 घंटे 24/7 के तहत दुकानों को खोलने का प्रयास, काम करने का प्रयास और शराब के ठेकों को इसमें सम्मिलित ना करके निश्चित रूप से एक अपनी मंशा जाहिर की है। अध्यक्ष महोदय, यह भी सत्य है 21 वर्षों के अंदर दुकानों के लाइसेंसिंग सिस्टम में जो कुरीतियां थी जिनके वजह से व्यापारिक संस्थानों को नवीनीकरण में दिक्कत आती थी, ऐसे व्यापारियों के लिए अनावश्यक परेशानियों को दूर करने का किसी ने काम किया तो मेरी दिल्ली की मुख्यमंत्री ने जी ने किया। निश्चित रूप से हम उनका आभार प्रकट करना चाहते हैं। धन्यवाद करना चाहते हैं। अध्यक्ष महोदय, यही नहीं दिल्ली के विकास के लिए अनेक जगहों पर, अनेक क्षेत्रों के लिए प्रत्येक जगह कैसे विकास कार्य सुलभ हो सके, उसकी शुरुआत के लिए यदि आपने देखा होगा जिस प्रकार के डिवीजनल कमिश्नर के जो ऑफिस थे, उनको बना करके निश्चित रूप से उसके लिए 13% बजट का भी प्रावधान रखा गया। हेल्थ को देखते हुए निश्चित रूप से मेरी सरकार द्वारा 17 अस्पतालों को जिनके विभिन्न निर्माण् कार्य पिछली सरकारों की वजह से अधूरे थे, उनको पूरा करने के साथ-साथ दिल्ली के लोगों की हॉस्पिटल संबंधी समस्याओं को देखते हुए पांच अस्पतालों का भी निर्माण किया गया। स्वास्थ्य में यह पहला बहुत बड़ा कदम उठाया गया। आयुष्मान प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत इसको लागू किया गया, यही नहीं अध्यक्ष महोदय 6,72,551 आयुष्मान कार्ड जारी करके, आपने निश्चित रूप से यह दिल्ली के लोगों के लिए इस प्रकार का कार्य करा और यही नहीं थोड़े ही समय में 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए उन्होंने 2,62,383 वंदना योजना कार्ड भी शामिल किए गए। योजना को फलीभूत योजना किस प्रकार से हो, उसके लिए दिल्ली के अंतर्गत 188 अस्पताल तथा 137 निजी हॉस्पिटल जिनको सरकारी कर्मचारियों के किये इंपैनल किया गया और अब तक इनके माध्यम से 19,287 मरीजों का सफल उपचार किया गया। महोदय, यह भी सत्य है कि पीएम योजना के तहत अंतर्गत आने वाली योजनाओं को 238 आरोग्य मंदिर के संचालित किए जा रहे हैं। इसका उद्देश्य है कि दिल्ली का स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं सुदृढ़ और मजबूत हो। अस्पतालों में भार कम करना, किफायती दरों में मरीजों को दवाई उपलब्ध कराना, यह मेरी सरकार की नीति है। अध्यक्ष महोदय, यही नहीं डिजिटल

इंडिया की पहल के साथ 37 अस्पतालों का या हॉस्पिटलों का इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट सिस्टम को मेरी सरकार ने लागू कर दिया। अध्यक्ष महोदय, राज्य के अंदर (समय की घंटी) आयुष्मान सोसाइटी के गठन के स्वीकृति के साथ मेरी सरकार द्वारा, एक सेकंड समाप्त कर रहा हूं, योजना के तहत मेरी सरकार द्वारा स्वास्थ्य व्यवस्था कैसे ठीक हो, इसके लिए 53 नई एंबुलेंस सर्विस गाड़ियां जोड़ी गई और इस एंबुलेंस सर्विस की संख्या 330 हो गई। अध्यक्ष महोदय समय के कमी के कारण निश्चित रूप से बहुत से बिंदु बोलने थे आपने मुझे बोलने का समय दिया बहुत बहुत धन्यवाद जय हिंद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय सदस्य श्री विरेंद्र कादियान जी।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इस विषय पर मैं बिंदुवार तरीके से अगर कहूं, अगर हम स्वास्थ्य की बात करें अध्यक्ष जी, तो एलजी महोदय ने शुरुआत ही ऐसी की, कि पिछली सरकार ने कुछ नहीं किया। शुरू में ही कहा कि पिछली सरकार की जो कमियां थी उनके कारण अब जो इंफ्रास्ट्रक्चर, स्वास्थ्य अन्य सेवाएं हैं यह उस हिसाब से बनी नहीं हैं। तो मैं कहना चाहूंगा अध्यक्ष जी कि जो आरोग्य मंदिर हैं सरकार ने 1 लाख करोड़ का बजट आवंटित किया था, उसमें कितने आरोग्य मंदिर बने, सिर्फ नाम बदलने के अलावा, जितने मोहल्ला क्लीनिक थे, उनका नाम बदलकर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक मिनट प्लीज मंत्री मैं माफी चाहूंगा। आप इनके बाद बोल लीजिएगा।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मंत्री जी मैं सभी सब्जेक्ट पर1

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं अभी प्लीज, नहीं कोई नहीं आप ना।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: नहीं-नहीं मैं बता दूंगा, मैं उदाहरण दे दूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप पूरा स्टेटमेंट देना चाहते हैं, मैं उनको बिठा देता हूं।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मंत्री जी मैं उदाहरण भी दे दूंगा। कितने मैं जानता हूं जिन।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, आप सीधी बात मत करिये, चेयर से बात करिये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: हां अध्यक्ष जी, तो अध्यक्ष जी बहुत से मोहल्ला क्लीनिक का नाम बदलकर आरोग्य मंदिर कर दिया गया। बहुत से मोहल्ला क्लीनिक को बंद कर दिया गया। अस्पतालों की अगर बात करें, तो एलजी महोदय ने यह नहीं बताया कि कितने नए अस्पतालों की शुरुआत की जो हमने शुरू किए थे पिछली सरकार ने शुरू किए थे वह भी आज अधूरे पड़े हुए हैं

बहुत से और आयुष्मान कार्ड की बात करें, पहले कहते थे कि आयुष्मान कार्ड नहीं बने थे, आयुष्मान कार्ड नहीं बने थे लेकिन साढे छः लाख मात्र आयुष्मान कार्ड जो बताए गए सवा तीन करोड़ की पॉपुलेशन है दिल्ली की और साढे छः लाख आयुष्मान कार्ड बनाए उनको कितना लाभ मिला उसका जिक्र नहीं किया। माननीय उपराज्यपाल महोदय ने अगर स्कूलों की बात करें तो कितने सीएम श्री स्कूल नए बनाए गए। नाम बदलने के अलावा आप यह बताएं कि फलानी जगह पे उद्घाटन किया, नींव रखी और नया स्कूल बनाया गया। तो नाम खाली नाम बदले गए लेकिन कितने बने उनका आंकड़ा दिया नहीं। मैं माननीय अध्यक्ष जी कहना चाहूंगा कि उपराज्यपाल महोदय ने प्रदूषण के बारे में 1 लाख करोड़ रूपये का बजट था जिसमें 506 करोड़ रूपये प्रदूषण को रोकने के रोकथाम के लिए आवंटित किए गए थे। तो ये जो पॉल्यूशन 2018 के बाद सबसे अधिक हुआ यह क्यों हुआ इसके बारे में एलजी महोदय ने कुछ नहीं बताया। एलजी महोदय ने यह नहीं बताया कि इसको रोकने के लिए क्या-क्या कारवाई करी, क्या हमने पैसे को किस मद में कैसे खर्च किया इसका जिक्र नहीं किया। आपने देखा होगा कुछ दिन पहले एक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बहुत ही फेमस फुटबॉलर लियोनल मेसी आए थे। उस समय कितना पॉल्यूशन था यहां पे और क्यों था इसका जिक्र नहीं किया। जो नई बसें, देवी बसें जो चल रही हैं, इसका ऑर्डर कब हुआ था? यह पिछली सरकार के समय से ही स्कीम चालू हो रही थी और बाद में उद्घाटन हुआ था। तो इसके बारे में, मंत्री जी यह झूठ नहीं है। आपको तो सारा पता है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप देखिए मैं आपको पूरा protect कर रहा हूं पूरी बात कहने का मौका आप मुझसे बात करिए ना।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: फिर आप खुद छेड़ रहे हैं।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय जो पानी के टैंकर थे, पानी के पुराने टैंकरों पर स्टीकर बदले गये और उनका उद्घाटन कर दिया कि इतने टैंकर खरीदे गर्मियों में, तो वह पुराने टैंकर क्यों थे, नए क्यों नहीं खरीदे, उसका कोई जिक्र नहीं किया। अगर हम जल की बात करें। कितने एसटीपी नए लगाए गए उपराज्यपाल महोदय ने उसका कोई जिक्र नहीं किया। साहिबी नदी जो एक ऐतिहासिक नदी है और आज वह गंदा नाला बन गया है वह जस का तस पड़ा हुआ है कई सालों से। उसको साफ करने के लिए, उसका नवीनीकरण करने के लिए क्या किया, एलजी महोदय ने उसका कुछ नहीं बताया। यह सारे के सारे फंड पिछले बजट में आवंटित हैं, उनका कोई जिक्र नहीं

है। माननीय उपराज्यपाल महोदय ने यमुना की सफाई के लिए जो पिछले बजट में आया था और आज के अखबार दो दिन पहले के अखबार मेरे पास है उसमें लिखा हुआ है कि यमुना आज भी वैसे की वैसी गंदी है, पूरे झाग है तो उसको सफाई एक वर्ष 10 महीने में क्या कार्रवाई करी और कितनी उसमें उन्नति हुई, कितनी सफाई हुई उसके विषय में उपराज्यपाल महोदय ने कुछ नहीं बताया। तो मेरा कहना यह है अध्यक्ष महोदय कि प्रदूषण के विषय में एक और बात करें कि 'एक पेड़ मां के नाम', यह अच्छी पहल थी। लेकिन पिछली सरकार ने, हमारी सरकार ने 5 करोड़ पौधे लगाए, 5 करोड़ पेड़ लगाए और अगर आज हम 5 करोड़ और अगर आज बात करें अध्यक्ष महोदय 'एक पेड़ मां के ना'म का भी अगर हम करें भी तो सवा तीन करोड़ जनता है तो मुश्किल से इन्होंने अगर 10% लोगों ने भी लगाए होंगे तो 10 लाख पौधे भी नहीं लगे होंगे। तो पहल अच्छी है लेकिन इसको अच्छी तरह से जैसे हमने किया था उस हिसाब से 18% से 23% पे ग्रीन कवर जो सरकार लेकर आई और फिर कह रहे हैं एलजी महोदय कि पिछली सरकारों ने कुछ नहीं किया और 10 महीने में आपकी सरकार ने क्या किया इसका कोई जिक्र नहीं। कूड़े के पहाड़ की बात करें स्पीकर साहब तो कूड़े के पहाड़ खाली कहने से नहीं कूड़ा जाएगा नहीं, कूड़े पे काम करना पड़ेगा। तो कितना गया उसका कोई हिसाब किताब नहीं बताया एलजी महोदय ने। एलजी महोदय ने यह नहीं बताया कि अगर हम सामाजिक व्यवस्था की बात करें तो ढाई हजार रूपये जो बजट में जो 2500 रूपये का जो वादा किया था कितनी महिलाओं को दिया उसके बारे में कुछ नहीं बताया। यानि आज तक पेंशन के विषय पर खूब चर्चाएं होती थी कि बुढ़ापा पेंशन शुरू करो

(समय की घंटी)

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: लेकिन बुढ़ापा पेंशन कितनी शुरू करी, कितने लोगों को दी वह कोई जिक्र नहीं है। तीन-तीन महीने तक पेंशन रुकी हुई है स्पीकर साहब, लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। जो स्कूलों में कॉन्ट्रैक्ट के कर्मचारी हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: उनको 3-3 महीने बाद सैलरी मिलती है। स्पीकर साहब जो रोजगार कितना रोजगार लोगों को दिया, कितना रोजगार दिया जो बस मार्शल और लोग हटाए थे।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: उनके विषय में क्या किया, एलजी महोदय ने कुछ नहीं बताया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये धन्यवाद, अब मैं ।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: तो एलजी महोदय ने स्पीकर साहब एक मिनट एक मिनट और लूंगा मैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, अब ये देखो फिर।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: स्पीकर साहब नहीं ये बातें काम की हैं। व्यापारी बोर्ड की बात की।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है, धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: व्यापारी बोर्ड मैंने पेपर में पढ़ा अभी अभी पढ़ा कुछ दिन पहले ही कि अब तक वो व्यापारी बोर्ड का जो गठन मार्केटिंग बोर्ड का जो गठन करना था अब तक नहीं हुआ है। घोषणाएं बड़ी-बड़ी हैं, काम कुछ नहीं है। खाली पिछली सरकार को कोसने के अलावा कुछ नया काम इस सरकार ने 10 महीने में नहीं किया, तो सरकार फेल है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये, माननीय सदस्य श्री संजय गोयल जी।

श्री संजय गोयल: धन्यवाद, माननीय अध्यक्ष जी। आपने मुझे माननीय उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद जो कि हमारे माननीय मंत्री श्री रविन्द्र इन्द्राज जी ने चर्चा जारी की थी उस पर चर्चा करने के लिए समय देने के लिए आपका विशेष धन्यवाद। माननीय अध्यक्ष जी, अभी हमारे विपक्ष के साथी कह रहे थे कि 3 करोड़ की जनसंख्या हो गई लेकिन पिछले 27 सालों में इस 3 करोड़ की जनसंख्या के लिए जो पोपुलेशन के हिसाब से इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट होना चाहिए था, क्या उन्होंने किया? इनसे अभी इन्होंने एक बात कही कि हमने 5 करोड़ पौधे लगाए हैं। क्या मेरे को ऐसा लगता है कि जीरो लगाना एक आदत हो गई है फालतू की तो इसलिए यह कहना कि और मैं माननीय एलजी साहब का विशेष धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने 40 मिनट के जो अभिभाषण था उसमें से 75 जो प्वाईंट थे 70 प्वाईंटों में 70 कार्य दिल्ली की सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। तो मात्र 10 महीने की सरकार ने आप क्या चाहते हैं, आपने कुछ किया नहीं, सारी दिल्ली की व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करके हमको दे दिया और आप कहते हो हमने यह काम किया, यह काम किया। आप कहते थे हम दिल्ली के मालिक हैं। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल कहते थे कि हम दिल्ली के मालिक हैं। तो मालिक का काम क्या होता था? यहीं बैठकर कहा जाता था, तो मालिक का काम था काम करना, मालिक का काम नहीं था कि अलग-अलग राज्यों में चुनाव लड़ना और दिल्ली से भाग जाना और घोटाले करना, यह मालिक का काम नहीं था और माननीय उपराज्यपाल महोदय ने 10 क्षेत्रों में सरकार की उपलब्धि के जो काम किए गए, उनको गिनाया गया, इंफ्रास्ट्रक्चर हो, शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, महिला कल्याण हो, जल आपूर्ति हो, बिजली हो,

सड़कें हो तथा औद्योगिक विकास हो, एनवायरमेंटल सस्टेनेबिल्टी भी हो और सामाजिक न्याय हो, इन सब पर काम 10 महीनों की हमारी माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी की सरकार, माननीय मंत्रीगण और मुझे आज गर्व है अपनी सरकार के ऊपर और मेरे भाजपा के संगठन के ऊपर कि उन्होंने जो संकल्प लिए थे चुनाव से पहले वो सारे संकल्प को पूरा करते हुए अपना कार्य कर रही है हमारी सरकार। ई गवर्नेंस द्वारा चाहे 75 जो सर्विसिज हैं डिस्ट्रिक्ट सर्विज है उसमें सीएससी के माध्यम से जोड़ना हो, चाहे ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में 24 बाय सेवन काम करना हो, चाहे अनिवार्य जो रजिस्ट्रेशन है ऑल शॉप्स को जो खोलने वाला 24 बाय सेवन और अनिवार्य जो रजिस्ट्रेशन जो 21 थे उनको खत्म करना हो और साथ में श्रम कानून जो कि पूरे 29 मौजूदा श्रम कानून थे उनको चार श्रम कानून में दिल्ली में अप्लाई करना हो और श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा और बेहतर कार्य परिस्थितियां और समयबद्ध न्याय मिलना हो और हमारी माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो 1400 करोड़ रूपये की मुख्यमंत्री विकास निधि पूंजीगत व आधारभूत संरचना के लिए दिए, वो मैं आज देखता हूं कि मेरी दिल्ली, मेरी शाहदरा विधानसभा के अंतर्गत जितनी भी विकास योजनाएं हैं वह सब परिपूर्ण होने जा रही है और हो रही हैं और स्वास्थ्य बजट जो देश का सबसे ज्यादा एक लाख करोड़ का 13% उसको देना हो, 17 हॉस्पिटल में आपके अन्य 17 हॉस्पिटल में आपके जो व्यवस्थित तरीके से जो मैनेजमेंट, जो इंफ्रास्ट्रक्चर को डेवलपमेंट करने का काम था उसको बढ़ाना हो और आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना को लागू करना हो और चाहे 238 आयुष्मान आरोग्य मंदिर जिसकी वजह से मेरी आज विधानसभा में छह आयुष्मान आरोग्य मंदिर खुले हैं, 29 जन औषधि केंद्र खुले हैं, 330 एंबुलेंस में 53 एंबुलेंस जोड़ना हो जिसकी वजह से आज मेरी विधानसभा में पांच जगह एंबुलेंस खड़ी होती है जिससे कि हॉस्पिटल्स में ले जाना बहुत इजी हो गया हो और डायलिसिस की मशीन जो कि 150 नई मशीनें लगाकर 300 की संख्या करना हो ये भी हमारे हॉस्पिटल्स में इस बजट को देना एक बहुत सराहनीय कार्य है और हमारी जो नर्सिंग इंटर्न है जो मात्र 500 रूपये स्टाइपेंड मिलता था उसको 13,150 करना हो या ब्रेन हेल्थ क्लिनिक द्वारका में खोलना हो और शिक्षा में 19% बजट देना हो जिसमें हमारे माननीय मंत्री बैठे हुए हैं आशीष सूद जी, 75 सीएम श्री विद्यालय अभी हमारे साथी विधायक विपक्ष के कह रहे थे क्या हुआ वो सीएम श्री विद्यालयों के अंदर आज स्मार्ट क्लासेस चालू हो चुकी हैं। स्मार्ट क्लासेस के साथ-साथ जो व्यवस्थाएं एक प्राइवेट स्कूल से बेहतर हो सकती हैं। वो हमारे एक शाहदरा विधानसभा में भी एक विद्यालय चालू हुआ है उसके लिए मैं माननीय मंत्री जी का भी धन्यवाद

दूंगा और 100 डॉ एपीजे अब्दुल कलाम भाषा प्रयोगशालाएं हों, चाहे आपके 175 आईटी लैब्स हों, कैपिटल एक्सपेंडिचर को बढ़ाना हो, चाहे 1150 देवी बसिज को चलाना हो, चाहे 36,000 इलेक्ट्रिक चार्जिंग पॉइंट्स बढ़ाना हो मेट्रो फेस के लिए 3300 करोड़ रूपये देना हो चाहे दिल्ली मेरठ 'नमो भारत' जो हमारे देश के यशस्वी श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा दिल्ली को दी गई सौगात और चाहे नई सड़कें बनाना हो, चाहे नालों की गाद जो कि 22 लाख टन उठाना हो चाहे नया ड्रेनेज सिस्टम, मैं माननीय जल मंत्री जी का भी धन्यवाद दूंगा जिन्होंने 56,000 करोड़ की लागत से जो ड्रेनेज सिस्टम फेल हो चुका था पहले उसको नया लागू करना हो, चाहे तीनों नए कानून चाहे भारतीय दंड संहिता को लागू करना हो।

(समय की घंटी)

श्री संजय गोयल : जैसे झुग्गी वासियों के लिए नए फ्लैट्स बनाना हो और मेरे यहां 12 क्लस्टर है शाहदरा विधानसभा में सभी जगह डेवलपमेंट के काम चालू हैं और चाहे यमुना की सफाई हो या वाटर जल आपूर्ति के लिए हमारे यहां नई-नई लाइनें डल रही हो और गोबर के लिए बायोगैस हो, चाहे बुक की गई संपत्ति जो सवा लाख बुक संपत्ति की गई उनमें बिजली के कनेक्शन लगाने हो, चाहे 11 जिलों को बढ़ाकर 13 जिलों में करना हो और इंटर्नशिप प्रोग्राम के अंतर्गत 85 युवाओं को उनको यहां पर जोड़ना ही हमारा सराहनीय कार्यक्रम हो और 502 आंगनबाड़ी को शिशु गृह पालना.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद ।

श्री संजय गोयल : शुरू किए गए हो चाहे ग्रेप में दस हजार रूपये की अनुग्रहित राशि देना हो। हमारे मजदूर भाईयों को, ऐसे अनेको-अनेक, दिल्ली ग्रामीण विकास बोर्ड का 1715 करोड़ रूपये का ...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बस अब आगे गजेन्द्र जी को दे देना वो बता देगें। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री संजय गोयल : हम धन्यवाद करते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री अजय दत्त जी।

श्री संजय गोयल : क्योंकि 40 मिनट का भाषण पांच मिनट में संभव नहीं। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री अजय दत्त: Thank you अध्यक्ष जी. Again my full name is Dr. Ajay Dutt so I would request you to please pronounce as it is. Thank you. You have given me an opportunity to discuss about the Hon'ble LG speech and,

....व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नीरज जी प्लीज।

श्री अजय दत्त: So I think मैं हिंदी में बोल लेता हूं सर इनको समझ नहीं आ रही है इनको समझ नहीं आती हर बार समझ नहीं आती है और किसी को समझ नहीं आ रही है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब आपने आपने शुरू किया है तो फिर।

श्री अजय दत्त: क्या कह रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक मिनट अजय जी सर आपने शुरू किया तो जारी रखिए ना। अच्छा लग रहा है

श्री अजय दत्त: नहीं-नहीं, अच्छा लग रहा है ना?

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: हाँ।

श्री अजय दत्त: अध्यक्ष जी मुझे लगता है कि इस विधानसभा के अंदर हम एलजी साहब की स्पीच पे बोल रहे हैं। एलजी साहब ने बार-बार कहा कि मेरी सरकार बहुत बढ़िया एलजी साहब आप इस पद पे हैं ये आपकी सरकार है। बट ये डॉक्यूमेंट जो आपको सरकार ने लिख के दिया था। Have you authenticated this document? Have you inspected this document? Have you examined this dcoument? That document is all about Sir, this document is basically all about your commitment to the people of Delhi, Your manifesto. This is your manifesto. ये मेनिफेस्टो बीजेपी ने ला के दिया था। इस मेनिफेस्टो को इंप्लीमेंट करने के लिए बीजेपी ने वादा किया था कि within 100 days, 100 दिन के अंदर हम यह मेनिफेस्टो इंप्लीमेंट करेंगे और इस आपके जो एलजी साहब ने भाषण दिए हैं, मुझे बड़े दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है। इस मैनिफेस्टो में सबसे पहले लिखा है कि 2500/-रूपये महिलाओं को मिलेंगे। 2500/-रूपये कब महिलाओं को मिलेंगे। क्यों नहीं दिए। इस विषय में आप बताइए। ये मेनिफेस्टो को क्यों इंप्लीमेंट नहीं किया। आपने कहा था कि 21,000 लोगों को आर्थिक मदद दी जाएगी, इस मेनिफेस्टो में लिखा था वो आपने नहीं दी। इस मेनिफेस्टो में लिखा था कि 500/-रूपये में सिलेंडर दिया जाएगा वो आपने नहीं दिया। इस मेनिफेस्टो में लिखा था कि होली-दिवाली पे सिलेंडर दिया जाएगा, आपने नहीं दिया तो किस बात की आप बार-बार अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। मेरा प्रश्न इस सरकार से है कि आप जब पीठ थपथपाते हैं, अपने मेनिफेस्टो को देखिए। इस मेनिफेस्टो को इंप्लीमेंट करने की जिम्मेवारी आप लोगों की थी जो आपने नहीं की। इस मेनिफेस्टो में लिखा है कि आप 10 लाख

लोगों को मुफ्त इलाज देंगे वो नहीं किया। इस मैनिफेस्टो में लिखा है कि आप हर महीने हर वरिष्ठ नागरिक को तीन हजार रूपये प्रतिमाह देंगे, नहीं दिया। मैं मुख्यमंत्री जी आ गई हैं। यह मैं आपकी तस्वीर आपके सामने रख रहा हूं। इस मैनिफेस्टो को आपने इंप्लीमेंट नहीं किया। आप इस मेनिफेस्टो को 100 दिन में इंप्लीमेंट करना चाहते थे। आपने एलजी साहब को डॉक्यूमेंट दे दिया, ऑनरेबल एलजी साहब ने पढ़ के सुना दिया। लेकिन जिम्मेवारी आपकी थी। इस मैनिफेस्टो में आपका भी चित्र है और माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी का भी चित्र है। मैं मोदी जी से भी यह कहना चाहता हूं कि आपकी सरकार ने मेनिफेस्टो इंप्लीमेंट नहीं किया। दिल्ली के लोगों के साथ जस्टिस नहीं हुआ। यह मैं कहना चाहता हूं। इस मेनिफेस्टो में आपने बहुत सारी बातें की। आपने कहा कि पांच रूपये में आप meal देंगे। आप इस meal को देखिए। इसमें आपने कहा मुख्यमंत्री कहती है कि हमने 100 जगह इस तरीके के पांच रूपये जो अटल, अटल अटल जी का meal पांच रूपये में 100 जगह हमने लगा दिया है। आपके एक विधायक साथी हमारे उन्होंने भी कहा 45 जगह दिल्ली में है। तो there is a contradictory statement between the CM and our Hon'ble Member of this House। ये सब आपने नहीं किया और आपने उसके बाद बहुत सारी कल्याणकारी योजना बनाईं जिसमें आप बार-बार अपनी पीठ थपथपाते हैं। प्रदूषण पे क्या हुआ? पोलूशन पे क्या हुआ? आपने कहा था कि क्लाउड सीडिंग कराएंगे। कराई, क्या रिजल्ट हुआ?

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः पोलूशन पर भी आपने नाम दे रखा था।

श्री अजय दत्तः नहीं-नहीं मैं आ रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः फिर तब क्या बोलोगे फिर।

श्री अजय दत्तः XXXXXXXX[1]

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः *ये रॉन्ग इन्फोरमेशन है।*

श्री अजय दत्तः XXXXXXXX1

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः *रॉन्ग है आपकी इन्फोरमेशन।*

....व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः चलिए मैंने कह दिया, मैंने कह दिया यह कार्यवाही में से हटा दे रॉन्ग इन्फोरमेशन है इनकी। आगे चलिये

श्री अजय दत्तः अध्यक्ष जी, मैं झूठ तो नहीं बोल रहा हूं।

---

[1] चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से हटाए गए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक मिनट। एक मिनट।

श्री अजय दत्त: XXXXXXXX1

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप शुरू करिये आगे।

श्री अजय दत्त: XXXXXXXX1 आपने 250 मोहल्ला क्लीनिक बंद कर दिए। आपने क्या किया दिल्ली को,

....व्यवधान......

श्री अजय दत्त: बैठ जाओ थोड़ी देर, सुनने की शक्ति रखो। सुनने की शक्ति रखो। आपने....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठ जाइए ।

श्री अजय दत्त: आपने....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैंने मैंने कार्यवाही से हटा दिया है वो उनकी रॉन्ग इनफार्मेशन थी मैंने हटा दिया है। कार्यवाही से हटा दिया वो ।

श्री अजय दत्त: आपने कहा आपने 250 मोहल्ला क्लीनिक क्यों बंद किए नये खोलते ना। लाखों लोग दिल्ली के गरीब लाखों लोग वो आज त्रस्त हैं उनको दवाइयां नहीं मिल रही है। सरकारी अस्पताल के अंदर 100% दवाइयां मिलती थी आज 20% दवाइयां भी नहीं मिल रही। वहां पर आपने माननीय प्रधानमंत्री के नाम पे एक प्राइवेट शॉप खोल दी है। वहां से चिट्ठी लिख के जाते हैं।

(समय की घंटी)

श्री अजय दत्त : वहां से दवाइयां खरीद के लाते हैं। तो ये पीठ थपथपाते हो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद।

श्री अजय दत्त: एलजी साहब मैं आपसे रिक्वेस्ट करता हूं एलजी साहब अगली बार जब आप आए तो उस डॉक्यूमेंट को पढ़ लें और इनसे पूछे....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री गजेंद्र दराल जी। बस हो गया। धन्यवाद। चलिए।

श्री गजेन्द्र दराल : माननीय अध्यक्ष महोदय जी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने मुझे उप-राज्यपाल जी के....

....व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अभी आपका फिर नाम आयेगा।

श्री गजेन्द्र दराल : अभिभाषण के धन्यवाद के लिए जो प्रस्ताव रखना था उसमें मुझे बोलने का मौका दिया। मैं आपके माध्यम से माननीय उपराज्यपाल महोदय का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस गरिमामयी सदन के समक्ष दिल्ली की जनता की आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और विकास के संकल्पों को अपने अभिभाषण के माध्यम से प्रस्तुत किया। लेकिन जब मैं थोड़ा सा सदन के अंदर आया और लेट पहुंचा तो मैंने आदरणीय गोपाल राय जी के चेहरे पर एक मास्क देखा। थोड़ा सा अजीब लगा। जो मास्क 2021-22 के कोरोना काल के समय पर हर उस व्यक्ति के चेहरे पर होना चाहिए था जिन्होंने लोगों की आगे बढ़-चढ़कर मदद करने की कोशिश की, इंसानियत के नाते, उस समय सिर्फ भारतीय जनता पार्टी का एक-एक कार्यकर्ता हर उस व्यक्ति के लिए मदद को तैयार था और यह विपक्ष में बैठे हुए लोगों का पता नहीं था कि उस समय ये कहां पे थे। अगर ये लोग मैदान पे होते तो शायद दिल्ली के अंदर कुछ व्यक्तियों की जान और बच सकती थी। वो तो भला कि केंद्र सरकार के द्वारा दिल्ली के अंदर अनेकों हॉस्पिटल खोलकर उन लोगों की उम्मीदों पर खरा उतर के उस महामारी के समय पे केंद्र सरकार के द्वारा यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी के द्वारा और अमित शाह जी के द्वारा संज्ञान लिया गया। बड़ा अजीब लगता है कि उस समय इनके जो महामहिम जो अपने आप को दिल्ली का मुखिया कहते थे और उसी सोच के कारण दिल्ली की जनता ने उनको दिल्ली से बाहर बिठा दिया और वो लोग उस समय अपना आलीशान महल बनाने के लिए दिल्ली की जनता की गाढ़ी कमाई को अपने आलीशान महल में लगाने के लिए लगे हुए थे। मैं अपनी आदरणीय मुख्यमंत्री जी का हृदय की गहराइयों से आभार और धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मोदी जी की विकास की गारंटी को दिल्ली के अंदर मात्र 11 महीने के अंदर धरातल पर उतार के दिखाया। हर उस परियोजना पे काम किया जो हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी कहते हैं कि हर व्यक्ति का सेवाभाव होना चाहिए। जनता के प्रति एक जवाबदेही होनी चाहिए। मैं आपके माध्यम से माननीय उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण दिल्ली के समग्र विकास, बुनियादी ढांचे के सुदृढिकरण, विकास, स्वास्थ्य, परिवहन, जल आपूर्ति तथा जनकल्याणकारी योजनाओं का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। यह अभिभाषण न केवल सरकार की प्राथमिकताओं को दर्शाता है बल्कि सबका साथ सबका विकास की धारणा को मजबूत भी करता है। अध्यक्ष महोदय, विशेष रूप से दिल्ली के अंदर द्वारका एक्सप्रेसवे और यूइआर-टू का जो दिल्ली को एक नई लाइफ लाइन दी। एक ऐसी लाइफ लाइन जिससे दिल्ली देहात के साथ-साथ पता नहीं कितने सौ कि.मी. तक के लोगों को इस दिल्ली में आने के लिए एक सुलभ और एक अच्छा रास्ता मिला। अगर किसी को

पंजाब से आना होता है एयरपोर्ट पर तो वह सिंघु बॉर्डर से मात्र 20 मिनट के अंदर एयरपोर्ट पर पहुंच जाता है। अगर किसी को रोहतक से आना होता है तो वो भी मात्र दिल्ली के अंदर एंट्री करने के बाद 15 मिनट के अंदर एयरपोर्ट पर पहुंच सकता है। ये सोच है हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी की और इस सोच को साकार करने के लिए हमारे सभी मंत्रीगण और हमारी आदरणीय मुख्यमंत्री जी दिन रात जनता के बीच में रहकर हर वो काम करने के लिए सक्षम है और लगी रहती है जो दिल्ली के विकास को चाहिए और दिल्ली की जनता को चाहिए। हम लोगों ने इस दिल्ली के अंदर एक सपना देखा था कि हमारी दिल्ली स्वस्थ और सुंदर हो। लेकिन जो अभी-अभी अजय दत्त जी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे। आप लोगों ने 11 साल के अंदर इस दिल्ली को एक ऐसी गड्ढा से भरी हुई और एक ऐसी दीमक लगाकर हमें दिया जिस दीमक का ट्रीटमेंट भी करना होगा और वहां पर अच्छी सांगवान की लकड़ी लगाकर उसको चमकाना भी होगा यह भी हमारा दायित्व है और उसी कामों को आगे बढ़ाने के लिए सदैव हमारी मुख्यमंत्री जी, हमारे सभी मंत्रीगण और जितने भी हमारे विधायक साथी हैं वो अपनी-अपनी विधानसभा में और क्षेत्र में लगे रहते हैं। सबसे बड़ी बात जो हमारा ग्रामीण विकास बोर्ड है, उसको पुनर्जीवित करने के लिए मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी को और राजकुमार चौहान जी को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने 1767 करोड़ का बजट देकर 750 परियोजनाओं को दिल्ली के अंदर धरातल पर उतारा और हम उस सब के साक्षी बनेंगे। हमारी माननीय मुख्यमंत्री जी ने सीएम श्री स्कूल खोलकर सिंथेटिक ट्रैक दिए हैं ताकि बच्चे अपने उस स्पोर्ट्स की जो उनके अंदर एक भावना उसको आगे बढ़ाकर लोगों को दिखाये। आप लोगों ने सिर्फ और सिर्फ दिल्ली को गुमराह किया। आपके सरदार ने कराला के अंदर घोषणा की कि हमने 2127 करोड़ का बजट देकर घेवरा मोड़ पर एक स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बनाने जा रहे हैं। आपके उपमुख्यमंत्री जी मनीष सिसोदिया वहां पे उद्घाटन करने जाते हैं। बड़े शर्म की बात, आज उसके अंदर इतने सारे पेड़ लगे हुए हैं जो एक जंगल का रूप ले चुके। लेकिन हमारी माननीय मुख्यमंत्री जी ने और हमारे शिक्षा मंत्री जी ने संज्ञान लेते हुए उन पेड़ों को शिफ्ट कराकर और आने वाले एक या दो साल में वहां पर स्पोर्ट्स इंटरस्टेट यूनिवर्सिटी बनाने का फैसला किया है। इसके लिए मैं हृदय की गहारियों से उनका आभार और अभिनंदन करता हूं। मन के अंदर इच्छा शक्ति होनी चाहिए काम करने की। आप लोगों में इच्छा शक्ति नहीं है। गोपाल राय जी बैठे हैं। आपके सरदार ने सिर्फ और सिर्फ अपनी तिजोरियों को भरने का काम किया और हमारी माननीय मुख्यमंत्री जी हमारी दिल्ली को विकास के लिए ले जाने के लिए और मोदी जी की विकास की

गारंटी को मजबूत करके जन-जन के बीच में जाकर काम करने वाली सरकार है। मैं अपनी सरकार का हृदय की गहराइयों से आभार करता हूं, अभिनंदन करता हूं और मैंने उपराज्यपाल जी के अभिभाषण में खुशी देखी, उनके चेहरे पे एक ललक देखी। वो आपके समय पे भी अपना भी भाषण रखने आए होंगे लेकिन आप लोगों ने कभी उनके उस ओहदे की कदर ही नहीं की।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद।

श्री गजेन्द्र दराल: आप लोगों ने हमेशा अपने आप को सर्वोपरि माना और यही कारण है कि हमारे बीच में और महामहिम के बीच में मिलकर काम करने का। आपने मुझे बोलने का मौका दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री श्री आशीष सूद जी।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: बहुत-बहुत धन्यवाद माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव जो मेरे साथी मंत्री रविंद्र इन्द्राज जी ने रखा था उस पर बोलने का अवसर दिया मैं आपका बहुत आभार व्यक्त करता हूं क्योंकि माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में वो अभिभाषण केवल योजनाओं की सूची नहीं था। वो अभिभाषण सरकार के गवर्नेंस इंटेंट को दिखाता है। वो भाषण दिखाता है कि सरकार दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ छोटे, मजबूत, सधे हुए कदमों से अपना लक्ष्य पाने के लिए आगे बढ़ रही है और वार फुटिंग पर मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में उनके सभी विधायक, सभी ब्यूरोक्रेट्स मिल जुलकर ईमानदारी के साथ दिल्ली में परिवर्तन लाने के लिए काम कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष जी मैं अभिभाषण पर ही बात करना चाहता था। मगर पिछले 5 सात मिनट लास्ट 5-7 मिनट्स have tempted me to show some reality also और देखो गोपाल राय जी एकदम मुस्कुराने लग गए हैं। उन्हें पता चल गया है उनके लोगों ने लूज बॉल फेंक दी। मुस्कुरा रहे हैं देखो, उन्हें पता है। अच्छा लगा, अच्छा लगा विपक्षी बेंच भी मेनिफेस्टो की बात करते हैं। अच्छा लगा, आई लाइक इट। मगर कादियान साहब शायद आप उस समय आम आदमी पार्टी में थे या नहीं पता थे मुझे पता नहीं। एक मिनट रुको 1 मिनट। 70 सूत्री एजेंडा निकला था 70 विधानसभाओं का। 2 लाख रोजगार देने की बात थी। लास्ट माइल कनेक्टिविटी की बात थी। अन्य बहुत सारी बातें थी। उसके बाद 70 सूत्री एजेंडा गुम हो गया। फिर ये 10 बिंदु आ गए। 10 बिंदु कहते हैं we will reduce pollution in 2/3 of the current levels, over 2 crore trees will be planted. आपने तो 5 करोड़ बता दिए।

and Yamuna to be cleaned and rejuvenated हो चुकी है। यमुना बिल्कुल स्वच्छ बह रही है। आपने 5 साल पहले ही करके गए थे। एक साल 11 महीने पहले आप करके....

....व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: हां 11 महीने मुझे पता है और और मुझे मुझे आप जैसे ही आपकी पार्टी के कुछ लोगों ने बताया है आप सब उन पुराने नेताओं से ऊब चुके हो इसीलिए उनके 10 साल के कच्चे चिट्ठे यहां तुम खोलते हो, इसीलिए आप खोलते हो यहां, इसीलिए बताते हो कि हम 11 साल लगे रहे गाल बजा बजा के हम नहीं कर पाए यमुना साफ, हम नहीं कर पाए। मगर audacity ये है माननीय अध्यक्ष जी audacity ये है 10 महीने में पूछते हैं, कहते हैं उपराज्यपाल जी के हाथ में आपने कागज लिख के दे दिए, पिछले 11 साल तो उपराज्यपाल जी लंदन से कागज मंगा के पढ़ते थे ये नहीं देते थे, इनका मंत्रिमंडल नहीं देता था। इतना अर्बन नक्सल्स की इतनी बड़ी पहचान है ये, आपके हाथ से बना के देते थे, आपके अभिभाषण उपराज्यपाल को आपकी सरकार नहीं लिख के देती, केवल झूठ बोलो, झूठ बोलो, झूठ बोलो और भाग जाओ। अरविंद केजरीवाल जी झूठ बोल के भाग गए कि दिल्ली के शिक्षक कुत्तों की गिनती करने पे लगाए हैं। मैं बार-बार पूछ रहा हूं माफी मांगो, माफी मांगो। आतिशी जी बोल के भाग गई। सदन से ही गायब हो गए। इसलिए मैं ये सब बातें करना नहीं चाहता था। मगर last few minutes tempted me तो थोड़ा आईना दिखाना कभी-कभी जरूरी होता है। आदमी को गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। हां, हां। कोई, कोई।

...व्यवधान...

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: मैं तो देख के आता हूं, मेरे को तो सामने भी दिख रहा है। आपको दिखाना जरूरी है साहब। माननीय अध्यक्ष जी मैं मूल विषय पे आता हूं। आदरणीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में जो उपराज्यपाल जी का अभिभाषण हमारे समक्ष आया है वो डिलीवरी ओरिएंटेड गवर्नेंस का डॉक्यूमेंट है जिसने 11 महीने में process simplification, approval timelines, administrative responsiveness पर बड़ा काम हुआ है। बहुत सारे इज ऑफ डयूइंग बिजनस के काम हुए हैं। पुलिस की लाइसेसिंग से लेकर और बहुत सारे लाइसेंसिंग के कामों में सुविधा देने का काम इस मात्र 10 महीने के समय में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में हुआ है। पिछली सरकार में बहुत समय तक, बहुत समय तक जेजे कलस्टर्स और स्लम्स को, झुग्गी-झोपड़ी स्लम्स आदि को वोट पाने के लिए, अपनी PR चमकाने के लिए इस्तेमाल किया

जाता था। आदरणीय अध्यक्ष जी, वो भी कालखंड इस दिल्ली विधानसभा के सदन ने देखा है, दिल्ली विधानसभा के पटल पर देखा गया है जब ड्यूसिब का बजट उन झुग्गी-झोपड़ी जिनके नाम पर आज राजनीति करते हैं, जब फेसलिफ्ट करना होता है, अपने शीश महल को छुपाना होता है, अपने शीश महल दिल्ली और चंडीगढ़ वाले को छुपाना होता है तो झुग्गी-झोपड़ी की बात करने के लिए आ जाते हैं। दिल्ली ने देखा है ड्यूसिब का बजट, ड्यूसिब का बजट रात को 31 मार्च को 11 बजकर 55 मिनट पर जारी किया और 12:00 बजे बजट लैप्स हो गया, एक रूपया भी झुग्गियों में खर्च नहीं हुआ। यह ऑन रिकॉर्ड है और इस 11 महीने के कालखंड में आदरणीय मुख्यमंत्री- रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में झुग्गी-झोपड़ियों में काम के साथ-साथ जिन टॉयलेट्स को बनाने के लिए उन झुग्गियों की माताओं-बहनों के सम्मान के लिए आज तक इन्होंने बाथरूम, स्नान गृह नहीं बनवाए, उनको बनवाने तक का बजट पास हुआ और काम बहुत तेजी के साथ, बहुत तेजी के साथ उसमें सुधार के लिए काम चल रहा है। बार-बार, बार-बार, बार-बार साहब कह रहे थे अटल कैंटीन, अटल कैंटीन, अटल कैंटीन, अटल कैंटीन। एक पुराने जमाने की विज्ञापन को मैं बहुत बार कोट कर चुका हूं साहब। एक पिक्चर में दिखाया था चश्मे बद्दूर में, उस जमाने में चलता था, आपके जमाने में खासतौर पे, तेरी कमीज मेरी कमीज से सफेद कैसे, तो ऐड में दिखाता है वो पान खाते हुए थूक देता है, ले तेरी गंदी कर दी, ये वैसे लोग हैं। ये किसी की सफेद कमीज देख.., किसी के बसते हुए घर को देख ही नहीं सकते। अटल कैंटीन, आपके पास 11 महीने थे। आपने बहुत बड़े-बड़े वादे किए थे।.. 11 साल,

....व्यवधान....

(समय की घंटी)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: इधर अब मंत्री जी, चेयर की तरफ।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: बस बस। तो मैं माफी चाहता हूं अध्यक्ष जी। तो, तो अटल कैंटीन, आपके पास 11 साल थे, सेवा कार्य आप कर सकते थे। आपने भी सेवा की, आपने बड़े-बड़े ठेकेदारों की सेवा की पीडब्ल्यूडी घोटाले के नाम पर, आपने बड़े-बड़े से शीश महल बना के सेवा की। आपने भी अपने तरीके की सेवा की, कोई बुराई नहीं, आपने अपने तरीके की सेवा की। मगर हमने इन 11 महीने में 25 दिसंबर से लेकर 8 जनवरी, 2026 तक प्रतिदिन क्रमशः अध्यक्ष जी मुझे यह सदन के पटल पर बताते हुए खुशी होती है 25 दिसंबर को 17587, 26 दिसंबर को 20821, 27 को 25000, 28 को 25000, 29 को 25000, करते-करते-करते 6 तारीख को 27000, 5 तारीख को

27000, 7 तारीख को 27000 प्लस, 8 तारीख को 27000 प्लस, 3,76,779 लोगों ने हमारी इन अटल कैंटीन्स पे भोजन खाया है। मैं आपसे बहुत अच्छा, आप लोग बहुत अच्छा कर रहे हैं, आप केवल-केवल गालियां देते रहिए, खूब ढूंढिए, जाकर ढूंढिए यहां, यहां थोड़ा सा खाना गिरा रह गया, यह करिए, बहुत अच्छा, करिए, खूब करते रहिए। और हम उसपे नजर हटाकर अपना काम करते रहेंगे क्योंकि हम, हम सेवा के लिए चुन के आए हैं और यह जो उपराज्यपाल जी के अभिभाषण में यह बात बताई गई, इसके कारण दिल्ली की जनता के जीवन में जो परिवर्तन आया है, जो छोटे-छोटे कामगार, छोटे-छोटे मजदूर अकेले, अकेले अपने घरों में रहते हैं उन्हें खाना बनाना पड़ता था। पहले खाने की आग का साधन करना, बनाना, एक मजदूर को जाने से पहले फिर वो बेचारा दो, पूरे दिन का खाना बना के रख के जाता है। उसको दो वक्त का गरम खाना, पौष्टिक खाना मिलना आपको पचेगा नहीं साहब, आप तो शीश महल में खाने वाले हैं, आपको कहां अटल, अटल कैंटीन का, शीश महल का दरवाजा देखा था, टीवी में एक बार दिखाया था गोपाल जी, पता नहीं आपको बुलाया नहीं केजरीवाल जी ने। जाओ खुल जा सिम सिम, ऐसे खुल जाते थे दरवाजे, किचन के दरवाजे, ऐसे दिखाया। आप गए थे। ऐसे खुल जाते थे। तो इसके अतिरिक्त, इसके अतिरिक्त, इसके अतिरिक्त,....

....व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: हमने तो टीवी में देखा, आपको तो आपके तरह के कुछ विधायक बता रहे थे, आप में से तो किसी को सौभाग्य भी नहीं मिला था सचिवालय में जाकर मुख्यमंत्री के कार्यालय को देख लेते। वो भी अब मिला है, तुम में से कोई मुख्यमंत्री के पास गया है तो। 11 महीने में यह परिवर्तन हो गया तुम्हारे जीवन में। तुम्हें समझ नहीं आएगा यह, बहुत बड़ा परिवर्तन है, बहुत बड़ा परिवर्तन है। विधायक को मुख्यमंत्री के कार्यालय में जाने का मौका अब मिला है 11 महीने में। दरवाजे नहीं खुलते थे।

....व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: इसीलिए तो, इसीलिए तो यह बार-बार आके कहते हैं, सारी पोल पट्टी खोलते हैं। ये चाहते हैं उनकी रिटायरमेंट में आप इनका सहयोग कर दो। इसके अतिरिक्त माननीय अध्यक्ष जी मैं बस दो-चार मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा। फीस के संदर्भ में, शिक्षा के संदर्भ में बहुत- बहुत- बहुत व्यापक परिवर्तन हुए हैं। इन्होंने तो आज भी बड़ी कोशिश की थी साहब, इनके द्वारा पालित, पोषित एनजीओस जो कई ऐसी हैं जो इनके द्वारा पालित पोषित हैं, बड़ी कोशिश की थी कोर्ट में जाकर स्टे लाने की, मगर 'जाको रखे साइयां मार सके ना कोई' कोर्ट ने भी

कोई स्टे देने से मना किया। आगे न्यायालय जो निर्णय करेगा करेंगे और बहुत ज्यादा मैं इस डिबेट में पड़ना नहीं चाहता हूं कि जो ये स्कूलों के नामों के बारे में कह रहे हैं उस पर भी थोड़े समय में जब मौका आएगा आगे आपको जवाब देंगे बहुत अच्छी तरह से, आपका आईना फिर आपको भी शीशा दिखाया जाएगा, बहुत अच्छी तरह से शीशा दिखाया जाएगा। मगर सरकार का, गवर्नेंस का इंटेंट है, एक प्रोसेस को सेट किया गया है, रोज, रोज-रोज फीस के लिए भागना, रोज-रोज हड़तालें करवाना, यह गवर्नेंस मॉडल था पिछले 11 साल का, यह गवर्नेंस मॉडल था। मैं यहां बड़े फख्र के साथ कहता हूं आदरणीय रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में दिल्ली की सरकार के लिए 18 लाख सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे और 18 लाख प्राइवेट स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे सब बच्चे हमारे हैं। हर बच्चे की वेल बीइंग, हर बच्चे की मेंटल, फाइनेंशियल, इमोशनल स्टेबिलिटी ये हमारा काम है। हम मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में 11 महीने में उसे संरक्षित करने में सफल हुए हैं और उपराज्यपाल जी का अभिभाषण इस बात को, इस बात को परिलक्षित करता है। और और सबसे बड़ी बात समझने की यह है 11 महीने पहले के दृश्यों को याद करिए, आदरणीय सदस्य जो यहां मेरी बात सुन रहे हैं वो सब याद करिए, दिल्ली में क्या होता था, दिल्ली में सड़कों पर कूड़ा पड़ा रहता था और मेरे सफाई कर्मचारी भाई-बहन हड़ताल पर रहते थे, तनख्वाह नहीं मिलती थी। क्या होता था, दिल्ली में क्या होता था, दिल्ली में केजरीवाल जी एबीपी न्यूज़ जैसे किसी चैनल पर बैठकर दिवाली मनाते थे अपने परिवार के साथ और 12 कॉलेजों के शिक्षक, 12 कॉलेजों के टीचर, उनके नॉन टीचिंग स्टाफ अपने कॉलेजों के बाहर भूख हड़ताल पर बैठते थे, महीनों- महीनों तनख्वाह नहीं मिलती थी, महीनों- महीनों तनख्वाह नहीं मिलती थी। 11 महीने में सरकार ने वो प्रोसेस सेट राइट कर दिया। अब नगर निगम को सरकार यह नहीं कहती कि तेरे लिए बजट नहीं है। क्या बदल गया? यह कहते हैं सरकार ने क्या बदल दिया? सरकार ने बदल दिया। अब नगर निगम और दिल्ली सरकार में लड़ाई नहीं है। हम जिम्मेदारी लेते हैं, हम नहीं कहते कि नगर निगम फंलाने की है, ढिमकाने की है। हम दिल्ली के रखवाले के रूप में, दिल्ली के सेवक के रूप में चुन के आए हैं और मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हमने पैसा भी दिया है, राजनीतिक इंटेंट भी दी है और करके दिखाया है।

(समय की घंटी)

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: कॉलेजों के पैसे, अचानक क्या हो गया, क्या हो गया अचानक दिल्ली के पास, क्या दिल्ली की सरकार की जेब में फालतू पैसा आ गया? केवल राजनीतिक इंटेंट

के साथ काम हुआ है, गवर्नेंस की इंटेंट के साथ काम हुआ है। हर कॉलेज को पैसा दिया गया है। हर कॉलेज को, पिछले आप जानकर हैरान होंगे माननीय सदस्यों, मैं आपके समक्ष आज बताना चाहता हूं, इस सरकार ने 11 साल में उन कॉलेजेस की रिपेयर की, बिल्डिंग की रिपेयर के लिए एक रूपया जारी नहीं किया था। हमने ग्रांट इन ऐड के सारे प्रोसेसेस को बिल्कुल ठीक से कर दिया और ये हमने कोई एहसान नहीं किया है, हमने रेस्टोरेशन ऑफ राइट्स किया है, नगर निगम और दिल्ली की जनता का राइट है ये, हमने उसको रेस्टोर करके दिखाया है और साथ ही साथ हायर एजुकेशन के फील्ड में जो एलजी साहब ने अपने अभिभाषण में मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में पढ़कर बताया, बताया किस तरीके से एडुसिटी के बारे में काम हुआ है। कावड़ यात्रा के संदर्भ में हमारी सरकार ने बड़ा काम किया है और मुझे आप सबको यह बताते हुए बहुत खुशी होती है, एलजी साहब ने भी अपने अभिभाषण में जिक्र किया कि मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में पावर विभाग ने अगले 4 साल का पावर मास्टर प्लान बनाया है। 17,000 करोड़ रूपये की लागत से आप सबकी विधानसभाओं में आने वाले समय में डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क को पूरा करने का, सुदृढ़ करने का काम सरकार करने जा रही है, उस इंटेंट को भी इस अभिभाषण में उपराज्यपाल जी ने बताया है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: आपकी भी विधानसभा होगी साहब। अभय जी बेचारे रोते रहते थे चार कैमरे नहीं मिले इनको मगर हम नहीं वो करेंगे। हमारी लड़ाई आपसे आईडियोलॉजिकल है, हमारी लड़ाई दिल्ली की जनता से थोड़ी ना है। आपने हमसे लड़ने के लिए दिल्ली की जनता से लड़ाई लड़ी इसलिए दिल्ली की जनता ने मालिकों को उनकी औकात बता दी। मालिकों को उनकी हैसियत बता दी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए थैंक यू जी।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत आपका आभार व्यक्त करता हूं। यह लंबा विषय है मगर दिल्ली की जनता आज इस पवित्र सदन के माध्यम से आदरणीय मुख्यमंत्री जी को सुनना चाहती है। उनके 11 महीने के कार्यकाल में उपराज्यपाल जी ने जो उपलब्धियां बताई उनके संदर्भ में उनके प्रभावशाली नेतृत्व, उनके गवर्नेंस इंटेंट, उनके कठोर निर्णय की क्षमता, उनकी वो क्षमता जिसने गवर्नेंस को मजबूत करने के साथ-साथ एडमिनिस्ट्रेशन को सेट राइट करने के लिए भ्रष्टाचारियों को सस्पेंड करने का काम भी किया। मगर उसमें भी भ्रष्टाचारियों के साथ खड़े होकर हमारे विपक्षी दलों ने भ्रष्टाचार को बढ़ाने की कोशिश की। कहां चले

गए अचानक वो कैमरे, कहां चले गए अचानक वो मोबाइल जो कहते थे फोटो ले लेना। कितने वीडियो बने ये ये एक महिला मुख्यमंत्री का इंटेंट था, हिम्मत थी जो खड़े पैर तीन भ्रष्टाचारियों को 1 मिनट में सस्पेंड करके दिल्ली में कानून के राज को खड़ा करने का सवाल किया। आपने मुझे बोलने का मौका दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी अब चर्चा का जवाब देंगी।

श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीया मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय उपराज्यपाल महोदय द्वारा उनके उदबोधन में दिल्ली सरकार का जो रोड मैप प्रस्तुत किया गया, ना केवल उसका धन्यवाद देना चाहती हूं बल्कि यह भी कहना चाहती हूं कि यह केवल कोई संसदीय रस्म अदायगी नहीं है कि एलजी साहब ने उदबोधन दिया और हम धन्यवाद दे रहे हैं। दिल्ली इस समय अपने आपको उस सारे टकराव की स्थिति से बाहर दिखाने के लिए खड़ी हुई है। आज एक साथ इकट्ठे मिलकर के जहां केंद्र सरकार, जहां माननीय एलजी महोदय, जहां नगर निगम, सभी एजेंसियां मिलकर काम करती है और टकराव में नहीं, परिणाम के लिए काम करती है। दिल्ली के वेलफेयर के लिए काम करती है। यह सच में हमारी गवर्नेंस का वो मॉडल है जिसको एंडोर्स करते हुए हम अपनी जवाबदेही, समन्वय और स्पष्ट दिशा कि किस दिशा में हमें क्या काम करना है और क्या हमारे टारगेट हैं यह हम जनता के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। सुशासन के साथ-साथ संवेदनशीलता, इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ इंक्लूजन और इस पूरे के पूरे हमारे कामों में हम यह बताना चाहते हैं कि हमारी यह सरकार जहां एक और गांधी जी के सर्वोदय को शासन की आत्मा मानती है, वहीं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय को अपनी नीति बनाती है और अटल जी के राष्ट्रवाद पर चलते हुए हम माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के और विकसित दिल्ली के संकल्प को साकार करने के लिए रोजाना लगातार-लगातार काम कर रहे हैं और यही कारण है कि दिल्ली में अब शासन और सत्ता प्रदर्शन का काम नहीं है, केवल दिखावे का काम नहीं है, यह सेवा का अभ्यास है जो दिल्ली सरकार करके दिखा रही है। यहां निर्णयों में शोर नहीं है, यहां समन्वय से होते निर्णय हैं। यहां पर सरकार का हर कदम नागरिक सेवा और राष्ट्र प्रथम की भावना से ओतप्रोत है यह मैं कहना चाहती हूं। फरवरी 2025 में हमारी सरकार दिल्ली में आई। ऐसा लगा जैसे कि वर्षों के अंधकार के बाद दिल्ली में सूर्य की नई किरण आई है। 15-20 सालों में पूरी दिल्ली का टेक्सचर बदल गया। आबादी बढ़ गई, जरूरतें बढ़ गई परंतु पिछली सरकारों ने ना उन जरूरतों को समझा,

ना उन पर काम किया और वो पूरी बुनियादी व्यवस्थाएं जो खड़ी होनी थी वो हो नहीं पाई और लगातार व्यवस्थाएं चरमराती गई। अध्यक्ष महोदय, हमने यह तय किया कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के विज़न के अनुरूप हम विकसित दिल्ली बनाएंगे और इसके लिए दिल्ली को देश का एक टॉप सिटी, एक अच्छा सुंदर शहर बनाने के लिए हम सब लोग अपनी पूरी ऊर्जा के साथ, पूरे जोश के साथ दिल्ली को एक सिरे से सजाने के लिए, संवारने के लिए और व्यवस्थित करने के लिए हमारी पूरी टीम काम में जुटी है। हमारी प्राथमिकताएं हमने तय की। उसके मुताबिक हमनें अपनी नीतियां बनाई और फिर शॉर्ट टर्म, मिड टर्म और लॉन्ग टर्म अपने गोल तय किए जिसके हिसाब से हम अपनी योजनाओं को धरती पर उतार सके और मुझे संतोष है कि हम अपने इस 11 महीने के अल्पकाल में दिल्ली की दिशा बदलने में सफल रहे। दिल्ली को एक नई दिशा में, एक नए भविष्य की ओर ले जाने में हम सफल हो पाए। मैं बताना चाहूंगी हेल्थ केयर की दिशा में जो हमने काम किए जिसकी चर्चा माननीय सदस्यों ने भी की। पहले ही दिन शायद ही किसी सरकार ने इतना बड़ा निर्णय लिया होगा कि शपथ ग्रहण करने के तुरंत बाद 'आयुष्मान भारत' जैसी बड़ी योजना को सेम डे कैबिनेट बुलाकर के हमने अप्रूव किया, सेम डे और इस 11 महीने में 4 लाख से ज्यादा लोगों का उसके अंदर रजिस्ट्रेशन 'वय वंदन योजना' जिसमें बुजुर्गों को इलाज की हमने सुविधा दी 10 लाख रुपये तक की उसमें भी 2,62,000 लोगों से ज्यादा लोगों का रजिस्ट्रेशन होना यह दिखाता है कि दिल्ली की जनता तड़प रही थी, परेशान थी इलाज के लिए। आज लगभग 19,200 लोगों से ज्यादा लोगों ने इलाज पाया और 32 करोड़ से ज्यादा क्लेम अभी तक दिए जा चुके हैं, 32 करोड़ से ज्यादा क्लेम। आप सोचिए कि किस तरह की स्थितियां थी कि लोगों को इलाज के लिए दर-बदर घूमना पड़ता था। हमने आरोग्य मंदिर जिसकी बात अभी, कहां चले गए वो अपना-अपना भाषण दिए जा रहे हैं, चले जा रहे हैं। पहले भी कह रहे थे कि अरे जल्दी छुट्टी कर दो। वैल में भी आए कि हमें जाने दो, हमें सस्पेंड कर दो पर अध्यक्ष जी आपने कमाल कर दिया, आपने कहा, नहीं सुननी पड़ेगी तुम्हें बात क्योंकि पोल्यूशन पर चर्चा इतना विशेष विषय है, दिल्ली का कंसर्ड है। मैं साधुवाद देती हूं जितने लोग बैठे हुए हैं कि आप लोग बैठे हैं उस चर्चा के लिए। तो आरोग्य मंदिर की दिशा में हमने 238 आरोग्य मंदिर खोले, 100 और तैयार हैं और इसे हमें 1100 तक लेकर के जाने का हमारा प्लान है कि दिल्ली में 1100 आरोग्य मंदिर हम खोलें। ये बातें तो वो है जो मेरे माननीय सदस्यों ने भी बार-बार पढ़ी पर मैं आपको इसके आगे की बात बताना चाहती हूं। हमने जो दिल्ली में एक बहुत ही बेहतरीन काम

किया। Hospital Information Management System एक डिजिटलाइज किया हमने पूरे हॉस्पिटल के सिस्टम को जिसमें ऑनलाइन ओपीडी बुकिंग करी, जिसमें digital prescriptions अब डॉक्टर्स के द्वारा दी जाती है और हर पेशेंट का मेडिकल रिकॉर्ड आज अस्पतालों के पास है। वो जो करप्शन, वो जो व्यवस्थाओं में कमी, लीकेजेस पिछली सरकारों के समय में थी कि एक ही पेशेंट का 10 बार नाम लिखकर के अलग-अलग प्रकार की दवाइयों की पर्चियां बना-बनाकर के ना जाने करोड़ों रुपए के बिल उन्होंने बनाए होंगे, अब वो सब बंद हो गई है क्योंकि सारी चीजें डिजिटली अवेलेबल है। कौन पेशेंट है, किस अस्पताल में इलाज हुआ, एक अस्पताल में इलाज हुआ तो उसका रिकॉर्ड दूसरे अस्पताल में भी निकल आएगा। दिल्ली सरकार के सारे अस्पतालों का पूरा सिस्टम आपस में इंटरलिंक कर दिया गया है और जिन-जिन हॉस्पिटल्स में जिन-जिन मशीनों की कमी थी उन सबके लिए हमने उनको उपलब्ध कराने के लिए काम किया। उसमें 150 डायलिसिस की मशीनें हमने लगाई। हमने लोकनायक अस्पताल में, लोकनायक अस्पताल में हमने मेडिकल जेनेटिक वार्ड यानि कि गर्भ में ही, मां के गर्भ में ही बच्चे की जेनेटिक प्रॉब्लम कोई है तो वह ध्यान में आ जाए, ऐसी दुर्लभ बीमारियों को जांचने का वार्ड हमने लोकनायक अस्पताल में बनाया जो कहीं नहीं है, दिल्ली में किसी अस्पताल में नहीं है अभी और ऐसे ही हमने नेट मशीन जो सेफ ब्लड ट्रांसफ्यूजन की दिशा में काम करती है यानि कि आपको किसी को अगर ब्लड डोनेट करना है तो दो दिन में रिपोर्ट देखकर के यह बताती है कि यह ब्लड सामने वाले व्यक्ति को देने के लिए सही है कि नहीं है उसमें किसी तरह का इंफेक्शन तो नहीं है। ऐसी रेयर मशीन जो दिल्ली में पहली बार लगी उसको हमने अस्पताल में लगवाया। नवजात शिशुओं के लिए हमने दिल्ली सरकार के अस्पताल में लैक्टेशन, लैक्टेशन मैनेजमेंट यूनिट दिल्ली सरकार के अस्पताल में शुरू किया जिसमें कि नवजात बच्चा जिसको मां के दूध की आवश्यकता है वो वहां पे प्रिजर्व होगा उसको मिल पाएगा और ऐसे बच्चों की सेहत और जान बचाने के लिए एक बहुत बड़ा काम हमारे दिल्ली सरकार के अस्पतालों में हो पाएगा। मैं एक चीज और कहना चाहती हूं कि हमारे दिल्ली सरकार के अस्पतालों में अभी तक कोई भी जो दिल्ली स्टेट आयुष सोसाइटी नहीं थी। अभी तक नेशनल आयुष मिशन तो था पर दिल्ली में आयुष सोसाइटी के नाम पर कुछ भी नहीं बनाया गया था तो हमने दिल्ली सरकार में आने के बाद दिल्ली स्टेट आयुष सोसाइटी बनाई और केंद्र से भी सहायता पाई और दिल्ली में आयुष के जितने काम हैं उन अस्पतालों को संबल देना, वहां दवाइयां देना और उनको बेहतर बनाने की दिशा में हमने काम किया। सर यह भी कहना चाहूंगी कि दिल्ली जैसा

शहर जो देश की राजधानी है, यहां ऑर्गन डोनेशन का कोई भी व्यवस्थित प्लेटफार्म दिल्ली में नहीं था। हमने दिल्ली सरकार में आने के बाद स्टेट ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन सोटो बनाया जिसके माध्यम से ऑर्गन डोनेशन को व्यवस्थित किया गया। आज दिल्ली राज्य भी ऑर्गन की जरूरतों को लाखों लोगों की जान बचाने की दिशा में अपनी भूमिका निभा पा रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। महोदय, हमारी सरकार ने दिल्ली में 29 नए जन औषधि केंद्र भी खोले जहां पर डिस्काउंटेड रेट में दवाइयां मिलती हैं और पांच नए सरकारी अस्पतालों के ब्लॉक हमने इनोग्रेट किए जो अभी भाई जी कह रहे थे कि भई क्या किया, हमारे बनाए हुए अस्पतालों का क्या किया है? इसी बात के साथ मैं जरूर बताना चाहूंगी कि पिछली सरकार ने अस्पताल शुरू तो कर दिए पर पूरे नहीं किए। बिना योजना के बेतरतीब तरीके से हॉस्पिटल्स को बिना उसका बजट एस्टीमेट जाने अस्पतालों को शुरू किया गया। बाद में जब देखा कि कॉस्टिंग जो है 200 करोड़ की जगह 400 हो गई, 400 की जगह 800 हो गई, 800 वाला 1600 का हो गया, खड़े-खड़े स्वास्थ्य मंत्री जी जो पढ़ी लिखी सरकार के स्वास्थ्य मंत्री थे वो विजिट पे जाते थे, कहते थे बनी हुई बिल्डिंग में चार फ्लोर पर दो फ्लोर और चढ़ा दो। उन्हें यह शायद पता ही नहीं था कि इसके लिए कोई नक्शा पास होता है, कोई सैंक्शन होती है, कोई बजट एलोकेशन होती है। सारे अस्पतालों को उन्होंने इस कदर उलझा दिया कि आज उसको सुलझाना एक अपने आप में बड़ा टास्क हो गया। ये सीधा-सीधा लगता है कि कॉन्ट्रैक्टर को फायदा पहुंचा रहे थे। आज इंक्वायरी में है, आज केसेस को हमें फोरक्लोज़र करना पड़ा, फोर क्लोजर करके नए टेंडर लगाने पड़ रहे हैं। कैसे पूरा करें उनके इस भ्रष्टाचार की नींव को, कैसे हम इस पर इमारत बनाएं? कोई हमें यह बता सकता है कि इन अस्पतालों के लिए उनकी क्या योजना थी, कि आज यह अस्पताल बिल्डिंग सरकार पूरे कर भी ले तो उसके बाद ये चलाए कैसे जाएंगे? कैसे वहां पर डॉक्टर रखे जाएंगे? कैसे वहां पर दवाइयां होंगी? कितना उसके लिए बजट एस्टीमेशन चाहियेगा? कोई प्लानिंग नहीं थी इनकी। जब आज हमने उन अस्पतालों पर कंसलटेंट लगाने के लिए टेंडर किए कि भाई कंसलटेंट बुला के पूछो, स्पेशलिस्ट बुला के पूछिए कि भी कोई राय दें, वो बताएं कि इनको कैसे पूरा करें? तो यह लोग कहते हैं अरे ये तो पीपीपी पे दे देंगे, अरे ये तो प्राइवेटाइज कर देंगे, अरे तो भैया ऐसी ही बिल्डिंग सजा के रखनी है। इनका करना क्या है? कुछ तो पर्चा छोड़ के जाते कि आपने सोचा क्या था इन हॉस्पिटल्स को करने के लिए, पर फिर भी हमने उनमें से पांच अस्पतालों के नए ब्लॉक को शुरू कर दिया है और उसमें कुछ भी आधुनिक उपकरण मरीजों को जो सुविधाएं चाहिए, जितना

इंफ्रास्ट्रक्चर चाहिए था 100 करोड़ रूपये और ऊपर से हमने लगाए और उन हॉस्पिटलों के हमने ब्लॉक शुरू किए। एक नई योजना के माध्यम से हमने दिल्ली में दिव्यांग जन उनको जो कि अपने आप को हैंडल नहीं कर पाते, किसी ना किसी किसी परिवार के व्यक्ति को उनको संभालना पड़ता है। उनको 6 हजार रूपये देने की हमने एक नई योजना लाए ताकि ऐसे दिव्यांग व्यक्तियों को पारिवारिक रूप में उनको मदद मिल सके। एक भी नई पोस्टिंग पिछली सरकारों के कार्यकाल में दिल्ली सरकार में नहीं हुई परंतु हमने अपने नर्सिंग में 1300 रिक्त पदों को भरा और नए नर्सिंग स्टाफ को लगा के उनको नियुक्ति पत्र दिए। अध्यक्ष जी आजकल बच्चे को भी किसी परिवार में जाओ किसी मित्र के यहां मिलो 500 रूपये का नोट देते हैं तो बच्चा एक बार देखता है कि अंकल ने क्या दिया है पर हमारी पिछली सरकार के राज में हमारा जो नर्सिंग इंटर्न्स होते थे उनको कितना भत्ता मिलता था 500 रूपये का। नर्सिंग इंटर्न्स को 500 रूपये का भत्ता पिछली सरकार देती थी, अपनी जेब में करोड़ों रुपए रखती थी पर नर्सिंग इंटर्न्स को 500 रूपये। हमने आने के बाद उस भत्ते को 13 हजार 150 प्रतिमाह किया ताकि वो बच्चे अपनी इंटर्नशिप को बेहतरी से कर सकें। दिल्ली में हमने एक नया सेवा मॉडल प्रस्तुत किया, कोई भूखा ना सोए और इसके लिए हमने वो मेनिफेस्टो जो वो लिए घूम रहे हैं, ले रखिए बिल्कुल रोज पढ़िए क्योंकि एक-एक वाक्य जो उस मेनिफेस्टो में लिखा है वो रेखा गुप्ता सरकार दिल्ली को पूरा करके देगी, एक काम भी छोड़ने वाली नहीं है, ये आपको बताना चाहती हूं। अटल कैंटीन हमने 100 बोली थी और 100 बना के रहेंगे हम अटल कैंटीन। GRAP लग गया, बाकी परेशानियां हुई तो कुछ बनने में थोड़ा टाइम लगा, 45 पूरी हो गई हैं 55 बहुत जल्द हम पूरी करके दिल्ली की जनता को देंगे। रोजाना 1 हजार लोगों को खाना और इसमें 100 कैंटीन में 1 लाख लोग रोजाना भोजन करेंगे ये है हमारी सेवा का नया मॉडल, मात्र 5 रूपये में, मात्र 5 रूपये में। मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूं अपनी सरकार के शिक्षा मंत्री आशीष सूद जी को जिन्होंने बहुत ही मेहनत के साथ अपने अधिकारियों के साथ बैठ के दिल्ली के लिए वो ऐतिहासिक एक्ट बनाया दिल्ली स्कूल एजुकेशन एक्ट 2025 जो पहली बार इन प्राइवेट स्कूल वालों को अपने नियमों में बांध पाया कि कोई भी स्कूल अपनी मनमर्जी से फीस नहीं बढ़ा सकता। आपको फीस बढ़ाने के लिए अपने पेरेंट्स को, स्टाफ को, मैनेजमेंट को, सबको अपने साथ जोड़ करके राय लेनी होगी, मिलके निर्णय करना होगा और आज भी जिस तरीके से कोर्ट ने उन सभी प्राइवेट स्कूलों वालों को इस बात का संज्ञान दिया कि आपको ये कमेटी बना करके अपने फी स्ट्रक्चर में पेरेंट्स का इन्वॉल्वमेंट करना पड़ेगा यह दिल्ली सरकार की एक बड़ी जीत है। सीएम

श्री स्कूल अभी बार-बार कह रहे थे, सीएम श्री स्कूल, बी आर अंबेडकर साहब का नाम हटा दिया, कोई नाम नहीं हटा है। मैं आज यहां इस विधानसभा परिसर में इस पवित्र मंच से कह रही हूं कोई बाबा साहब का नाम किसी स्कूल से नहीं हटा है। हमने बाबा साहब का नाम केवल रख के उन स्कूलों की जो दुर्गत थी उसको ठीक करने के लिए उन्हें सीएम श्री स्कूल बनाया है ताकि वहां पे बेहतर से बेहतर सुविधाएं सरकार के द्वारा दी जायें। उन स्कूलों में हर क्लास में स्मार्ट बोर्ड होंगे, हर स्कूल में डिजिटल लाइब्रेरी होगी, हर प्रकार की सुविधा, स्पोर्ट्स ग्राउंड, हर चीज उन स्कूलों में हो ताकि बाबा साहब की पुण्य आत्मा को भी प्रसन्नता हो कि मेरे नाम पे जो स्कूल हैं वो बेहतरी से चल रहे हैं। यह कारण से हमने उनको सीएम श्री स्कूल किया है। केवल नाम रखने से सेवा भाव या सम्मान नहीं होता, करके दिखाना पड़ता है कि आपने उन स्कूलों में कुछ अलग किया। मुझे खुशी है कि हमारे शिक्षा विभाग ने जो चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड है उनके लिए 10 थेरेपेटिक सेंटर खोले हैं जिसमें 12 हजार से ज्यादा बच्चों को शिक्षा दी जाएगी। यह उन बच्चों के लिए है जो विशेष हैं। मैं अध्यक्ष जी यह कहना चाहती हूं कि दिल्ली सरकार का हमारा यह कार्यकाल, 5 साल का यह कार्यकाल इसमें एजुकेशन को विशेष रूप से सरकारी स्कूलों को एक नए मुकाम पर पहुंचाना हमारी प्रतिबद्धता है। एक-एक स्कूल में 100, 200, 500 नहीं हर क्लास रूम स्मार्ट बोर्ड के साथ होगा, ये हमारा प्रण है। हर स्कूल में लाइब्रेरी होगी, स्पोर्टस ग्राउंड होगा सारी फैसेलेटिज होगी, बेहतरीन टॉयलेट होंगे। टीचर्स, स्टाफ किसी प्रकार की कोई कमी नहीं होगी। ऐसा पूरा का पूरा एजुकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर हमारी सरकार के द्वारा बनाया जाएगा यह मैं आपको कहना चाहती हूं। अनेकों काम किए हमने इस 11 महीने में। कोई मुकाबला नहीं है 11 साल की सरकार से इस 11 महीने की सरकार का, फिर भी यह कहते क्या किया, क्या किया, बताइए क्या किया, तो बता रहे हैं भई , जोड़ लीजिए आप अपना रिकॉर्ड निकालिए कि जब आप 11 महीने पे थे तो आपने कितने काम किए थे। ऐतिहासिक कदम उठाया दिल्ली सरकार ने, पूरी की पूरी दिल्ली में डेढ़ लाख के करीब प्रॉपर्टीज है जो बुक्ड पड़ी थी, बुक्ड पड़ी थी इसलिए वहां मीटर नहीं लगता था पर आप सोचिए कि ऐसा तो हो नहीं सकता कि अगर किसी प्रॉपर्टी पे मीटर ना लगा हो तो आजकल के जमाने में कोई बिना बिजली के रह रहा हो। बिजली तो लेते थे। वो कहां से लेते थे बड़ा प्रश्न चिन्ह है? बिजली लेते थे। कहां से लेते थे ? कोई बिलिंग नहीं थी। बिजली की चोरी होती थी, करप्शन होता था, अधिकारियों की जेबें भरती थी, पर उस व्यक्ति के मकान पे कनेक्शन नहीं लग सकता था। बिजली का मीटर नहीं लग सकता था। हमारी सरकार ने आने के बाद इस काम

को किया कि एमसीडी की जितनी भी बुक्ड प्रॉपर्टी थी हमने निर्णय लिया कि हम उनको बिजली देंगे, मीटर लगाएंगे। बड़ा निर्णय था, बड़ा किया सरकार ने, आज लाखों लोग इसका लाभ उठा रहे हैं। बिना चोरी के, बिना करप्शन के अपने घर में बिजली पा रहे हैं। सरकार का निर्णय था, किया हमने, मजबूती के साथ किया। ऐसे ही जल बोर्ड में इनके समय के लाखों बिल लोग ले लेकर आज भी घूम रहे हैं। 15 लाख का बिल, 20 लाख का बिल, 5 लाख का बिल, दो लाख का बिल। गरीब आदमी मेरा एक कमरे का मकान है। मैं बिजली, ये मेरा बिल पानी का इतना आया, क्या करूं? कोई जवाब नहीं था। हमारी सरकार ने, मैं बधाई देती हूं प्रवेश जी को कि दिल्ली जल बोर्ड की जो एमनेस्टी स्कीम आई उसके कारण से आज दिल्ली में 2,10,654 लाभार्थियों ने इसका लाभ अभी तक ले चुके हैं और दिल्ली जल बोर्ड में 224 करोड़ रूपये का राजस्व भी आया। 224 करोड़ और यह अभी 10% भी समाधान नहीं हुआ। अभी तो बहुत केसेस हैं। लगातार लोग आ रहे हैं। इतना उलझा के रखा था इन लोगों ने परंतु हमने उस काम को किया। मैं एक और बहुत ही सुंदर योजना जो दिल्ली सरकार ने की 'पालना' हमने 500 पालना दिल्ली में बनाई। क्या है यह पालना? वो बहन जो मजदूरी करने जाती है, नौकरी करने जाती है, घर परिवार में कोई नहीं है छोटे बालक को संभालने वाला, उन बच्चों को संभालने के लिए सरकार ने पालना केंद्र शुरू किए कि वह बहन मजदूर बहन अपने बच्चे को वहां दो चार पांच घंटे के लिए छोड़ के जाए, वहां पे सहयोगी ध्यान रखेंगी उस बच्चे का, उसको खिलाएंगी, पिलाएंगी, सुलाएंगी और उसके बाद जब वो अपना काम करके आ जाए तो अपने बच्चे को घर ले जाए। इतनी बड़ी एक योजना जिसके माध्यम से आज दिल्ली की हजारों बहनें निश्चिंत होकर अपने बच्चे को दिल्ली सरकार के आंगनबाड़ी केंद्र में, पालना केंद्र में छोड़ के जाती हैं और अपने पैरों पर खड़ी होकर के अपने परिवार को संबल देती हैं। वो काम भी करती हैं, कमाई भी करती हैं और बच्चे का भी ध्यान हो पा रहा है। तो दिल्ली सरकार की एक बड़ी योजना यह जो 'पालना केंद्र' हमने दिल्ली में खोले, इसके लिए भी मैं सरकार, मैं अपने डब्ल्यूसीडी विभाग को बधाई देती हूं। यमुना सफाई, अरे यमुना में झाग क्यों आ रहे हैं? आ गए, आ गए, आगे वाले झाग क्यों आ रहे हैं? ये क्यों आ रहे हैं? आशीष जी वाली बात ही कहती हूं। भाई झाग गए कहां थे जो आ गए? पहले चले तो जाते तब आप बताते कि चले गए थे, अब वापस आ गए हैं। हमारे कारण से आ गए। वो कभी गए ही नहीं। आप भेज देते तो हम फिर यह कहते कि हमने मेंटेन कर लिया। अभी तो यही जद्दोजहद चल रही है कि यमुना में जो इतने नाले दिल्ली भर के आकर के गिरते हैं कि जितने भी एसटीपी लगे हुए हैं जो आपके कार्यकाल के हैं,

पूरे के पूरे खराब मानकों पर चल रहे हैं। उन सबका अपग्रेडेशन हमें करना पड़ा। नए एसटीपीस बनाने पड़े। उनके टेंडरिंग प्रक्रिया में अभी तो चल रहे हैं। डीसेंट्रलाइज एसटीपी नालों को टैप करने का काम, उनको ट्रीट करने का काम। यह तो अभी इनिशियल फेज में कोई दो चार दिन, 10 दिन में नहीं होने वाला। तुम्हें 11 साल मिले हैं, 11 साल हमें भी तो दो, हम आपको यमुना साफ करके दिखाएंगे। सीवेज सिस्टम संभाल के रखिए। मैं, आप थे नहीं, मैंने बताया। एक-एक वाक्य जो इस मैनिफेस्टो में लिखा है उसको पूरा करके देगी हमारी सरकार। पूरा का पूरा ब्यौरा जल बोर्ड का हमारे जल मंत्री प्रवेश जी ने दिया है। एक-एक बात उसको मैं दोहराऊंगी नहीं परंतु हां यह बात जरूर है कि वर्षों से जो दिल्ली की तकलीफें थीं, इन 5 सालों में उसमें से अधिकतम तकलीफों को हम कम करने का प्रयास करेंगे। बात सड़कों की आती है। सड़कों को लगातार दिल्ली में देखा गया कि कभी उसकी सूरत सुधरी ही नहीं क्योंकि आप लोगों के समय में ना विधायकों को आदत थी सड़कों पर रहने की, ना मंत्रियों को, ना मुख्यमंत्री को। तो इसलिए जस की तस वो सड़कों की हालत बनी रही। परंतु हमारी सरकार का यह निर्णय है 100% सड़कों को हम वाल टू वॉल कारपेटिंग करेंगे। रिकारपेटिंग करेंगे। उसकी पूरी की पूरी 100% सड़कों को, एक भी सड़क छोड़ने वाले नहीं है। पहले फेज में हम 140 कि.मी. सड़कें अपनी पीडब्ल्यूडी की रिकारपेटिंग कर चुके हैं और आगे की पूरी योजना पाइपलाइन में है। एक भी सड़क बाकी नहीं रहेगी। वॉल टू वॉल उसमें हम काम करने वाले हैं। उसमें साइड बम, उसमें सेंटर वर्ज, ये सारी की सारी सड़क को पूरी तरीके से शानदार बनाते हुए उसमें प्लांटेशन का काम, उसमें हर तरीके के काम हम सड़कों पर करने वाले हैं। इसी प्रकार से सारे दिल्ली के जितने टॉयलेट्स हैं उनको बेहतरीन व्यवस्थाएं देना हमारा संकल्प है। जितने भी हमारे बस क्यू शेल्टर है उन सबको बेहतर करना हमारा संकल्प है। ये सारे काम कोई एक दिन में, 10 महीने में हो जाए संभव नहीं। परंतु होंगे निश्चित क्योंकि हम लगातार उस लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं और योजनाबद्ध तरीके से बढ़ रहे हैं। यह काम लगातार चल रहा है। जरूर बताना चाहूंगी ट्रांसपोर्ट में हमने जो काम किए हैं पब्लिक ट्रांसपोर्ट को शत-प्रतिशत ईवी पर ले जाने का हमारा लक्ष्य है। इस समय 3500 ईवी बसें सड़कों पर चल रही है जिसको 1500 बसों का इजाफा हमने अपने कार्यकाल में किया और टारगेट यह है कि 2026 के अंत तक साढे सात हजार बसिज और फिर उसके बाद अगले साल उसको 10,000 बसिज तक लेकर के जाएं ताकि एक जो बड़ी समस्या दिल्ली में प्रदूषण की है इन ईवी बसों के माध्यम से उन प्रदूषण पे भी हम काम कर सके। नई आईएसबीटी का नवनिर्माण, रनोवेशन जितने भी बस डिपो हैं उन सबकी कैपेसिटी

बढ़ाने का काम, उनमें इवी चार्जिंग स्टेशन लगाने का काम यह सारे काम भी जारी हैं जो आपके समय में कभी भी उस तरीके से विचार ही नहीं किए गए थे। साथियों, इंटर स्टेट बसिज आप सब ने देखी होगी अपने-अपने समय में, हुआ करती थी। हम जाते थे कभी पता चलता था डीटीसी की बस में दिल्ली के बाहर भी जाते हैं। कब बंद हुई, क्यों बंद हुई, किसी को मालूम है? इन्होंने डीटीसी को इतने घाटे में पहुंचा दिया कि जितना दिल्ली सरकार का आज का बजट है, उतना मात्र तो डीटीसी का घाटा है जो आपके समय में खड़ा किया गया। आपके समय में उतना घाटा है जितना दिल्ली सरकार का पूरा बजट है। सब बंद कर दिया। हमने आने के बाद में इंटर स्टेट बसिज शुरू करी। हमने आने के बाद में, सब बता रही हूं। सुनते रहो बीच में जाना मत। सुनते रहो, इंटर स्टेट बसिज हमने आने के बाद दोबारा शुरू करी। यूनिवर्सिटी की यू स्पेशल बस हमने आने के बाद दोबारा शुरू करी। जितना भी रूट को दोबारा से रेशनलाइज करने का काम हमने आकर के दोबारा से शुरू किया। और यहां तक कि डिम्स जिसको आपने डीटीसी का इतना बड़ा हिस्सा बेच दिया था, हमने आने के बाद डिम्स से अपना शेयर वापस लेने के लिए फिर से कवायद शुरू की है और हमने उनसे पूरा बस का रूट ले लिया है। अब सारी बसें दिल्ली सरकार स्वयं चला रही है और इसके आगे भी दिल्ली सरकार ही अपने डीटीसी को पूरे के पूरे नुकसान से बाहर लेकर के आने का काम करेगी। डीटीसी फिर से अपनी जिंदगी जियेगा। हमारे कर्मचारी फिर से अपनी डीटीसी में काम करेंगे और हर एक व्यक्ति को उसके अधिकार मिलेंगे। महिलाओं को फ्री बस कहते-कहते न जाने कितने करोड़ों रुपए का करप्शन आप लोगों ने किया पर अब नहीं होगा। हमने दिल्ली की महिलाओं को फ्री बस का सफर तो जरूर देंगे पर साथ में एक पिंक कार्ड दे रहे हैं। उस पिंक कार्ड के माध्यम से जितनी बहनें बसों में जाएगी उतनी ही टिकटें उसके अगेंस्ट पेमेंट होगी। आपके जैसे नहीं कहा कुछ, किया कुछ कितनी पेमेंट हो गई मालूम ही नहीं है। इसीलिए तो घाटे में गई डीटीसी क्योंकि कोई अकाउंटेबिलिटी नहीं थी। क्या मांगा जा रहा है? क्या दिया जा रहा है? परंतु हर एक चीज को पारदर्शिता से करने के लिए दिल्ली सरकार ने महिलाओं को, दिल्ली की बहनों को पिंक कार्ड देने का निर्णय लिया है और आने वाले समय में हम दिल्ली में टिकट लेने की आवश्यकता नहीं होगी, डिजिटल पेमेंट होगी। ऐसा पूरा सिस्टम दिल्ली की बसों में कर देंगे ताकि लीकेजिज का कोई भी रास्ता ना रहे। जो आप सोचते थे, जो करते थे वो रास्ते अब बंद हो जाएंगे। मैं जरूर बताना चाहूंगी फाइनेंस मिनिस्टर हूं। दो काम मैंने जो किए दिल्ली के लिए जो कि मुझे लगता है दिल्ली के लिए बहुत बेहतर काम हो पाए। एक जिसका जिक्र अशोक देवराहा जी ने

अपनी बात में किया। पहली बार दिल्ली का अपना पब्लिक अकाउंट बनाया गया है केंद्र के साथ सैपरेट करके और उसको, ताली कम है, इतिहास में कभी नहीं हुआ। सुनिए, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया को हमने अपना एमओयू साइन करके ऑफिशियल बैंकिंग एजेंट बनाया है। वो हमारा ऑफिशियल बैंकर होगा, फाइनेंशियल एजेंट होगा और वो हमारे लिए बाजार से low interest का लोन जो कि हम कैपिटल एक्सपेंडिचर में खर्च कर पाएंगे, दिल्ली को बेहतरीन सुविधाएं दे पाएंगे। अब दिल्ली में कोई भी काम बजट की कमी के कारण अटकेगा नहीं, लटकेगा नहीं और भटकेगा नहीं और जो हमारे अकाउंट्स में सरप्लस पैसा होगा उसका भी पूरा मैनेजमेंट खुद आरबीआई करेगा जिसको अपने आप ऑटोमेटिकली इन्वेस्ट कर दिया जाएगा और जो उस पे ब्याज मिलेगा, जो इनकम सरकार की होगी वो भी दिल्ली की जनता के काम आएगी और इसी दिशा में अभी हमारे अकाउंट में 15,000 करोड़ इस पब्लिक अकाउंट में आ चुके हैं, जो दिल्ली सरकार का अपना अकाउंट है, इंडिविजुअल अकाउंट है। 15,000 करोड़ हमें इस अकाउंट में मिल चुके हैं जो कि हम अपने राज्य के लिए कैपिटल एक्सपेंडिचर में खर्च कर पाएंगे। आपके समय में नहीं हो पाया। दिक्कत थी आप लोगों को केंद्र सरकार से बातचीत करने में, मिलके चलने में। आपको तो एलजी से झगड़ना था, आपको तो केंद्र से झगड़ना था, आपको तो सारी संस्थाओं से झगड़ना था, इसलिए आप कैसे कर पाते? एक और चीज बताऊं। जीएसटी, जीएसटी में पहली बार सालों बाद दिल्ली के व्यापारियों को अपना जीएसटी रिफंड जो है विद इन टाइम फ्रेम मिला, विद इन टाइम फ्रेम। 915 करोड़ रूपए, 915 करोड़ रूपए हमने दिल्ली के व्यापारियों को दिवाली से पहले पहले जीएसटी रिफंड दिया ताकि, अलग से बोल लेना भाई तुम्हारा समय पूरा हो गया। तुम्हारा समय पूरा हो गया। समझो भैया अब समय तुम्हारा नहीं है। समय पूरा हो गया। समझो। मैं तो इतनी बात कहना चाहती हूं कि:

''जिंदगी की असली उड़ान अभी बाकी है,
जिंदगी के कई इम्तिहान अभी बाकी हैं,
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन हमने,
अभी तो सारा आसमान बाकी है।''

ये अजय भाई बैठे हैं तो एक पर्चा जरूर पढ़ना चाहूंगी। इन्होंने कहा सिलेंडर नहीं दिया, ढाई हजार रूपए नहीं दिए। अरे सुनो, सुनो तो तुम्हारी बात का जवाब दे रही हूं। अध्यक्ष जी मेरा टाइम दो मिनट इनके हिसाब से कर देना। कहा जी सिलेंडर नहीं दिया और ढाई हजार रूपए नहीं दिये। मैं बताऊं हमने क्या-क्या दिया, तुम्हारे अकाउंट में क्या-क्या दिया। ये सुनिए। डीएमआरसी की पेमेंट

जो आम आदमी पार्टी की सरकार में दी जानी चाहिए थी फेज वन, टू और थ्री की 9 हजार 87 करोड़ रूपए हमने देने का वादा किया। तभी डीएमआरसी का काम दोबारा बढ़ पाएगा। इसी तरीके से पेरिफेरल एक्सप्रेसवे के अकाउंट में जो पैसा आपकी सरकार के समय दिया जाना चाहिए था, वो सारी रोड दिल्ली के लिए बनी। आज दिल्ली में कितना ट्रैफिक कंजेशन कम हो पाया इन सभी एक्सप्रेसवे के कारण से 3700 करोड़ रूपए उस अकाउंट में पेंडिंग है जो हमें देने पड़ेंगे आपके कारण, आपके समय की पेंडिंग लायबिलिटी के कारण। इसी तरीके से पावर विभाग की 3326 करोड़ रूपए आपके समय के पेंडिंग लायबिलिटी आज की वर्तमान की दिल्ली सरकार को देनी पड़ेगी। आप पूछते हो सिलेंडर, आप पूछते हो ये, ये थोड़ी ना बता के गए थे आप के ये लायबिलिटी पेंडिंग है। अभी तो सुनते रहिए। इतना बड़ा पर्चा है थोड़े-थोड़े, मेन-मेन, स्पोर्ट्स के बच्चे तीन साल से, तीन साल से उनको प्राइस मनी नहीं मिला। 24 करोड़ रूपए उस हेड के भी पेंडिंग हैं। आपके हॉस्पिटल्स के प्रोजेक्ट के लगभग 1800 करोड़ रूपए की देनदारी हमारे ऊपर खड़ी है। बच्चों को बैकवर्ड क्लास के हमारे इकोनॉमिकल बैकवर्ड बच्चों को, माइनॉरिटी के बच्चों को जो है स्कॉलरशिप 17 करोड़ रूपए उस हेड में अभी हमें देना पड़ेगा जो आप नहीं देके गए हैं। ऐसे ही आरआरटीएस के अकाउंट में 250 करोड़ रूपए जो आपको देने थे, आपने नहीं दिए हमें देने पड़ेंगे। जय भीम स्कीम जो बच्चों के इन्होंने कोचिंग के लिए देनी थी। 150 करोड़ रूपए की लायबिलिटी 15 करोड़ रूपए की योजना बनाई। आज इतने सारे कोचिंग सेंटर खड़े हुए हैं। 150 करोड़ रूपए मांग रहे हैं भाई। कह रहे 150 करोड़ हम भी हैं, हम भी, हम भी हैं। पता नहीं कौन-कौन इनके साथ में मिलीभगत में था? 150 करोड़ रूपए की लायबिलिटी सरकार पे खड़ी हुई है, और तो और छोड़ो कितने शर्म की बात है कोविड के समय में जो सरकारी कर्मचारी, जो डॉक्टर जिनकी मौत हुई उनके पैसे भी इन्होंने नहीं दिए, वो भी हमें देने हैं। वो हमने दिए, वो हमने दे दिए। ऐसी ये सारी लायबिलिटीज इनको चुकाने में लगे हैं भाई मिलेगा सिलेंडर भी मिलेगा। ढाई हजार रूपए भी मिलेगा। चिंता मत कीजिए। ये हमारी सरकार है। नरेंद्र मोदी जी के विज़न की सरकार है। एक-एक शब्द जो कहा है, उसे पूरा करेंगे और उस पैसे को हम देंगे। आप लोग क्या जानो मिलकर के काम करना क्या होता है? एजेंसीज को आपस में इकट्ठे मिलकर के चलाना क्या होता है? इस पूरी की पूरी सरकार में आपने टकराव को अपनी रणनीति बनाया। अराजकता को आपने राजनीति बनाया। आपने कब काम करने की कोशिश करी? आपको तो केंद्र सरकार से भी यदि कोई सब्सिडी आती थी, कोई ग्रांट आती थी तो आप वापस भेज देते थे कि कहीं केंद्र सरकार का नाम ना हो

जाए। मैं आपसे पूछना चाहती हूं, आपके उन नेता से पूछना चाहती हूं कि ये कोई आपके बेटे की शादी में आया लिफाफा नहीं था कि 1 रूपया रखा और बाकी वापस दे दिया। ये दिल्ली सरकार का पैसा था, यह दिल्ली की जनता के हक का पैसा था जिसको आपने लौटा दिया और दिल्ली का विकास कार्य रुक गए। शर्म आनी चाहिए आपको। दिल्ली के हक का पैसा आपने दिल्ली में पहुंचने नहीं दिया जिसको आज हम अलग-अलग मदों में दिल्ली के लिए ले के आ रहे हैं। आज हम कभी डीडीए के साथ बैठ के मास्टर प्लान सर्कल रेट रिवीजन करते हैं, लैंड मैनेजमेंट पब्लिक यूटिलिटी के लिए करते हैं, तो कभी हम एमसीडी को उसकी जरूरतों के लिए ग्रांट देते हैं। एक्स्ट्रा ग्रांट अभी भी 500 करोड़ हमने दिया। हमने उनको 70 एमआरएस मशीन और 1000 लीटर पिकर मशीनों को लेने के लिए 2300 करोड़ रूपए की सब्सिडी दी। आप सोचिए कि हम लोग दिल्ली के भले के लिए हर संभव प्रयास, हर संभव काम करने की दिशा में चल रहे हैं। मैं लगातार जो हमारे एलजी महोदय ने दिल्ली के लिए मेहनत करी, दिल्ली के हर विषय पे काम किया, दिल्ली को बचा के रखने के लिए जितनी भी शिद्दत से उन्होंने दिल्ली में समय लगाया, आज इस सदन के माध्यम से उनका भी धन्यवाद करती हूं। उनकी मेहनत को हम सलाम करते हैं। मैं सेंट्रल गवर्नमेंट द्वारा जितनी भी दिल्ली राज्य को स्कीम दी गई हैं, जितनी ग्रांट दी गई है, उसके लिए भी धन्यवाद करती हूं क्योंकि आज हजारों करोड़ रुपया उस मद में हमें मिला है और हम दिल्ली के बेहतरी के लिए काम कर पा रहे हैं। मैं उन सभी एजेंसीज का, उन सभी विभागों का भी धन्यवाद करती हूं जिसने दिल्ली सरकार के साथ में लगातार कंधे से कंधा मिलाकर काम किया और दिल्ली को बेहतर बनाने की दिशा में एक-एक कदम रोजाना आगे बढ़ा। मैं अध्यक्ष जी कहना चाहती हूं मेरे मंत्री, मेरे विधायक, हम सब लोग लगातार दिल्ली की सड़कों पे काम करते हुए दिखाई दे जाएंगे, लगातार दिल्ली की जनता की सेवा में हमें आप कार्यरत देख लेंगे, क्योंकि हमारी सरकार अकाउंटेबिलिटी की सरकार है। परंतु मुझे थोड़ी तकलीफ है। इन लोगों को 24 X 7 एक महिला मुख्यमंत्री काम करते हुए अच्छी नहीं लगती। उनको तकलीफ होती है, सहन नहीं होता, कभी वो सम्मान को ठेस पहुंचाने वाली कुछ बातें कहेंगे, फिर कभी घटिया कमेंट करेंगे, फिर बेबुनियाद इल्जाम लगाएंगे, फिर कभी शब्दों को पकड़ेंगे, कहेंगे एक्यूआई को एआईक्यू बोल दिया। आज भी बोलेंगे कुछ, अभी-अभी मेरी पूरी स्पीच देखेंगे उसमें से निकाल के लाएंगे, इनको अच्छा नहीं लगता कि एक महिला दिल्ली जैसा राज्य चला रही है, रोज इतने काम कर रही, जिस तरीके से इन लोगों का व्यवहार रहता है ये तकलीफ है मुझे इस बात की। मेरे भाषण में ब्रिटिश की जगह कांग्रेस

निकल गया मेरे मुंह से, उसकी रीले बनानी शुरू कर दी, भई शब्द निकल सकता है किसी के मुंह से भी, मेरे से, आपसे, कहीं से भी, आप उसी को, इससे पहले इस तरह की, इस घटिया स्तर की राजनीति कभी नहीं हुई। हमसे तो गलती में शब्द निकला आप लोगों ने तो होशो हवास में दिल्ली की जनता को कितने ही मौकों पर गलत बयानी करी। वो लोग जो होशो हवास में बच्चों की कसम खा के कहते थे पद नहीं लूंगा, सत्ता में नहीं आऊंगा, गाड़ी नहीं चाहिए, बंगला नहीं चाहिए, कांग्रेस के साथ में समझौता नहीं करेंगे, वो गलत बयानी उन्होंने होशो हवास में की, हमारे जैसे गलती से नहीं की आप लोगों ने। आपने रामलीला मैदान में अनशन पर बैठकर, अनशन से लेकर के शीश महल तक का सफर तय किया, गलती से नहीं किया। जानबूझ के षड़यंत्र के माध्यम से किया और इसी तरीके से इस विधानसभा परिसर को फांसी घर कह दिया, गलती से नहीं कहा, जानबूझ के षड़यंत्र करते हुए आपने इस विधानसभा परिसर को फांसी घर कहा। जानबूझ के किया और ऐसे ही इसी सदन में आपकी नेता के द्वारा गुरुओं का जो अपमान किया गया, गलती से नहीं किया जानबूझकर किया गया है। जानबूझ के किया गया है।

''जो झुका नहीं किसी तख्त के आगे,
जो झुका नहीं किसी तख्त के आगे,
जो डरा नहीं किसी सत्ता से,
जब अंधकार ने साहस खोया,
जब अंधकार ने साहस खोया,
जब सत्य मौन से डर गया,
तब नानक बनके खड़ा हुआ,
तब नानक बन के खड़ा हुआ,
दीप बनके तूफानों से लड़ गया,
राष्ट्र का मान है गुरु, राष्ट्र की शान है गुरु,
राष्ट्र का मान है गुरु, राष्ट्र की शान है गुरु,
सनातन की अमर पहचान है गुरु,
सनातन की अमर पहचान है गुरु।
गुरुओं का अपमान कतई नहीं सहेंगे,
नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे, बिल्कुल नहीं सहेंगे।''

और सरकार की बात, सरकार अपना काम कर रही है, पूरी ईमानदारी से कर रही है, शिद्दत से कर रही है, बहुत जल्द आपको और बेहतर रिजल्ट दिखाई देने लगेंगे। वर्तमान की दिल्ली सरकार धरने में नहीं, करने में विश्वास रखती है। धरने में नहीं, करने में विश्वास रखती है। कॉफ्रंटेशन में नहीं कोपरेशन में विश्वास रखती है और रिबन कटिंग में नहीं, रिबन कटिंग में नहीं, रोड कंप्लीशन में विश्वास रखती है और स्लोगन में नहीं, स्लोगन में नहीं, सिस्टम में काम करती है। यह दिल्ली की वर्तमान सरकार है, जो अनाउंसमेंट में नहीं, एग्जीक्यूशन में काम करती है। अध्यक्ष जी, दिल्ली की यह सरकार अपने 11 महीने का कार्यकाल पूरा कर रही है। 11 साल की सरकार से हम क्या कंपीट करेंगे, 11 साल वालों ने जितना अपने 11 साल में नहीं किया, उससे ज्यादा हमने अपने 11 महीने में करके दिखाया, पारदर्शिता के साथ में करके दिखाया है, दिल्ली की बेहतरी के लिए करके दिखाया है और हर काम पे, हर काम पे हमारी नीति और नियत दोनों स्पष्ट है। दिल्ली का कल बेहतर होगा, सुंदर होगा, इस बात का विश्वास मैं दिल्ली की जनता को दिलाती हूं। मिलकर के हम लोग एक बार बोलेंगे वाहे गुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह। बोले सोनिहाल, सत श्री अकाल। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : धन्यवाद। धन्यवाद प्रस्ताव पारित करना अब श्री रविन्द्र इंद्राज सिंह माननीय मंत्री द्वारा दिनांक 6 जनवरी, 2026 को प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव सदन के सामने है कि यह सदन दिनांक 5 जनवरी 2026 को उपराज्यपाल महोदय द्वारा विधानसभा को दिए गए अभिभाषण के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है। यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं वो हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

माननीय उपराज्यपाल महोदय को इसकी सूचना भिजवा दी जाएगी।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं बहुत आदरपूर्वक आपसे एक केवल 30 सेकंड के लिए, क्योंकि यह सदन ऐसा है, इस सदन में सदस्यों के बोलने का विशेषाधिकार होता है। कुछ भी झूठ बोल दिया जाता है। फिर बाद में और वह झूठ यहां इसलिए बोले जाते हैं कि सोशल मीडिया पर उसको चलाया जाए। मैं केवल आदरपूर्वक आपसे 30 सेकंड का इंटरवेंशन चाहता

हूं। यहां पर बार-बार स्कूलों के बारे में कुछ बात कही गई कि अंबेडकर स्कूल बंद कर दिए गए, आपने क्या किया? तो मैंने जैसे पहले कहा ये लोग चाहते हैं इनके सब मॉडलों की, इनके नेताओं की पोल खुले। तो मैं चाहता था बाद में मगर मुझे ध्यान में आया कि ये बाद में उसको लेकर झूठ फैलाने का सोशल मीडिया में प्रचार किया जाएगा। आदरणीय अध्यक्ष जी, अंबेडकर स्कूल ऑफ एक्सीलेंस के नाम से तथाकथित रूप से 36 स्कूल खोले गए थे, उसमें से 21 स्कूल राजकीय प्रतिभा विद्यालय थे, इन्होंने कोई नहीं, जो बार-बार हमसे पूछ रहे हैं 21 स्कूल उन्हीं पुरानी बिल्डिंगों में नाम बदल के अंबेडकर जी का नाम लिखा गया था और उसे एसओएससी बनाया गया और 6 स्कूल 2017 के कैबिनेट नोट में एसओएससी बनाए थे। पहले प्रतिभा विद्यालय के समकक्ष स्कूल ऑफ एक्सीलेंस बना दिए, बाद में उसी को 21-22 में आकर अंबेडकर स्कूल ऑफ एक्सीलेंस बना दिया। तो इतना बड़ा फर्जीवाड़ा यहां किया जाता रहा है। एक भी नया स्कूल अंबेडकर स्कूल ऑफ एक्सीलेंस के नाम से इन्होंने प्रतिभा, 21 प्रतिभा विद्यालय बदल दिए, 6 स्कूल ऑफ एक्सीलेंस बदल दिए और 4 स्कूल केवल बनाए, उसके बाद भी एक स्पोर्ट्स स्कूल जो यूनिवर्सिटी चलाती है, जो स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के माध्यम से चलता है उसको भी अंबेडकर स्कूल में गिन लिया और एक वर्चुअल स्कूल चलाया जहां पे, जहां पर क्या करते थे वो मैं बाद में किसी समय सदन के समक्ष रखूंगा, उसको गिन लिया। यानि जो उछल-उछल के, बाजू उठा-उठा के पूछ रहे थे, हमने क्या किया 21 प्रतिभा विद्यालय उसमें से कुछ आपके कार्यकाल में बने, कुछ दूसरी सरकारों के कार्यकाल में बने, उसको अंबेडकर स्कूल ऑफ एक्सीलेंस बनाकर अपनी मूंछ पर ताव देते हैं, कहते हैं हम वो वाशिंगटन पोस्ट और न्यूयॉर्क टाइम्स में हमारा शिक्षा मॉडल छप रहा है। ऐसे शिक्षा मॉडल से बाज आए साहब। हमें नहीं छापना ऐसा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बस ठीक है। 1 मिनट, 1 मिनट, बैठिए, बैठिए, बैठिए समय देखिए, समय मुझे एजेंडे को आगे ले जाना है। समिति के प्रतिवेदन पर सहमति माननीय श्री मोहन सिंह बिष्ट प्रस्ताव करेंगे कि यह सदन दिनांक 6 जनवरी, 2026 को प्रस्तुत कार्य मंत्रणा समिति के तीसरे प्रतिवेदन से सहमत है। प्रस्ताव प्रस्तुत।

श्री मोहन सिंह बिष्ट, माननीय उपाध्यक्ष: आदरणीय अध्यक्ष जी।

.......व्यवधान.........

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठ जाईये।

श्री मोहन सिंह बिष्ट, माननीय उपाध्यक्ष: अध्यक्ष महोदय मैं प्रस्ताव।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिए, बैठिए, बैठिए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट, माननीय उपाध्यक्ष : आदरणीय अध्यक्ष जी मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन दिनांक 6 जनवरी, 2026 को सदन में प्रस्तुत कार्य मंत्रणा समिति के तीसरे प्रतिवेदन से सहमत है।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: यह प्रस्ताव सदन के सामने है। आप कार्यवाही में बाधा डाल रहे हैं। आप कार्यवाही में बाधा मत डालिए। आपको मौका दिया है, आपको फिर मौका दूंगा। बैठिए आप। आप बैठिये। बैठिए। अब मुझे आपके खिलाफ कार्रवाई करनी पड़ेगी।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: कर दें। तो अब आप नहीं चलाने देंगे सदन। बैठिये आप।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिये अभी। बैठिए आप बैठिये। बैठिये। बैठिये। बैठिये बैठिए। बैठिये। नहीं, नहीं, आप प्लीज। मंत्री जी मेरा देखिए। नहीं आप बैठिये। अब आप बैठिये। आप बैठिए। यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में है वह हां कहें।

जो इसके विरोध में है वह ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता। हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पास हुआ।

समिति के प्रतिवेदन पर सहमति-2 श्री प्रदुमन सिंह राजपूत प्रस्ताव करेंगे कि यह सदन दिनांक 6 जनवरी, 2026 को प्रस्तुत विशेषाधिकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से सहमत है।

श्री प्रधुम्न सिंह राजपूत: अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन दिनांक 6 जनवरी 2026 को सदन में प्रस्तुत विशेषाधिकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से सहमत है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में है वह हां कहें

जो इसके विरोध में है वे ना कहे।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता

प्रस्ताव पास हुआ।

विशेषाधिकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन के संबंध में माननीय सदस्य गण मैं आपकी आपको जानकारी देना चाहता हूं। मैं इस सम्मानित सदन के सामने उस वस्तु स्थिति को रखना चाहता हूं जो विशेषाधिकार समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के बाद सामने आई है। यह मामला ना केवल एक बड़े ऐतिहासिक दावे से संबंधित है बल्कि इस विधानमंडल और इसकी समितियों के अधिकार, गरिमा और कामकाज से भी जुड़ा हुआ है। फरवरी 2025 में आठवीं विधानसभा के गठन के बाद दिल्ली विधानसभा के ऐतिहासिक स्वरूप को संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए कई पहल की गई। इस प्रक्रिया के दौरान ऐतिहासिक सटीकता और विश्वसनीयता बनाने के उद्देश्य से आधिकारिक रिकॉर्ड और अभिलेखीय सामग्री की जांच की गई। राष्ट्रीय अभिलेखागार से मिली जानकारी से यह सामने आया है कि विधानसभा परिसर के भीतर फांसी घर का कोई अस्तित्व नहीं है। इसकी बजाय रिकॉर्ड बताते हैं कि संबंधित स्थान का उपयोग टिफिन रूम के रूप में किया जाता था। मैंने 5 अगस्त 2025 को सदन को इन तथ्यों से अवगत कराया था। इस मामले पर तीन दिनों तक सदन में विस्तार से चर्चा हुई जिसमें माननीय मुख्यमंत्री, माननीय मंत्रियों और अनेक माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। सदन की भावना को ध्यान में रखते हुए और स्थापित संसदीय प्रथा के अनुसार मामले को विस्तृत और निष्पक्ष जांच के लिए विशेषाधिकार समिति को भेजा गया। समिति ने नियमानुसार संबंधित गणमान्य व्यक्तियों से संबंधित टिप्पणियां मांगने के लिए नोटिस जारी किए और उसके बाद इस मामले की तथ्यात्मक स्थिति का पता लगाने में सहायता के लिए उनको अपने समक्ष व्यक्तिगत रूप से पेश होने के लिए बुलाया। पर्याप्त अवसर, समय और स्पष्टीकरण दिए जाने के बावजूद और माननीय न्यायालय से भी रोक आदेश या निर्देश ना होने के बाद भी संबंधित चारों व्यक्तियों तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल, तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल, तत्कालीन उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया और तत्कालीन विधानसभा उपाध्यक्ष श्रीमती राखी बिरला में से कोई भी निर्धारित तारीखों पर समिति के सामने पेश नहीं हुआ। मैंने स्वयं भी विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट का अध्ययन किया है और यह पाया है कि समिति ने घटनाओं के क्रम किए गए पत्राचार, कानूनी स्थिति, विभिन्न संवैधानिक और वैधानिक प्रावधानों और स्थापित संसदीय प्रक्रिया और उदाहरणों की सावधानी पूर्वक जांच की है। समिति के मतानुसार संबंधित व्यक्ति समिति की बैठकों से जानबूझकर और अपनी मर्जी से अनुपस्थित रहे और उन्होंने बिना किसी उचित कारण के समिति के कार्य को बाधित किया।

समिति के मतानुसार ऐसा आचरण सदन और समिति की अवमानना के बराबर है। समिति के समक्ष पेश ना होना यह एक तरह का ब्रीच ऑफ प्रिविलेज है। माननीय सदस्य ध्यान दें कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार अधिनियम, 1951 की धारा 18 (3) और कार्य संचालन नियमों के तहत इस सदन और इसकी समितियों को लोकसभा और उसकी समितियों के बराबर शक्तियां, विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां प्राप्त हैं। यहां की जो समितियां हैं उसको लोकसभा की समितियों के जितने अधिकार प्राप्त हैं। यह मैं सदन के समक्ष स्पेसिफिकली इसको सबके समक्ष क्लियर कर रहा हूं। व्यक्तियों को बुलाने और उनसे सबूत मांगने का विधाई समितियों का अधिकार माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भी बरकरार रखा गया है। विशेषाधिकार समिति ने सिफारिश की है कि समिति की बैठकों से जानबूझकर अनुपस्थिति के लिए संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ सदन उचित कार्यवाही कर सकता है। अब ये सदन को फैसला लेना है। माननीय सदस्यगण यह सदन हमेशा संवैधानिक औचित्य, आपसी सम्मान और संस्था की गरिमा को ध्यान में रखकर कार्य करता रहा है। विधायिका और इसकी समितियों का अधिकार हमारे लोकतांत्रिक ढांचे का अभिन्न अंग है। यह सही है कि संबंधित व्यक्तियों और संस्थानों को कानूनी उपायों का लाभ उठाने का पूरा अधिकार है। लेकिन ऐसे उपायों का उपयोग इस सदन की कार्यवाही की अवहेलना या उसे कमजोर करने के बहाने के रूप में नहीं किया जा सकता है। मैं इस मामले को पूरे भरोसे के साथ सदन के सामने रख रहा हूं और मुझे माननीय सदस्यों के विवेक पर पूरा भरोसा है कि वे विशेषाधिकार समिति की सिफारिशों पर विचार करेंगे और संविधान, कानून और सदन की परंपराओं के अनुसार उचित फैसला लेंगे। अब विशेषाधिकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से संबंधित प्रस्ताव श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय मंत्री दिनांक 6 जनवरी 2026 को सदन में प्रस्तुत विशेषाधिकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से संबंधित एक प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहते हैं। अब मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वे अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए सदन की परमिशन लें।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण मंत्री: अध्यक्ष महोदय मैं दिनांक 6 जनवरी 2026 को सदन में प्रस्तुत विशेषाधिकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से संबंधित निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए इस सदन की अनुमति चाहता हूं और यह प्रस्ताव मैं एक बार पढ़ देना चाहता हूं। ''यह सदन दिनांक 6 जनवरी, 2026 को सदन में प्रस्तुत की गई विशेषाधिकार समिति की प्रथम रिपोर्ट में दी गई सिफारिशों से सहमत है। यह सदन श्री अरविंद केजरीवाल, श्री राम निवास गोयल, श्री मनीष सिसोदिया, श्रीमती राखी बिरला को निर्देश देता है कि जब भी उन्हें बुलाया जाए, वह इस

सदन की विशेषाधिकार समिति के समक्ष व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हों और दिनांक 13 नवंबर, 2025 और 20 नवंबर, 2025 को आयोजित समिति की बैठकों से अपनी अनुपस्थिति का कारण बताएं और विधानसभा परिसर में फांसी घर के अस्तित्व की प्रमाणिकता साबित करने के लिए अपने पास उपलब्ध कोई भी जानकारी या दस्तावेज विशेषाधिकार समिति को प्रदान करें। अगर यदि श्री अरविंद केजरीवाल, श्री रामनिवास गोयल, श्री मनीष सिसोदिया और श्रीमती राखी बिरला बुलाए जाने पर भी विशेषाधिकार समिति के समक्ष उपस्थित नहीं होते हैं तो माननीय अध्यक्ष उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए कोई भी आवश्यक कदम उठा सकते हैं।'' यह मैं प्रस्ताव पेश करना चाहता हूं। इसके लिए अनुमति चाहता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता

प्रस्ताव पारित हुआ।

इस प्रस्ताव के अनुसार जो सदन में पारित हुआ है उनमें मैं माननीय मंत्री जी को प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए सदन द्वारा परमिशन दी गई है प्रस्ताव प्रस्तुत करना। अब श्री प्रवेश साहिब सिंह जी, माननीय मंत्री अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे और इस संबंध में अपना वक्तव्य भी दे सकते हैं।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण मंत्रीः माननीय अध्यक्ष जी पहले तो मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं पूरे सदन की तरफ से कि आपने सदन की गरिमा को बचा लिया है। जिस तरीके से यह सरकार बनने के बाद में आपने बहुत सारे आधुनिक कदम पूरी असेंबली को आपने digitalization की तरफ में आगे बढ़ाया, यहां पर पूरी लाइटों के लिए आपने सोलर प्लांट की आपने व्यवस्था करी। इसी के साथ-साथ आपने सदन के प्रांगण में हमारे भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी का चित्र लगाया, हमारे पंडित मदन मोहन मालवीय जी का चित्र लगाया। उसी के साथ-साथ आपने एक बहुत बड़े झूठ को, बहुत बड़े पाप को होने से बचाया। 1 करोड़ 5 लाख रूपया फांसीघर में खर्च किया गया। पहले की सरकार के लोगों को पैसा खर्च करते हुए बिल्कुल भी सोचना नहीं पड़ता था। मैं सबसे पहले अपनी बात को शुरू करने के लिए कि जब यह फांसी घर का उद्घाटन हुआ तो अरविंद केजरीवाल जी की जो स्पीच थी

एक बार मैं वह यहां पे बताना चाहता हूं कि यह लोग झूठ कैसे बोलते थे और उसके ऊपर ऐसा भाषण देते थे, ऐसी बातें करते थे कि आदमी को विश्वास हो जाता था कि यह हुआ होगा। केजरीवाल जी की स्पीच थी और यह मैं कोट कर रहा हूं। ''यह फांसी घर अंग्रेजों के जमाने का है। किसी को पता ही नहीं था कि विधानसभा के अंदर, विधानसभा बहुत पुरानी है, अंग्रेजों के जमाने का स्ट्रक्चर है। किसी को पता ही नहीं था कि यह फांसी घर है। बस यह वर्ड ऑफ माउथ से लोग कहते थे यहां एक फांसी घर है। किसी ने इसका ताला तोड़ के अंदर जाने की हिम्मत ही नहीं की। स्पीकर साहब ने हिम्मत करी। उस समय स्पीकर होते थे रामनिवास गोयल जी स्पीकर साहब ने हिम्मत करी, हिम्मत करके उसका ताला तुड़वाया और अंदर गए और अंदर गए और देखा कि किस तरह एक साथ दो लोगों को फांसी देने का सिस्टम बना हुआ है एक बार तो देखकर दिल दहल जाता है...

.....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये प्रतिवेदन है कमेटी की रिपोर्ट है उस पर बात हो रही है। प्रस्ताव है ये। विधिवत है ये ।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: आप जब इमेजिन करने की कोशिश करते हो कि किस तरह से हमारे वीरों को फांसी दी जाती होगी, बड़ी घबराहट सी होती होगी, उसको देखकर लगता होगा आज हम सोच भी नहीं सकते जिस खुली हवा में हम सांस ले रहे हैं, उस खुली हवा को पाने के लिए कितने अनगिनत लोगों ने अपनी जान कुर्बान कर दी। अनगिनत लोग एक फांसी घर तो यहां है। ऐसे पता नहीं देश भर में कितने फांसी घर होंगे।'' Unquote यानी कि अंग्रेज इतने पागल थे कि वो यहां पर देश की पहली पार्लियामेंट बना रहे हैं। जहां पर पहले स्पीकर विट्ठल भाई पटेल जी वो आपके चेयर पर बैठते थे और वहां से चार कदम दूर पे उन्होंने फांसी घर बना दिया। वो भी किचन के साथ में फांसी घर बना।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: किचन में, किचन में, किचन है वो।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: अब मैं आपको जो उस समय के जो उस समय के स्पीकर थे रामनिवास गोयल जी।

.....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: किचन ही है ना। किचन रूम को ही किचन कहते हैं।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: जो उस समय के स्पीकर थे अब अब ये फांसी घर आप लोगों को कैसे पता लगा...

.....व्यवधान.....

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: सुन तो लो भाई फांसी घर आम आदमी पार्टी को 'आप' की सरकार को केजरीवाल जी को रामनिवास गोयल जी को कैसे पता लगा ये बहुत इंटरेस्टिंग है। कोई इतिहासकार नहीं आए, कोई इतिहासकार नहीं आए ये नहीं बताया था जो मैं अभी आपको बता रहा हूं वो नहीं बताया था। अच्छा आपको पता है कि पहले बता दिया, सहमत हैं आप, सहमत है गलती हो गई। तो सर उस समय जब यह हो रहा था तो एक जो है चैनल के संवाददाता है अमित पांडे उन्होंने स्पीकर महोदय से सवाल किया कि अगर इसे देखा जाए तो एक आदमी को खड़ा होने के लिए बहुत कम जगह है तो ऐसे में इसे कैसे दावा किया जा सकता है कि फांसीघर है। तो उस समय स्पीकर साहब ने यह कहा कि यह कैसे बना फांसीघर, स्पीकर का जवाब उस समय था, ''देखिए दावा किया जा सकता है। यह सवाल आप मुझसे पूछ रहे हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य लग रहा है। यह पुली लगी हुई है। तो यह पुली लगी हुई है तो फांसीघर है। यह पुली लगी हुई है। मैंने तो लगाई नहीं थी। यह गाटर लगा हुआ है। यह पुली किस लिए लगी होगी और आप यह देखिए कि यह जो पार्टीशन किया हुआ है 3/3 फुट का कि यह जो जगह है मैं समझता हूं 3/3 के टॉयलेट होते हैं। आराम से आदमी खड़ा हो सकता है। लेकिन यह जो सांचा बना हुआ है यह सांचा नीचे तक गया हुआ है। यह अपने आप में साबित करता है कि यहां कोई फट्टा रहता था। उस फट्टे पर आदमी को खड़ा किया जाता था। क्रांतिकारी को खड़ा किया जाता था। वो फट्टा फिर इसमें कोई सिस्टम रहा होगा। कोई मैकेनिकल जिसको नीचे तक जाने में जानकारी में आएगा वह फट्टा हटा दिया जाता था। व्यक्ति मौत को प्राप्त होता था। मैंने पुली देखी। मैंने गाटर देखा। मैंने 3/3 फुट की जगह देखी और मैंने कहा यह फांसी घर होगा।'' यह सोचकर ही फांसी घर बनाकर, एक करोड़ 5 लाख उसके ऊपर खर्च करके, उसका कार्यक्रम करके, भाषण बाजी करके, अखबार में सुर्खियां बटोर कर क्या प्राप्त करना चाहते थे? आप हमसे पूछ रहे हैं कि यहां पर फिजूल की बात कर रहे हैं। आपने एक करोड़ 5 लाख रूपये खर्च कर दिया। आपने दो दिन सदन के बर्बाद कर दिए। आपने पूरे सिस्टम को खराब कर दिया। आपने सदन की गरिमा उतार दी।

.....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आपके पास कोई जवाब हो तो आप जवाब दीजिए ना। मंत्री जी को बोलने दीजिए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: आप आप प्रधानमंत्री जी को गाली देते थे। आप हमारे उप-राज्यपाल को गाली देते थे। आपने भगवान श्री राम तक को गाली देने में कसर नहीं छोड़ी। आपने किस-किस को गाली नहीं दी? आपने शहीदों को गाली दी। आपने हमारे गुरुओं को गाली दी। आपने किस-किस को गाली नहीं दी। आपको शर्म नहीं आती।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब आप भागिए मत। आप बोलिये, अब कुछ बोलना है तो कोई तथ्य आपके पास है तो बता दीजिए। अब भी बता दीजिए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: अध्यक्ष जी मैं केवल इतना चाहता हूं।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं है तो फिर आप आपने ही बनाया था ना फांसीघर। अब क्यों भाग रहे हैं आप चर्चा से।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: कि जब श्री अरविन्द केजरीवाल जी जब ये चारों लोगों को....

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे आपने ही बनाया था ना तो अब क्या दिक्कत है। अब बताइए उसके गौरवशाली इतिहास को। अगर आपके पास उसका कोई गौरवशाली इतिहास है तो बताइए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: जब ये चारों लोगों को हमारी कमेटी बुलाती है तो उनको पेश होना चाहिए इसलिए

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब आप पूरा होने दीजिए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: माननीय अध्यक्ष जी मैं सदन की अनुमति से अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब श्री प्रवेश साहिब सिंह माननीय मंत्री अपना प्रस्ताव जो उन्होंने प्रस्तुत किया है जो वक्तव्य दिया है, सदन के सामने यह प्रस्ताव है:-

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

विधेयक पर विचार करना। Consideration of Bill. अब श्री प्रवेश साहिब सिंह माननीय विधायी कार्य मंत्री प्रस्ताव करेंगे कि दिनांक 6 जनवरी 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए न्यायालय शुल्क विधेयक 2026 पर विचार किया जाए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि दिनांक 6 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए न्यायालय शुल्क (दिल्ली संशोधन) विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-1) पर विचार किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: यह प्रस्ताव सदन के सामने है:-

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

अब विधेयक पर खंडवार विचार अब विधेयक पर खंड खंडवार विचार होगा। प्रश्न है कि खंड दो और खंड तीन विधेयक का अंग बने। यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

खंड दो और खंड तीन विधेयक का अंग बन गए। प्रश्न है कि खंड एक, प्रस्तावना और शीर्षक विधेयक का अंग बने। यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

खंड एक, प्रस्तावना और शीर्षक विधेयक के अंग बन गए। अब विधेयक को पारित करेंगे। अब श्री प्रवेश साहिब सिंह माननीय विधायी कार्य मंत्री प्रस्ताव करेंगे कि दिनांक 6 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए न्यायालय शुल्क विधेयक 2026 को पारित किया जाए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: माननीय अध्यक्ष जी मैंने उस दिन भी यह कहा था कि बहुत ही, छोटा भी नहीं कह सकते मगर हमारे दिल्ली के नागरिकों के लिए बहुत बड़ा कदम है और कि जो कोर्ट फीस जब आदमी न्यायालय में जाता था तो उसको 1.5% की फीस देनी पड़ती थी और कि अगर मैं आपको एक उदाहरण के रूप में बताऊं कि मान लीजिए कि हमारे मारवाह जी और हरीश खुराना जी का झगड़ा हो जाता है तो ये दोनों कोर्ट जाते हैं। कोर्ट में आपको डेढ़ परसेंट की फीस जमा करानी पड़ती है। अब केवल इसमें तीन ऑप्शन हो सकते हैं कि या तो कोर्ट इन दोनों में से किसी एक के फेवर में फैसला कर दे। तो अगर वह मारवाह जी के फेवर में फैसला करता है तो कोर्ट फीस वापस नहीं होती जिसके चांसेस ज्यादा हैं। दूसरा ऑप्शन कि कोर्ट इन दोनों का सेटलमेंट करा देता है। अगर कोर्ट इन दोनों का सेटलमेंट कराता है तो कोर्ट फीस पूरी वापस हो जाती है। इसके चांस थोड़े कम है। मगर अगर यह दोनों बाहर कोर्ट के बाहर आउटसाइड कोर्ट अगर यह सेटलमेंट कर लेते हैं जिसके चांस बहुत कम है तो इनको केवल 50% फीस ही वापस मिलती। तो हमने जो 1870 का यह कोर्ट फीस एक्ट था और इसमें जो धारा थी 16 तो वह यह कहती थी कि अगर कोर्ट कोई फैसले का निर्धारण करता है तो कोर्ट फीस पूरी वापस हो जाएगी और इसी का सेक्शन-16A ये कहता था अगर बाहर कोई मिलकर वो दोनों व्यक्ति निर्धारण करते हैं, सेटलमेंट करते हैं तो केवल 50% वापस होगी। हम इस बिल में 16-ए को खत्म कर रहे हैं और 16 को अमेंड कर रहे हैं। अब जो नया हमारा 16 इसमें क्लॉज़ है वो यह कहता है मैं एक बार आपको पढ़ देता हूं। उसके बाद में मैं आपसे बिल पास कराने की अनुमति चाहूंगा। "Where the parties to a suit or appeal, at any stage of such suit or appeal, settle their dispute

amicably, with or without the intervention of the Court and with or without invoking any of the modes of settlement of dispute, referred to in section 89 of the Code of Civil Procedure, 1908 (5 of 1908) and the said suit including Counter-claim, if any, or appeal is disposed of as settled/ compromised by the court, the plaintiff/ counter- claimant shall be entitled to a certificate from the court authorizing him to receive back from the collector/ competent officer, the full amount of fee, paid in respect of such plaint/ counter claim." यानि कि अब जैसे मर्जी आप लोग अपना सेटलमेंट करें। आपको कोर्ट फीस पूरी मिलेगी। केवल इतना सा है। इसलिए मैं आपकी अनुमति चाहता हूं और माननीय अध्यक्ष जी मैं प्रस्ताव करता हूं कि दिनांक 6 जनवरी 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए न्यायालय शुल्क (दिल्ली संशोधन) विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-1) को पारित किया जाए। धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने हैः-

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

विधेयक पास हो गया। विधेयक का पुनः स्थापना

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बैठिए बैठिए बैठिए बैठिए। इंट्रोडक्शन ऑफ बिल-1 अगर आपका पॉइंट ऑफ आर्डर रॉन्ग हुआ तो पनिशमेंट मिलेगी। क्योंकि आप डिस्टर्ब कर रहे हो। नहीं तो यही माना जाएगा। फिर पहले सोच लो पॉइंट ऑफ आर्डर होता क्या है, समझ लो। बैठ जाओ आप। हां बैठिए, बताऊंगा, अभी हाउस हाउस खत्म हो जाए फिर बताऊंगा आपको, मेरे कमरे में आ जाना। अभी एजेंडा देखिए आज पूरा करना है अभी पोल्युशन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा होनी है, आप यहां बैठे हैं उपस्थित हैं आप मुझे खुशी है इसलिए स्पीकर की जिम्मेदारी है एजेंडे को पूरा करना। दिल्ली जन विश्वास विधेयक-2026 अब श्री प्रवेश साहिब सिंह माननीय विधायी कार्य मंत्री दिल्ली जन विश्वास विधेयक 2026, (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-2) को सदन में इंट्रोड्यूस करने की परमिशन मांगेंगे।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: माननीय अध्यक्ष जी मैं दिल्ली जनविश्वास प्रावधान (संशोधन विधेयक) 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-2) को इंट्रोड्यूस करने के लिए सदन की अनुमति चाहता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: यह प्रस्ताव सदन के सामने है:-

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

अब माननीय विधायी कार्य मंत्री विधेयक को सदन में इंट्रोड्यूस करेंगे।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: अध्यक्ष महोदय मैं सदन की अनुमति से दिल्ली जन विश्वास प्रावधान संशोधन विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-2) को सदन में इंट्रोड्यूस करता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब कंसीडरेशन ऑफ बिल विधेयक पर विचार करना। अब श्री प्रवेश साहब सिंह माननीय विधायी कार्य मंत्री प्रस्ताव करेंगे कि आज दिनांक 9 जनवरी 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली जन विश्वास विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-2) पर विचार किया जाए।

श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय लोक निर्माण विभाग मंत्री: अध्यक्ष महोदय मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली जनविश्वास प्रावधान संशोधन विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-2) पर विचार किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

अब सदस्य चर्चा में भाग ले सकेंगे। मेरे पास दो नाम आए हैं। माननीय सदस्य श्री सतीश उपाध्याय जी इस पर अपनी बात कहेंगे।

श्री सतीश उपाध्याय: धन्यवाद अध्यक्ष जी। दिल्ली के भविष्य की इबारत लिखने वाला यह बिल देश के प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी के मूल मंत्र, ''सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास'' और जन कल्याण से प्रेरित इस बिल की आज मैं सम्मानित सदन के सामने ऐसी सोच को लेकर के खड़ा हुआ हूं जो दिल्ली के भविष्य की इबारत लिखेगा। पिछले कई दशकों में हमारे कानून की किताबों में कुछ ऐसी बेड़ियां थी जो विकास के पैरों में जंजीर बनकर चुभ रही थीं। आज जनविश्वास विधेयक के माध्यम से हम उन बेड़ियों को काटने के लिए आए हैं। वास्तव में यह बहुत महत्वपूर्ण है और दो लाइन में जरूर दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीय रेखा गुप्ता जी और उनके मंत्रिमंडल के सदस्य और ये सरकार के संदर्भ में जरूर कहना चाहता हूं। लफ्जों से नहीं, बातों से नहीं, एडवर्टाइजमेंट से नहीं, ये इनके लिए है।

''लफ्जों से नहीं, बातों से नहीं, एडवर्टाइजमेंट से नहीं,
नीयत से पहचाना जाता है,
विश्वास वही है जो खामोशी से निभाया जाता है।''

और ये विश्वास जो 11 महीनों में इस सरकार ने अपनी कार्यशैली से दिया है उसका परिणाम अभी हम जब उपराज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा कर रहे थे तो उस विश्वास की अभिव्यक्ति, उसके माध्यम से अभी हुई थी। हमारी सरकार दिल्ली के छोटे-छोटे व्यापारी हर युवा स्टार्टअप उद्यमी और आम नागरिक के हौसलों को उड़ान देने के लिए है। अध्यक्ष महोदय, अब तक व्यवस्था ऐसी थी कि एक छोटी सी गलती जैसे कि लाइसेंस रिव्यू करने में किसी को देरी हो जाए, उसके साइन्स का साइज छोटा बड़ा हो जाए इंसान को अपराधी, व्यापारी को अपराधी बना देती थी। व्यापारी अपनी दुकान चलाने से ज्यादा कोर्ट और कचहरियों के चक्कर ज्यादा काटता था। डर की अब इस राजनीति को विश्वास की राजनीति में हमारी आज की वर्तमान मुख्यमंत्री रेखा सरकार बदल रही है। अपराध मुक्त व्यापार, डिक्रीमिनलाइजेशन हमने लगभग 17 महत्वपूर्ण कानूनों की पहचान जहां जेल की सजा अनावश्यक थी, हम उन धाराओं को कारावास से हटाकर उसे आर्थिक जुर्माने में बदल रहे हैं। जिसके लिए कारावास भेज दिया जाता था, अब आप आर्थिक जुर्माने से उस सजा को समाप्त किया जा सकता है। अब भूल के लिए सजा नहीं सुधार का अवसर मिलेगा। अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार का स्पष्ट मानना है व विकास तभी संभव है जब हम अपने उद्यमियों को

और व्यापारियों को इंस्पेक्टर राज् की बेड़ियों से मुक्त करें। इसी दिशा में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत हमने लाइसेंसिंग, श्रम संबंधी सुधारों को प्राथमिकता दी है। अनावश्यक नियामक बाधाओं को कम करना हमारी सरकार की मुख्य उपलब्धि भी रही है। और ये व्यापारियों के सम्मान का विधेयक है। उनको किस तरीके से सम्मान मिले यह विधेयक मूलतः उसी पर आधारित है। दिल्ली का व्यापारी वर्ग हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। जब व्यापारी बिना डर के काम करेगा तभी दिल्ली का विकास होगा और दिल्ली की जीडीपी भी बढ़ेगी। इसी संदर्भ में मैं कह हा हूं:

''तू खुद की खोज में निकल, तू किस लिए हताश है,
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है।''

हम दिल्ली के नागरिकों को उनके वजूद और सम्मान की लड़ाई में अकेला नहीं छोड़ना चाहते। पुराने और बोझिल कानूनों से हम मुक्ति दिलाना चाहते हैं। पिछले 21 वर्षों से चली आ रही पंजीकरण के अनिवार्य नवीनीकरण की व्यवस्था को हमने समाप्त कर दिया है। इस कदम से व्यापारियों को हर साल होने वाली अनावश्यक प्रशासनिक प्रक्रियाओं और दफ्तरों के चक्कर काटने से बड़ी राहत मिलेगी। इसके साथ ही शराब की दुकानों को छोड़कर अन्य सभी दुकानों एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को 24/7 खोलने की अनुमति देकर हमने दिल्ली की अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान की है। श्रम कानूनों का सरलीकरण भी हमने किया है। हमने 29 मौजूदा श्रम कानूनों को समाहित कर उन्हें चार व्यापक लेबर कोर्ट्स में एकीकृत किया है। यह केंद्र सरकार के साथ पूर्ण समन्वय में उठाया गया कदम है जिसका उद्देश्य कानूनों की जटिलता को कम करना। और श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, समयबद्ध न्याय दिलाना है। हमारी सरकार ने भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की है। हम किसी भी तरीके का भ्रष्टाचार दिल्ली के शासन, प्रशासन में बर्दाश्त नहीं करेंगे और इसी के तहत अध्यक्ष महोदय जन विश्वास की नींव पूरी तरह से ट्रांसपेरेंसी, पारदर्शिता पर टिकी है।

हमने लाइसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया, जैसे अग्नि सुरक्षा प्रमाण पत्र, भू उपयोग परिवर्तन, फैक्ट्री लाइसेंस को बेहद सरल और सुलभ बना दिया है। प्रशासन में जवाबदेही तय करने के लिए हमने सभी सरकारी कार्यालयों में ई- ऑफिस के क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया है जो केंद्र सरकार की योजना भी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे पता है यहां बैठे मेरे विपक्षी शायद यह तर्क देंगे कि सजा कम करने से अपराध बढ़ेंगे या इससे अधिकारियों को मनमानी का मौका मिलेगा। लेकिन मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं:

''बदलते वक्त के साथ जो कानून ना बदले वह बोझ बन जाता है।
बदलते वक्त के साथ जो कानून ना बदले वह बोझ बन जाता है।
हम जंजीरें नहीं हैं, तरक्की के रास्ते बनाने आए हैं।''

अध्यक्ष महोदय, हम हत्या या डकैती के अपराधियों को नहीं छोड़ रहे। हम उन उद्यमियों की बात कर रहे हैं जिनसे फॉर्म भरने में कोई छोटी सी गलती हो गई या जिनके साइन में कोई फर्क आ गया। क्या आप एक छोटे दुकानदार को सिर्फ इसलिए जेल भेजना चाहते हैं क्योंकि उसने समय पर दुकान का नवीनीकरण रिन्यूल नहीं किया। हमारी सरकार अपराधी और साधारण नागरिक के बीच के फर्क को अच्छे से समझती है। अध्यक्ष जी, यह सुधारों का नया दौर हम दिल्ली को दुनिया की बेहतर बिजनेस हब बनाना चाहते हैं। यह विधेयक दिल्ली जल बोर्ड, कृषि विपणन, दुकानों से जुड़े पुराने कानूनों को आधुनिक बनाएगा। हमने जुर्माने की राशि में एक वैज्ञानिक संतुलन रखा है ताकि कानून का इकबाल भी बना रहे और आम जनता का विश्वास भी ना टूटे। अध्यक्ष महोदय, आज पूरे देश को यह बिल एक संदेश है कि दिल्ली सरकार अपने नागरिकों पर संदेह नहीं पूरी तरह विश्वास करती है।

अंत में मैं बस इतना कहना चाहता हूं क्योंकि समय बहुत कम है, काफी सारा काम आगे होना है। यह विधेयक दिल्ली के प्रति निष्ठा का प्रतीक है। 'हम फाइलों में नहीं लोगों के दिलों में बदलाव लाना चाहते हैं।' जाते-जाते बस इन पंक्तियों के माध्यम से इस बात को समाप्त करूंगा,

"नई किरण, नया सवेरा अब दिल्ली की तकदीर बदलेगी।
नई किरण, नया सवेरा अब दिल्ली की तकदीर बदलेगी।
ना रहेगा खौफ कानूनों का अब चेहरे की मुस्कान खिलेगी।
कदम मिलाकर साथ चलें हम इस नए दौर के आगाज में।
विश्वास की इस मिसाल से अब हर घर में रोशनी फैलेगी।''

मैं इस सदन के सभी साथियों को चाहे पक्ष या विपक्ष आग्रह करता हूं कि आइए दलगत राजनीति से ऊपर उठकर हम दिल्ली के विकास के इस 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के लिए, अपने नागरिकों के मान सम्मान के लिए इस विधेयक को पूरे समर्थन से पारित करें। धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैं माननीय अजय महावर जी से कहूंगा कि बहुत संक्षिप्त में, समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए।

श्री अजय महावर: धन्यवाद अध्यक्ष जी। आपने दिल्ली जनविश्वास संबंधी बिल पर समर्थन के लिए बोलने का मौका दिया। दो लाइन से बात शुरू करता हूं और संक्षेप में ही बात समाप्त करूंगा।

'ना शब्दों का शोर, ना वादों की भीड़,
ना शब्दों का शोर, ना वादों की भीड़,
नीयत साफ हो तो मिटती है नीड़।''

यही इसका नींव है, यही इसका आधार है। मैं दिल्ली जनविश्वास उपबंधों में संशोधन विधेयक 2026 का जोरदार समर्थन करता हूं। इस ऐतिहासिक व कल्याणकारी विधेयक को सदन के सामने लाने के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय मंत्री जी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। यह केवल एक तकनीकी संशोधन नहीं बल्कि अविश्वास से विश्वास की दिशा में प्रशासनिक सोच का बुनियादी परिवर्तन है। राष्ट्रीय परिपेक्क्ष्य और दिल्ली की पहल केंद्र सरकार द्वारा लाया गया यह जनविश्वास उपबंधों में संशोधन अधिनियम 2023 का उद्देश्य छोटे-मोटे उल्लंघनों को अपराध की श्रेणी से निकालकर नागरिकों और उद्योग जगत के लिए ease of living and ease of doing business को बढ़ावा देना है। इसके बाद 2025 में केंद्र ने और आगे बढ़ाते हुए जनविश्वास विधेयक 2025 के माध्यम से सैकड़ों अतिरिक्त प्रावधानों में अपराध मुक्तिकरण का रास्ता खोला ताकि अनुपालन सरल और मानवीय हो सके। गौर करने की बात है कि अनेक राज्यों में जैसे गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, त्रिपुरा आदि ने केंद्र के मॉडल से प्रेरित होकर अपने-अपने स्तर पर जनविश्वास शैली के कानून या अध्यादेश पारित कर दिए हैं और हजार से अधिक प्रावधानों में जेल की सजा हटाकर सिविल दंड का प्रावधान किया है। क्यों जरूरी है, क्योंकि दिल्ली का यह विधेयक वर्षों से दिल्ली में उद्योग, दुकान, बिजली, पानी, पर्यटन जैसे ब्रेड एंड ब्रेकफास्ट जैसे भी जो छोटी-छोटी चीज़ें थी उनको तकनीकी, व्यवसायिक शिक्षा से जुड़े अनेक स्थानीय कानूनों में केवल प्रक्रियात्मक या तकनीकी चूक पर भी अपराधिक मुकदमे की आशंका बनी रहती थी, डर बना रहता था। इससे आम नागरिक और छोटे व्यापारियों, स्टार्टअप इकाइयों में अनावश्यक डर और उत्पीड़न की गुंजाइश पैदा होती थी। पिछली सरकारों ने इस पुराने दंडात्मक प्रावधानों की व्यापक समीक्षा कर उन्हें मानवीय अधिकारों को बनाने की दिशा में कोई साहसिक पहल नहीं की जबकि आज की यह सरकार नवाचार और जन कल्याण की ओर प्राथमिकता देते हुए ऐसे व्यापक सुधारों का रास्ता खोल रही है। इस दृष्टि से मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का और माननीय मंत्री जी का यह विधेयक लाने के लिए दिल्ली के देश के सबसे अग्रणी सुधारवादी राज्यों की श्रेणी में खड़ा

कर दिया है। विधेयक की मुख्य विशेषताएं सरल भाषा में अगर कहूं तो यह विधेयक चुनिंदा दिल्ली कानूनों में निहित छोटे-मोटे तकनीकी, प्रक्रियात्मक उल्लंघनों को आपराधिक से सिविल प्रकृति का बनाता है। जहां केवल जुर्माने से काम चल सकता है वहां जेल की सजा हटाकर मौद्रिक दंड का प्रावधान करता है, जो केंद्रीय जन विश्वास ढांचे के अनुरूप है।

विधेयक में दंड निर्धारित करने के लिए एडजुनिकेटिंग ऑफिसर और अपील सुनने के लिए अपिलेट अथॉरिटी का प्रावधान है, जिससे दंड निर्धारण की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी, समयबद्ध और न्यायसंगत बनेगी तथा नागरिकों को आपराधिक न्यायालयों के चक्कर कम लगाने पड़ेंगे।

दंड संरचना को युक्ति-संगत पूर्वानुमय रखा गया है। साथ ही साथ समय-समय पर बढ़ोतरी का प्रावधान भी रखा है ताकि अनुपालन में ढील ना हो लेकिन दंड भी अत्यधिक या असंगत ना लगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन प्रावधानों को लागू करने के लिए नए पद सृजित करते या अतिरिक्त बोझ, वित्तीय बोझ डालने की आवश्यकता भी नहीं रखी गई है। मौजूदा प्रशासनिक ढांचे के भीतर ही रहते हुए यह सुधार लागू किया जाएगा।

जनता और प्रशासन के लिए लाभ, ईमानदार नागरिकों, छोटे दुकानदारों, स्वरोजगार करने वालों को, उद्यमियों को ना केवल किसी फॉर्म में देरी, कागज त्रुटि या प्रेक्रियात्मक चूक के लिए भी अपराधिक मुकदमे का भय नहीं रहेगा, यह सिविल दंड भर भरकर चूक को सुधार सकेंगे और सम्मान पूर्वक अपना काम धंधा जारी रख सकेंगे। विवादों का निपटारा अधिकतर प्रशासनिक निर्णय के माध्यम से तेजी से हो सकेगा जिससे न्यायालय पर मुकदमों का बोझ घटेगा और पुलिस अभियोजन तंत्र अपनी ऊर्जा को गंभीर अपराधों पर केंद्रित कर सकेगा। यह सुधार विश्वास आधारित शासन को मजबूत करता है, स्वैच्छिक अनुपालन को प्रोत्साहित करता है और व्यवसायिक माहौल को भी सुधारता है। यह स्पष्ट संदेश देता है कि दिल्ली उद्यमिता, रोजगार और निवेश का स्वागत करती है, साथ-साथ जवाबदेही भी सुनिश्चित करती है। अंत में मैं समापन और आभार के साथ यह कहना चाहता हूं अध्यक्ष जी अधिकतम शासन न्यूनतम अपराधिकरण की इस नीति का सजीव उदाहरण है कि हमारे नागरिकों के ईज ऑफ लिविंग तथा उद्यमों के लिए ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस के प्रति वास्तविक संवेदनशीलता को दर्शाता है। केंद्र और सात प्रगतिशील राज्यों की तर्ज पर दिल्ली की इस सुधार पथ पर ले जाकर माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय मंत्री जी ने ना केवल दूरदर्शिता दिखाई है बल्कि साहस और करुणा दोनों का परिचय दिया है। मैं दिल्ली जनविश्वास विधेयक उपबंधों में संशोधन विधेयक,2026 का हृदय से समर्थन करता हूं और इस सदन के सभी माननीय

सदस्यों से अनुरोध करता हूं इसे सर्वसम्मति से पारित कर जनता को यह संदेश दें कि दिल्ली की विधानसभा जनहित, जनविश्वास और जन कल्याण के साथ खड़ी है। एक बार पुनः मैं माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय मंत्री जी को इस नवोन्मेषी और जन हितैषी विधेयक को सदन के समक्ष लाने के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूं। जय हिंद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः विधेयक पर खंडवार विचार। अब विधेयक पर खंडवार विचार होगा। प्रश्न है कि खंड दो से खंड पांच विधेयक के अंग बने। यह प्रस्ताव सदन के सामने है:

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें,

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पारित हुआ।

खंड दो से खंड पांच विधेयक के अंग बन गए। अब प्रश्न है कि खंड-1 प्रस्तावना, शीर्षक और अनुसूची विधेयक का अंग बने। यह प्रस्ताव सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है वे ना कहे।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

खंड-1 प्रस्तावना, शीर्षक और अनुसूची विधेयक के अंग बन गए।

मैं इस विधेयक पर जो हमारे दो वक्ता समर्थन में बोलने के लिए खड़े हुए थे उनका भी अभिनंदन करता हूं क्योंकि उन दोनों ने इस गैजेट का इस्तेमाल किया। तो एक अच्छी परिपाटी की ओर हम बढ़ रहे हैं।

अब विधेयक को पारित करना। अब मैं श्री प्रवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्री प्रस्ताव करेंगे कि आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली जनविश्वास विधेयक, 2026 को पारित किया जाए।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं अपने प्रस्ताव से पहले केवल अगर आपकी अनुमति है तो दो मिनट इसके बारे में बोलना चाहता हूं और जो इसके मुख्य बिंदु है केवल उसकी तरफ मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि पहले तो यह जो बिल है जनविश्वास बिल जब मैं छोटा था, मैं देखता था कि घर में बहुत सारे लोग आते थे अपने पेपर्स को अटैस्ट कराने के लिए, आप भी निगम पार्षद थे आपके घर में भी। पहले हमारे घरों में ऐसी भीड़ लगती थी सैकड़ों लोग आते थे कि हमारे पेपर को अटेस्ट कर दिया जाए। मगर प्रधानमंत्री मोदी जी ने यह जनता के ऊपर में विश्वास किया कि सेल्फ अटेस्टेशन वो भी कर सकते हैं और हमें उनके ऊपर में विश्वास करना चाहिए। तो उसी की दिशा में एक ये जन विश्वास बिल जो कि हमारी मोदी सरकार ने सन 2023 में पारित किया था और इसके बाद में सात राज्य छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, उड़ीसा, एमपी, हरियाणा और त्रिपुरा ये सातों राज्य इस बिल को पास कर चुके हैं। और अगर मैं गलत नहीं हूं, मेरा आंकड़ा ठीक है तो दिल्ली आठवां राज्य होगा जो आज इस बिल को पास करने जा रहा है। अध्यक्ष जी, इस विधेयक के अंतर्गत छोटे और तकनीकी उल्लंघनों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया है। जेल के स्थान पर सिविल पेनल्टी और प्रशासनिक कार्रवाई को प्राथमिकता दी गई है। जैसे हमारे दिल्ली सरकार में आठ जो डिपार्टमेंट हैं जिसमें इंडस्ट्री, लेबर, पावर, टूरिज्म तो इंडस्ट्री डिपार्टमेंट के चार जो ऐसे प्रोविजन है उनको decriminalize किया है। लेबर में 3 को किया है, पावर में 13 को किया है, टूरिज्म डिपार्टमेंट में 8 को किया है, दिल्ली एग्रीकल्चर मार्केटिंग बोर्ड में 12 को किया है, अर्बन डेवलपमेंट में 5 को किया है, हायर एजुकेशन 6 को किया है, ट्रेनिंग और टेक्निकल एजुकेशन में 6 तो टोटल ऐसे हमारे 8 विभाग हैं जिनमें 47 प्रोविजंस को हमने जो अपराधिक श्रेणी से बाहर निकाला है। ये इसके लिए मैं हमारी मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं कि उन्होंने भी दिल्ली की जनता के ऊपर में विश्वास करके और छोटी-छोटी गलतियों के कारण जैसे एक मैं आपको उदाहरण देना चाहता हूं कि Delhi Diploma Level Technical Education Institution में एक यह प्रोविजन था कि अगर उसमें छोटा सा भी उल्लंघन हो जाता था तो 3 साल की जेल हो जाती थी और या तो 3 साल की जेल या एक करोड़ रुपये का जुर्माना होता था ऐसी पावर्स थी अधिकारियों को। अब उसको जेल के स्थान पर उसको सिविल पेनल्टी के रूप में कि उसके ऊपर में थोड़ा सा पेनल्टी लगा देंगे। ऐसा मगर जेल का प्रावधान उसमें से खत्म कर दिया गया। छोटे-छोटे कारणों से स्पेशल एमएम की नियुक्ति होती थी। एक आदमी को स्पेशल एमएम की कोर्ट में धक्के खाने पड़ते थे, वकील नियुक्त करना पड़ता

था, पैसा देना पड़ता था और यह बहुत ही सालों साल तक चलता रहता था। ऐसे ही Delhi Electricity Reform Act में अगर कोई छोटा सा उल्लंघन करता था, उसको भी दो साल की सजा थी या 5 लाख का जुर्माना था। मगर इसमें हमने पूरी तरीके से इसको खत्म ही कर दिया है। इसमें कोई भी पेनल्टी की गुंजाइश नहीं है। ऐसी Delhi Water Board Act है 1998 का इसमें अरेस्ट भी हो जाती थी। तो छोटी-छोटी गलतियों के कारण में जिन-जिन सेक्शन में अरेस्ट हो जाती थी, जेल जाना पड़ता था या कोर्ट में जाना पड़ता था, उन सबको खत्म कर दिया, ऐसे 47 सेक्शंस हैं। इस विधेयक के चार स्पष्ट उद्देश्य हैं। पहला उद्देश्य है कि ईमानदार नागरिक को अनावश्यक उत्पीड़न से राहत देना, मुकदमेबाजी में कमी करना, प्रशासनिक दक्षता और जवाबदेही में वृद्धि करना, ease of doing business को वास्तविक रूप से लागू करना। जब कानून डर पैदा करता है तो विकास रुकता है और जब कानून भरोसा पैदा करता है तो विकास स्वाभाविक हो जाता है। मैं अंत में हमारे प्रधानमंत्री जी का एक पांच लाइन सुनाकर मैं उनका धन्यवाद करता हूं कि:

‘‘देश की धड़कन जन-जन की आस,
मोदी जी में बसता है विश्वास।
चाय की भाप से उठी कहानी
मेहनत ने बदली हिंदुस्तानी जवानी
गरीब की आंखों में सपने नए
किसान के हाथों को हौसले मिले
सीमा पर सैनिक मन में निडरता
नेतृत्व में झलके सच्ची प्रतिबद्धता
स्वच्छता से स्वाभिमान जगा, डिजिटल भारत भविष्य सजा
कभी कठिन फैसले, कभी कड़ी राह
पर नीयत में रही देश की चाह।
जन-जन का नारा सबका विकास
इसी मंत्र पर चलता हर प्रयास।
आलोचनाएं आई, तूफान भी आए,
पर विश्वास के दीपक बुझ ना पाए।
आज भी जनता कहती है गर्व से यह बात,

नेतृत्व हो तो ऐसा जो दे आगे का साथ।

मोदी जी के संग जुड़ा हर श्वास, भारत की आत्मा, भारत का विश्वास।''

मैं इसी के साथ पूरे सदन का समर्थन चाहता हूं और माननीय अध्यक्ष जी मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली जन विश्वास प्रावधान संशोधन विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-2) को पारित किया जाए, धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : यह प्रस्ताव सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में है, वे हां कहें।

जो इसके विरोध में है, वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ, विधेयक पास हुआ।

अब विधेयक का पुर्नस्थापना दो Introduction of Bill-2 दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान संशोधन विधेयक, 2026। मैं माननीय मंत्री श्री प्रवेश साहिब सिंह जी से अनुरोध करूंगा कि वो दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान संशोधन विधेयक, 2026, (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) को सदन में इंट्रोड्यूस करने की परमीशन मांगे। यह मैं आपको, एक सेकेंड मंत्री जी मैं स्पष्ट कर दूं। यह प्रस्ताव कपिल मिश्रा जी को पेश करना था लेकिन उनके व्यक्तिगत कोई इमरजेंसी है घर में जिसके कारण उनको आज सदन से जाना पड़ा। इसलिए उनके स्थान पर मंत्री श्री प्रवेश साहिब सिंह जी परमीशन लेंगे।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्री: माननीय अध्यक्ष जी, जैसे आपने बताया कि कपिल मिश्रा जी हमारे साथी आज वो किसी कारणवश उपस्थित नहीं हो पाए उन्होंने ही पेश करना था। तो मैं आपके अनुमति से मैं इसको बिल को आपके सामने रखता हूं, सदन के सामने रखता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, मैं दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान संशोधन विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) को इंट्रोड्यूस करने के लिए सदन की अनुमति चाहता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो उसके पक्ष में है, वे हां कहें।

जो उसके विरोध में है, वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता, प्रस्ताव पारित हुआ।

अब माननीय मंत्री विधेयक को सदन में इंट्रोड्यूस करेंगे।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्री: माननीय अध्यक्ष जी, मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) पर विचार किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : विधेयक पर विचार करना। अब मंत्री जी, इंट्रोड्यूस हो चुका है। अब माननीय मंत्री जी प्रस्ताव करेंगे कि आज 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) पर विचार किया जाए।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्री: माननीय अध्यक्ष जी, मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान संशोधन विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) पर विचार किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष :यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो उसके पक्ष में है, वे हां कहें।

जो उसके विरोध में है, वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

मंत्री जी इस पर आपको कुछ कहना है?

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्री: अध्यक्ष जी, दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान अधिनियम 1954 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के अंदर दुकानों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, आवासीय होटलों, रेस्टोरेंट, थिएटर और अन्य प्रतिष्ठानों में कर्मचारियों की काम करने की स्थितियों को रेगुलेट करता है। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग़, भारत सरकार ने दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान अधिनियम, 1954 के तहत काम के घंटे, रोजगार की सीमा, ओवरटाइम रेगुलेशन और महिलाओं के रोजगार को बढ़ावा देने से जुड़े श्रम सुधारों की सलाह दी है। प्रस्तावित संशोधनों का मकसद काम के घंटों का लचीलापन बढ़ाने, ओवरटाइम की सीमा को बढ़ाना, महिलाओं को उनकी सहमति और पर्याप्त सुरक्षा उपायों के साथ रात के समय में काम करने की अनुमति देना और रोजगार सृजन, आर्थिक गतिविधि और लैंगिक समावेशन को बढ़ावा देने के साथ-साथ श्रमिकों की सुरक्षा बनाए

रखना है। तो माननीय अध्यक्ष जी, बहुत ही महत्वपूर्ण यह बिल आया है और मैं सभी हमारे सदस्यों का साथ चाहता हूं कि वह इसको पारित करें। माननीय अध्यक्ष जी मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज दिनांक 9 जनवरी 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान संशोधन विधेयक, 2026 (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) को पारित किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अब विधेयक पर खंडवार विचार होगा। प्रश्न है कि खंड दो से खंड आठ विधेयक के अंग बने। यह प्रस्ताव सदन के सामने है:-

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो उसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पारित हुआ।

खंड दो से खंड आठ विधेयक के अंग बन गए। यह प्रश्न है कि खंड-1, प्रस्तावना और शीर्षक विधेयक का अंग बने। यह प्रस्ताव सदन के सामने है:-

जो इसके पक्ष में है वह हां कहें।

जो उसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पारित हुआ।

खंड-1, प्रस्तावना और शीर्षक विधेयक के अंग बन गए। अब पासिंग ऑफ बिल, मैं माननीय मंत्री श्री प्रवेश साहिब सिंह जी से आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान विधेयक, 2026 को पारित किया जाए।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय विधायी कार्य मंत्रीःमाननीय अध्यक्ष जी मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज दिनांक 9 जनवरी, 2026 को सदन में इंट्रोड्यूस किए गए दिल्ली, दुकान और प्रतिष्ठान संशोधन विधेयक 2026, (वर्ष 2026 का विधेयक संख्या-3) को पारित किया जाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने है :-

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें।

जो उसके विरोध में है वे ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

प्रस्ताव पारित हुआ।

विधेयक पास हुआ। सदन की बैठक 5:00 बजे फिर होगी। 15 मिनट के लिए बैठक स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही 4.42 से 5.02 बजे तक के लिये स्थगित की गई)

सदन पुन: सांय 5.02 बजे समवेत हुआ

माननीय अध्यक्ष(श्री विजेन्द्र गुप्ता) पीठासीन हुए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : अब श्री आशीष सूद, माननीय मंत्री नियम 270 के अंतर्गत राष्ट्रगीत वंदे मातरम की 150 वीं वर्षगांठ के संबंध में वक्तव्य देंगे।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री : बहुत-बहुत धन्यवाद आदरणीय अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : अन्य सदस्य भी इसमें अपनी बात कह सकते हैं।

माननीय मंत्री का वक्तव्य(नियम-270)

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री : बहुत-बहुत धन्यवाद आदरणीय अध्यक्ष जी। जिस गीत को 50वें साल में गुलामी ने रोका और 100वें साल में तानाशाही ने कुचला, आज 150वें साल में उसी गीत के सम्मान में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी की सरकार पूरी ताकत से खड़ी हुई। आदरणीय अध्यक्ष जी वंदे मातरम केवल उत्तर भारत का नहीं है। वंदे मातरम केवल बंगाल का नहीं है। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसे अपनाया। महाराष्ट्र में सावरकर जी ने गाया। पंजाब में क्रांतिकारियों ने जिया और यह एक भारत श्रेष्ठ भारत का सबसे जीवंत प्रमाण है। कुछ लोग सोचते हैं आज इसकी सदन में जरूरत क्या है? जरूरत इसलिए है अध्यक्ष जी क्योंकि इसी विधानसभा के दम पर चुनकर संसद में गए कुछ लोग संसद में बैठकर वंदे मातरम को गिमिक

के रूप में कहते हैं। वे कहते हैं वंदे मातरम पर चर्चा गिमिक है। सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम सस्य श्यामलाम मातरम। हे मां मैं तुझे प्रणाम करता हूं। तू जल से परिपूर्ण है, फलों से भरी है, मंदार पर्वत से आने वाली ठंडी हवा से शीतल और हरी-भरी फसलों से ढकी हुई हो, हे मां। अध्यक्ष जी यह वो गीत है जो आज 150 वर्ष पूरे कर रहा है और और विदेशी औपनिवेशिकवाद के फॉरेन कॉलोनियल शक्तियों से लड़ाई के लिए जिस गीत को हमारे हजारों शहीदों ने गाते हुए इस देश के लिए अपनी जान दे दी, आज देश के अंदर बैठे कुछ आईडियोलॉजिकल नस्लवादी और धार्मिक आतंकवाद की अजीबोगरीब कॉकटेल चलाने वाले राजनीति से प्रेरित लोग देश को तोड़ने के लिए शर्जिल इमाम और उमर खालिद का साथ देते हैं। अध्यक्ष जी ये कोई दो नाम नहीं है। यह देश के विघटन के लिए काम करने वाली आईडियोलॉजी के मास्कट हैं। दुर्भाग्यवश इस आईडियोलॉजी को प्रेरणा देने वाले लोग इस सदन में उपस्थित हैं। इस सदन में वे लोग उपस्थित हैं, इस सदन के सदस्य हैं, जिन्होंने शरजिल इमाम के साथ मंच सांझा किया। यह मोशन ऐसी आईडियोलॉजी के प्रति अपनी असहमति दिखाता है और उसकी निंदा करता है। शुभ्र ज्योतिषना पुलकित यामनी फुल कुसुमित ध्रुमदल शोभनीम सुहासनीम सुमधुर भाषणिम सुखदाम वरदाम मातरम। अध्यक्ष जी ऐसी मां वंदे, मैं इसका रूपांतर बताना चाहता हूं। हे मां मैं तुम्हें नमन करता हूं ऐसी मां जिसकी रातें चांदनी से जगमगाती हैं, जिसके पेड़ पौधे खिले हुए फूलों से सुशोभित है, जो हमेशा मुस्कुराती है मधुर वचन बोलती है सुख देने वाली और वरदान देने वाली मां। अध्यक्ष जी मां के रूप में यह चित्रण बंकिम चंद्र जी ने 150 वर्ष पूर्व किया था। उसकी स्थापना हेतु देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दिशा निर्देश पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में स्कूलों में राष्ट्रनीति करिकुलम चल रहा है और यह राष्ट्रनीति करिकुलम भगत सिंह जैसे श्रद्धेय क्रांतिकारियों का संकल्प उन नौजवान बच्चों के मस्तिष्क पर देने का काम करेगा, इसलिए आज वंदे मातरम पर चर्चा की जरूरत है। We, through Rashtriya Niti Curriculum are determined to inculcate the spirit of 'Vande Matram' in the heart and soul of young impressionable minds who can take these forces propelled by ideaology of naxalism and religious terrorism. आदरणीय अध्यक्ष जी, 1875 में बंकिम चंद्र जी वंदे मातरम लिख रहे थे। आज से 150 वर्ष पूर्व उस समय देश में क्या हो रहा था? मैं केवल थोड़े से शब्दों में आपके सामने उस 150 वर्ष की यात्रा और उसके दिल्ली के संदर्भ को रखकर अपनी बात समझाने की कोशिश करूंगा। जब 150 वर्ष पूर्व बंकिम चंद्र जी वंदे मातरम लिख रहे थे तो 1876-77 में ग्रेट फेमिन से लोग मर रहे थे देश में और उसी समय इंपीरियल दरबार इंपीरियल दरबार, लॉर्ड लिटन का इंपीरियल दरबार दिल्ली में सज रहा था "गॉड

सेव द कुईन , टू प्रोक्लेम कुईन विक्टोरियास एमप्रेस ऑफ इंडिया।'' उस समय भी ऐसे लोग थे जो उस दरबार की चाटुकारिता में इस देश के लिए मर मिटने वाले लोगों को नजरअंदाज कर रहे थे। आज भी दरबार हैं। दिल्ली में भी है, चंडीगढ़ में भी है। बहुत सारे दरबार उन शीश महलों से चल रहे हैं। उन शीश महलों से बहुत सारे दरबार चल रहे हैं। और यह इंपीरियल दरबार 21वीं सदी के हैं जहां से वहां गॉड सेव द कुईन था। जहां पर भ्रष्टाचार को सेव रखने के दरबार चलाए गए किसी भी तरह से उसको सेव करने के। आदरणीय अध्यक्ष जी, 1875 में लिखा गया। 50 साल बाद 1925 में वंदे मातरम के 50 साल हुए। देश में अंग्रेजों का राज था। स्वतंत्रता सेनानियों को वंदे मातरम बोलने नहीं दिया जाता था। एक जिक्र विशेष तौर पर आपके सामने करना चाहता हूं क्योंकि हम 2026 में खड़े हैं। 1925 में जब 50 वर्ष हो रहे थे तो ठीक उसके अंत में जब 1926 की शुरुआत हुई तो इसी दिल्ली में आज हम ये जिक्र करना इसलिए जरूरी है कि आज उसको 100 वर्ष हो गए हैं। 2026 में हम बात कर रहे हैं। इसी दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद जी की अपने नए बाजार वाले घर पर एक अब्दुल रशीद नाम के व्यक्ति ने हत्या कर दी थी। आज हम उसकी 100वीं वर्षगांठ में भी बात कर रहे हैं। अध्यक्ष जी 100 वर्ष पहले शुद्धि आंदोलन चलाने वाले वंदे मातरम से देश की आजादी में अपना कॉन्ट्रीब्यूशन करने वाले स्वामी श्रद्धानंद जी की नया बाजार में यहां से थोड़ी दूर अब्दुल रशीद नाम के एक व्यक्ति ने हत्या कर दी। आज भी आज उसका जिक्र करना इसलिए जरूरी है, जब उसके 50 वर्ष हुए तो अंग्रेज बोलने नहीं देते थे और उसको लेकर चलने वाले धार्मिक उन्माद के साथ उसके ऊपर बोलने वाले लोगों को उस पे बोलने वाले लोगों की हत्या कर दी जाती थी। आज भी इसी तरह के मानसिकता से देश को तोड़ने वाले लोगों को अपने छांव देने का काम इस देश में किया जाता है। शरजिल इमाम और उमर खालिद और ताहिर हुसैन जैसे लोगों को इसी जगह पर इसी दिल्ली में उसके 100 साल बाद भी और उनके पक्ष में इस सदन से चुने हुए लोग इस सदन के वोट पर चुनकर संसद में बैठे हुए लोग उनके पक्ष में बोलते हैं। ना चरित्र बदला, ना चाल बदली। अध्यक्ष जी गौर फरमाइएगा,

''ना चरित्र बदला ना, चाल बदली बस कैलेंडर बदल जाते हैं,
ये वही लोग हैं जो कातिलों में भी अपना भाई खोज लाते हैं।''

कल अब्दुल रशीद को भाई कहकर जिसने गले लगाया था, आज शरजिल और उमर की ढाल बनकर वही पाप दोहराया है। ये चित्र उपलब्ध है अध्यक्ष जी। इस सदन के सदस्य हैं वे लोग जो शरजिल इमाम के साथ मंच साझा करते हैं। ये आईडियोलॉजी को आज भी प्रोपेगेट किया जाता है इसलिए

वंदे मातरम पर चर्चा जरूरी है क्योंकि इस देश के और इस दिल्ली के युवाओं को राष्ट्रनीति के रूप में देश के साथ खड़े होने के लिए, देश के लिए मर मिटने के लिए, देश के हर मुद्दे पर बात करने के लिए आदरणीय अध्यक्ष जी 1975 आया 100 वर्ष हो गए। 100 वर्ष हो गए वंदे मातरम को लिखे हुए, उसकी रचना किए हुए मगर जब 100 वर्ष पर देश को धूमधाम से उस गीत को जिसने लाखों लोगों को प्रेरित किया, उस गीत को जिसने असंख्य लोगों के अंदर अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने की ताकत दी, उसको जब मनाने की बात थी तो देश में लोकतंत्र का गला घोंट दिया गया। लोकतंत्र का गला घोट दिया गया देश में और अध्यक्ष जी मैं बहुत विनम्रता मगर दृढ़ता के साथ कहना चाहता हूं, जब लोकतंत्र का गला घोटा जा रहा था, जब संविधान सस्पेंड किया जा रहा था किसका लिखा हुआ संविधान, परम पूजनीय बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का लिखा हुआ संविधान जब सस्पेंड किया गया, 100वें साल पर जब उसकी जश्न मनाया जाना चाहिए था, उससे युवाओं को प्रेरित किया जाना चाहिए था, जैसे आज 150वें साल में अमृत पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए अमृत काल में देश को ले जाने के लिए नरेंद्र मोदी जी प्रेरित कर रहे हैं, तब ये सब लोग जो बाबा साहब अंबेडकर के चित्र को अपनी राजनीति के लिए भुनाते हैं। आज भी ये उन दलों का साथ देते हैं जिसने ना तो वंदे मातरम बनाया और इसलिए नहीं बनाया क्योंकि वो इस देश के लोकतंत्र का गला घोंट के बैठे हुए थे। मैं उस ओर जाना नहीं चाहता था अध्यक्ष जी। बाबा साहब अंबेडकर जी का सम्मान करने की बात करते हैं। बाबा साहब अंबेडकर जी के आदर्शों पर चलने की बात करते हैं। ये किताब है बाबा साहब अंबेडकर की। इसमें बाबा साहब अंबेडकर जी ने बी आर अंबेडकर थॉट्स ऑन पाकिस्तान। इसमें बाबा साहब ने पेज नंबर 259 पर लिखा है। पूरे घटनाक्रम का 1937 का वर्णन किया है। After taking into account, what muslims demanded? एक लंबी चीज लिखी है। But it appears that, even with this, muslims are not satisfied. A further list of new demands for safeguard of muslims. और वो डिमांड में बहुत सारी चीजें थी। ये मुस्लिम पर्सनल लॉ और साथ में नौवें नंबर पर लिस्ट में लिखा वंदे मातरम song should be given up. ये कहा और इस पर अंबेडकर जी की टिप्पणी क्या थी? अंबेडकर जी की टिप्पणी थी with this new list, there is no knowing where the muslims are going to stop in their demands. It will thus be seeing that every time a proposal for reform in the Constitution comes forth, the muslims are there ready with some more new political demand or demands. अंबेडकर जी ने वंदे मातरम के बारे में जब छोड़ा गया ये लिखा आप सब लोग अंबेडकर जी को अपना आदर्श बताते हैं। अंबेडकर जी आदर्श है इस पीठ के। अंबेडकर जी आदर्श है हमारी मुख्यमंत्री के। अंबेडकर जी आदर्श

है इस सदन में बैठे हर व्यक्ति के। मगर अपनी राजनीति के लिए आप अंबेडकर जी, अंबेडकर जी ने जो वंदे मातरम पे कहा आप उसके साथ हैं या नहीं। अंबेडकर जी का संविधान जिन्होंने बर्बाद कर दिया, जो संविधान जिन्होंने बंद कर दिया 100 साल पे जब वंदे मातरम मनाया जाना था, अंबेडकर जी ने अपनी किताब में लिखा वंदे मातरम को छोड़ना गलत है। आप में से अगर हिम्मत हो तो आज कहिए और तो और कहते हैं मैं नाम नहीं लेना चाहता था मगर मैं मजबूर हूं। उसी 1975 में नसबंदी कराओ तभी घर बचेगा। ये ही तुर्कमान गेट और दुजाना हाउस में तलविंदर जी और यहां के लोग जिन्होंने दिल्ली को अच्छी तरह देखा है। ये कहा जाता था आप लोग उन लोगों के साथ खड़े हैं जिन्होंने अंबेडकर जी के संविधान को और आपके नेता संजय सिंह जी कहते हैं ये गिमिक है। यह गिमिक है। मैं बताता हूं गिमिक क्या होता है। वंदे मातरम को गिमिक कहना क्या होता है? गिमिक कहना वो होता है जब आप अपनी राजनीति के लिए टिफिन रूम को फांसी घर बता देते हैं। आपका कुछ लेना देना नहीं है उनके आदर्शों से। नहीं बता रहा हूं क्यों, क्योंकि ये चित्र है आपके नेता का। ये चित्र है आपके नेता का। ठीक था। बहुत क्रांतिकारी, क्रांतिकारी, बहुत क्रांतिकारी ये फिर कहते हैं उसी को ज्यादा चलाया जाए भगत सिंह का चित्र पीछे लगा था ये चित्र आप सब ने खूब देखे हैं, खूब देखे हैं ये चित्र इसलिए आप लोगों का

.....व्यवधान.......

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: वंदे मातरम पे ही बोल रहा हूं नहीं,नहीं अरे वो तो चलेगा हम तो माने भगत सिंह वाला हिस्सा बड़ा रिएक्शन आएगा और आपके नेता कहते हैं वंदे मातरम गिमिक है। गिमिक ये होता है साहब। ये होता है गिमिक, टिफिन घर को फांसीघर बताना और भगत सिंह के चित्र को लगाकर अपनी टीआरपी बनाने के लिए पत्रकारों से साठगांठ करना। इसलिए वंदे मातरम बताना जरूरी है और वंदे मातरम जब बताएंगे तो उसके साथ आपकी असलियत तो सामने आएगी ही। टिफिन घर बता दिया। अध्यक्ष जी, इसलिए आज मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी की सरकार प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में 2047 में दिल्ली को विकसित भारत की विकसित राजधानी बनाने के लिए जो अमृत पीढ़ी तैयार हो रही है उसका लक्ष्य है दिल्ली की अमृत पीढ़ी में सेवा, संगठन और संस्कार की महत्ता को गढ़ने का काम और वो काम करेगा वंदे मातरम जिसके लिए सरकार ने राष्ट्रनीति करिकुलम के माध्यम से दिल्ली के युवाओं के अंदर ज्ञानशील एकता के भाव को भरने का प्रयास किया है। वंदे मातरम को कैसे मूल मंत्र मान के नीतियों के रखते हुए बदलाव लाया जा सकता है ये उदाहरण इस सरकार ने राष्ट्रनीति करिकुलम से प्रस्तुत किया है और बिना

करोड़ों रुपए का विज्ञापन दिए प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार हमारी सरकार वंदे मातरम को कैसे मूल मंत्र मान के नीतियों को रखते हुए बदलाव लाया जा सकता है यह उदाहरण है राष्ट्रनीति करिकुलम। वो जातिवाद से तोड़ेंगे। हम राष्ट्रवाद, राष्ट्रनीति करिकुलम और वंदे मातरम से जोड़ेंगे। अध्यक्ष जी मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे वंदे मातरम पर बोलने का अवसर दिया। असंख्य, असंख्य शहीद, असंख्य लोग जिन्हें शहादत नहीं मिली मगर उन्होंने अपनी तरफ से हर पल, हर क्षण इस देश की आजादी के लिए जिया। इस देश की आजादी के बाद भी असंख्य लोग वंदे मातरम से अपनी प्रेरणा पाते हैं। ऐसे गीत को जिसको 150 वर्षों तक निगलेक्ट किया गया। हम धन्यवाद करना चाहते हैं अपनी मुख्यमंत्री जी का जिन्होंने प्रधानमंत्री जी द्वारा इस 150 वर्ष को मनाए जाने का और दिल्ली के परिपेक्ष्य में उसकी चर्चा, दिल्ली के युवाओं में उसका योगदान और उसकी बातचीत के लिए यह विधानसभा के पटल पर रखने का हमें अवसर दिया। मैं मुख्यमंत्री जी का साधुवाद करता हूं। मैं उन्हें बधाई देता हूं कि जिस प्रकार से उन्होंने यह चर्चा करने का अवसर दिया है। यह चर्चा ना केवल बच्चों को प्रेरणा देती है, युवाओं को प्रेरणा देती है, बल्कि तुष्टीकरण की राजनीति करने वाले और विघटनकारी राजनीति को एक आदर्श का मुलम्मा पहनकर चढ़ाने वालों को भी, आज भी एक्सपोज करने का काम करता है वंदे मातरम्। वंदे मातरम् भारत माता की जय।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मेरा सभी सदस्यों से अनुरोध है कि हमें दो विषयों पर चर्चा करनी है इसलिए समय का ध्यान रखें। माननीय सदस्य सुश्री पूनम शर्मा जी।

सुश्री पूनम शर्मा : धन्यवाद अध्यक्ष जी। आज मैं इस सदन में एक ऐसे विषय पर बोलने के लिए खड़ी हूं जो हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने जब वंदे मातरम गीत की रचना की थी तो उन्होंने भारत को केवल एक जमीन का टुकड़ा नहीं बल्कि साक्षात मां के रूप में देखा था। आज इस महान गीत को 150 साल पूरे हो रहे हैं। यह केवल एक कविता या एक गीत नहीं है, यह भारत की आजादी की लड़ाई की असली ताकत है। अध्यक्ष जी, इतिहास गवाह है कि जब हमारे देश के वीर क्रांतिकारी आजादी के लिए अंग्रेजों से लड़ रहे थे तो उनके होठों पर केवल एक ही नाम था, वंदे मातरम, वंदे मातरम और इसी एक नारे ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया। यह गीत हमें सिखाता है कि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है और यही हमारी भारतीय जनता पार्टी की भी एक मूल सोच है। आज प्रधानमंत्री जी श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरी दुनिया में अपना खोया हुआ वर्चस्व हम वापस पा रहे हैं। यह हमारी संस्कृति और विरासत

पर गौरव करना सीख रहे हैं। वंदे मातरम का यह 150 वर्ष हमें याद दिलाता है कि हमें अपनी एकता को कभी टूटने नहीं देना और मैं आपको बताना चाहूंगी जब हम वंदे मातरम गाते हैं तो हमारे दिलों में एक नई ऊर्जा और एक नए उत्साह का संचार होता है। यह गीत हमें अपने देश के प्रति सच्ची निष्ठा, प्रेम की भावना को गर्व से भर देता है। आज हमारी नई पीढ़ी को यह पता होना चाहिए कि इस गीत को गाने के लिए हमारे पूर्वजों ने ना जाने कितनी लाठियां और गोलियां खाई हैं। हमें आज संकल्प लेना चाहिए कि देश की एकता और अखंडता के लिए हमें काम करना चाहिए और अंत में मैं एक ही बात कहना चाहती हूं कि वंदे मातरम हमारा मान है, सम्मान है और हमारी पहचान है, हमारे रग रग में बसने वाला, हमारा देशभक्ति गीत है, वंदे मातरम। जय हिंद जय भारत। धन्यवाद।

.....व्यवधान......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : एक मिनट। आप, नहीं इसमें पॉइंट ऑफ ऑर्डर नहीं होता। बैठ जाइए। हां जी।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : बहुत अहम मेरी ही विधानसभा का एक अहम मुद्दा है। मैं आपसे गुजारिश।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : ये बात, सब्जेक्ट पूरा हो जाए।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी दो मिनट से ज्यादा नहीं लूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : नहीं-नहीं इसके बाद, ये एक बारी ये हो जाए, फिर बात करेंगे। नहीं-नहीं यहां पे देखिए वो सेंसिटिव मैटर है। मैं समझ गया आपकी बात।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी नहीं, आप नहीं समझ पाए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : नहीं।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी समझ लीजिए। आप से गुजारिश है आप

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : नहीं नहीं धन्यवाद। माननीय, मैं अब देखिए ऐसा है यह लॉ एंड ऑर्डर का विषय है। इसको यहां पर चर्चा नहीं की जा सकती। संवेदनशील मामला है। यहां बात नहीं हो सकती। एक मिनट।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी 60 सेकण्ड दे दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री रवि नेगी।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी 60 सेकण्ड दे दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष :यह विषय यहां का नहीं है।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, इस पवित्र सदन के सम्मानित सदस्यगण।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : वो आपने बताया था मुझे। आए थे ना आप मेरे रूम में। मेरे रूम में आये थे आपने बताया था।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : दिल्ली का मैटर है सैंसेटिव मैटर है आपके सामने नहीं रखूँगा तो.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : नहीं-नहीं ठीक है। आप शुरू करिये।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मैं आलाउ नहीं करूंगा।

श्री आले मोहम्मद इकबाल : इसके बाद बोल लूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मैं आलाउ नहीं इस पर, संवेदनशील मामले पर मैं यहां पर कोई वकतव्य किसी को नहीं देने दूंगा। दिल्ली के सौहार्द के लिए, लॉ एंड ऑर्डर के लिए, मैं यहां पर सदन में इस तरह की चर्चा नहीं हो सकती। चलिए। लॉ एंड आर्डर का है ना ये, इस विधानसभा का नहीं है। चलिए करिये जी, आप बोलिए, आप शुरू करिये।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, इस पवित्र सदन के सम्मानित सदस्य गण। आज मैं किसी औपचारिक विषय पर नहीं, बल्कि भारत की आत्मा, भारत की चेतना और भारत के स्वाभिमान वंदेमातरम की।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष :ये सब-ज्यूडिस मैटर है, हाईकोर्ट का इश्यू है, लॉ एंड ऑर्डर का इशू है, एमसीडी का इशू है, इससे रिलेशन कुछ नहीं है इसका। इस सदन से कोई लेना देना नहीं है।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : इनको बाहर करिए ना। अध्यक्ष जी बाहर करिए इन्हें। यह समय खराब कर रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : शुरू करिए।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : इनको बाहर करिए, ये समय खराब कर रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : शुरू करिए आप।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : नहीं-नहीं अभी ये थोड़े ही होता है।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : हो गई ना आपकी बात, जो बोलना है, बोल रहे है यही बोलना था आपने, हो गया। चलिए शुरू करिए, शुरू करिए।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : वंदे मातरम के 150 गौरवशाली वर्षो पर बोलने के लिए खड़ा हूं। माननीय सदस्यों वंदे मातरम कोई सामान्य गीत नहीं, यह वो उद्घोष है, जिससे गुलाम भारत में पहली बार।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष :बिलकुल आलाउ नहीं हो सकता बहुत संवेदनशील मामला है, लोगों की जिंदगियों से जुड़ा हुआ है और दिल्ली के सौहार्द से जुड़ा हुआ है। मैं ऐसे किसी मुद्दे पर यहां पर चर्चा नहीं होने दूंगा, जो सबजुडिस है, कोर्ट का मैटर है, और लॉ एंड आर्डर से जुड़ा हुआ है। बैठ जाइए। करिए आप शुरू करिए। शुरू करिए, आप शुरू करिए।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : नहीं ये नहीं हो पाएगी, नहीं हो पाएगी, नहीं हो पाएगी यहां पर। यहां मैं आलाउ नहीं करूंगा। मेरी एक जिम्मेदारी है, दिल्ली के लोगों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, हम कोई भी ऐसी बात नहीं कर सकते जिससे कि संवेदनशीलता पर असर पडे और दिल्ली के सौहार्द पर उसका असर आये।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : यह वो उदघोष है जिससे गुलाम भारत ने पहली बार सीना तान कर कहा यह मेरी मातृभूमि है। सर वर्ष 1875 में जब बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने वंदे मातरम की रचना करी।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : उसके लिए कोई नोटिस देना चाहिए था कुछ लिख कर देना चाहिए था ऐसे अचानक खडे होने से नहीं बनती बात। अब आप, कोई नहीं। आप 280 में देते कहीं आपने दिया ही नहीं।

...व्यवधान....

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : तब शायद किसी ने नहीं सोचा था यह ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला देगा। वंदे मातरम् देश भक्ति त्याग रचना और चेतना का प्रतीक है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष :कोई लिखित डॉक्यूमेंट भी आपने नहीं सबमिट किया, चलिए।

श्री रविन्द्र सिंह नेगी : इस चर्चा के माध्यम से देश के बच्चे युवा और आने वाली पीढ़ी यह बात समझ सकेगी वंदे मातरम का देश को आजादी दिलाने में क्या योगदान रहा। माननीय अध्यक्ष जी वंदे मातरम के प्रति समर्पण की जरूरत है। जब यह बना तब भी, आजादी के आंदोलन में भी और आज और अब भी और जब 2047 में विकसित भारत बनेगा और महान भारत की रचना होगी तब भी रहेगी। बंकिम चंद्र चटर्जी ने इस रचना को बंगाल में रचा। बंगाल में इसको लिखा पर किंतु यह रचना केवल पूरे देश में बल्कि पूरी दुनिया भर में आजादी लड़ रहे लोगों के बीच फैली और आज भी कोई व्यक्ति यदि सीमा पर अपने प्राण न्योछावर करता है, शहीद होता है, तो वो वंदे मातरम बोलता है और अपना कोई सर्वोच्च बलिदान देता है, तो वो भी वंदे मातरम बोलता है। देखते-देखते आजादी के आंदोलन में वंदे मातरम देशभक्ति, त्याग और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बना। गौरतलब है कि बंकिम चंद चटर्जी ने जब इस गीत को जिस पृष्ठभूमि में लिखा उसके पीछे इस्लामी आक्रांताओं द्वारा भारत की संस्कृति को जीर्ण क्षीण करने का प्रयास किया। पर आज कुछ लोग पूछते हैं कि वंदे मातरम कहने से क्या होता है? मैं इस सदन में स्पष्ट करना चाहता हूं, वंदे मातरम कहने से इतिहास बदलता है, वंदे मातरम कहने से राष्ट्र खड़ा होता है, वंदे मातरम कहने से गुलाम सोच टूटती है। यह गीत ना किसी धर्म के खिलाफ है, ना किसी समुदाय के खिलाफ है, यह तो मातृभूमि के सम्मान का साझा संकल्प है। माननीय अध्यक्ष महोदय ये अत्यंत गर्व की बात है कि वंदे मातरम भारत का राष्ट्रीय गीत है, हमें एक भारत, श्रेष्ठ भारत भावना से जोड़ता है। आज इसके 150 वर्ष पूरे होने पर मैं इस सदन से यह प्रश्न करना चाहता हूं क्या हम केवल जयंती मनाकर अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाएंगे या फिर वंदे मातरम को आचरण में उतारेंगे। विशेषकर दिल्ली देश की राजधानी है जहां से देश को दिशा मिलती है। यदि दिल्ली जागेगी तो देश जागेगा। आज की युवा पीढ़ी से कहना चाहता हूं राष्ट्रभक्ति सिर्फ सोशल मीडिया की पोस्ट से नहीं हो, राष्ट्रभक्ति अनुशासन, परिश्रम और ईमानदारी का नाम है। संविधान का सम्मान, राष्ट्रीय प्रतीकों का आदर, वंदे मातरम की असली वाली भाषा है। माननीय सदन आइए हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम भारत की एकता से कोई समझौता नहीं करेंगे। देश को बांटने वाली हर मानसिकता का डटकर विरोध करेंगे और राष्ट्रभक्ति को राजनीति नहीं राष्ट्रीय विषय बनाएंगे यही वंदे मातरम के 150 वर्ष मनाने का सच्चा अर्थ है और अंत में पूरे गर्व और पूरे विश्वास के साथ कहता हूं वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब इसमें वीरेंद्र कादियान जी, माननीय सदस्य

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी अब तो बोलने दीजिए, 60 सेकण्ड तो दे दीजिए।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय, वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम

श्री आले मोहम्मद इकबाल : अध्यक्ष जी 60 सेकण्ड तो बोलने दीजिए।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : आपने कोई नोटिस नहीं दिया, कोई पहले से लिख के नहीं दिया, संवेदनशील मामला है, इसमें मैंने समझ लिया, आप लिख के मुझे दे दीजिए, आप मुझे लिख के दे दीजिए, आप लिखित में मुझे दे दीजिए ना, कुछ तो नोटिस तो देंगे, आपने कोई नोटिस ही नहीं दिया। शुरू करिए।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय, वंदे मातरम ये एक शब्द

...व्यवधान..

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : आप लिख के दे दीजिए

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मां भारती की साधना

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : लिख के दे दीजिए, लिख के दे दीजिए।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : हां हां

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय वंदे मातरम, ये एक शब्द मां भारती की साधना है, मां भारती की आराधना है। वंदे मातरम ये एक शब्द हमें इतिहास में ले जाता है। ये हमारे आत्मविश्वास को, हमारे वर्तमान को आत्मविश्वास से भर देता है और हमारे भविष्य को नया हौसला देता है।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : आप डिस्टर्ब कर रहे हैं सदन को।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: ऐसा कोई संकल्प नहीं।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : आप बैठ जाईये, बैठ जाईये आप।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: ऐसा कोई संकल्प नहीं जिसकी सिद्धि ना हो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : बिना नोटिस से नहीं होता।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय 150 वर्ष पूर्व बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी ने

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः इस गीत की रचना की और

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : जारी रखिये आप।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः और जब आजादी की लड़ाई लड़ी गई तो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने वंदे मातरम कह के हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्म के लोग इकट्ठा होकर उन्होंने लड़ाई लड़ी, देश को आजादी दिलाई और यह वंदे मातरम गीत आपको याद होगा जब भारत चीन का युद्ध हुआ तो लता मंगेशकर जी ने इस गीत को गाया और पूरे राष्ट्र ने उसको सराहा और उससे एक अलग से प्रेरणा मिली। आपने इस गीत को सैकड़ों बार गाया होगा अपने जीवन में। हम सब लोग राष्ट्रभक्ति के लिए अपनी कुर्बानी देने को हमेशा तैयार रहते हैं। देश पर जब जब आपदा पड़ी है, जब हमारी जरूरत पड़ी है, राजनीतिक द्वेष भाव छोड़कर इकट्ठे होकर हमने देश के लिए लड़ाई लड़ी है। अध्यक्ष महोदय, इस देश का बड़ा लंबा इतिहास है। वर्षों तक गुलाम रहने के पश्चात हमें आजादी प्राप्त हुई और इस आजादी में सभी धर्मों के लोगों ने अपनी कुर्बानियां दीं, चाहे वो हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, बुद्ध हो। इस देश के इतिहास में ऐसे बहुत से योद्धा हुए जो जवानी में ही अपने देश को आजाद कराने के लिए, अपने देश को खुली हवा में जीने के लिए अपनी जवानी दे दी। चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु सुखदेव यह सब वंदे मातरम, वंदे मातरम कहते कोई फांसी के फंदे पर लटक गया, किसी को अंग्रेजों ने गोलियों से भून दिया। अध्यक्ष महोदय, आजादी के बाद दूसरी प्रकार की आजादी की आवश्यकता थी क्योंकि देश बहुत गरीब था। पहले मुगलों ने, फिर अंग्रेजों ने इस देश को लूट लिया। सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह देश अनाज का भंडारण भी नहीं कर पाया और आपने देखा चीन के युद्ध में, भारत चीन के युद्ध में हमारे पास हथियार भी नहीं थे और जो गीत गाया गया उससे प्रेरणा लेकर हमारे सैनिकों ने लड़ाई लड़ी। अध्यक्ष महोदय, इसके बाद जब आजादी की लड़ाई लड़ी गई आजाद हुआ भारत तो इस देश का संविधान लिखा गया और इस संविधान को लिखने में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी का अहम योगदान रहा। उन्होंने सभी जातियों को, धर्मों को समान रूप से मत का अधिकार दिया, आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और हमारे संविधान को आज हम एक ग्रंथ के रूप में मानते हैं। अभी थोड़ी देर पहले माननीय मंत्री जी कह रहे थे हमारी तरफ उंगली करके कि इन लोगों ने

इसकी भावना नहीं समझी। मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय जब हमारी सरकार आई तो दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय केजरीवाल जी ने एक तरफ बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी की मूर्ति लगवाई और एक तरफ भगत सिंह जी की तस्वीर लगवाई। इससे दो प्रेरणायें मिलती हैं। एक संविधान की रक्षा करना, दूसरी युवाओं में जोश भरना कि देश के लिए 23 वर्ष की उम्र में जो फांसी का फंदा चूम गए थे तो राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा होती है। इन सब में देखते हुए, हां, कुछ लोग जो है देश के साथ गद्दारी करते हैं, कुछ लोग उपद्रव पैदा करते हैं, हम सब लोग उसकी भर्त्सना भी करते हैं। लेकिन इन सब चीजों को वंदे मातरम जिन्होंने लिखा, जैसे महान कवि, उनकी सोच को अगर हम आज की राजनीति से जोड़ के देखें तो यह गलत होगा। तो वंदे मातरम हमारी एकता का, राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। हम सब लोग इसको नमन करते हैं। वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष :अब माननीय सदस्य श्री राजकुमार भाटिया जी।

श्री राज कुमार भाटिया : आदरणीय अध्यक्ष जी, इस गौरवशाली सदन में आपने गौरवशाली वंदन वंदे मातरम के विषय में मुझे बोलने का अवसर दिया, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। इस गीत के रचयिता श्री बंकिम चंद्र चटर्जी, उनका स्मरण करते हुए मैं मां भारती के मस्तक पर वंदे मातरम का तिलक करते हुए अपने विषय को रख रहा हूं। आज का अवसर मेरे लिए गर्व, भावनाओं और संकल्प का, तीनों का संगम है। जहां एक और हम इस भव्य गीत की 150वीं वर्ष गांठ मना रहे हैं। उसी समय में दिल्ली में बहन रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार मोदी जी के मार्गदर्शन में इस भव्य गीत को दूसरी पीढ़ी को ट्रांसफॉर्म कर रही है, आने वाली युवा पीढ़ी के रूप में प्रेरणा दे रही है क्योंकि विषय वंदे मातरम का है। इस गीत ने करोड़ों भारतीयों के मन में आजादी की ज्वाला जगाई, हिम्मत भरी, गुलामी से मुक्ति दिलवाई और भारत माता के चरणों में अटूट भाव भी पैदा किया। वंदे मातरम कोई साधारण गीत नहीं है, यह हमारी राष्ट्रीय चेतना का धड़कता हुआ हृदय है। महान साहित्यकार बंकिम चंद्र चटर्जी ने 1882 में अपने उपन्यास 'आनंदमठ' में इसको स्थान दिया। यह मूल रूप से बंगला और संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखा गया था। बाद में यह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध, राष्ट्रीय एकता और त्याग का प्रतीक बन गया। आजादी के तुरंत बाद 24 जनवरी 1950 को इस गीत को राष्ट्रीय गीत का सम्मान दिया गया और राष्ट्रीय गान जन गण मन की तरह वंदे मातरम भी हमारे राष्ट्रीय जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया जो भारत मां के प्रति भक्ति और समर्पण का शाश्वत संदेश देता है। अध्यक्ष जी,

इस सदन में भी हजारों बार वंदे मातरम का गुणगान हुआ होगा। जब हम वंदे मातरम बोलते हैं तो मन में एक संकल्प भी पैदा होता है। जब हम वंदे मातरम बोलते हैं तो हमारा दिल जो अब धड़कता है उसकी धड़कन थोड़ी सी तेज हो जाती है, हमारा रोम रोम खड़ा हो जाता है और मां भारती के प्रति हमारी श्रदधेय भावनाएं जागृत हो उठती है। लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में अभी मंत्री महोदय बता रहे थे आशीष सूद जी ने बताया कि जब हम इसे पढ़ते हैं, संस्कृत में पढ़ते हैं या बंगला में पढ़ते हैं तो भारत माता मुस्कुराती हुई मदर भाषा में बोलने वाली नजर आती है। उस मां की तरह अपने बेटों को सुख और वरदान देती है। यही भारत की विविध संस्कृतियों का और सौहार्द का संकेत भी है। इस गीत के अंतिम चरणों में मां दुर्गा, मां लक्ष्मी, मां सरस्वती अलग-अलग रूपों में नजर आती है जो शक्ति, स्मृद्धि और ज्ञान तीनों का संगम है जो हमारे भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में भी परिलक्षित होता है। अंतिम पंक्तियों में मां हमें जीवन देने का, अन्न देने का, जल, आश्रय और संस्कृति देने का भी वरदान देती है। लेकिन आज के परिदृश्य में जब मोदी जी के आह्वान पर हम 2047 के विकसित भारत की बात कर रहे हैं तो यह हमें संकल्प लेने के लिए भी प्रेरित करता है और विश्व में स्वयंभू चौधराहट के जो लोग जो भारत को डराने का प्रयास कर रहे हैं उनके खिलाफ खड़े होने की ताकत भी वंदे मातरम हमें देता है। यह वो चौधराहट वाले देश हैं जो बार-बार भारत को डराते तो हैं लेकिन अपने आर्थिक जगत में, अपने चिकित्सा जगत में और अपने इंजीनियरिंग जगत में भारतीयों को भर्ती करने में कभी नहीं हिचकते। वो भारतीयों को ढूंढते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि जो भारतीय युवा आज पढ़ लिखकर देश से बाहर जा रहे हैं उनकी अंतरात्मा में उनके डीएनए में वंदे मातरम का समिश्रण है और हम गर्व से बाहर जाकर भी वंदे मातरम का गुणगान करते हैं। वंदे मातरम जब हम बोलते हैं तो हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। जब हम बोलते हैं तो दोनों हाथ उठते हैं और मां भारती के चरणों में जाकर हम अपनी लौट लगाते हैं। यह गीत हमें याद दिलाता है कि भारत केवल एक मानचित्र पर खींची हुई रेखा नहीं है। यह विश्व गुरु था, विश्व गुरु बनेगा यह वंदे मातरम हमें प्रेरणा देता है। वंदे मातरम बोलने से हमारे भारतवर्ष का संपूर्ण चित्र हमारे सामने नजर आता है। अभी मंत्री जी बता रहे थे कि कुछ लोग इसे gimmicks बताते हैं। ये gimmicks उनके लिए हो सकता है जो वंदे मातरम बोलकर राजयोग में आ गए लेकिन बाद में राज रोग के रूप में अपने आप को स्थापित करके दिल्ली की सत्ता पर 11 वर्ष रह गए। ये वंदे मातरम उनके लिए gimmicks है। यह वंदे मातरम अगर gimmicks आप जानते हैं हां ये gimmicks है। हर सांस्कृत राष्ट्रवाद का परचम लहराने वाले.....

(समय की घंटी)

श्री राज कुमार भाटिया : हर व्यक्ति के लिए ये gimmicks हो सकता है। लेकिन उन माताओं को भी हमें याद करना होगा जिनके बच्चे वंदे मातरम बोलते बोलते फांसी के फंदे पर झूल गए। उन बच्चों के लिए, उन वीर सेनानियों के लिए बोलना होगा जो बॉर्डर पर गोली खाते हुए वंदे मातरम बोलते हैं। यह उनको पूछिए कि उनके लिए gimmicks है कि नहीं है। उन बहनों से पूछिए जिनकी कलाई खाली हो गई। ये उन बहनों से पूछना चाहिए। एकता और समरसता की प्रेरणा देते हुए अलग-अलग भाषा में अलग-अलग जातियों में लोग इस गीत के माध्यम से एक ईश्वर में भारत मां की वंदना करते हैं, भारत मां के चरणों में नमन करते हैं। हमारे संविधान और लोकतंत्र की आत्मा है ये गीत और हमें गर्व करना चाहिए कि इस गीत के माध्यम से ही हम अगला पथ जो है अपना ले रहे हैं। अंत में मैं एक ही आपसे विनम्र आग्रह करूंगा। सरकार के माध्यम से दिल्ली सरकार के माध्यम से मेरी प्रार्थना है आप स्वीकार करें ना करें, आपका डिस्क्रीशन है कि 150वें वर्ष में दिल्ली सरकार के जितने भी प्रतीक चिन्ह हों, जितने भी सम्मान चिन्ह हों, उसमें ताम्र पत्रिका पर, सिल्वर गोल्ड प्लेटेड जो हमारी पीतल की पट्टिका होती है उसमें प्रतीक चिन्ह के रूप में केवल वंदे मातरम की भेंट सबको दी जाए ये सम्मान होगा उस वंदे मातरम के...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है। धन्यवाद।

श्री राज कुमार भाटिया : 150 साल के प्रति और मैं अभी समाप्त कर रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बहुत लम्बा हो जायेगा ।

श्री राज कुमार भाटिया : और जब जब भी ये गीत गूंजे हम केवल औपचारिकता ना निभाएं, वंदे मातरम के पूर्ण गीत को बोले और मजबूती के साथ हर भारतीय के मन में एक प्रेरणा दें कि आने वाली युवा पीढ़ी के लिए यह गीत गीता के ज्ञान की तरह है। यह गीत रामायण की चौपाइयों की तरह है। ये गीत गुरु ग्रंथ साहिब जी के वचनों की तरह है। यह सब हम बोलते हुए नई पीढ़ी को यह गीत सौंपें। अब मेरे साथ मैं आपसे प्रार्थना करूंगा। वंदे मातरम सभी का है। पक्ष और विपक्ष सभी का है और मैं तो ...

(समय की घंटी)

श्री राज कुमार भाटिया : चाहूंगा कि एक बारी हम कहे वंदे मातरम। वंदे मातरम् वंदे मातरम्।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री गोपाल राय जी।

(माननीय सदस्यों द्वारा वंदे मातरम का उद्घोष)

वंदे मातरम् वंदे मातरम् वंदे मातरम् वंदे मातरम् वंदे मातरम् वंदे मातरम्

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: साइलेंट प्लीज।

श्री गोपाल राय : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सदन आज राष्ट्र के उस धरोहर पर चर्चा कर रहा है जिसने मां भारती की गरिमा को, आजादी की लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाने के लिए लाखों लाखों वीरों को कुर्बानी देने के लिए प्रेरणा दी। अध्यक्ष महोदय, जब हम वंदे मातरम की बात करते हैं। वंदे मातरम मातृभूमि की वंदना वो सम्मान, वो गरिमा वो प्रेरणा जिसने शायद दुनिया के अंदर इतने लंबे स्वतंत्रता संग्राम को चलाने का सम्बल दिया, ताकत दिया। दुनिया के अंदर बहुत सारे देशों को गुलाम बनाया ब्रिटिश ने लेकिन इतनी लंबी कुर्बानी भारत ने, जितनी हमारे पुरुषों ने दी, आज तक दुनिया के इतिहास में किसी देश ने और मां भारती के बेटे बेटियों ने जो कुर्बानी दी कोई देश नहीं दिया। अध्यक्ष महोदय, आज जब हम वंदे मातरम की चर्चा कर रहे हैं, वंदे मातरम हमारे देश में राष्ट्र की एकता, राष्ट्र की संस्कृति, राष्ट्र की विरासत, राष्ट्र की ताकत की आवाज बना। लेकिन जब हम राष्ट्रवाद की बात करते हैं तो दुनिया के पटल पर दो तरह का राष्ट्रवाद पैदा हुआ। एक राष्ट्रवाद वहां पैदा हुआ जिन देशों ने दूसरे देशों को गुलाम बनाया। जर्मनी के अंदर राष्ट्रवाद पैदा हुआ और दूसरा राष्ट्रवाद दुनिया के अंदर पैदा हुआ जो देश गुलाम हुए थे उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवाद पैदा किया। वंदे मातरम उस बात का प्रतीक है कि भारत के कण-कण में, भारत के कोने-कोने में चाहे हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, पंजाबी हो, बंगाली हो, गुजराती हो, मराठी हो भारत के हर कोने में पैदा हुआ बच्चा, हर बेटा और बेटी जब एक होकर के मां भारती की रक्षा के लिए अपने प्राणों को कुर्बानी देने का संकल्प लेता है उसका अंतर्नाद है वंदे मातरम लेकिन उस वंदे मातरम में जब हम उसकी चर्चा करते हैं तो कई बार राजनीति हमारे मानस पटल पर आ जाती है। आप याद करो, जब बंगाल के अंदर पहली बार प्लासी के मैदान में एक तरफ लॉर्ड क्लाइव था जहां से हमारे देश में गुलामी की नींव रखी गई तो दूसरे तरफ सिराजुद्दौला था 23 साल का नौजवान। अगर मीर जाफर भी था गद्दारी करने वाला, तो सिराजुद्दौला भी था 23 साल का नौजवान जिसने पहली कुर्बानी दी इस देश की आजादी के लिए। 1857 समय कम है, मैं संक्षेप में बात रखना चाहता हूं। 1857 की जंगे आजादी सबको पता है। आप वीर सावरकर को पढ़ते होंगे। वीर सावरकर ने पहला भारत के अंदर एक किताब लिखी। 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता' संग्राम। वीर सावरकर ने दूसरी भी किताब रखी हिंदू राष्ट्रवाद की। लेकिन कभी मौका मिले तो एक बार 'भारत का प्रथम स्वतंत्र समर' पढ़ करके देखना आप। आजादी की लड़ाई के लिए, इस देश की धरती पर

एक तरफ बहादुर शाह जफर लड़ रहे थे 1857 में, दूसरे तरफ नाना साहब लड़ रहे थे। एक तरफ अजीमुल्ला खान लड़ रहे थे, दूसरी तरफ तात्या टोपे लड़ रहे थे। एक तरफ बेगम हजरत महल लड़ रही थी, तो दूसरी तरफ झांसी की रानी भी अपनी कुर्बानी देने के लिए सर पर कफ़न बांध के मैदान-ए-जंग में थी। आजादी की लड़ाई जब आगे बढ़ी है इसके लिए सबने मिलकर के कुर्बानी दी। इतिहास के पन्नों में कभी अगर मौका मिले राजनीति से तो एक बार खंगालना। इस देश के अंदर 1857 की जंग-ए-आजादी में अंग्रेजों के खिलाफ एक जुलूस निकलता था, विद्रोह मार्च निकलता था। उस मार्च में अल्लाह- हो- अकबर और हर हर महादेव और फिरंगियों भारत छोड़ो। यह हमारा भारत था जिसके दम पर हम इस देश को आजाद कराया। एक साथ एक विद्रोह में, एक प्रोटेस्ट में अल्लाह-हो- अकबर लगाने का नारा भी हमारे देश का पुरखे रखते थे, हर हर महादेव का नारा भी लगता था और दोनों मिलकर के फिरंगियों भारत छोड़ो का नारा लगाते थे। तब पहले हमारी स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई जीती। लड़ाई आगे बढ़ती है। वंदे मातरम आता है। इस देश के अंदर 'अनुसूइया समिति' बनती है। इस देश के अंदर 'युगांतर सभा' बनती है। इस देश के अंदर नौजवानों के अंदर एक प्रेरणा पैदा होती है और जो अंग्रेज यह सोचते थे कि अंग्रेजों को भारत से नहीं हटाया जा सकता, उनके सामने सीना तान करके बंकिम चंद्र चटर्जी खड़ा होता है। यह देश की राजधानी आज जब बनी है दिल्ली इसके पहले अंग्रेजों ने कलकत्ता अपनी राजधानी बनाई थी। बंकिम चंद्र चटर्जी ने जब वायसराय के ऊपर बम फेंका, कितने साल का वो बेटा था? अंग्रेजों को कलकत्ता छोड़कर के भागना पड़ा और दिल्ली में आकर के शरण लेनी पड़ी थी। इस देश के अंदर स्वतंत्रता संग्राम में जब अंग्रेजों ने आपको यह बात समझना जरूरी है क्योंकि अभी जिक्र किया हमारे एक साथी ने भारत को नए सिरे से अपने चक्रव्यूह में फंसाने की दुनिया का सर्वशक्तिशाली देश अमेरिका जो जुर्रत कर रहा है, ये जरूरत पड़ सकती है कि अमेरिका के सामने भारत को एक दिन भारत के हर बेटे बेटी को हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, अगर अमेरिका जिस तरह से कह रहा है 50% हमने टेरिफ बढ़ा दिया अब हम 500% टेरिफ बढ़ाएंगे, जिस तरह ने उन्हें बिनेजुएला में जाकर के राष्ट्रपति को उठा लिया। अगर कल इस देश के ऊपर जुर्रत करता है तो तैयारी करो। इसी वंदे मातरम के नारे के साथ हर बेटे बेटी को अमेरिका के सामने मुकाबला करने के लिए तैयार होना पड़ेगा। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि जब भी आप राष्ट्रवाद की परिभाषा गढ़ते हैं तो नए इतिहास के पन्नों के साथ-साथ अपने विरासत को देखना जरूरी है। हमें देखना पड़ेगा कि अगर शहादत के फांसी के फंदे को अगर उशफाक उल्ला खां चूम

रहा है तो पंडित राम प्रसाद बिस्मिल भी चूम रहा है। वो हमारी ताकत है। इस महाभारती के कोख में पैदा हुआ हर बेटा-बेटी किसका क्या धर्म है, किसकी क्या जाति है, किसकी क्या भाषा है, इससे राष्ट्रवाद तय नहीं होगा। राष्ट्रवाद बनेगा मुट्ठी बांध करके और इसलिए ये राष्ट्रवाद का जो मूल मंत्र वंदे मातरम ने जो देश को जोड़ा आपको याद है इस बात का, 1905 में अंग्रेजों ने हमारे देश में फूट डालो की जो नींव रखी, बंगाल का विभाजन किया था अंग्रेजों ने सिर्फ बंगाल का विभाजन किया था हिंदू बंगाल और मुस्लिम बंगाल, एक बार कभी सोचना ठंडे दिमाग से 1905 में अंग्रेजों ने बंगाल बांटा था, पूरा देश खड़ा हो गया था उसके खिलाफ और 1947 में देश बांटा अंग्रेजों ने और इस देश के अंदर हम आपस में एक दूसरे के खून के प्यासे बन गए थे। 1905 से 1947 के बीच में ऐसा क्या हुआ। एक राज्य बंटता है पूरे देश को दर्द होता है। बाल-पाल-लाल, बाल गंगाधर तो महाराष्ट्र मराठा के थे। उनको दर्द होता है जब बंगाल बंटता है। लाला लाजपत राय तो लाहौर में थे, उनको दर्द होता है। पूरे देश में स्वदेशी और स्वराज का नारा उठता है और पूरा देश खड़ा हो जाता है। मैं आप सब से केवल इतनी विनती करना चाहता हूं। चर्चा आपने शुरू की है। देश अपनी प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए एक नव चुनौती के सामना करने के मुहाने पर खड़ा है। राजनीतिक पार्टियां लोकतंत्र में रहेंगी। पक्ष भी रहेगा, विपक्ष भी रहेगा लेकिन इस देश के हर बच्चे को, चाहे वह दलित हो, आदिवासी हो, पिछड़ा हो, अगड़ा हो, हिंदू हो, मुसलमान हो, पंजाबी हो, मराठी हो, सबको जोड़कर के राष्ट्र की अस्मिता और स्वतंत्रता और गरिमा के लिए खड़ा होने के लिए हमें एकजुट में, एक स्वर में बात को उठाना पड़ेगा तभी यह वंदे मातरम का संकल्प पहले भी साकार हुआ था और आगे भी साकार होगा। बहुत-बहुत धन्यवाद। शुक्रिया। वंदे मातरम।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण आज अत्यंत गौरव और हर्ष के साथ इस सदन के समक्ष एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हो रही है। जैसा कि हम जानते हैं दिल्ली विधानसभा के प्रत्येक सत्र की पहली बैठक का शुभारंभ राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के गायन से होता है। अब तक की परंपरा के अनुसार इस गीत के केवल दो पहरे ही गाए जाते रहे। परंतु इस वर्ष हमारे समक्ष एक अभूतपूर्व अवसर है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित इस अमर गीत की 150वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। यह गीत केवल शब्दों का समूह नहीं है अपितु यह हमारे स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा है। लाखों देशभक्तों की प्रेरणा का स्रोत है और मातृभूमि के प्रति आगाध प्रेम का प्रतीक है। सन 1875 में रचित इस गीत ने स्वाधीनता आंदोलन में जन जागरण का कार्य किया। बंगाल विभाजन के विरोध में यह गीत जन'जन की जुबान पर था। हमारे पूर्वजों ने इसी गीत को

गाते हुए अंग्रेजों की लाठियां और गोलियां सही जेल की यातनाएं झेली और हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमा। इस ऐतिहासिक अवसर पर दिल्ली विधानसभा में इस वर्षगांठ के उपलक्ष्य में केवल दो पहरे नहीं अपितु संपूर्ण वंदे मातरम गीत का गायन किया जाए। हमारी ओर से उन असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने इस गीत को अपने हृदय में धारण कर राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सदन इस प्रस्ताव को पूरी तरह समर्थन करेगा और हम सब मिलकर इस गौरवशाली गीत की 150वीं वर्षगांठ को यादगार बनाएंगे कि 150वीं वर्षगांठ पर दिल्ली के इस ऐतिहासिक सदन में इसी सदन में अब से लगभग 112 वर्ष पूर्व सदन के पटल पर जब वंदे मातरम के नारे लगे, साइमन कमीशन गो बैक का प्रस्ताव पारित हुआ और अंग्रेजी शासक बेहोश होकर सदन में गिर गया। तो साथियों, मैं सचिवालय को भी यह आदेश देता हूं कि सभी के जो डेस्कटॉप जो है आईपैड डेस्कपैड इसमें वंदे मातरम गीत पूरा वंदे मातरम गीत जो है वो उपस्थित होना चाहिए जिससे कि सब मिलकर पहली बैठक में पूरा गीत गाए। अब समर्थन है आपका भी, ठीक है। तो सर्वसम्मति से ये जो पूरा गीत सदन के पटल पर रखा जाएगा। अब माननीय मुख्यमंत्री जी इस चर्चा पर अपना वक्तव्य देंगी।

श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीया मुख्यमंत्री: मुझे यह एहसास हो कि इस सदन में बैठा हुआ मेरा हर एक विधायक साथी बिल्कुल जागृत अवस्था में है। मिलकर के जोरदार जयकारा। वंदे मातरम वंदे मातरम मातरम मातरम। बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय अध्यक्ष जी। आज आपके द्वारा यह निर्णय लिया जाना कि हमारे इस सदन में हमारे राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' का पूरा स्वरूप गाया जाएगा यह हम सबके लिए बहुत ही गर्व की बात है और हम सब आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने ये प्रस्ताव इस सदन के पटल पर रखा और सबने बहुत ही सहर्ष रूप में इसे स्वीकारा और हम सब लोग मिलकर के इस हमारे राष्ट्रीय गीत का आनंद और भाव विभोर होते हुए इसका श्रवण हम इस पूरे के पूरे हाउस में लगातार कर पाएंगे और सच में यह हम सबके लिए बड़े गौरव का विषय है कि ये 150वीं वर्षगांठ जो हमारे इस राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की है। हम अपने इस सदन में ये चर्चा कर पा रहे हैं, ये गर्व की बात है। हम सबके लिए बहुत गर्व की बात है। 150 साल पहले हमारे भारतीय गणतंत्र का यह राष्ट्रीय गीत रचा गया। वंदे मातरम पर अनेकों कार्यक्रम हुए। वंदे मातरम पर सामूहिक गान से लेकर के अलग-अलग प्रकार के आयोजन हुए। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में संसद में भी इस पर चर्चा हुई। पर मैं सच में अपने मन में उस बात को दोहरा रही थी जो हमारे शिक्षा मंत्री आशीष सूद जी ने कही कि क्या कारण था

कि ये 150 वर्ष पूरे होने से पहले 100वीं वर्षगांठ भी आई 50वीं भी आई। चलिए 50वीं के समय तो देश आजाद नहीं था। यह गीत हर स्वतंत्रता सेनानी गा रहा था, गुंजा रहा था। परंतु 100वीं के समय क्या हुआ था, 100 वीं के समय 1975 का वो साल जब 100 साल हमारे इस राष्ट्रीय गीत ने पूरे किए तो क्या था, आपातकाल, एक अधिनायक, देश की प्रधानमंत्री जिनकी स्वयं की इच्छाओं के चलते पूरे देश में आपातकाल लगा था। जिनके चलते भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय उस दौरान चल रहा था। तब भी 100 साल पूरे होने पर हम अपने इस राष्ट्रीय गीत का यशोगान नहीं कर पाए। बड़े शर्म की बात है। ना किसी राजनेता ने उस समय इस चीज को ध्यान किया, ना उन्हें फुर्सत थी। केवल और केवल अपनी सत्ता बचाने में तत्कालिक लोग लगे हुए थे। आज हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार जिस नियम पे चल रही है, विकास भी और विरासत भी। तो जहां देश लगातार विकास की सीढ़ियां चढ़ रहा है, वहीं पर हमारे देश की विरासत के जितने भी स्वरूप हैं, उसको हम संभाले हुए हैं और लगातार बढ़ने का विकसित भारत का लक्ष्य हमारे सामने है। आज हमारा मन, मस्तिष्क, विचार उस गुलामी की मानसिकता को धीरे-धीरे अपने से अलग कर रहे हैं। हम स्वतंत्र भारत की स्वच्छंद हवा में सांस लेते हुए भारत का वो स्वर्णिम आने वाला दिन, उसको सोच रहे हैं, उसके बारे में विचार करते हुए लगातार आगे बढ़ रहे हैं। वंदे मातरम सच में हमारी मातृभूमि का यशोगान है और वंदे मातरम का इतिहास और महत्ता तो हमारे सभी साथियों ने कही कि भारतीय नवजागरण के महान साहित्यकार, विचारक, राष्ट्रवाद के अग्रदूत बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी को मैं बारंबार प्रणाम करती हूं जो इस गीत के रचयिता हैं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता को चेतना के शब्द दिए। उन्होंने 1875 में वंदे मातरम रचा और 1882 में प्रकाशित उनके उपन्यास आनंद मठ में इसको हिस्सा बनाया गया और वंदे मातरम सही बात है कि केवल गीत नहीं है, यह भारत की आत्मा की पुकार है जो हर भारतीय के मन में बसी है। हम सबको यह याद दिलाता है कि भारत की माटी ही सबसे शक्तिशाली है, सबसे बड़ी है। हम लोग कॉलेज में हुआ करते थे और तब भी हम ये कहते थे कि कश्मीर हो या गुवाहाटी अपना देश अपनी माटी, उन शब्दों को मैं आज भी याद करती हूं कि वो भावना, देशभक्ति की भावना का पूरा का पूरा देश कश्मीर से ले कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर अरुणाचल, असम तक हमारे हर राज्य, हर व्यक्ति, 140 करोड़ भारतीय आपस में जुड़े हुए हैं, एक दूसरे से इस मां और संतान के रिश्ते में बंधे हुए हैं। यह सही कहा आपने, गोपाल जी ने, यह किसी धर्म का, किसी पंथ का, किसी वर्ग का गीत नहीं है। ना किसी के समर्थन में है और ना किसी के विरोध में। यह उस

मां और संतान का रिश्ता है जो हमें यह सिखाता है कि यह जो जन्मभूमि है हमारी, यह जो मातृभूमि है हमारी, यह माटी ही सबसे शक्तिशाली है और हम सबके लिए सब कुछ यही है। और इस भारत माता में भूमि, प्रकृति, संस्कृति की वंदना की गई है। और मैं जब इस गीत को बहुत ध्यान से इसके भावार्थ पढ़ रही थी तो मैंने पढ़ा कि इसमें भारत माता के लिए जो कहा गया कि अपने 10 के 10 हाथों में 10 शस्त्र धारण करने वाली, शत्रु संहारिणी दुर्गा मां आप ही हैं। आप कमल पुष्पों से भरे सरोवर में विहार करने वाली लक्ष्मी मां आप ही हैं। विद्या दायिनी सरस्वती आप ही हैं और हम सब आपको प्रणाम करते हैं। यह शब्द जो भारत माता के लिए कहे गए, ऐश्वर्य दयिनी, पुण्यप्रद तथा पावन, पवित्र जल प्रवाह से अमृतमय फलों से समृद्ध माता आपकी महानता अतुलनीय है, कोई सीमा नहीं है। हे माता, हे जननी हम तुम्हें प्रणाम करते हैं। और मैं सच में इस विश्वास के साथ यह कह सकती हूं कि दुनिया भर में नारी अधिकारों की बात करने वाले लोग ऐसी पंक्तियां कहीं पे भी नारी के सम्मान में किसी और पुस्तक में दिखा नहीं सकते है, जहां नारी को शक्ति, सृजन और स्मृद्धि का प्रतीक इतने सुंदर रूप में एक साथ बताया गया है। कोई नहीं कह सकता इतने सुंदर शब्दों में जिस तरीके से इस धरती को नारी का स्वरूप देकर के इतने सम्मान सूचक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है।

अध्यक्ष महोदय, वंदे मातरम राजनीति से ऊपर राष्ट्रनीति का प्रतीक है, राष्ट्रनीति का प्रतीक है। दुर्भाग्य है कि कुछ लोग इसमें राष्ट्रगीत और राष्ट्रभाव को राजनीतिक चश्मे से देखते हैं जबकि इसका एक-एक शब्द जो इस गीत का है, वह केवल और केवल भारत माता का गुणगान कर रहा है। भारत की नदियां, पहाड़, खेतों का वर्णन करते हैं, देश की स्मृद्धि का उद्घोष करते हैं और भारत की भूमि ना केवल अन्न उगाती है बल्कि संस्कार पैदा करती है। केवल फसल नहीं देती, संस्कृति देती है, पर अफसोस कुछ लोगों को भारत में केवल गरीबी, समस्या, जात-पात यही दिखता है, केवल यही दिखता है। वो चूकते नहीं है कभी भारत की बुराई करने में, विदेशों के मंच पे जाकर-जाकर के बोलते हैं। बड़े अफसोस की बात है। एक लाइन बड़ी प्यारी इसमें है 'सप्त कोटि कंठ कल कल निनाद कराले' यह पंक्ति करोड़ों भारतीयों की सामूहिक आवाज है, करोड़ों भारतीयों की, भारत माता का जयघोष है। मैं आज इस सदन से पूछना चाहती हूं कि कुछ मुट्ठी भर लोग जो जेएनयू जैसी घटनाएं होती हैं, क्या वो करोड़ों भारतीयों की आवाज को, उनकी भावना को चुनौती दे सकते हैं, नहीं दे सकते हैं, नहीं दे सकते हैं। देश पे मर मिटने की भावना रखने वाला मेरा हर युवा साथी आज ऐसे देशद्रोहियों की सजा तय करे। ऐसे देशद्रोहियों की सजा तय करे जो रहते इस धरती पर

हैं पर गीत किसी और के गाते हैं। जो आतंक फैलाने वालियों के हितेषी हैं, आतंक फैलाने वाले लोग उनके मित्र हैं। उन्हें तिरंगा नहीं, उन्हें लाल और हरा झंडा ही प्यारा है। ऐसे लोगों पे मुझे अफसोस है जो इस धरती पे रहते हैं और गीत किसी और के गाते हैं। एक लाइन इसमें और बहुत प्यारी है, 'के बाले मां तुमी अबले' यह गीत स्वयं से पूछता है कि इतनी शक्तिशाली मां को कमजोर कौन कह सकता है, हां, वो कह सकते हैं जो इस देश से प्यार नहीं करते, जो इस देश की माटी जिन्हें सुहाती ही नहीं है, वो जो विदेश की धरती पर जाकर भारत को बदनाम करते हैं। यहां की संस्थाओं को, यहां के लोकतंत्र को, यहां की सामाजिक संरचना को सवाल खड़े करते हैं इसके खिलाफ। इसलिए बार-बार वंदे मातरम कहा जाना, गाया जाना आज भी जरूरी है। मैं सच में इस बात को मानती हूं कि राजनैतिक मतभेद हो सकते हैं। संभव है कि हमारे आपके राजनैतिक मतभेद हो परंतु देश पे उंगली उठाने का अधिकार किसी ने आपको दिया नहीं है। और भारत केवल राजनैतिक सत्ता नहीं है, बिल्कुल नहीं है, कतई नहीं है, एक सभ्यता है, एक जीवन दर्शन है। सत्ता बदलती है, सरकारें आती जाती हैं लेकिन राष्ट्र स्थायी है और स्थायी रहेगा। सत्ता और राष्ट्र में जो लोग अंतर नहीं समझते हैं अध्यक्ष जी वह जाने-अजाने भारत की आत्मा पे लगातार चोट कर रहे हैं। झूठे नैरेटिव, विभाजनकारी सोच ये सारी की सारी लड़ाई जो है अध्यक्ष जी यह सीमाओं पे नहीं लड़ी जा रही, यह देश के भीतर चल रही है और इसके लिए किसी हथियार की जरूरत नहीं है, इस लड़ाई को लड़ने के लिए किसी अस्त्र-शस्त्र की जरूरत नहीं है, इसको केवल और केवल लड़ा जा सकता है तो वह है राष्ट्रीय चेतना 'वंदे मातरम' जिसका नाम है उसी से लड़ा जा सकता है। एक बहुत प्यारी लाइन है, 'हृदय तुमही मां भक्ति', मां, दिल में मां भारती की भक्ति होनी चाहिए। 140 करोड़ लोग जो इस देश में रहते हैं, 60% से अधिक युवा हैं। युवा ही भारत की आवाज बनेंगे, भारत के निर्माता बनेंगे, भारत को आगे बढ़ाने के प्रणेता बनेंगे और नव भारत के नेता बनेंगे, इस बात का हम सबको विश्वास है। इस देश को बहुत आगे लेकर जाना है, एक सूत्र में बांधना है, भाईचारे के, एकता के एक सूत्र में बांधते हुए देश को विश्व गुरु बनाना है। और 'वंदे मातरम' हम सबको जो स्वयं को, हम सबको जोड़ते हुए जिस भावना से ओतप्रोत करता है वही सबसे महत्वपूर्ण है। मैं इतनी ही बात कहकर अपनी वाणी को विराम देना चाहूंगी,

"कि भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं,
हृदय नहीं वो पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : अब श्री मनजिंदर सिंह सिरसा जी- माननीय मंत्री नियम 270 के अंतर्गत दिल्ली में पर्यावरण की वर्तमान स्थिति तथा प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे प्रमुख कदमों के संबंध में वक्तव्य देंगे,

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : और इसमें चर्चा में नाम आमंत्रित हैं। मेरे पास पक्ष और विपक्ष, यह आप गोपाल जी तय करिए, मैं आपके सहित तीन लोगों को बुलवा सकता हूं क्योंकि समय बहुत हो जाएगा और एक मिनट, इधर भी देखता हूं कितने नाम आए हैं, तो दो नाम आप डिसाइड कर दीजिए इसमें,

(आपसी विचार-विमर्श)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : हैं जी।

(आपसी विचार-विमर्श)

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: चलो आप कर ले तब तक मैं बोलूं।

(आपसी विचार-विमर्श)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: और तीसरा नाम, गोपाल जी तो हो गए ना, गोपाल जी के अलावा दो नाम बता दो अब।

(आपसी विचार-विमर्श)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: तो अभी वो हम बैठे थे ना हमारे थिंगान जी तो अगर वो आएंगे तो फिर आप कर लेना अदल-बदल हैं।

(आपसी विचार-विमर्श)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : चलिए शुरू करते हैं।

<u>माननीय मंत्री का वक्तव्य(नियम-270)</u>

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने मेरे को बहुत ही संवेदनशील इस मुद्दे पे बोलने का मौका दिया। मैं सबसे पहले आपको दिल्ली के प्रदूषण का इतिहास बताना चाहता हूं। दिल्ली में प्रदूषण की बीमारी कोई आज से नहीं है, ये कब से है और इस दौरान पिछले 30-40 सालों में क्या कुछ हुआ मैं उस सबका वर्णन आपके सामने रखना चाहता हूं। दिल्ली की ये समस्या पोल्यूशन की 17 दिसंबर 1985 में जब पहली बार सामने आई जब एक रिट पिटीशन के माध्यम से 13029 MC Mehta V/s Union of India Supreme Court में फाइल हुई।

इसे सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार और दिल्ली सरकार को पोल्यूशन के ऊपर अपनी राय देने को कहा। 21 अक्टूबर, 1994 को सुप्रीम कोर्ट ने लेड फ्यूल पे प्रतिबंध लगा दिया और vehicle pollution missions के मानक को तय करने को किया। 1995 में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में पोल्यूटिंग इंडस्ट्री को आइडेंटिफाई करना और उसको relocate करने को कहा। 1996 में CSC ने slow murder: the deadly story of vehicle pollution in India नामक एक रिपोर्ट जारी की जिसमें बताया गया कि प्रदूषण कई बीमारियों का कारण बन रहा है। 28 जुलाई, 1998 को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में चल रही बसेस, ऑटो, टैक्सी और सीएनजी को बदलने के आदेश दिए। विरोध के बावजूद इसे लागू किया गया। अध्यक्ष जी, प्रदूषण ऐसे बढ़ा कि 2014 में आते-आते डब्ल्यूएचओ ने दिल्ली को सबसे गंदी हवा वाला शहर घोषित कर दिया और यह तगमा दिल्ली के ऊपर 2025 तक इसी तरह चिपका रहा। आम आदमी पार्टी के 11 साल के राज में दिल्ली लगातार देश की सबसे प्रदूषित शहर और राजधानी बनी रही। 16 दिसंबर, 2015 को कोर्ट ने सर्दियों के गंभीर स्मोग की स्थिति को देखते हुए पुराने वाइको में होने वाले प्रदूषण पर कड़े नियम लागू किए। 2016 में स्मोग की समस्या से भयंकर रूप ले लिया और इसे the great smog of Delhi कहा गया। इस साल पहली बार दिल्ली में आम आदमी पार्टी सरकार ने ऑड इवन स्कीम लेकर आई और इस योजना पे 53 करोड़ रुपया आम आदमी पार्टी ने प्रचार पर खर्च किया। 18 सितंबर, 2020 को सुप्रीम कोर्ट ने अपने आर्डर में स्मोग टावर लगाने के साथ-साथ कई ऐसे आदेश जारी किए जो सरकार को करने होंगे। प्रदूषण पर किसी सरकार ने कोई काम नहीं किया। अगर किया तो देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने वो कदम उठाए जिसके बाद पहली बार नेशनल एयर क्वालिटी इंडेक्स बनाया गया। नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम बनाया गया और CAQM की स्थापना हुई। आम आदमी पार्टी की सरकार ने माननीय सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट और एनजीटी के चलते अपने निकम्मेपन और लापरवाही के लिए कई बार फटकार खाई मैं उसका भी विवरण आपको बताना चाहता हूं। 4 दिसंबर, 2015 को दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा दिल्ली गैस चेंबर बन गई है, यहां नागरिकों का जीना दुर्भर हो गया है। इसी तरह 18 जनवरी, 2019 को फिर सुप्रीम कोर्ट के एक जज साहब ने कहा दिल्ली गैस चेंबर बन गई है, अब यहां रहने लायक नहीं है रिटायरमेंट के बाद मैं यहां नहीं रहूंगा। इसी तरह 4 नवंबर, 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने फिर कहा क्या आपको शर्म नहीं आती, यह मैं नहीं कह रहा। ''क्या आपको शर्म नहीं आती?'' कोट अनकोट कर रहा हूं। ''उड़ाने डायवर्ट हो रही है। लोग घरों में सुरक्षित नहीं है।'' कोर्ट ने कहा, ''जब आप इस मामले में कुछ कर ही नहीं

सकते तो सरकार में क्यों?'' फिर 25 नवंबर, 2019 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने फिर से कहा, ''दिल्ली नर्क से बदतर हो गई है। इससे बेहतर तो यह है कि बारूद लाइए और सबको उड़ा दीजिए।'' सुप्रीम कोर्ट यह कह रही है बारूद लाइए। यह जो 11 साल तक सत्ता में रहे।

.....व्यवधान......

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: बताइए, यह तरीका है, अभी रो पड़े। मैंने कहा था ना यह सुन नहीं पाएंगे। मैंने क्या कहा था, अगले 5 मिनट तक नहीं सुन पाए। 15 नवंबर, 2021 को जब आम आदमी पार्टी ने एमसीडी पर आरोप लगाए, पोल्यूशन की जिम्मेवारी उन पर ठहराई, तो सुप्रीम कोर्ट ने इन्हें फिर से फटकार लगाई और अदालत ने कहा, ''इल्जाम लगाना बंद करें और काम पर ध्यान दें लोकप्रिय नारों से नहीं।'' अदालत ने फिर से कहा, ''विकराल स्थिति है, लोग घरों में मास्क पहनने को मजबूर हैं।'' अध्यक्ष जी, ऑड-इवन पर कोर्ट ने क्या-क्या कहा मैं वो भी बताना चाहता हूं। अध्यक्ष जी, ऑड-इवन पर कोर्ट ने 15 नवंबर, 2019 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा यह प्रदूषण का कोई समाधान नहीं है। 7 नवंबर, 2023 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने यहां तक कह दिया ऑड-इवन महज एक दिखावा है और आम आदमी पार्टी प्रदूषण के खिलाफ कोई काम नहीं कर रही। 20 नवंबर, 2023 को एनजीटी ने दिल्ली सरकार को फिर से फटकार लगाई और कहा तुम्हारी प्रदूषण कम करने की इच्छा शक्ति ही नहीं है तो सुधार कहां होगा। मतलब सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट, एनजीटी बार-बार बोल रहा है और बता रहा है कि आपने कुछ नहीं किया। मैं कैग रिपोर्ट के हवाले से भी आपको बताना चाहता हूं। इस रिपोर्ट के अंदर 2022 की ऑडिट रिपोर्ट के मुताबिक ऑड-इवन की योजना लागू की गई लेकिन 66% वाहन जो दो पहिया वाहन थे, टू व्हीलर थे उनको छूट दे दी। 2018 से 21 के बीच में जिन गाड़ियों का पीयूसीसी टेस्ट किया गया उनमें से केवल 46% गाड़ियों का ही पीयूसीसी हो पाया। मतलब बाकी 54% गाड़ियां दिल्ली में धुआ फेंकती हुई और पोल्यूशन करती हुई घूमती रही। और तो और दिल्ली सरकार ने अपनी डीटीसी बसों तक का टेस्ट नहीं करवाया यह कैग रिपोर्ट ने सामने लाकर दिया। कैग ने बताया कि जो air quality monitoring system इन्होंने लगाए थे उसकी लोकेशन भी सीबीसी गाइडलाइंस के मुताबिक नहीं थी। मतलब सारा मॉनिटरिंग सिस्टम और उसका डाटा में भी बेईमानी करने का काम आम आदमी पार्टी ने किया। कैग रिपोर्ट के मुताबिक ऑड-इवन फेल हो गया, मॉनिटरिंग स्टेशन फेल हो गए और पीयूसीसी भी फेल निकला। तो फिर आपने किया क्या पिछले 11 सालों में? मैं अब WHO की रिपोर्ट के बारे में आपको बताना चाहता हूं। इससे साथ ही बताया,

इसके साथ ही एक्यूआई रिपोर्ट के अनुसार भी दिल्ली लगातार दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी बनी रही। 2014 से लगातार 2018, 19, 20, 21, 22, 23, 24 हर साल दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर एक्यूआई के मुताबिक भी दिल्ली की राजधानी बनी रही। मतलब पूरे 11 साल के कार्यकाल में यदि आम आदमी पार्टी ने कोई एक काम भी कीर्तिमान स्थापित किया है तो पता है क्या स्थापित किया है, कि लगातार 11 साल तक दिल्ली को सबसे प्रदूषित राजधानी बनाए रखने का तगमा इन्होंने अपने पास रखा अगर एक काम वो किया है तो इन्होंने किया है। अब मैं बताना चाहता हूं, जो किया इन्होंने, 11 साल में जो इन्होंने तीन काम किए एक इन्होंने स्मोग टावर लगाया वो भी सुप्रीम कोर्ट के कहने पे। मैं मानता हूं उसकी लागत ज्यादा से ज्यादा तीन से चार करोड़ थी लेकिन इन्होंने उसकी 23 करोड़ लागत लगाई। वो तो 23 करोड़ लगाई सो लगाई अध्यक्ष जी 6 करोड़ रुपया स्मोग टावर के प्रचार पे लगा दिया जो सुप्रीम कोर्ट ने लगवाया था और वो स्मोग टावर एक साल चला अगले साल से वो बंद पड़ा है कबाड़ का डब्बा वो 23 करोड़ का डब्बा जिसके ऊपर 6 करोड़ प्रचार पे लगा है 33 करोड़ मिट्टी कर दिया ये एक काम किया। दूसरा इन्होंने काम किया बड़ा, कह रहे हम ऑड-इवन लेके आए हैं और ऑड-इवन का क्या था भई एक दिन ऑड गाड़ी चलेगी एक दिन इवन चलेगी। मैंने पढ़ा ही दिया कि सुप्रीम कोर्ट ने उस पे क्या बोला। लेकिन इसके ऊपर जो कमाल किया 53 करोड़ इस पर प्रचार पर खर्च कर दिया। अगला काम ले आए रेड लाइट ऑन गाड़ी ऑफ। यह भी प्रचार के अंदर 20 करोड़ रुपया केवल केवल रेड लाइट ऑन गाड़ी ऑफ के लिए 20 करोड़ रुपये का प्रचार पे खर्च किया, यह पोल्यूशन पे उन्होंने काम किया। एक तरफ जनता का पैसा बर्बाद कर रहे हैं और दूसरी तरफ उनको गंदी हवा भी दे रहे हैं। अब मैं बताना चाहता हूं। National Clean Air Programme 'NCAP' में इनको 2021 से 25 तक 81 करोड़ रुपया दिया यह बहुत सुनने वाली बात है। मुख्यमंत्री जी आप करोड़ों रुपए दे रहे हैं खर्चने के लिए और लोग उन पर सड़कें बना रहे हैं, इन्होंने क्या किया? इन्होंने केंद्र सरकार ने जो इनको 81 करोड़ रुपया दिया उसमें से केवल 14 करोड़ 10 लाख खर्च किया बाकी सारे का सारा पैसा एज इट इज पड़ा रहा। मतलब जो केंद्र सरकार भी आपको हवा साफ करने को पैसा दे रही है उसको भी आप खर्च करने को तैयार नहीं हैं। इससे स्पष्ट होता है कोर्टों की फटकारें आपको पड़ गई, जनता की दुतकारें आप खा रहे हैं, सबकी लताड़े भी खा रहे हैं लेकिन फिर भी हाथ पर हाथ डाल के खड़े हुए हैं। अध्यक्ष जी, मैं अब आपको सदन के माध्यम से बताना चाहता हूं कि अभी तक केजरीवाल जी और उनके साथियों ने अलग-अलग समय पे क्या कहा प्रदूषण को लेके। अक्टूबर

2018 में केजरीवाल जी कह रहे थे खराब एक्यूआई के लिए केंद्र सरकार, पंजाब सरकार और हरियाणा सरकार जिम्मेवार है। फिर 1 नवंबर, 2018 में उन्होंने कहा सुबह 9:00 बजे आम जनता सड़कों पर रहती है जिसके कारण 9:00 बजे के बाद दिल्ली में भारी ट्रैफिक जाम लग जाता है इसके कारण प्रदूषण है। माननीय गोपाल राय जी ने तो यहां तक कह दिया कि लोग शादियों में जाते हैं, इससे प्रदूषण बढ़ जाता है। फिर नवंबर 2018 को कहते हैं दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण के लिए पंजाब की पराली जिम्मेवार है। फिर दिसंबर 2019 में अरविंद केजरीवाल कहते हैं मुझे खुद ही नहीं पता दिल्ली के प्रदूषण की वजह क्या है। इन्हीं का कोट पढ़ रहा हूं मैं तो और आप देखिए हजारों-सैकड़ों करोड़ रुपए प्रचार पे खर्चा कर रहे हैं और अब तक आज तक यही नहीं पता और यह कब की बात है 2019 में आपको यही नहीं पता कि दिल्ली में प्रदूषण का कारण क्या है। नवंबर 2021 में दिल्ली के पर्यावरण मंत्री माननीय गोपाल राय जी और अरविंद केजरीवाल जी बताते हैं दिल्ली में 70% फीसदी प्रदूषण बाहर से आता है, 30 फीसदी प्रदूषण अपना है। अच्छा चलिए मान लीजिए 30% ही अपना है तो 30% फीसदी प्रदूषण के लिए आपने क्या किया वही बता दीजिएगा। चलिए जनवरी 2023 में एक नया फार्मूला निकाल के ले आए। बोले कुल वायु का लगभग एक चौथाई हिस्सा लोगों द्वारा आग जलाकर हाथ सेकने से प्रदूषण हो रहा है। बताइए एक चौथाई हाथ सेंकने से प्रदूषण हो रहा है। अब ये आंकड़े हैं। अच्छा चलो सबसे इंट्रस्टिंग आंकड़ा तो दिसंबर 2025 में आता है क्योंकि सरकार में से चले गये तो क्या बोलते हैं अरविंद केजरीवाल जी दिल्ली का प्रदूषण पंजाब, हरियाणा और पराली के कारण नहीं है। तो इसका मतलब तो यह हुआ कि अब तक जो भी बोल रहे थे वो सब कुछ झूठ था झूठ के अलावा कुछ नहीं बोल रहे थे। अब मैं आपको बताना चाहता हूं कि बजट में इन्होंने क्या कुछ किया। वर्ष 2023 में बजट में इन्होंने कहा कि प्रदूषण की निगरानी करने के लिए हमने 11 हाईटेक मोबाइल वैन लाएंगे। मैं सदन से पूछना चाहता हूं भाई आप सब लोग विपक्ष के लोग बैठे हैं, वो 11 की बात की थी एक भी आई कोई, दिल्ली में देखी है आपने पोल्युशन को रोकने वाली वैन। ये एक भी वैन नहीं ला सके। दूसरा आपने वादा किया कि पीडब्ल्यूडी की 1400 किलोमीटर सड़कों का निर्माण और सुधार किया जायेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मंत्री जी स्टेटमेंट दे रहे हैं उनको बीच में ।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: जबकि सारी सड़क टूटी रहीं 800 किलोमीटर सड़कें जो हमने ठीक करानी शुरू की है और 50 हजार पॉट होल्स हमने आकर भरे हैं तो फिर

आपने किया क्या था? तीसरा आपने वादा किया 2025 तक दिल्ली की सड़कों पे 10 हजार बसें होंगी, कहां गई वो 10 हजार बसें, बताइए? हम आकर 1500 बसें लाए हैं तो अभी तक 5300 बसें पूरी हुई है कहां गई वो 10 हजार बसें जिसका वादा किया था दिल्ली का पोल्युशन खत्म करने के लिए, वह भी हवाहवाई हो गया। महोदय, 2021-22 में इन्होंने कहा कि 2024 तक दिल्ली में कम से कम 25 फीसदी इलेक्ट्रिक वाहन होंगे, ई-व्हीकल्स होंगे 25 फीसदी। अब आंकड़े बोलने थे कुछ भी बोले जा रहे थे। कहां है वो 25 फीसदी, अब तो आप बैठे हैं आप बताइए? 25 फीसदी तो आज भी नहीं होने को तैयार हो रहे, आज भी 11 फीसदी है और हमारे एक साल के बाद जबकि 4 लाख व्हीकल्स इसी साल में आए हैं। मैं कहना चाहता हूं घोषणाओं पे घोषणा, अब आगे सुनिए। 2018-19 में इन्होंने एक नया शगुफा छोड़ दिया, पता है वर्ल्ड क्लास से कम की तो बात करते नहीं आपको याद होगा, वर्ल्ड क्लास यूनिवर्सिटी, वर्ल्ड क्लास बोलते हैं अब बोले यूनिवर्सिटी ऑफ़ वाशिंगटन के साथ मिलकर रियल टाइम सोर्स अपोर्शनमेंट की स्टडी करेंगे और वो भाई स्टडी से पता कराएंगे पोल्युशन का कारण क्या है? कहां भई वहां तो यूनिवर्सिटी वाशिंगटन रही, ना रियल टाइम सोर्स की पता चल पाया और वो भी हवाहवाई हो गया। फिर आपने एक नया शगुफा छोड़ा, क्या बोला कि हम तंदूर बंद करेंगे और 5 हजार रूपया हर तंदूर पे रेस्टोरेंट मालिकों को सब्सिडी देंगे। 5 हजार रूपया हर तंदूर को इलेक्ट्रिक तंदूर करने के लिए हम सब्सिडी देंगे। वो 5 हजार सब्सिडी एक भी तंदूर के लिए किसी एक भी रेस्टोरेंट को आपने दी नहीं। महोदय हर बात पे झूठ। अब देखिए, मैंने बताया था ना वर्ल्ड क्लास से कम बात नहीं करते। अब देखिए, अब कहते हैं वर्ल्ड बैंक को ही ले आए। बोले वर्ल्ड बैंक के साथ मिलकर एक ऐसा मॉडल विकसित करेंगे जो प्रदूषण को प्रेडिक्ट करेगा। ना वर्ल्ड बैंक आया, ना प्रेडिक्शन आया, ना मॉडल आया और फिर आकर 11 साल बाद झूठ और फ्रॉड बोलना। 2017-18 के बजट में इन्होंने एक नई बात रखी 2017-18 में आज हम बात कर रहे हैं 2025 में, 17-18 में क्या बोला कि विलायती किकर को हटाना है। इसके लिए 106 करोड़ रूपया Forest Department को दे देंगे। विलायती किकर को हटाएंगे देसी लगाएंगे। 106 करोड़ रूपया अभी देने की बात करी लेकिन 106 करोड़ तो देने के बाद एक पेड़ भी विलायती कीकर को हटाने का काम इस सरकार ने पिछले 5 साल में नहीं किया। अच्छा आगे देखिए, अब मैं बताना चाहता हूं माननीय रेखा गुप्ता जी की सरकार ने क्या किया। आपने 11 साल की बातें तो सुन ली है झाड़ सुप्रीम कोर्ट से लेकर, एनजीटी से लेकर, हाई कोर्ट से लेकर, सारे झूठे वादे बजट से लेकर और अब देखिए 11 महीनों में क्या हुआ। अब मैं सदन को बताना चाहता हूं

कि माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में 11 महीनों में किए गए जो वादे और जो काम पोल्युशन कंट्रोल के लिए एक पहले हमने नीति बनाई। हमारी नीति क्या है कि पोल्युशन कंट्रोल करने के लिए पांच प्रमुख पायदानों पर काम करेंगे। क्या कर रहे हैं? डस्ट और solid waste का उपचार, इंडस्ट्रियल पोल्युशन की रोकथाम, व्हीकल पोल्युशन का समाधान, दिल्ली के ग्रीन कवर को बढ़ाना और साथ में इनोवेशन इंस्टीट्यूशनल रिफॉर्म्स को लेकर आना। अब पहले हमने दिल्ली के तीनों लैंडफिल ओखला, भलस्वा, गाजीपुर जो पिछले 10 सालों से लेगेसी वेस्ट है, वहां पे हम हर महीने अब 30 हजार से 35 हजार metric ton कूड़ा हटा रहे हैं। मैं बताना चाहता हूं यह जो 10 साल की बीमारी हमें मिली आम आदमी पार्टी की सरकार की उसको बायो-माइनिंग के माध्यम से हम खत्म कर रहे हैं और आप सबकी जानकारी के लिए 202 एकड़ में से 45 एकड़ जमीन को हम रिक्लेम कर चुके हैं। 202 एकड़ में से 45 एकड़ को और मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं भलस्वा, ओखला और dump site की ही जो ऊंचाई थी वो 60 मीटर थी उसको घटाकर 40 मीटर पे ले आए हैं और गाजीपुर की 15 मीटर और कम कर दी है। कूड़े के पहाड़ों को खत्म करने का हमारा लक्ष्य 2026-27 का है, 2026-27 में दिल्ली के सारे कूड़े के पहाड़ों को हम खत्म करेंगे। इसी के साथ ही आज हम 9700 metric ton जो कूड़ा आ रहा है उसको भी हम कूड़े को इकट्ठा करके वेस्ट टू एनर्जी के लिए काम कर रहे हैं और आने वाले दिनों में उसकी भी क्षमता बढ़ाकर 14 हजार metric ton पर लाने वाले हैं। अध्यक्ष जी हम दिल्ली के प्रमुख वार्डों में हर महीने लगभग ढाई सौ metric ton कूड़ा हटाने का काम कर रहे हैं। जो नई स्कीम के तहत हमने शुरू किया और इसके तहत दिल्ली में बहुत बड़ा कूड़ा मुक्त करने की एक जंग चल रही है। इसके अलावा रेखा गुप्ता जी की सरकार ने एमसीडी को सॉलिड वेस्ट को हटाने के लिए 500 करोड़ रूपये की एक बारी की मंजूरी दी है ताकि एमसीडी कामयाब जब तक नहीं होगी तब तक आप पोल्युशन से लड़ाई नहीं लड़ पाएंगे। 500 करोड़ रूपये एमसीडी को एक बार की मंजूरी दी है और साथ में ही हर साल 300 करोड़ रूपया कूड़े को हटाने के लिए और सफाई करने के लिए अतिरिक्त दिया जाएगा। यह हमारा दिल्ली के अंदर कूड़ा मुक्त करने का, पोल्युशन कम करने के मिशन पे लड़ाई है। दिल्ली में पहली बार सभी हॉटस्पॉट्स पर mist spray लगाई गई। इसी तरह पूरी पोल्युशन को, डस्ट को मिटिगेट करने के लिए और पोल्युशन को कम करने के लिए अब तक 700 से ज्यादा जगहों पर mist spray लगाई जा चुकी है। इस साल हमारा टारगेट है ढाई हजार mist spray लगाकर हॉटस्पॉट्स के ऊपर पोल्युशन को कम करना। अध्यक्ष महोदय, इसी तरह सी.एन.डी. वेस्ट के लिए

हमने 14 नई लोकेशन साइट्स को आइडेंटिफाई किया है। इनके ऊपर नई साइट्स के साथ-साथ जो पुरानी साइट हैं उनके ऊपर वाटर स्प्रिंकल्स लगाए गए और एंटी स्मोग गन लगाई गई ताकि वहां पे किसी भी तरीके की डस्ट बाहर ना आए जो कि पोल्युशन में बदलाव बने। तय खंड के अंदर हम नया 1 हजार टी.पी.डी. का कैपेसिटी से सीएनडी प्लांट लगाने जा रहे हैं जिसका काम 26 दिसंबर, 2026 तक पूरा किया जाएगा। अध्यक्ष जी biomass burning को रोकने के लिए अब तक हम आरडब्ल्यूएस के माध्यम से 10 हजार इलेक्ट्रिक हीटर्स दे चुके हैं। साल 2025 में ओपन बर्निंग के लगभग 375 ऐसी जगह आइडेंटिफाई करके उनके चालान किए गए हैं। इसी तरह दिल्ली के प्रदूषण को नियन्त्रण में रखने के लिए हमारी 1812 इनफोर्समेंट टीम चौबीसों घंटे काम कर रही हैं। हमने दिल्ली में सभी हाईराइज बिल्डिंग्स को होटल मॉल, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स और जितनी भी हाईराइज बिल्डिंग्स हैं उन पर मेंडेटरी कर दिया है एंटी स्मोग गन लगाना। इससे सैकड़ों बिल्डिंगों के ऊपर एंटी स्मोग गन लगी है जिससे पोल्युशन कम होने में कामयाब हो रहे हैं। इसी तरह दिल्ली के अंदर सभी कंस्ट्रक्शन साइट्स की इनफोर्समेंट बढ़ाई गई। डीपीसीसी के माध्यम से कुल 2100 जगह पर इंस्पेक्शंस की गई जिनमें 847 मामलों को उल्लंघन के चलते 9 करोड़ रूपये का जुर्माना लगाकर सख्ती से हमने पोल्युशन बढ़ाने वालों के ऊपर कार्रवाई करने का पहली बार काम किया है। पोल्युशन नॉर्म्स का उल्लंघन करने वाले ऐसे 1 हजार 72 लोगों के और चालान किए गए, करीब 1 करोड़ रूपये की पेनल्टी भी लगाई गई। इसके अलावा मात्र पिछले एक हफ्ते में एमसीडी इनफोर्समेंट टीम ने 1886 कंस्ट्रक्शन साइट्स का निरीक्षण किया, उनमें से 140 non-compliant पाई गई। जिनके ऊपर 22 लाख रूपया जुर्माना करके उनको भी compliant बनाने का काम हमारी सरकार ने आकर किया है। दिल्ली सरकार ने डीपीसीसी के माध्यम से एक आदेश पारित किया जिसके चलते 500 स्क्वायर मीटर की जितनी बिल्डिंगें जितनी भी कंस्ट्रक्शन किसी भी तरह की कंस्ट्रक्शन है उसको डीपीसीसी के दायरे में लाया जा रहा है और डीपीसीसी के जो नॉर्म्स हैं वो उसके ऊपर लागू किए जा रहे हैं और मैं आपको यह बताते हुए बड़ी खुशी महसूस कर रहा हूं कि जो 500 मीटर से बड़ी बिल्डिंगें हैं उन बिल्डिंगों की जो कंस्ट्रक्शन एक्टिविटी हो रही है वो डीपीसीसी पोर्टल के ऊपर देखी जा रही है और अगर आने वाले दिनों में हम उसको पोर्टल टू ला रहे जिससे अगर वहां पर किसी तरह का पोल्युशन पाया जाएगा तो उसको ऑटोमेटिक चालान भी पहुंचाए जाएंगे। इसी तरह हमने इस साल 3655 एकड़ दिल्ली के अंदर 3655 एकड़ खेती हुई, उसमें से एक एकड़ में भी हमने आग वहां पर जलने नहीं दी, किसी को

पराली जलाने नहीं दी। हमने 100% उसको मुक्त रखा ये मैं समझता हूं कि सबसे बड़ी जीत रही। डस्ट मिटिगेशन के लिए 405 movable anti smog guns लगाई गई 284 वाटर स्प्रिंकलर्स लगाए गए, 74 mechanical road sweepers लगाए गए। इसके साथ ही इससे काम नहीं चलने वाला। हमने इसकी तादाद को और बढ़ाने के लिए माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी की सरकार ने एमसीडी को 70 एमआरएस और 1 हजार litter pickers को मंजूरी दी है। केंद्र सरकार से भी NCAP के तहत उनको 14 एमआरएस मशीनंस मिल रही हैं और दिल्ली सरकार के लिए पीडब्ल्यूडी के सड़कों पर चलाने के लिए 70 एमआरएस मशीन के अलग से पैसे और 250 वाटर स्प्रिंकलर्स और यह सब 10 साल तक चलाई जाएंगी और 5 हजार करोड़ रूपया अगले 10 साल पर इस पर खर्च होने वाला है। ये हमारा विज़न है और इस विज़न के चलते हम दिल्ली को 100% मैकेनिकल सफाई करना चाहते हैं ताकि डस्ट मिटिगेशन की जा सके। मैं आपको यह भी बताते हुए हर्ष महसूस कर रहा हूं कि दिल्ली में लगभग 10 हजार 500 किलोमीटर कुल सड़कें हैं। इन सड़कों को रीडवेल्प करने के लिए 2180 कि.मी. की रोड्स को हमने रीडवलपमेंट का काम शुरू कर दिया है जो कि लगभग-लगभग 21 फीसदी बनता है और इस साल लगभग 319 किलोमीटर एमसीडी की और 150 किलोमीटर पीडब्ल्यूडी की नई सड़कों का रिकारपेटिगं काम किया जा चुका है। दिल्ली में हमारी मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी की सरकार ने एक मीटिंग करके फैसला लिया कि दिल्ली में अब कोई भी सड़क जो बनेगी वह एंड टू एंड कारपेटिंग होगी और उस सड़क के ऊपर कोई ब्राउन एरिया नहीं छोड़ा जाएगा। उसकी पेविंग करके सारा ब्राउन एरिया हटाया जाएगा ताकि डस्ट मिटिगेशन ऑफ फायर डस्ट नाम की चीज जो कि पोल्यूशन में 30 फीसदी हिस्सा डालती है उसको खत्म करने के लिए चुनौती की तरह हमारी सरकार रात दिन काम कर रही है। मैं बताना चाहता हूं भारत सरकार की तरफ से भी सेंट्रल रोड एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड सीआरआईएफ के तहत 803 करोड़ रूपये सड़कों के लिए दिए गए हैं। सड़कों की मरम्मत बहुत जरूरी है क्योंकि सड़कों की मरम्मत के बिना वहां से जो कूड़ा, जो धूल उड़ती है वो धूल पोल्यूशन का सबसे बड़ा कारण बन जाती है। डीपीसीसी के इन्वायरमेंट डिपार्टमेंट ने फैसला लिया है कि रोड़ कटिंग पॉलिसी भी लायेंगे। इस रोड़ कटिंग पॉलिसी में जो हमने अब तक चैन्जिंग करी हैं उसमें सभी एजेंसिज को ये हिदायत दी गई है कि कोई भी एजेंसी अपनी रोड़ कटिंग करे, कोई लाइन डालेगी वो पहले हमारे पोर्टल से हमसे जानकारी लेगी और उसकी पूरी की पूरी फैन्सिंग करके ताकि dust mitigation किया जा सके इसके लिये डीपीसीसी ने ये बहुत बड़ा फैसला लिया है। GRAP-4 जब हमारे यहां लगता है

तो उसके अंदर भी हम पोल्यूशन को और कम कर सकें उस GRAP का लाभ ले सकें इसके लिये भी नये कानून लाये गये हैं। GRAP IV के अंदर हमने इस बार तय किया है कि अब जब से GRAP IV लगेगा उसके बाद कोई भी कंस्ट्रक्शन मटेरियल दिल्ली के बाहर से नहीं आएगा। इसके साथ ही BS-6 से कम के कोई भी प्राइवेट व्हीकल भी दिल्ली के अंदर एंटर नहीं करेगा जब दिल्ली में GRAP IV लगा होगा, बाहर के व्हीकल आके pollution ना फैलाएं उनको रोका गया है। 'नो पीयूसी, नो फ्यूल' की नोटिफिकेशन साल भर के लिए जारी कर दी गई है। अगर आपके पास pollution certificate नहीं है तो तेल भी नहीं मिलेगा। आपको अपनी गाड़ी का pollution ठीक करना होगा। हम यह बताना चाहते हैं कि जो PUC Station गलत काम कर रहे थे, हमने ऐसे 29 PUC Station पिछले दो महीनों में बंद किए हैं जो गड़बड़ियां कर रहे थे और नकली पीयूसी सर्टिफिकेट दे रहे थे। इस आदत को भी बदलने का काम रेखा गुप्ता जी की सरकार करेगी। अब मैं बताना चाहता हूं हम अपनी सारी बसेस का बेड़ा इलेक्ट्रिक बसेस पे लाने जा रहे हैं। अभी दिसंबर 2026 तक हमारे पास 7713 ऐसी बसें होंगी। अभी तक हमारी सरकार आने के बाद 1500 ऐसी बसें लाने में कामयाब हुई है जो कि अब तक का पूरे देश का ऐतिहासिक मॉडल है 1500 बसें ले के आना ये देश का ऐतिहासिक मॉडल है। और इसके साथ ही हमारा ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट यह भी स्टडी कर रहा है कि केवल 7700 बसों से काम चलेगा या 10,000 आएंगी या 15,000 आएंगी इसकी स्टडी कर रहे हैं। हम एडिक्वेट बसेस दिल्ली में लाना चाहते हैं और इलेक्ट्रिक बसे लाकर उसके pollution का रोकथाम किया जा सके। दिल्ली सरकार ने ग्रीन मोबिलिटी को भी बढ़ावा दिया है। रीजनल कनेक्टिविटी के लिए अभी माननीय मुख्यमंत्री ने बताया था डीटीसी जो सालों से बंद पड़ी हुई थी रीजनल कनेक्टिविटी में हमने 100 बसें दी हैं और मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि इंटरस्टेट 100 की 100 बसें इलेक्ट्रिक हैं। दिल्ली में लगभग 9000 ईवी चार्जिंग स्टेशन उपलब्ध हैं। हमारी सरकार का लक्ष्य है कि 2026 के अंत तक इस साल के अंत तक हम इसको बढ़ाकर16,000 इलेक्ट्रिक चार्जिंग पॉइंट्स बनाएंगे ताकि दिल्ली के लोग ज्यादा से ज्यादा ईवी गाड़ियां खरीद सकें। हमारी बहनें, हमारी बेटियां, हमारे बच्चे जो कोयले के खाना बनाने के लिए अभी भी मजबूर थे उस कोयले पर खाना वह ना बनाए इसके लिए 'उज्जवला योजना' के तहत अब तक हम अपनी बहनों को 19000 गैस चूल्हे और सिलेंडर मुफ्त दे चुके हैं और यह प्रक्रिया हमारी जारी है। हमारी कोशिश है कि दिल्ली की कोई बहन बेटी भी कोयले पे खाना ना बनाए। इसके लिए भी निरंतर हमारे प्रयास जारी हैं। मैं बताना चाहता हूं ट्रांसपोर्ट के सेक्टर में एक बहुत बड़ी और उपलब्धि

हासिल की है 44 मेट्रो स्टेशन पे अब इस बार लगभग अब तक 2000 ई ऑटोस supply किए गए हैं जो एंड कनेक्टिविटी के लिए टोटल जीरो pollution वाले ई ऑटोस और उनके माध्यम से एंड टू एंड कनेक्टिविटी का भी इंतजाम किया गया है। इसी तरह 40 मेट्रो स्टेशन के ऊपर ऐप बेस्ड टैक्सी सर्विस चलाई गई है जो ऐप बेस टैक्सी है जो मेट्रो स्टेशन से उतरता है वह ऐप पे ऑन करके अपनी गाड़ी लेके उसको टैक्सी के रूप में बाइक के रूप में मिल जाती है। यह अपने आप में pollution को कम करने के लिए बहुत बड़ा सार्थक कदम है और मैं यह भी बताना चाहता हूं जो राइड हेलिंग एग्रीगेटर्स हैं, जो हमारी दिल्ली में गाड़ियां चलाते हैं ऐप बेस्ड उनको यह हिदायत दी गई है कि आपको दो काम करने होंगे, एक राइड शेयरिंग को इमीडिएटली ऐप शुरू करना होगा और दूसरा कार पुलिंग का फीचर भी लेके आना होगा। हमें उन्होंने आश्वस्त किया है कि अगले तीन महीनों में दिल्ली के अंदर दोनों चीजें राइट शेयरिंग और कार पुलिंग का भी कांसेप्ट दिल्ली में पहली बार शुरू होने जा रहा है। जहां हमने नॉन पीयूसीसी गाड़ियों को आइडेंटिफाई किया और उन पे भी सख्ती की है। मैं आपको बताना चाहता हूं 9 लाख ऐसे चालान हमने गाड़ियों को आइडेंटिफाई किए हैं 9 लाख चालान जो पीयूसीसी के नॉन पीयूसी थे उनको मापदंड ठीक करके उनको pollution के दायरे में लेके आए हैं। इसी तरह डीजी सेट के लिए भी pollution पर बहुत बड़ी हमने सख्ती की है। डीजी सेट भी एक बहुत बड़ा pollution का कारण बनता है। अभी तक हमने 2000 डीजी सेट्स की इंस्पेक्शन कर चुके हैं। 411 को सील कर चुके हैं। इसी तरह सैकड़ों बेसमेंट्स को जाकर इंस्पेक्ट किया। उनमें से 318, माफ करना banquet halls को इंस्पेक्ट किया और 318 banquet halls को अब तक हम नोटिस देके उनका भी pollution के मापदंड को ठीक करा चुके हैं। मैं बताना चाहता हूं पुरानी सरकार आप सब जानते हैं। मेट्रो के नाम के ऊपर लड़ाई झगड़े करते थे, कभी पैसे नहीं देते थे। मैं अपने मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करता हूं। इस साल माननीय मुख्यमंत्री जी ने 9087 करोड़ रूपया मेट्रो को देना तय किया है जिससे मुकुंदपुर, मौजपुर का जनकपुरी वेस्ट, आर के आश्रम का और एयरो सिटी ऐसे तुगलकाबाद का और लाइंस की प्रायोरिटी के ऊपर काम होगा और इससे लाखों लोग मेट्रो में सवारी करेंगे और आपकी सड़कों के ऊपर गाड़ियों का दबाव कम होगा, pollution कम होगा। मैं बताना चाहता हूं industrial pollution के ऊपर भी हमारी सरकार ने बड़े कदम उठाए हैं। दिल्ली में 27 रीडवलपमेंट एरिया है अध्यक्ष जी आपके समय से आप स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन होते थे। आपको याद होगा ये 27 रीडवलपमेंट एरिया के ऊपर तब से काम चल रहा है। 11 साल मिले आम आदमी पार्टी को दिल्ली में सरकार

बनाकर। एक भी एरिया को रीडवलपमेंट इंडस्ट्रियल एरिया को यह दोबारा उसके नक्शे एमसीडी में जमा नहीं करा पाए और उसको रीडवलपमेंट का हक नहीं दे पाए। हमने आते ही उन 27 में से 23 इंडस्ट्रियल एरियाज का एमसीडी में नक्शे जमा करा दिए हैं और साथ में इस एरिया में 8000 ऐसी इंडस्ट्री को आइडेंटिफाई करके डीपीसीसी के दायरे में लाए हैं और वो 8000 इंडस्ट्री अब जीरो Polluting industry बनकर रह गई है। यह कीर्तिमान स्थापित करने का काम भी रेखा गुप्ता जी की सरकार ने किया है। मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं कि 2014 से लेकर 2025 तक लगभग 11 सालों के अंदर इंडस्ट्रियल एरियाज को बहुत तरीके से खत्म करते गए। उनकी सड़कों के ऊपर जो बुरा हाल है आप सबके एरिया में पड़ता है इंडस्ट्रियल एरिया उस पे किसी ने काम नहीं किया और उन सड़कों के साथ इंडस्ट्री का pollution, ऊपर से सड़कों का pollution। पर हमने आकर 2026-27 में हमारा टारगेट है 1000 करोड़ की लागत से दिल्ली के 100% इंडस्ट्रियल एरियाज की नई सड़कें बना रहे हैं। 100% इंडस्ट्रियल एरियाज, एक को भी नहीं छोड़ रहे। ग्रीन दिल्ली के लिए हमारा प्रयास। हमें आपको यह बताते हुए भी बहुत हर्ष हो रहा है 1994 के बाद, ध्यान से सुनिएगा, 1994 के बाद पहली बार 10082 एकड़ जमीन को हमने रिजर्व फॉरेस्ट घोषित किया है। इसके बाद इस जमीन पर कोई छेड़छाड़ नहीं कर सकता। यह हमारी सरकार का एक ऐतिहासिक फैसला है हरित दिल्ली को कायम करने के लिए। इस साल पहली बार, पिछले कई सालों से 'एक पेड़ मां के नाम' से स्कीम को दिल्ली में नहीं लागू किया गया क्योंकि प्रधानमंत्री जी ने कहा था। यह तो ऐसे जिददी थे ना कि अगर प्रधानमंत्री कह देते थे प्लेट में खाना खाना है तो यह प्लेट की जगह वो पतीली में खाना खा लेते पर प्लेट में नहीं खाते थे। कह रहे मोदी ने कह दिया प्लेट में खाना खाना है। तो इन्होंने दिल्ली में 'एक पेड़ मां के नाम' से स्कीम को लागू नहीं होने दिया। पर मुझे खुशी है माननीय रेखा गुप्ता जी की अगुवाई में शुरू की और सुप्रीम कोर्ट के 20 जजेज ने आकर वहां पे पौधे लगा के इसको शुरुआत किया और इसी तरह 75 देशों के राजदूत 'एक पेड़ मां के नाम' पौधा लगाने के लिए आए और दिल्ली को हरित दिल्ली बनाने के लिए हमने सांसद, विधायक, आरडब्ल्यू काउंसलर के माध्यम से लाखों पेड़ लगाने का काम किया। अध्यक्ष जी, आपको बताते हुए मैं बहुत प्रसन्न हूं कि केवल और केवल फॉरेस्ट डिपार्टमेंट ने ही इस साल 53 लाख पौधे लगाए हैं जबकि हमारे कुल 75 लाख पौधे इस साल में लग रहे हैं, यह अपने आप में एक नया कीर्तिमान हमने स्थापित किया है। भविष्य में दिल्ली में 20 नए जंगल बनाए जा रहे हैं। इनमें दो मियांवाकी जंगल हैं और 18 नमो जंगल बनाने का काम, सोचिए, दिल्ली के अंदर जंगलों को स्थापित करने

का काम भी भारतीय जनता पार्टी की रेखा गुप्ता जी की सरकार कर रही है। इसी तरह इनोवेशन और इंस्टीट्यूशन रिफॉर्म्स के तहत प्रशासनिक सुधार और नवाचार में माननीय रेखा गुप्ता जी की अध्यक्षता में एक फैसला लिया गया कि एक एक्सपर्ट ग्रुप का गठन किया जाएगा। उस एक्सपर्ट ग्रुप का गठन किया गया जिसकी अध्यक्षता फॉर्मर एनवायरमेंट सेक्रेटरी गवर्नमेंट ऑफ इंडिया कर रही है व देश के प्रतिष्ठित स्थानों के वैज्ञानिक और अदर एक्सपर्ट्स उसके मेंबर हैं और इसी तरह एक इंप्लीमेंटेशन कमेटी ऑन कंट्रोल ऑफ एयर पोल्यूशन भी स्थापित की गई जिसके मुख्य हमारे चीफ चीफ सेक्रेटरी साहब उसके अध्यक्ष हैं और हमारे सभी डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी उसके मेंबर हैं और वो हमारी स्कीम को लागू करने के लिए वीकली मीटिंग्स कर रहे हैं। यह दोनों कमेटियों के लागू होने से दिल्ली के अंदर पोल्यूशन के ऊपर एक बहुत बड़ी रोकथाम करने में हम कामयाब हो रहे हैं। हमने इनोवेशन चैलेंज के माध्यम से देश के सभी वैज्ञानिकों और उद्यमियों को निमंत्रित किया और आप सुनकर हैरान होंगे अब तक 285 ऐसे समाधान प्राप्त हुए हैं जिनमें से 52 समाधान को शॉर्टलिस्ट किया गया है और इन solution to elevation इन सॉलशंस के लिए हमने आईआईटी, डीटीयू, सीएसआईआर इनको इवैल्यूएट कर रहा है और इनकी इवैल्यूएशन के बाद इनमें से जो लागू होंगे उनको हम दिल्ली में पोल्यूशन को कम करने के लिए लागू करेंगे जैसे, स्मोग हीटिंग सर्विस के लिए हमने आईआईटी मद्रास के साथ एक एमओयू साइन किया है। कैटेलिटिक कन्वर्टर, रेट्रो फिटिंग डिवाइसेस और पोल्यूशन अब्सॉर्बिंग डिवाइसेस के लिए हमने दिल्ली आईआईटी के साथ एक मसौदा साइन किया है। इनके माध्यम से हमें जो सारी जानकारियां आएंगी उनके साथ हम आने वाले दिनों में पोल्यूशन को कम करने के लिए गाड़ियों के ऊपर और बाकी रेट्रो फिटिंग्स के माध्यम से पोल्यूशन को कम कर पाएंगे। हम बताना चाहते हैं कि इनफोर्समेंट के लिए हमने और सख्ती से कदम लिए हैं। पुलिस के साथ-साथ हमने 600 दिल्ली पुलिस को और डीपीसीसी को 100 वायु रक्षक दिए हैं जो रात दिन इस पोल्यूशन के ऊपर काम कर रहे हैं। साथ ही 2024 में डीपीसी में कुल 233 पद रिक्त थे। 2024 में 233 पद जो थे वो खाली थे। हमारी सरकार ने 11 महीनों में उन 233 में से 187 पद भरने का काम किया है, 11 महीनों में और अध्यक्ष जी 11 सालों में आम आदमी पार्टी वो काम नहीं कर पाई जो हमने आके केवल 11 महीनों में करने का काम किया है। मैं बताना चाहता हूं डीपीसीसी के माध्यम से हमने permanent surveyors को हायर किया है। यह सर्वेयर्स 365 दिन दिल्ली की सड़कों पर रहेंगे। दिल्ली की सड़कों पे जो pot holes हैं, दिल्ली की सड़कों के ऊपर जो bottle necks बने हुए हैं और पोल्यूशन का जो भी कोई कारण

बनता है उसको आइडेंटिफाई करके ये हमारे ग्रीन रूम तक देंगे और हम उसके संचालन को तंदुरुस्त कर पाएंगे। इसके लिए भी हमने एक नई स्कीम ले के आए हैं। एन्वायरमेंट डिपार्टमेंट में भी हमने भर्तियों को सुचारू रूप से किया है और पिछले 11 महीनों में जो हम भर्तियां कर पाए हैं, मैंने पहले भी कहा वो ये काम 11 सालों में नहीं कर पाए, ये अंतर है। एक पार्टी जनता का पैसा बर्बाद करती रही और दूसरी पार्टी जनता के लिए काम कर रही है। ये दोनों पार्टियों के काम करने का अंतर है और अध्यक्ष जी मैं बताना चाहता हूं कि हमारी नीतियों के कारण और पिछले कई महीनों से लगातार काम के कारण इसमें अंतर क्या आया? मैं एक्यूआई के आंकड़ों का अंतर जोकि एक्यूआई तो आपके सामने है, उसका अंतर आपको बताना चाहता हूं। साल 2021से 2024 तक दिल्ली का औसतन एक्यूआई 209 रहा। परवेश जी, मुख्यमंत्री जी, दिल्ली का औसतन एक्यूआई 'आप' के समय पे साल 2021 से 24 तक औसतन एक्यूआई 209 रहा 209 ,जबकि हमारी सरकार का इस साल का औसतन एक्यूआई 12 महीनों का 200 रहा जो कि 9 पॉइंट पिछले चार सालों से कम है। जबकि 10% ट्रैफिक में इजाफा हुआ और 18% कंस्ट्रक्शन में इजाफा हुआ, इसके बावजूद हमारा एक्यूआई कम हुआ। इसी तरह जो सेटिस्फेक्टरी डेज हैं, मैं बताना चाहता हूं कि सेटिस्फेक्टरी डेज में हमारे 70 दिन कम रहे। पुरानी सरकारों के मुकाबले में हम सेटिस्फेक्टरी डे बेटर देने में कामयाब हुए। मैं आपको गिन के बताता हूं। इसी तरह 70 दिन एवरेज इनका 2018, 19, 20, 21, 22, 23, 24 सात सालों में आपकी 70 दिन की एवरेज रही सेटिस्फेक्टरी डेज की। पर हमारी 79 दिन हमारी एक ही साल में आ के, हमारी उससे 9 दिन बेहतर हमने सेटिस्फेक्टरी डे देने का काम किया, यह भी अपने आप में ऐतिहासिक है। यह बताता है कि 11 महीनों में सरकार कैसे काम कर रही है। अब मैं बताना चाहता हूं सीवियर डेज के ऊपर जो बहुत दिन खराब रहे उसमें आपके समय पे 30 रहे, हमारे आठ रहे, आठ। Severe डेज इनके समय पे 30 एवरेज रही और हमारे समय पे आठ रहे। और मैं बताना चाहता हूं कि जो सेटिस्फेक्टरी डेज थे, मैं आपको गिनती भी बता देता हूं। कहीं आपको रहे कि मैंने अपने 79 तो गिना दिए आपके। सुनिए 2022 में 65 सेटिस्फेक्टरी डे थे, 23 में 60 थे, 24 में 66 थे और 2025 में 79 सेटिस्फेक्टरी डेज हैं। ये अंतर है काम करने वाली सरकार का और बातें करने वाली सरकार का। मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं जो कल परसों मास्क पहनकर, मुंह छुपा के यहां पर आए हुए थे, मैं उनको ये बताना चाहता हूं कि देश के अंदर दो बड़े शहर हैं जिनकी मिसाल दी जाती है। एक है इंग्लैंड का लंदन और दूसरा है चीन का बीजिंग। इन दो शहरों ने पोल्यूशन के ऊपर काम किया। मैं उनकी भी आपको

हिस्ट्री देना चाहता हूं। उन्होंने क्या किया है? देखिए लंदन में 1956 से काम शुरू हुआ। 1968 में क्लीन एयर एक्ट्स लेके आए। कोयले की सारी इंडस्ट्री को उन्होंने बंद किया। फ्यूल को सबको शिफ्ट किया और 1990 से लेके 2010, 1990 से लेके 2000 तक 10 साल निरंतर उन्होंने तय कर दिया कि बाहर की ट्रैफिक हमारे अंदर नहीं आएगी। 100 पौंड एक एंट्री फीस लगा दी और उनको 10 साल लगे अपने मापदंड को ठीक करने के लिए मात्र लंदन के अंदर और वैसे उनको 50 साल लग गए अपनी हवा को ठीक करने के लिए। अब बीजिंग का सुनिए। बीजिंग में 2012-13 में भयंकर स्मोग की घटना घटी जो कि हमारे दिल्ली में भी घटी। उसी वक्त 'द ग्रेट स्मोग' हमारी दिल्ली में कहा गया था और उसी तरह 2012-13 में भयंकर स्मोग वहां पे भी आई। अंतर क्या है? उन्होंने अगले 10 सालों के अंदर उस स्मोग को काबू पा लिया। 2012-13 में जो भयंकर स्मोग का शहर था वो 2024 में आते-आते एक्यूआई 50 से नीचे लेके आ गया। लेकिन हमारे जो भयंकर स्मोग 2014 में माना गया था, उन्होंने कहा 2025 तक आते-आते सरकार छोड़ने तक भी वो भयंकर स्मोग का दिन ही रहा, ये अंतर है 'आप' की सरकार में और बाकी की सरकारों में। इसलिए मैं ये आपको बताते हुए महोदय बहुत खुशी हो रही है कि जहां हमारे यहां आने के बाद मैंने पहले भी बताया कि 10% ट्रांसपोर्ट के अंदर इजाफा हुआ है। 18 फीसदी कंस्ट्रक्शन के अंदर इजाफा हुआ है। इसके बावजूद हम बेटर डेज, बेटर सैटिस्फैक्ट्री डेज, व worst/severe days को हम कम करने में कामयाब हुए हैं। ये हमारी बहुत बड़ी उपलब्धि है और मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं कि जो काम आम आदमी पार्टी अगर 110 साल में भी ना कर पाती, ये वो 11 महीनों के काम हैं जो माननीय रेखा गुप्ता जी की सरकार करने में कामयाब हुई है। ये दिल्ली चलेगी। ये दिल्ली थमेगी नहीं। ये दिल्ली चलेगी। ये दिल्ली इसी रसद पे चलेगी। लेकिन हम इस दिल्ली के वायदा करते हैं कि पोल्यूशन को ठीक करने के लिए हमारे साथ-साथ, दिल्ली के साथ-साथ हमें गुड़गांव का भी, हमें फरीदाबाद का भी, हमें नोएडा का भी, हमें सोनीपत का भी, हमें पलवल का भी, हमें रोहतक का भी, हमें गाजियाबाद का भी, हमें मिलकर ये काम कर रहे हैं और रात दिन हम लड़ाई नहीं लड़ रहे बल्कि मिलकर इस पोल्यूशन के खिलाफ काम कर रहे हैं। मैं आज जरूर यह कहना चाहूंगा मैंने 11 सालों के आम आदमी पार्टी के कामों की भी जानकारी दी और 11 महीनों के कामों की भी जानकारी दी। मैं दावे से कह सकता हूं इन दो जानकारी आने के बाद आम आदमी पार्टी के पास बोलने को कुछ बचा नहीं है इसीलिए ये हाउस से बार-बार भाग रहे थे। मैं धन्यवाद करता हूं आपने मुझे बोलने का मौका दिया और दिल्ली के अंदर 11 सालों के काम की

नाकामियां जो आज पूरा देश सुन रहा है, देश को पता चल पाएगा। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक मिनट। जी।

श्री मनोज कुमार शौकीन: मैं निवेदन करूंगा माननीय मंत्री जी से एडवर्टाइजमेंट पे इन्होंने कितना खर्च किया और आपने कितना किया ये भी जानकारी सबको दे दें।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: मैंने बता दिया था एडवर्टाइजमेंट पे 55 करोड़ तो उसी पे खर्च कर दिया था। 20 करोड़ उसपे खर्च कर दिया।

श्री मनोज कुमार शौकीन: उनका बता दिया हमारे में इनमें फर्क क्या है?

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा, माननीय पर्यावरण मंत्री: हमारे में एडवर्टाइजमेंट के लिए हमारा कोई पैसा नहीं होता। हमारे में केवल और केवल informative जानकारी है कि आप ये काम करेंगे या नहीं करेंगे। इससे ज्यादा हमारी कोई एडवर्टाइजमेंट में पैसा नहीं है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है धन्यवाद। माननीय सदस्य श्री हरीश खुराना।

श्री हरीश खुराना: धन्यवाद अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : 5 मिनट।

श्री हरीश खुराना: मैं आपका धन्यवाद देना चाहूंगा कि।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अपर लिमिट है

श्री हरीश खुराना: इतने महत्वपूर्ण विषय के ऊपर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी मैं पिछले दो-तीन दिन से बहुत हैरान परेशान था। परेशान इसलिए था कि विपक्ष के लोगों ने प्रदूषण, प्रदूषण करते रह गए लेकिन जब 7 तारीख को कार्य सूची में प्रदूषण आया तो किस प्रकार से सदन को डिसरप्ट किया गया वो पूरे हिंदुस्तान ने देखा अध्यक्ष जी। जब मैं इस पे खोजबीन में गया तो पता लगा, मेरे सूत्रों ने बताया कि केजरीवाल का फोन आया आतिशी को ये तूने क्या कर दिया भई। अगर चर्चा होगी प्रदूषण के ऊपर तो पिछले 11 साल का जो इनका कार्यकाल है उस पर तो भारतीय जनता पार्टी तुम्हारे ऊपर चढ़ जाएगी और ये भी चर्चा होगी कि पिछले 11 महीने के अंदर जो हमारी रेखा गुप्ता जी की सरकार है जिस प्रकार से पॉजिटिव नोट के ऊपर और ईमानदारी से प्रदूषण को ले के काम कर रही है तो उसके बारे में भी बताया जाएगा। तो मित्रों।

.....व्यवधान........

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक मिनट भई ऐसे देखो आप क्यों, चर्चा को सीरियसली चलने दो।

श्री हरीश खुराना: यही कारण है, यही कारण है, यही कारण है केजरीवाल जी ने आदेश किया होगा, शायद किया होगा कि आतिशी जी आप सदन में मत आना, इतने महत्वपूर्ण विषय के ऊपर जो प्रदूषण के बारे में चर्चा कर रहे थे, प्रदूषण प्रदूषण कर रहे थे पूरे मीडिया के अंदर, आज सिर्फ पांच सदस्य बैठे हैं इस प्रदूषण में चर्चा करने के लिए। ये है इनकी सीरियसनेस। पिछले 11 साल में क्या हुआ, ये हेडलाइन बताती है अध्यक्ष जी। ये हेडलाइन टाइम्स ऑफ़ इंडिया के 12 मार्च 2025 की हेडलाइन बता रहा हूं अध्यक्ष जी। क्या हेडलाइन है: "For seventh year consecutive, Delhi retains title of the most polluted city in the world." ये है हेडलाइन इनके 11 साल के कार्यकलाप और ये हमसे हिसाब मांग रहे हैं। इन्होंने 11 साल में प्रदूषण पे किया क्या? कभी केंद्र को दोष, कभी एलजी को दोष, कभी किसी को दोष, कोई बहाना काम नहीं किया अध्यक्ष जी और यही कारण है कि एनुअल एक्यूआई अभी सिरसा जी ने बताया, डाटा दिया कोई भी साल ऐसा नहीं है अध्यक्ष जी पिछले 10 सालों के अंदर ये डाटा 210 से 220 से नीचे गया हो, ये है इनका कार्यकलाप। इसलिए ये भाग रहे थे। इसलिए प्रदूषण पे चर्चा नहीं करना चाहते थे और हद तो तब हो गई अध्यक्ष जी disruption की इन्होंने गुरुओं को नहीं छोड़ा। कितना अपमान किया हमारे गुरुओं का ताकि सदन डिसरप्ट रहे। यह जानबूझ के प्रदूषण से भागने की कर रहे हैं, इसलिए अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मुद्दे पर आइये।

श्री हरीश खुराना : अध्यक्ष जी सारी बातें कही।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मुद्दे पे रहिए मैंने कह दिया ना, कह दिया मुद्दे पर रहिए।

श्री हरीश खुराना : अध्यक्ष जी सारी बातें कही अभी सारी बातें बताई, खर्चे के ऊपर, याद है आपको केजरीवाल जी ने एक सॉल्यूशन लेके आए थे कि मैं सॉल्यूशन लाया हूं दिल्ली का पराली हम दूर करेंगे, एक सच आपके सामने सदन के माध्यम से इन विपक्ष के लोगों को बता देना चाहता हूं। पराली के लिए सॉल्यूशन लाए खर्चा किया 40 हजार रूपये, अध्यक्ष जी ट्रैक्टर पर खर्चा किया जो छिड़काव के लिए 9 लाख 60 हजार रूपये पहले साल के अंदर और टेंट के अंदर खर्चा किया 11 लाख 61 हजार रूपये अध्यक्ष जी उसी साल उसी पराली को, जो घोल बनाया था 7 करोड़ मैं आपको फिगर दे रहा हूं और बहुत उससे बता रहा हूं 7 करोड़ 47 लाख 26 हजार 98 रूपये उस पहले साल में खर्च कर दिए अध्यक्ष जी इन्होंने, पराली दूर करने के नाम पे घोल पे। किसकी जेब में पैसा गया, यह

तो यह बताएंगे और दूसरे साल दूसरे साल घोल आया 2 लाख का, टैंट का खर्चा हुआ 24 लाख का, ट्रैक्टर का खर्चा हुआ 18 लाख का और जो एक्सपेंस किया एडवर्टाइजमेंट के ऊपर इन्हीं के सदन का जवाब है अध्यक्ष जी, 15 करोड़ 80 लाख 36 हजार 828 रूपये, ये तो इनकी हालत है। 11 साल का हिसाब देंगे नहीं, 11 महीने का हमसे हिसाब मांगा रहे हैं, किस मुंह से मांग रहे हैं हिसाब भाई साहब। मैं तो लास्ट में , और अब हमने 11 महीने में क्या किया अध्यक्ष जी, 11 महीने में, ये हेडलाइन, ये हेडलाइन अध्यक्ष जी, हेडलाइन क्या कहती है दिल्ली का प्रदूषण स्तर इस साल सुधरा है। 2025 में संतोषजक दिनों की गिनती बढ़ी है। जनवरी से नवंबर तक एवरेज ए.क्यू.आई. कम रहा है यह मैं नहीं कह रहा, ये अखबारों की हेडलाइन कह रही है। ये मैं नहीं कह रहा। इसलिए मेरा कहना है अध्यक्ष जी। ये तो धुएं में भी सियासत..

(समय की घंटी)

श्री हरीश खुराना : अध्यक्ष जी दो मिनट लूगां, दो मिनट और लूंगा। ये तो धुएं में भी सियासत ढूंढते रहे,

''ये तो धुएं में भी सियासत का जरिया इन्होंने बना दिया।

रेखा गुप्ता जी ने उसी हवा को जिंदगी बना दिया।''

अध्यक्ष जी और आखिरी में यही कहूंगा।

''ये शहर अब वादों से नहीं कामों से पहचाना जाता है,

रेखा गुप्ता जी का दौर है, दिल्ली अब सांस ले पाता है।''

बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री मनोज शौकीन जी। अब मुकेश जी धिंगान जी को बुलवा लो ना, आपको बोलना है पोल्यूशन पे। नहीं नहीं मैं, मेरे पे बताओ आप। आप ठीक है कादियान जी। नहीं-नहीं अब मैं तो दो लोग बता दो आप जो भी हैं और एक गोपाल राय जी हैं। हां वो तो तीसरे हैं ही दो आप दोनों ठीक है।

(आपसी विचार-विमर्श)

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : नहीं नहीं मैं इनको और कादियान जी को बुलवा देता हूं। ये पहले बोल चुके हैं ना। चलिए, आप शुरू करो। मैं दो लोग बुलवा दूंगा इनमें से कोई। नहीं, नहीं प्रोपोशनेट रखोगे ना ऐसे थोड़े ही ना। धींगान जी को बुलवाना भाई, धीगांन जी बोलेंगे। हां धींगान जी और आप बोलेंगे बस।

डॉ. अजय दत्त : नहीं-नहीं हम दोनो बोलेंगे, धींगान साहब बाद में बोल लेंगे।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : किसी और दिन बोलोगे आप, चलो ठीक है, बोलिए अब।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : दबा रहे हो आप उनको ना, एक्चुअली वह सीधे सदस्य हैं, आपसे पुराने सदस्य हैं वो।

...व्यवधान....

श्री अजय कुमार महावर : अरे तुम अपने साथी को दबा रहे हो, तुम अपने साथी को दबा रहे हो बताओ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : शुरू करो जी।

श्री अजय कुमार महावर : एक तो 3 बार बोल चुके हैं, उसको बाद में उसको दबा रहे हो, लोकतंत्र नहीं तुम्हारे यहां। तुम्हारे यहां लोकतंत्र नहीं है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : शुरू करो जी।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी थोड़ा मुस्कुरा दो बहुत देर हो गई।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : शुरू करो जी। शुरू करिये।

श्री मनोज कुमार शौकीन : थोड़ा सा तो मुस्कुरा दो, मुस्कुरा दो थोड़ा सा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : मैं तो मुस्कुरा रहा हूं। आपको देख देखके मुझे लग रहा है कि समय ज्यादा हो गया है।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी, मैं जब कहोगे तभी बैठ जाउंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : मेरे को तो 10, मैं तो 10 बजे तक बैठ सकता हूं।

श्री मनोज कुमार शौकीन : कहो तो मैं छोड़ देता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : 11 तक कहोगे 11 तक बैठ सकता हूं।

मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी मैं

विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : नहीं तो मेरे स्टैंड बाई यहां बैठे हैं।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : यहां चेयर तो चलती रहेगी। आप अपना तय करो।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी मेरी बात, मेरी बात इनसे सबसे भिन्न होगी और मुद्दे पे होगी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : शुरू करिए।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी इस सदन को 1993 से देखा है और 1998 में पहली बार इस सदन का सदस्य बना था। लेकिन जब 1993 से देखा तो यह सदन ऐसे ही चलता रहा, चलता रहा, लेकिन आज आकर आपने जो 2025 में इस सदन की हालत में जो सुधार किया इतना लेटेस्ट बनाया और वह बाथरूम भी मैं देखता था तब से आज आकर के उसके अंदर सुधार हुआ है। 27 साल बाद मैं यह कहना चाहता हूं कि 27 साल भारतीय जनता पार्टी, अध्यक्ष जी।

....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : सब सब ठीक हो रहा है।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी 27 साल बाद भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली में सरकार बनी है और वो जब सरकार बनी है तो रेखा जी के नेतृत्व में एक लंबी रेखा खींचने के लिए बनी है और वो खींच भी रही हैं। वो खींच भी रही हैं। अध्यक्ष जी हमारी सरकार ने पोल्यूशन पे चर्चा तय कर कर दी। विपक्ष ने मांगी हम करने को तैयार आज कितने लोग बैठे हैं और इससे पहले जो नेता, विपक्ष जिन्होंने चर्चा की थी वो क्या करके कहां पे चले गए, जो हमारे साथी बैठे हैं यहां यह साथी बचपन में जाते हैं और तन समर्पित मन समर्पित और यह जीवन समर्पित चाहता हूं देश की माटी तुझे कुछ और भी दूं। वहां से शुरू करते हैं और जो मेरे सामने वाले साथी अच्छे हैं, विद्वान हैं। लेकिन इनका जन्म कितने दिन का है? कौन सी पार्टी का है? कौन-कौन कहां से आया है, कहां से गया है? ये लोगों ने यह मुझे बताएं आप, मैं व्यवहारिक बात कर रहा हूं। पोल्यूशन पर चर्चा के लिए एक दिन आपने बढ़ा दिया जो इन्होंने पीछे बर्बाद किया। पिछली सरकार ने कितनी बार धींगान साहब, पिछली सरकार ने।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : चलो यह बहस का मुद्दा नहीं है।

श्री मनोज कुमार शौकीन : पिछली सरकार ने कितनी बार पोल्यूशन पे इतना भयंकर पोल्यूशन पे कितनी बार चर्चा की? झूठ के प्रचार और सारी बातों को छोड़ दो। वो तो मैंने सिरसा जी से पूछा। वो आंकड़े भी बताते, तो सब यह शर्म के मारे डूब जाते। कितनी बार चर्चा की और सी.एम. कितनी बार उस चर्चा में या इस सदन में मौजूद रहे। हमने जब से देखा है जब हमारी 1993 से 98 में

सरकार थी तब हमारा मुख्यमंत्री मौजूद रहते थे। हमारे मंत्री मौजूद रहते थे। हमारे मुख्यमंत्री अभी भी हर रोज मौजूद रहती हैं, लेकिन वह कहां पे मौजूद रहते थे? दिल्ली की चिंता कहां थी? दिल्ली के अंदर काम करने की किसी की चिंता होती। तो वो जो है ना वो यहां बैठकर के सुनते भी बताते भी और आगे की योजना बना करके काम भी करते। नियत ही नहीं थी और अध्यक्ष जी मैं यह चाहूंगा कि आज नहीं कभी ना कभी आप यह रिकॉर्ड हमें जरूर दें, कि पिछली सरकार में पोल्यूशन को लेकर के और वह पब्लिसाइज करें, कितनी चर्चा हुई और उसमें मुख्यमंत्री कितने समय तक रहे। क्या जवाब दिया? अध्यक्ष जी हमारे सीएम रेखा गुप्ता जी हर सदन में मौजूद रहती हैं और काम जो किया है वह बताया ही है, लेकिन यह सदन इस बात का भी गवाह है कि जब एक छोटा सा आरोप लगा था माननीय खुराना जी पे और छोड़ो हमारे अमित शाह जी पे, एकदम से इस्तीफा दे दिया था, लेकिन ये जो बेशर्म लोगों की सरकार जो पीछे गई है, जो आपदा है, जो आपदा को, पोल्यूशन को साफ करने का काम किया है। धींगान साहब आप क्यों खामखा उठ रहे हो, आप कहां फंस गए,

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : आप समय, समय वो ना करिये।

श्री मनोज कुमार शौकीन : आप फंस गए हो आपको, आपको सुनो भैया आपका क्या रिकॉर्ड है पीछे का सब जानते हैं। मैं कहना चाहता हूं मुख्यमंत्री सारे के सारे मंत्री जेल में चले गए। दिल्ली का काम कौन कर रहा था? दिल्ली की चिंता कौन कर रहा था? दिल्ली की सरकार जेल से चल रही थी। तो दिल्ली की जनता क्या उम्मीद रखती? दिल्ली की जनता यह उम्मीद रखती कि जो ये भ्रष्ट लोग हैं जो कमीशन खा रहे हैं, जो एडवर्टाइजमेंट के नाम पर करोड़ों लूट रहे हैं, उनसे क्या उम्मीद थी पोल्यूशन खत्म करने की या कम करने की? किसी को नहीं थी। और अध्यक्ष जी हमने इस सरकार को हटा करके सबसे बड़ा पोल्यूशन कम किया है। अध्यक्ष जी, पोल्यूशन पर चर्चा हो रही है तो मैं एक बात और कहूंगा जब हमारी सरकार थी उसी कदमों पे चल रही है आज भी। 1993 में हमारी सरकार बनी 1996 में अभी सिरसा जी बता रहे थे।

(समय की घंटी)

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी, ये बात तो पूरी करके रहूंगा। दो-तीन मिनट लगेंगी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : नहीं-नहीं एक मिनट में पूरा कर दो।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अच्छा अच्छा चलो मुझे बोलने तो दो। घंटी मत बजाओ। कहोगे जब बैठ जाउंगा। 1993 में सरकार बनी, 1996 में कोर्ट में जब यह मुख्यमंत्री गए, मंत्री गए, दिल्ली के

भी गए, बाहर के भी गए। लेकिन एक मुख्यमंत्री भारतीय जनता पार्टी का गया, वह दिल्ली की जनता की सेवा के लिए गया और जब यहां से पॉल्यूटिड जितनी इंडस्ट्री थी उनको हटाने के लिए कोर्ट ने कहा, तो 6 महीने के अंदर बवाना में और नरेला में नई इंडस्ट्रीज बसाने का काम डॉ. साहब सिंह वर्मा जी ने किया था, टाइम बाउंड रहते हुए काम करके दिखाया, यह हमारी सरकार की पॉलिसी होती है। और अध्यक्ष जी उसी के साथ-साथ वहां पे इंडस्ट्री बसाई। आज दुत्कार लगाते हैं मुख्यमंत्री को और मंत्रियों को। साहब सिंह की प्रशंसा की थी हाई कोर्ट ने वो रिकॉर्ड निकाल करके देख लो आप लोग। यह होते हैं काम करने के तरीके और उसी टाइम पे जब सीएनजी लेकर के आए तो कांग्रेस ने विरोध किया था कि दिल्ली के अंदर सीएनजी की बसें और सीएनजी के वाहन नहीं चलेंगे लेकिन फिर भी वह सीएनजी लेकर के आए। दिल्ली के अंदर पॉल्यूशन कम करने के लिए 1996 में मेट्रो की लाइन डाली गई क्योंकि पॉल्यूशन कम हो। इसी तरह से अनेकों आज मैं एक छोटा सा और उदाहरण दूंगा अध्यक्ष जी। यूइआर-2 बन के आज तैयार हुआ है लेकिन इसकी योजना बनी थी 1998 में। उस समय पे बनाई थी। उसके बीच में 27 साल कौन-कौन सी सरकारें रही, क्यों नहीं बनाई? आज नितिन गडकरी जी ने अनेकों रोड बाहर निकाल दिया जिससे दिल्ली के अंदर पॉल्यूशन कम हो रहा है। नहीं तो इससे भी बहुत बुरी हालत दिल्ली के अंदर होने वाली थी अध्यक्ष जी और हमारी सरकार आज काम कर रही है, हर जगह पे काम कर रही है, नए रास्ते निकालने का काम कर रही है, नई डीपीआर बनवा करके दिल्ली को कैसे पॉल्यूशन से बचाया जाए उसके ऊपर काम कर रही है। आने वाले छह महीनों में आपको यह काम सारे नजर आ जाएंगे। यह रोड मैप तैयार किया है। अध्यक्ष जी अधिक नहीं कहना चाहूंगा। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये धन्यवाद। थैंक यू।

श्री मनोज कुमार शौकीन : अध्यक्ष जी, एक एक और रह गया प्वाईंट। ये कैसे कम होता है? सुविधाएं देने से कम होता है। पहले एक यूनिवर्सिटी होती थी दिल्ली के अंदर, बच्चे पढ़ते थे, बाहर से आते थे। हमारी सरकार ने उस टाइम पे कैर में कॉलेज खोला। ट्रैफिक अंदर नहीं आएगा, बच्चों को आना नहीं पड़ेगा। हमारी सरकार ने बवाना में कॉलेज खोला। बच्चों को अंदर नहीं आना पड़ेगा, ट्रैफिक बढ़ेगा। हमारी सरकार ने शाहबाद दौलतपुर में कॉलेज खोला, बच्चों को अंदर नहीं आना पड़ेगा। हमारी सरकार ने एनएसआईटी खोली द्वारका में, बच्चों को अंदर नहीं आना पड़ेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री मनोज कुमार शौकीन: अध्यक्ष जी सीखने की जरूरत है और हमें यही सिखाया जाता है और हम काम करने वाले लोग हैं। आने वाले समय में यह तो उस समय पे प्याज के छिलके पे बहका करके लोग चले गए, नहीं तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार जहां आती है वहां कहीं जाने वाली नहीं होती, हम काम करते हैं लोगों के लिए काम करते हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य श्री वीरेंद्र कादियान जी।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक बात मैं स्पष्ट कर दूं अभी वो है नहीं सोमदत जी यहां, दो तारीख को तय हो गया था कि सदन में पॉल्यूशन पर चर्चा होगी। जो एजेंडा बना था बी.ए.सी. में बिजनेस एडवाइज़री कमेटी में वो मिनट्स अभी भी हैं हमारे पास और वो आपके सदस्य वहां पर उपस्थित थे मैं चेयर कर रहा था और उसी दिन तय हो गया था कि हमने कहा कितने घंटे की चर्चा रखें तो उन्होंने कहा देख लीजिए एक डेढ़ घंटा, मैंने कहा नहीं तीन घंटे की रखना चाहते हैं हम तीन या चार घंटे आपको दिक्कत तो नहीं है, बोले ठीक है।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: बिल्कुल महत्वपूर्ण मुद्दा है अध्यक्ष महोदय और ये आपने थोड़े देर से आए पर दुरुस्त आए। अध्यक्ष महोदय का बहुत धन्यवाद, आपने इस महत्वपूर्ण चर्चा पे बोलने का अवसर दिया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : ये घडी मैंने लगवाई इसलिए है कि जिससे आप कोई आरोप ना लगा सको कि विपक्ष को बोलने नहीं देते।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय आपका आभार।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: 33 सेकंड बढ़ गए। अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी ने कहा यह दिल्ली ऐसे ही चलेगी और अगर यह दिल्ली ऐसे ही चलेगी ना खासकर नवंबर 15 से और जनवरी 15 तक।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: नहीं मैं

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: उनको बात तो पूरी करने दो।

...व्यवधान..

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: ये गलत बात है देखो आप रील बनाने के लिए मिस कोट मत करो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : मंत्री जी आप भी तो बोलेंगे ना अभी।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: आपकी इंटरप्रिटेशन है उनकी स्टेटमेंट से वो बोलो मेरी विनती है अध्यक्ष जी। यहां हो क्या रहा है रील बनाने के लिए इस सदन का इस्तेमाल हो रहा है।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये शुरू करिए आगे। अच्छा नए सिरे से शुरू करिए आप, नए सिरे से शुरू करिए

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे आप बैठिए ना आप वकील हैं क्या, वकील हैं क्या आप, नहीं वकील वैसे वकील हैं ना आप

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: काम तो वही कर रहे हो आप।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आपने उनका एक मिनट वेस्ट करवा दिया।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय सर यह तो वापस कर दो सर, ज़ीरो ज़ीरो से कर दो। जीरो, ज़ीरो से कर दो सर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष : चलो शुरू करो।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अध्यक्ष महोदय इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, आपका आभार। अध्यक्ष महोदय आज दिल्ली गैस चेंबर बन गया है। जो माननीय मंत्री जी ने कहा कि 2024 से पहले 2020 से 24 तक का जो एवरेज एक्यूआई था वो बहुत अधिक था आज की तुलना में। मैं एक बात कहना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय कि C.A.Q.M. इनकी अभी रिपोर्ट आई है 7 तारीख के पेपर में है जी, वो कहता है कि प्रदूषण पर ड्यूटी निभाने में नाकाम और प्रदूषण पर एक पेज पूरा नवभारत टाईम्स में दिया हुआ है। उस पर काफी चीजें लिखी हुई हैं। मैं यह कहना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय कि हम सब लोग, और यह प्रदूषण बढ़ा कब से? हम सब लोग अभी अधिकतर यहां बैठे हुए लोग ज्यादातर हिंदू धर्म को मानने वाले लोग हैं और सिख धर्म को

मानने वाले लोग हैं। भगवान राम जब माता सीता के साथ अयोध्या आए थे तो जब अयोध्या नगरी में पधारे थे तो वहां की जनता ने उनका बड़े ही भव्य रूप से स्वागत किया था। देसी घी के दिए जलाए गए थे, मिठाइयां बांटी गई थी। लेकिन पटाखों का जिक्र रामचरितमानस में नहीं है कि पटाखे भी खूब फोड़े थे। तो मेरा कहने का तात्पर्य यह है अध्यक्ष महोदय 20 अक्टूबर को, 20 अक्टूबर को दीपावली के दिन उससे पहले क्योंकि नई-नई सरकार बनी थी और यह दिखाना ज्यादा क्योंकि दिल्ली में पॉपुलेशन बहुत ज्यादा है, छोटा सा एरिया है, ये आवेग में या तेजी से उस दिखाने के चक्कर में आदेश आया कि भाई ग्रीन पटाखे जलाए जाएंगे दिल्ली में। पिछली सरकारों ने पटाखे नहीं फोड़ने दिए अबकी बार पटाखे जलाए जाएंगे ग्रीन। अध्यक्ष महोदय 20 अक्टूबर को दीपावली के दिन हम सब ने दीपावली मनाई और बड़े ही धूमधाम से हर बार मनाते हैं। 20 अक्टूबर को जो ए.क्यू.आई. का लेवल था वो बहुत ही खतरनाक लेवल का था। सुप्रीम कोर्ट के पास जो एक्यूआई लेवल था वो 959, हजार के आसपास अशोक विहार में 892, चांदनी चौक में 998.8 और कई अखबारों ने लिखा कि उस दिन के एक्यूआई की बढ़ोतरी से।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे एक मिनट भाई।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: सर मैं अखबार बता रहा हूं, मैं अखबार, मैं अखबार लेके आया हूं सारे, मैं अखबार बता रहा हूं अखबार, सारे अखबार, सारे अखबार हैं।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: उनको अपनी बात कहने दो ना, आप अपने, नहीं बैठ जाईये।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अखबारों का

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मैं एक मिनट रुको अखबारों के

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये मैं तय करूंगा क्या ठीक है क्या ठीक नहीं है।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: अखबारों का हवाला दे रहा हूं, आप सुनिए। जो तथ्य है एक अखबार ने नहीं लिखा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे बैठ जाइए ना कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: ये टाइम्स ऑफ इंडिया, द हिंदू, द गार्डियन वो सारे मेरे पास हैं, उस सब ने कहा कि पांच दिन तक खतरनाक लेवल पे एक्यूआई रहा। मैं सिर्फ एक बात पूछना चाहता हूं पटाखे जलाने चाहिए, मैं भी सहमत हूं। मैं कह रहा हूं जलाने चाहिए मैं सहमत हूं। लेकिन आपने सुप्रीम कोर्ट ने जो कहा कि ग्रीन पटाखे जलाने चाहिए, आपने मापा कि कितने लोगों ने ग्रीन जलाए और कितने लोगों ने रेड जलाए?

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: क्यों? क्यों नापा आपने? दूसरा। यह सारे हिंदी ...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: खत्म करिए।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: हिंदी अंग्रेजी अखबारों ने लिखा

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: खत्म करिए आप।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: महोदय महोदय मैं एक बात कहना चाहता हूं पांच तारीख को।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: हो गया आपका बस।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: उसके बाद 7 तारीख।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए आप बैठिए अरे आप बैठिए, आप अपनी सीट पर जाइए, बैठिए बैठिए।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मैं आस्था की बात नहीं कर रहा, मैं आस्था की बात नहीं कर रहा मैं ये कह रहा हूं कि ग्रीन और रेड में आपने क्या यंत्र लगाया ग्रीन रेड में।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे आप बैठिये तो सही।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: तीन तारीख को तीन तारीख का अखबार उसमें लिखा है अध्यक्ष महोदय उसमें लिखा है कि 37, 37 एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन है दिल्ली में 37 एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन जिसमें से सिर्फ नौ चल रहे थे नौ चले और बाकी बंद थे ये सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी है। मैं नहीं कह रहा सर अब मैं दिखा देता हूं अखबार में। मैं ये कहना चाहता हूं कि इस बार सबसे ज्यादा एक्यूआई है, सबसे ज्यादा worst कंडीशन इस साल की है। यह मैं नहीं कह रहा, यह 30 तारीख का नव भारत टाइम्स कह रहा है। ये देखो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : अखबार वगैरह मत दिखाईये आप।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मोस्ट पोल्यूटेड दिसंबर आफ्टर 2018 सर ये लिखा हुआ है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठ जाईये। बैठ जाईये हो गया।

(समय की घंटी)

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मैं नहीं कह रहा ये 2018 के बाद अध्यक्ष महोदय देखो ये बीच में डिस्टर्ब किया।

...व्यवधान...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: मैं कुछ तथ्य...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप खत्म करिए ना इसको कंक्लूड करो।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: नहीं कंक्लूड कर रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, इसमें लिखा है 2018 के बाद सबसे ज्यादा पोल्यूटेड दिसंबर 2025 का है जिसका एवरेज एक्यूआई 349 है और जैसे माननीय मंत्री जी ने कहा ये मैं कहना चाहता हूं कि

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है। नहीं-नहीं बिल्कुल नहीं।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: एक बात और मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय कि किसानों को किसानों को हर बार कोसा जाता है कि पराली जलाने से होता है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: लेकिन अध्यक्ष जी एक एक मिनट, एक आधा मिनट, कि किसानों के मैं कहना चाहता हूं, मैं किसान पुत्र हूं। मुझे बड़ा दुख होता है सुनते हुए किसान पराली जलाते हैं तब होता है। 77% पराली अब की बार कम जलाई है ये सेंट्रल गवर्नमेंट का डाटा कह रहा है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिये धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान: 77% कम जलाई है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: श्री गजेंद्र यादव जी। चलिए हो गया। गजेंद्र यादव जी। माननीय सदस्य गजेंद्र यादव जी।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: धन्यवाद अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सारी बात आपकी आ गई।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: माननीय अध्यक्ष जी, धन्यवाद आपने मुझे प्रदूषण पर बोलने का अवसर दिया ।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैंने मना थोडे ही ना करा है। सारे विषय आ गए किसानों का विषय आ गया, पटाखों का आ गया ।

...व्यवधान...

श्री गजेन्द्र सिंह यादव : उसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: इन्होंने जो बात कहनी थी वो इनकी आ गई है कि सबसे ज्यादा पोलुशन है दिसंबर में सब तो आ गई। अब बैठ जाईये।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: आदरणीय अध्यक्ष जी। ये समय आदरणीय अध्यक्ष जी यह समय मेरे लिए तय हुआ है। मुझे मेरी बात रखने दीजिए। इनको कृपया बिठाएं। आदरणीय अध्यक्ष जी मैं ....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: गजेंद्र जी शुरू करिए।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: आदरणीय अध्यक्ष जी मैं कहना चाहता हूं ये जो पोलूशन, पोलूशन के लिए....

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैं आपसे उम्मीद कर रहा था कम समय में ज्यादा बात कर लोगे। पर पता नहीं क्या हुआ। बैठ जाओ।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं बताना चाहता हूं सदन को....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब सारा दारोमदार अपना गोपाल राय जी पे है। वह भी अपना ऐसे अजय दत्त जी भी आपकी तरह कुछ कुछ बोलेंगे। सारी जिम्मेदारी इन पर आ गई।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: आदरणीय अध्यक्ष जी आदरणीय अध्यक्ष जी मेरे टाइम में से 45 सेकंड 50 सेकंड हो गए। वो मुझे दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : बिल्कुल 50 सेकंड आपको ज्यादा मिल जायेगे।

श्री गजेन्द्र सिंह यादव: मैं आपको सदन को अवगत कराना चाहता हूं कि यह जो पोलूशन की समस्या है उसके लिए पूर्ववर्ती सरकार कांग्रेस ने और आम आदमी पार्टी ने जैसे बहुत मेहनत मशक्कत करके दिल्ली को एक उपहार दिया था जो पोलूशन के रूप में दिल्ली के लोग जानते हैं। क्योंकि 27 वर्षों की कड़ी मेहनत से 2013 से 25 तक आम आदमी पार्टी और 98 से 13 कांग्रेस 27

वर्षों की कड़ी मेहनत से इन्होंने कूड़े के ढेर पर काम नहीं किया। कोई योजना नहीं बनाई। फैक्ट्रियों के प्रदूषण पर कोई योजना नहीं बनाई। यमुना की सफाई पर कोई योजना नहीं बनाई और यह जो योजना विहीन सरकार रही उसका परिणाम है कि दिल्ली की जनता पोलूशंस में घुटती है। जब-जब पोलूशन आता था माननीय न्यायालय डांट मारता था केजरीवाल सरकार को, दिल्ली के लोग चिंतित हो जाते थे। उनके चेहरे उतर जाते थे। केवल और केवल केजरीवाल सरकार के विधायक मंत्री इनकी बांछे खिल जाती थी। इनके चेहरे चमकते थे। क्यों? क्योंकि पोलूशन पर ये जबरदस्त भ्रष्टाचार करते थे। वो भ्रष्टाचार चाहे विज्ञापन पर हो, चाहे ऑड इवन पर हो, चाहे रेड लाइट ऑफ और रेड लाइट ऑन पर हो। यह सारा का सारा पैसा इनको एक तरीका मिल गया था कि हर साल पोलूशन आएगा और उस पोलूशन पर यह अपना-अपना भ्रष्टाचार, अपनी-अपनी रोटियां सेकेंगे। माननीय अध्यक्ष जी मैं धन्यवाद करना चाहता हूं दिल्ली की मुख्यमंत्री जी का। यह पहला ऐसा साल था जिसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री को बढ़ते पोलूशन में, गिरते पोलूशन में दिल्ली की मुख्यमंत्री को दिल्ली की जनता ने अपने बीच में पाया। एक पिक्चर आई थी मिस्टर इंडिया। उस मिस्टर इंडिया में जो विलेन थे वह बहुत प्रचारित हुए थे। मुगंबो और वह मुगम्बो जो हैं उनके गुर्गे भी ऐसे ही मास्क लगाकर उस पिक्चर में आते थे, जैसे 5 तारीख को यहां पर और वो मुगंबो पंजाब, इनके मुगंबो पंजाब में बैठकर और स्क्रीन पर वीडियो देखते थे और वहां से जो ये हरीश खुराना जी कह रहे हैं कि फोन आया वो शाबाशी के लिए फोन आया कि भाई आप यह मास्क लगा के चले गए और पोलूशन का मामला अब जाकर मीडिया में बात करो। इनको तो पता नहीं था कि आदरणीय अध्यक्ष जी ने पोलूशन के लिए पूरे तीन-चार घंटों के लिए यहां पर समय मुकर्रर किया है। आदरणीय अध्यक्ष जी 2018 में दिल्ली ने वह समय भी देखा जब डब्ल्यूएचओ ने विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दिल्ली को विश्व का सबसे प्रदूषित शहर भी बताया और वह वाला खिताब भी आम आदमी पार्टी इनके मुखिया के नाम पर वो खिताब जाता है। आदरणीय अध्यक्ष जी, दिल्ली के निवासी बात कर रहे थे। वह कह रहे थे कि गजेंद्र जी अगर मुख्यमंत्री जी के मुख से एक्यूआई की जगह एआईक्यू निकल गया तो इसमें कौन सी बात है? जैसे ही आप आकर यह कहते हो कि भ्रष्टाचार मुख्यमंत्री, हम समझ जाते हैं कि केजरीवाल के बारे में बात कर रहे हो। तो फिर अगर एआईक्यू आ गया या एक्यूआई आ गया तो समझ समझ तो पूरे दिल्ली को आती है कि मुख्यमंत्री जी प्रदूषण पे ही बात कर रही थी। तो मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि ये के रेखा सरकार ने हमारी सरकार ने क्या-क्या काम पोलूशन पर किए। केवल 10 महीनों में 1450 इलेक्ट्रिक बसें आई

हैं। 'एक पेड़ मां के नाम' उस पर पहले भी बात आ चुकी है। आरडब्ल्यूए को 3000 इलेक्ट्रिक हीटर दिए गए हैं। धूल नियंत्रण के लिए डबल शिफ्ट में मैकेनिकल रोड, स्वीपर, जल छिड़काव, एंटी स्मोग गन का व्यापक उपयोग किया जा रहा है और जिनका जो सबसे निचली इकाई है एमसीडी जिनका काम है साफ सफाई करना। उस एमसीडी का गला घोंट कर रखा था केजरीवाल सरकार ने और मैं धन्यवाद करता हूं अपनी मुख्यमंत्री जी का। मैं धन्यवाद करता हूं अपनी मुख्यमंत्री जी का कि उन्होंने एमसीडी के लिए भी 500 करोड़ का अनुदान और प्रतिवर्ष 300 करोड़ रूपया एमसीडी को दिया है। क्योंकि एमसीडी दिल्ली की साफ सफाई में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आदरणीय अध्यक्ष जी ग्रैप लगते ही आप सरकार के मंत्री गायब हो जाते थे। कोई सड़क पर नहीं दिखते थे। मैं अपने मंत्रियों की प्रशंसा करना चाहता हूं कि हमारे सारे मंत्री उन्होंने सफाई भी करी। उन्होंने नाले भी खुलवाए। उन्होंने सीवर भी खुलवाए और सारे के सारे मंत्री अपनी मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में सारे विधायक अपनी मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में दिल्ली के भीतर इस पोलूशन से लड़ने का काम किया, पीठ दिखाकर भागने का काम नहीं किया। पूर्ववर्ती सरकारें पीठ दिखाकर भागती थी। आदरणीय अध्यक्ष जी मेरी बात पूरी हुई। आपने मुझे समय दिया। धन्यवाद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: इतने ईमानदारी से इन्होंने अपनी बात कह के अपने समय के अंदर-अंदर खुद ही बैठ गए। मेरी घंटी बजने से पहले ही धन्यवाद। माननीय सदस्य डॉ. अनिल गोयल जी।

डॉ. अनिल गोयल: आदरणीय अध्यक्ष जी बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरे को थोड़ा दो तीन मिनट ज्यादा दे देना क्योंकि यह बीमारी ऐसी है जिसका फेफड़े...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: तीन मिनट तो आपको टोटल ही मिलेंगे।

डॉ. अनिल गोयल: तो आज इस सदन में उस ढाई करोड़ जनता की पीड़ा को शब्द देने आया हूं जिसे पिछले 11 वर्षों में विज्ञापन और खोखले वादों से बहलाया गया। दिल्ली की समस्या सालों की समस्या है और ये तो 11 क्या 27 साल की समस्या है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। लेकिन अध्यक्ष जी आज मैं केवल समस्या बताने नहीं बल्कि दिल्ली की जनता ने जिस सरकार को चुना माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में उसने 11 महीने में क्या किया? मुझे लगता है मुझसे ज्यादा सारा मंजिंदर सिंह सिरसा जी ने हमारे मंत्री जी ने बताया। लेकिन कुछ जरूर मैं हाईलाइट करना चाहता हूं। दिल्ली का बच्चा भी जानता है कि यह पोल्यूशन डस्ट से है। व्हीकुलर पोल्यूशन है। 40% इंडस्ट्रियल है। पावर प्लांट्स हैं जो दिल्ली एनसीआर के चारों तरफ है। कुछ टेंपरेरी

प्रॉब्लम्स हैं। मुझे लगता है पिछली सरकार ने एक झोलाछाप डॉक्टर की तरह उसका इलाज करने की कोशिश की जिसको ए, बी, सी ,डी, नहीं आती थी कि उस बीमारी क्या है? उसका इलाज क्या है? उसको एक जरूरत थी एक्सपर्ट डॉक्टर की। उसको जरूरत थी एक्सपर्ट मुख्यमंत्री की, जैसे हमारी रेखा गुप्ता जी सरकार ने जो किया है। smog टावर का सच अभी बताया गया। कनॉट प्लेस में 23 करोड़ की लागत से smog टावर लगा, सफेद हाथी बनकर आज भी खड़ा है। विज्ञापनों पर फिजूल खर्ची। bio-decomposer की एक बात जरूर करना चाहता हूं दिल्ली सरकार ने पराली के घोल जो कि पूसा इंस्टट्यूट ने बनाया था उस पर खर्च किया, उससे कई गुना उसके प्रचार और टीवी अखबारों में किया। ऑड -इवन, स्विच- ऑफ, स्विच -ऑन यह सब आपदा सरकार के कुशासन के उदाहरण हैं। लेकिन किसी भी काम को करने के लिए एक एडवांस प्लानिंग की जरूरत होती है। सर्दियों के इंतजार की राजनीति को खत्म किया। मैं अभी माननीय पर्यावरण मंत्री पूर्व को सुन रहा था अभी नवंबर की इनकी पी.सी. थी कि विंटर एक्शन प्लान इस सरकार ने डिले किया। अरे सर इन्होंने अप्रैल 2025 से काम शुरू कर दिया था। यह मौसमी उपायों तक सीमित रहने की जगह सरकार ने जून, 2025 में एक व्यापक वर्ष भर लागू होने वाली समयबद्ध वायु प्रदूषण न्यूनीकरण योजना आरंभ की थी और यह योजना रोकथाम, आधुनिक तकनीक के उपयोग, कड़े परिवर्तन तथा जन भागीदारी पर केंद्रित थी जिसमें सभी विभाग, स्थानीय निकाय, एनसीआर की एजेंसियों के समन्वित प्रयास शामिल है। क्योंकि इसको इलाज करना है तो सतत कॉम्प्रहेंसिव मल्टी एजेंसी मल्टी स्टेट इलाज की जरूरत है जो यह सरकार कर रही है। मैं बड़ा खुश हूं कि ये सारे लोग यहां बैठे हैं, अगर एलजी का अभिभाषण आप सुन लेते कादियान साहब तो ये सारे फैक्ट्स उसमें दिए गए। ग्रैप का समय से पूर्व क्रियान्वयन किया गया और सी.क्यू.एम. के साथ मिलकर 13 हॉटस्पॉट्स पर माइक्रो एक्शन प्लान तैयार किया जहां 30 से ज्यादा ऑटोमेटेड mist-spray लगे हुए हैं। ऐतिहासिक डाटा है कि A.Q.I. मैनेजमेंट पिछले इस साल में 2025 में बुरे दिन कम रहे, अच्छे दिन बढ़े और इसका बाकी डाटा का डिस्कशन करते रह सकते हैं। लेकिन यह ईयर राउंड मैनेजमेंट को दिखाता है। प्रदूषण की जड़ पर प्रहार करना है तो इंफ्रास्ट्रक्चर मैं जरूर चाहूंगा कि ईस्टर्न वेस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे जो दो प्रोजेक्ट्स मोदी सरकार ने दिल्ली को दिए। 22 लाख टन कार्बन उत्सर्जन से बचाया है। 60 हजार भारी ट्रक अब दिल्ली की सीमाओं से बाहर निकल रहे हैं। और फेम- टू और ई बस जो 3050, 500 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें दौड़ रही हैं। उनमें केंद्र सरकार की भारी सब्सिडी और मोदी सरकार का विज़न शामिल है और हमारा लक्ष्य मुझे लगता

है मैं परिवहन मंत्री जी को भी यहां जरूर धन्यवाद देना चाहता हूं कि 7700 और ई बस लाने का प्लान है। मुख्यमंत्री जी और दिल्ली में पराली का जो बात थी हरियाणा मॉडल में 40% कम हुआ पंजाब से लेकिन आज भी धुआं आ रहा है और दिल्ली में इस बार जीरो पराली हुई ये भी दिल्ली का एक रिकॉर्ड रहा है। नो पी.यू.सी. नो फ्यूल में 7 लाख से ज्यादा टू व्हीलर एक कॉज था जैसे पिछली बार जब इन्होंने किया टू व्हीलर को एग्जैम्प्ट कर दिया वो गलत काम था। टू व्हीलर में 7 लाख को पोलूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट लेना पड़ा, ये एक रिकॉर्ड है। जब ये पर्यावरण मंत्री जी ने सख्त कदम किया, नो पीयूसी नो फ्यूल। औद्योगिक निगरानी करके 411 इकाइयों को बंद किया। अब दिल्ली ईवी कैपिटल बनती हुई दिल्ली है और हाल के दिनों में इस सब को मॉनिटरिंग करने के लिए 1800 से अधिक दिन रात निरीक्षण टीमें तैनात की गई हैं और केवल 10 महीनों में नॉन पॉलिटिव पब्लिक ट्रांसपोर्ट को भी सशक्त किया गया है और रूट पर विशेष रूप से मैं कहना चाहता हूं अभी मुख्यमंत्री जी ने बताया इंटरस्टेट की ई.वी. बसों की जो शुरुआत है वो भी उस हवा को दिल्ली की साफ कर रही है क्योंकि दिल्ली की हवा सिर्फ दिल्ली की नहीं है, 100 किलोमीटर पेरीफेरी की भी हवा है, उसका भी ध्यान रखना है। वाहन pollution नियंत्रण भी सरकार का प्रमुख फोकस एरिया है। जिसमें इलेक्ट्रिक बस लास्ट में मोबिलिटी तेजी से विस्तार कर रहे हैं। ई.वी. चार्जिंग नेटवर्क यह भी बहुत इंपॉर्टेंट है क्योंकि अगर ईवी चार्जिंग नेटवर्क नहीं होंगे तो बस या स्कूटर या कार कैसे चार्ज होंगी, उसके लिए भी सार्वजनिक परिवहन के ईवी चार्जिंग नेटवर्क बढ़ाए जा रहे हैं । यातायात जाम और उससे होने वाले उत्सर्जन सबसे बड़ा प्रॉब्लम है व्हीकल के जहां जब जाम होता है उसको कंट्रोल करने के लिए सरकार ने अतिरिक्त 600 लोग लगाए हैं। 12 लाख चालान 7 लाख से ज्यादा पीयूसी टू व्हीलर। अब इस में डस्ट कंट्रोल में झाड़ू से सिर्फ सफाई नई दिल्ली में चलेगी। अभी हमारे पर्यावरण मंत्री जी ने कहा कि जब तक मैकेनिकल स्वीपर नहीं होंगे तब तक वो suck करेंगे और डस्ट भी suck करेंगे और गंदगी भी suck करेंगे, क्योंकि झाड़ू लगती है तो कई बार धूल उड़ती है। तो अध्यक्ष जी धूल दिल्ली के प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। इस सबके लिए पीडब्ल्यूडी, डीडीए और एमसीडी के माध्यम से 650 से अधिक मिसट स्प्रे सिस्टम लगाए गए हैं। ऊंची इमारतों में एंटी स्मोक प्लानिंग और दूसरा है जो कचरा प्रबंधन था। हमारी मुख्यमंत्री जी ने कहा कि 2027 तक ये कचरे के पहाड़ दिल्ली से खत्म किए जाएंगे। जो एमसीडी को फंड नहीं मिलते थे। 500 करोड़ का अतिरिक्त अनुदान, हर साल 300 करोड़ और मजबूती देने के लिए 2300 करोड़ के 100 एम.आर.एस.1000 लिटर पिकर मशीन, मुझे लगता है

हमारे जितने यहां पर विधायक बैठे हैं सड़कों पर चलते हैं। मैं तो हर सड़क पर देखता हूं कि मिसट स्प्रे हो रहा है। कहीं पर मैकेनिकल स्वीपर लग रहा है, कहीं पर litter मशीन चल रही है, ये आम बात है जो पिछले 11 साल में सड़क पर कभी भी नहीं देखी गई। एक बहुत बड़ा विषय है ई वेस्ट का। इस पर भी ध्यान दिया जा रहा है। होलंबी कलां में पहला एकीकृत इको वेस्ट पार्क बन रहा है जो 51,000 टन ई- कचरे का वैज्ञानिक निस्तारण करेगा। जब हम प्रदूषण की बात करते थे वायु प्रदूषण के अलावा जल प्रदूषण की भी बात जरूरी है।

(समय की घंटी)

डॉ. अनिल गोयल: यमुना का पुनः उद्धारण, सौर ऊर्जा और वायु की मॉनिटरिंग जहां 6 नए एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं क्या आपके पास कोई ई.वी. नीति थी? आपने एक स्मोग गन खरीदी वो भी खराब कर दी। क्या आपने landfill site के लिए समय सीमा रखी? यमुना में जरूर कहा कि हर साल गोते लगा देंगे लेकिन गोते लगवाए माननीय रेखा गुप्ता जी की सरकार ने जब वहां छठ पूजा हुई उसके किनारे छठ पूजा हुई, वो खुद उस यमुना के किनारे यमुना में अर्घ्य दिया उन्होंने।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद जी।

डॉ. अनिल गोयल: बस एक छोटा सा है सर। last concluding ले लूं बस। 10 मिनट कहा था मेरे को इसलिए ये ज्यादा। निष्कर्ष सर निष्कर्ष बस।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, नहीं। देखिए मैं इससे पहले की फिर।

डॉ. अनिल गोयल: दिल्ली की जनता को हम आश्वस्त करना चाहते हैं। सर आधा मिनट बस।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आधा मिनट में खत्म कर दीजिए।

डॉ. अनिल गोयल: ये सरकार झुकेगी नहीं, ये सरकार रुकेगी नहीं। साफ हवा दिल्ली का अधिकार है। उसे दिलाना हमारी जिम्मेदारी है। हमने सच को सामने रखा। आज हर आंकड़ा, हर सवाल, हर हिसाब जो हवा को मौसम कह के टाल गए उनकी नीयत पर है हमारा जवाब। अब शासन विज्ञापन से नहीं जिम्मेदारी से चलेगा, काम बोलेगा, नतीजे दिखेंगे और साफ हवा हम सबका हक बनकर मिलेगी। यही है हमारी पहचान, यही हमारा संकल्प कि दिल्ली को करना है प्रदूषण मुक्त, स्वस्थ, समृद्ध, विकसित दिल्ली। जय हिंद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य। अब बताओ जी, अब दोनों में से, पिछली बार आप बोले, अब इनको बोलने दो।

डॉ. अजय दत्त: माननीय अध्यक्ष जी मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं आपने मुझे आखिरकार इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। देखिए पिछले पांच दिन से हम प्रदूषण पर चर्चा मांग रहे थे और अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चर्चा मांगने की क्या जरूरत थी चर्चा तो तय हो गई थी दो तारीख को।

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी हम बार-बार ये कह रहे थे।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: फिर ये नाटक क्यों, ऐसे ही।

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी आप या तो मुझे मेरे टाइम पे बोलने दो1

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: तो फिर ऐसी बात कहो जो सच हो।

डॉ. अजय दत्त: आप बात कहने तो दो पूरी, आप बाद में जो करेक्शन करनी है कर लेना आप तो सुप्रीम है यहां पे, हम आपके अधीन बैठे हुए हैं सब। अध्यक्ष जी चर्चा मांग रहे थे। पहले दिन हम लोग मास्क पहन के आए, आप लोगों ने उठा के बाहर फेंक दिया। आपको पता है कि दिल्ली में बहुत ज्यादा प्रदूषण है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एलजी एड्रैस में आए थे ना, आप एलजी एड्रैस में आए थे, एलजी एड्रैस में वो ब्रिच ऑफ प्रिविलेज माना जाता है।

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी ये मैं नहीं कह रहा हूं। अध्यक्ष जी मैं नहीं कह रहा।अध्यक्ष जी ये मैं नहीं कह रहा, एक्यूआई की साइट कह रही है। आज भी दिल्ली का प्रदूषण एक्यूआई से हाईएस्ट लेवल पे है, 362 ये आज का बता रहा हूं। इससे पिछली साल का बताता हूं। 357 था, उससे पिछली साल का बता रहा हूं। पिछली साल इस समय चुनाव हो रहे थे। उससे पिछली साल का बताता हूं। 2024 का 206, मंत्री साहब एनवायरमेंट मंत्री यहां पर आकर बहुत देर से बहुत सारी बातें कह गए। किसी को समझ आई, किसी को नहीं आई।

....व्यवधान.....

डॉ. अजय दत्त: वो पूरी, क्या समझाया बताइए?

....व्यवधान.....

डॉ. अजय दत्त: हां। देखिए एक चीज़ एक चीज़ यहां पे हो रही है कि पुरानी सरकारों को कोसो। पुरानी सरकार को कोसो। अरे भाई ये पूछ रही है दिल्ली की जनता कि आपने क्या किया है? कोसने के अलावा 11 महीनों में आपने क्या किया है? दिल्ली में अस्पताल भरे पड़े हैं, दिल्ली के

लोग परेशान हैं। बच्चे इन्हेलर ले ले के जी रहे हैं, बुजुर्ग अस्पतालों में भरे पड़े हैं और कई बुजुर्गों की मौत हो गई है सिर्फ सांस की बीमारी से और इसलिए कि यहां पे साफ हवा नहीं है। दिल्ली की जनता आपसे कुछ नहीं मांग रही है। आपसे कह रही है कि आप सरकार चला रहे हो, आपको पोलूशन खत्म करना है। आपने कहा कि हम आर्टिफिशियल रेन कराएंगे। ₹4 करोड़ आपने खर्च कर दिए या जो भी पैसा खर्च किया लेकिन आर्टिफिशियल रेन आज तक हुई नहीं है। आपने कहा जुलाई में हवा साफ थी। आपकी पार्टी ने कर दी, बीजेपी ने कर दी, आपकी सरकार ने कर दी। आज करके दिखाओ। पिछले 10 साल का डाटा उठा के देखो। ये मैं नहीं कह रहा, ये डाटा कह रहा है। अच्छा 'हिंदुस्तान टाइम्स' में जजीज, सुप्रीम कोर्ट ने आपकी सरकार को इंस्ट्रक्शन दिए कि टोल प्लाजा पे जाम मत लगने दो ज्यादा पोलूशन आ रहा है। स्कूल को बंद करो, बच्चों को सांस लेने में प्रॉब्लम है और आपकी जो एक ऑर्गेनाइजेशन है कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट इसको इंस्ट्रक्शन दिया। ग्रैप के लिए इंस्ट्रक्शन दे रहे हैं। सो सरकार क्या कर रही है, अगर कोर्ट ही आपको इंस्ट्रक्शन दे रहा है, ये मैं नहीं कह रहा ये अखबार कह रहे हैं, तो आप क्या कर रहे हो, आपने क्या किया? आप टीवी पर जाते हो, मुख्यमंत्री साहिबा आप बुरा ना मानिएगा, लेकिन अगर आप ए.क्यू.आई. को टेंपरेचर से नापने की कोशिश करेंगे तो बातें तो उठेंगी कि यानी आपको पता ही नहीं कि होना क्या है। अगर आप बातें करेंगे कि भई हम आर्टिफिशियल रेन करा देंगे लेकिन होगी नहीं तो बातें तो उठेंगी, लोग पूछेंगे। और सड़कों की बात की आपने, अध्यक्ष जी सड़कों की बात की,.....

....व्यवधान.....

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी, यह व्यवस्था बिल्कुल गलत है। मंत्री साहब बाद में कह लें, सम्मानित हैं हमारे। बोलिएगा हम मना थोड़े ही कर रहे हैं।

....व्यवधान.....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: हां, तो मैं कह तो रहा हूं आप बैठिये मैं....

डॉ. अजय दत्त: नहीं-नहीं, ऐसे-ऐसे, अरे सर ऐसे होता नहीं है। आप पिछली साल की ना रिकॉर्डिंग उठा के देख लीजिए। हम, मंत्री साहब खड़े होते थे, अध्यक्ष जी भी नहीं बोलते थे।

....व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: पिछले साल की रिकॉर्डिंग में तो इन्हें उठा के बाहर कर देते थे

....व्यवधान....

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी, आप व्यवस्था दीजिए ना। ये तो ऐसे कैसे चलेगा। और आपने मेरा एक मिनट और ले लिया ऊपर से। अच्छा, सड़कों की व्यवस्था देखिए। एम.बी. रोड देखिए पूरा बदरपुर से लेके महरौली तक इतने लंबे-लंबे गड्ढे हैं, मिट्टीयां ही मिट्टीयां हैं, वहां पे धूल का लेवल आप जाके देखो, आपको पता चलेगा क्या हो रहा है। आप नरेला में चले जाओ, आप मुंडका में चले जाओ, आप बुराड़ी, किराड़ी के रोडों पे देख लो, गड्ढे ही गड्ढे हैं। तो कौन सी सड़कें बना दी? पॉल्यूशन रोकने के लिए काम होते हैं, हवाई जुमले नहीं होते। आप लोग आम आदमी पार्टी को कोस रहे हैं। आम आदमी पार्टी ने ऑड इवन लगाया था। अरविंद केजरीवाल जी की सरकार इलेक्ट्रिक बस लेके आई थी, कार पुलिंग हमने शुरू की थी। ऑड इवन हमने शुरू किया था और पी.यू.सी. की जांच का भी कार्यक्रम हमारी आम आदमी पार्टी ने शुरू किया था। आपने कुछ नया नहीं किया है। नया क्या किया है, बताइए?

(समय की घंटी)

डॉ. अजय दत्त: नया क्या किया है?

.....व्यवधान.....

डॉ. अजय दत्त: 1 मिनट, नया क्या किया है....

....व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिये बैठिये। पूरी करने दो, उन्हें बात पूरी करने दो।

....व्यवधान....

डॉ. अजय दत्त: जनता अगर आपसे समय पूछ रही है, जनता अगर आपसे पूछ रही है कि आपको प्रदूषण हटाना है तो जो विपक्ष प्रदूषण की बात कर रहा है आप उन्हीं को उठा के फेंक देते हो। आज भी हमारे चार लोगों को आपने बाहर भेज दिया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अब आपकी बात हो गई न पूरी।

डॉ. अजय दत्त: तो अध्यक्ष जी मेरा यह कहना है कि प्रदूषण हटाने के लिए काम चाहिए होता है, एक लगन चाहिए होती है, एक ईमानदारी चाहिए होती है,

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद।

डॉ. अजय दत्त: एक मेहनत चाहिए होती है। खाली जुमले देने से, मैं यहां बहुत देर से जुमले सुन रहा हूं, every, मतलब सब कोई जुमले में एक्सपर्ट है। अरे भई काम में कोई एक्सपर्ट बनो ना। दिल्ली की जनता आपसे चाहती है कि आप पॉल्यूशन कम करो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद।

डॉ. अजय दत्त: आप मुझे बताइए कब पॉल्यूशन कम होगा, आपकी तीन इंजन की सरकार है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए। माननीय सदस्य- सूर्य प्रकाश खत्री जी।

डॉ. अजय दत्त: सेंटर में आपकी सरकार है, स्टेट में आपकी सरकार है, एमसीडी में आपकी सरकार है....

.... व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: इनकी बात पूरी हो गई। बात जो वो कहना चाहते थे सारा कागज खत्म हो गया। सब हो गया। वो मैं देख रहा हूं ना सब।

.... व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: हां, तो वो यहीं से दिखाई दे रहे हैं।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं, बैठिए। शुरू करिये जी।

....व्यवधान.....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं लिख के तो कुछ और लाया था लेकिन जब मैंने विपक्ष के नेताओं की बातें और पिछले चार दिन का घटनाचक्र देखा तो मैंने अपनी सारी स्पीच यहीं तैयार कर ली और मुझे जो साहस मिला वो मेरी मुख्यमंत्री से मिला जिन्होंने आज एक शेरनी की तरह अपनी बातें और हर चीज को बहुत खूबसूरत तरीके से विपक्ष को समझाने की भी कोशिश करी और अपनी सरकार के कार्य को भी रखने की कोशिश करी। और उन्होंने एक सत्यता के आधार पर यह कहा कि जिस मेनिफेस्टो को तुम दिखा रहे हो, उस मेनिफेस्टो को मैं एडमिट करती हूं। और उन्होंने कहा कि जो हम कर रहे हैं और जो मेनिफेस्टो में लिखा है हम वो मेनिफेस्टो पूर्ण करेंगे। अध्यक्ष जी,

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: शांति- शांति।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: और जिस तरीके से, मैं समझता था कि आप शायद थोड़े से समझदार हैं....

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आपको घर जाना है?

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: आप जब बोल रहे थे I was quiet, I don't think so, you will disturb me like this, I never expect you like this, just keep अध्यक्ष जी, इनके जवाब मुझे लगता है के,

....व्यवधान....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: अध्यक्ष जी, मुझे लगता है कि जब विपक्ष अपनी रणनीति बनाती है तो यह शायद आपस में डिस्कस नहीं करते और अगर ये डिस्कस करते होते तो जिनकी समझ में आ गई वो सब गायब हो गए और जिनकी समझ में नहीं आई वो यहां बच गए, लेकिन क्योंकि जवाब, इन्होंने तीन दिन बहुत तांडव मचाया दिल्ली के मीडिया के सामने तो इनको जवाब देना जरूरी था और वो उसका परिणाम यह है आज पूरा मंत्रिमंडल, मेरी सीएम साहब, सारे विधायक, दिल्ली की सारी सरकार इनके सामने जवाब देने के लिए बैठी है और इनकी नेता- प्रतिपक्ष और सारे विधायक यहां से गायब हैं, यह शर्म की बात है। आप लोगों ने,

....व्यवधान....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: मैं प्रदूषण की बात कर रहा हूं। मैं आपके जवाब की बात कर रहा हूं श्रीमान..

.....व्यवधान.....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: श्रीमान जो आप कह रहे थे उसी का जवाब दे रहा हूं। श्रीमान, अध्यक्ष जी, अभी मैं सुन रहा था गोपाल राय जी कह रहे थे जब हम वंदे मातरम पर हमारे विधायक महोदय ने अपना वक्तव्य रखा तो इन्होंने बड़ी अच्छी बात कही, इन्होंने कहा वंदे मातरम बहुत जरूरी है, वंदे मातरम कहां से शुरू हुआ और इन्होंने कहा कि कोई चीज जानने के लिए उसके अतीत में जाना बड़ा जरूरी है। ये हमें 1957 में ले गए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: 1857 में।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: 1857 के गदर में ले गए और इन्होंने कहा कि जब तक तुम अतीत में नहीं जाओगे तो आज का प्रेजेंट ठीक नहीं कर सकते। तो मैं आपका धन्यवाद करता हूं। तो आज हम आपके पहले अतीत में जाएंगे और आपके अतीत को हमारे पर्यावरण मंत्री ने बड़े विस्तार से आपके अतीत को बताया और आपके अतीत को आपने सुना और उन्होंने आने वाला भविष्य भी आपको बताया कि हमारी सरकार की क्या योजना है। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि यह पार्टी देश भक्तों की पार्टी है। यह पार्टी जो है आज्ञाकारी पार्टी है। आप लोग शायद नहीं जान पाओगे कि

जितने करोड़ों रुपए आपने दिल्ली के पॉल्यूशन को ठीक करने की बजाय जो विज्ञापनों पर खर्च करे, हमारी मुख्यमंत्री ने शपथ लेने के तुरंत बाद यह कहा था कि दिल्ली में कोई भी विधायक अपना पोस्टर नहीं लगाएगा। आज हमने, आप विज्ञापनों की बात छोड़ो, हमने अपने पोस्टर भी बैन कर दिए, यह कोई छोटी मोटी बात नहीं है। अध्यक्ष जी,

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: शांत रहिये।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: शांत रहिये, शांत रहिये।

....व्यवधान....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: इसका मतलब, इसका मतलब आपको समझ में आ गई अतीत इसलिए निकल लिए आप भी। चलो, चलो अब कोई नहीं पांच रह गए, छह रह गए, पांच रह गए। दिल्ली के अंदर हमारी मुख्यमंत्री जी ने जो कार्य किए गए उन्हें देखने के लिए इन्हें सबसे पहले विपक्ष को अपने तानाशाह नेता केजरीवाल का चश्मा उतारना पड़ेगा। उसका चश्मा जब आपके ऊपर से उतरेगा तो आप सच्चाई जान सकते हो। मैं पूछना चाहता हूं क्या कहना चाहते हैं आप, हम हिंदू लोग दिल्ली के अंदर दिवाली मनाना बंद कर दें? आप क्या कहना चाहते हैं, हम हिंदू लोग दुर्गा पूजा बंद कर दें, आप क्या चाहते हैं? हम जमुना मैया के ऊपर दिल्ली के अंदर जो छठ मनाते हैं वो बंद कर दें? वो कभी बंद नहीं होंगे। मैं इसलिए बताना चाहता हूं क्योंकि आपने हवाला दिया। आपके सदस्य ने यह कहा,

.....व्यवधान....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: नहीं। मैं आपके बिहाफ पर भी बात कर रहा हूं।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बैठिये। आप समय ...

....व्यवधान.....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: मैं आपके बिहाफ पर भी बात कर रहा हूं। आपको सुनना पड़ेगा।

....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बात पूरी करने दो ना उनको अपनी।

....व्यवधान.....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: आपको यह बात इसलिए सुननी पड़ेगी,

.....व्यवधान.....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे सुनो। आप बोलिये, बोलिये।

....व्यवधान....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: क्योंकि आपने, आपने दिल्ली के अंदर, आपने दिल्ली में, आपने हमारे राम के दिवाली को चलेंज किया। आपने हमारे त्यौहार को चैलेंज किया यहां बैठकर।

....व्यवधान....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: आपने बोला। आपने बोला। अध्यक्ष जी,

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे शांति रखिए। जब आप बोल रहे थे मैंने चुप कराया न सबको। मगर अब बैठिये अब आप। बोलिए आप।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: मेरी मुख्यमंत्री यह नेतृत्व जो है उनके लिए एक पद नहीं है, यह उनके लिए कर्म है और दिल्ली उनकी कर्मभूमि है। हमारी मुख्यमंत्री, हमारे मंत्री, हमारे जल मंत्री, हमारे शिक्षा मंत्री, हमारे जो है स्वास्थ्य मंत्री, पर्यावरण मंत्री 24 घंटे में से दिल्ली के पर्यावरण को लेकर और दिल्ली की समस्याओं को लेकर दिल्ली दिन के अंदर 24 में से 20-20 घंटे 18-18 घंटे काम करते हैं। सर, यह महत्व उसकी वजह यह है इन्होंने तीन दिन हमारे खराब करे हैं। At least I should tell them के आज इनको यह पता होना चाहिए कि हम पर्यावरण से भाग नहीं रहे हैं। हां ये कड़वा सच है, यह कड़वा सच है, दिल्ली में पोल्यूशन है। दिल्ली में पोल्यूशन है, यह कड़वा सच है लेकिन इसको पैदा करने वाले आप लोग थे क्योंकि जब भी हमारे मोदी जी ने आपको सहायता देने की कोशिश करी तो आपको लगा कि दिल्ली में अगर पोल्यूशन मोदी जी ने कोई योजना बनाई है, कोई योजना आपको दे रहे हैं तो वो क्रेडिट चला जाएगा मोदी जी को, आप वो होने नहीं देना चाहते थे। आपने दिल्ली को बर्बाद किया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: घड़ी देखो आप।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: आपने सर आज दिल्ली के अंदर अब मैं बात करता हूं इनके ये जो हमारी मुख्यमंत्री जी के बारे में है तो अब आप अपने नेता के बारे में भी सुन लें। आप लोग यह कहते थे के दिल्ली को देश बनाना चाहते हैं। ये 'आप' के जो नेता हैं उनकी फिसलती हुई जबान है। आप कहते थे, आपका नेता केजरीवाल कहता था देश को आजादी के साल भूले।

.....(व्यवधान)....

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: आपके, नहीं नहीं मैं बता रहा हूं आपको। आपको यह बताना जरूरी है क्योंकि आपके नेता कहते थे 75 साल की जगह 175 वर्ष की.... आपके नेता कहते थे बैल से दूध निकाल लेंगे, ये थे आपके मुख्यमंत्री।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: वो बैल से दूध निकालने में लगे रहे दिल्ली के पोलुशन को दूर नहीं कर रहे थे। आपके नेताओं ने कहा स्कूलों में इलाज करवाएंगे। वो भूल गए स्कूलों में शिक्षा मिलती है। आप हमारी मुख्यमंत्री के बारे में 15 अगस्त के दिन 26 जनवरी का भाषण देते थे वो, ये थे आपके मुख्यमंत्री।

(समय की घंटी)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद, माननीय सदस्य..

श्री सूर्य प्रकाश खत्री: सर एक लास्ट।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, नहीं, हो गई बात। माननीय सदस्य तरविन्दर मारवाह जी। बैठिये।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: अध्यक्ष जी, आपने समय दिया लेकिन मेरे को लगता है मुझे मजा नहीं आएगा बोलने में।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं पांच मिनट।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: क्योंकि वो समय नहीं है ये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं-नहीं आप शुरू करो बस पांच मिनट में खत्म करो।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: नहीं, मैं उसी बात पर आ रहा हूं। अध्यक्ष जी, आपने बार-बार कहा कि 2 तारीख को फैसला हो गया था कि प्रदूषण पर चर्चा होगी और 4 घंटे, 5 घंटे होगी। आज भी एक दो सदस्य हैं, एक तो चला ही गया। इनकी आदत भी बनी हुई है। सुबह से देख रहा हूं कभी जा रहे हैं, कभी आ रहे हैं, कभी आ रहे हैं क्योंकि इनका मन लग ही नहीं रहा। हां, या तो वहां बैठा पंजाब में सूचना दे रहा होगा। मतलब अध्यक्ष जी ऐसी क्या बात हो गई थी और सबसे बड़ी बात जो है मेरे को लगता है मेरी मुख्यमंत्री से रेखा गुप्ता जी से जो XXXXXX[2] वह डरती है क्योंकि आज

---

[2] चिन्हित शब्द माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से हटाए गए।

वह नजर भी नहीं आ रही। देखो ना नजर नहीं, कितना शोर मचा के गई थी यहां। कितना शोर मचाया अध्यक्ष जी।

...(व्यवधान)....

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: अध्यक्ष जी, अरे क्या बात करता है बैठ जा, अरे बैठ कर। जैसे जैसे XXX2 लगती है वैसे ही बात कर रहा हूं। चल चल खड़ा हो जा। बैठ जा बैठ जा।

...(व्यवधान)....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिये।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: अध्यक्ष जी।

....(व्यवधान)....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, नहीं कोई नाम नहीं लिया है। जुमला बोला है, जुमला। क्या बोला है आपने।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: जुमला जुमला जुमला इसको कान साफ कराएं। जुमलावली, जुमला बोला।

...(व्यवधान)....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं शब्द क्या है क्या शब्द है। कोई नहीं, जो भी कहा, नहीं कहा आप शब्द निकाल दीजिए चलिए, आगे बढ़िए।

श्री तरविंदर सिंह मारवाह: अध्यक्ष जी, जब एक डिसीजन हो गया और इनके लोग भी वहां पर बैठे थे। यह सारा षड्यंत्र जो रचा गया है, इसके पीछे बहुत बड़ी साजिश है। जैसे मैंने पहले कहा था ना मुझे इनके राज पता है। केजरीवाल के राज पता है कि कहां पैसा छुपाया हुआ है मुझे सब पता है लेकिन बता नहीं रहा। मैंने पहले भी कहा था और जो कांड हुआ था वहां पर आलीशान में वो स्वाति क्या नाम था राज्यसभा, स्वाति मालीवाल उसको कैसे किया गया वह भी राज मुझे पता है। किसके कहने पर किया गया वो भी राज पता है लेकिन मैं यहां पर आप लोगों की शर्म कर रहा हूं कि मैं बता नहीं रहा क्योंकि आपके टाइम में जो हुआ अब हमारे 11 महीने में ऐसा कोई काम नहीं हुआ जिसके पीछे आप बोल सको। प्रदूषण जो है ठीक है हम मानते हैं लेकिन हमारी रेखा गुप्ता सरकार ने, मुख्यमंत्री ने और मंत्री जी सिरसा जी ने जो सब बताया कि किस-किस तरह हम इसको दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। चाहे पेट्रोल हो, पी.यू.सी. का लाइसेंस ना हो, बिना उसके नहीं देंगे। इसी तरह 8 लाख चालान काटे गए हैं। इसी तरह 29 पी.यू.सी. सील किए गए। 157 कर्मचारियों की भर्ती हुई डी.पी.सी.सी. की। 200 ज्यादा पद खाली पड़े हुए थे और 10,000

एकड़ जमीन को जंगल और कृषि जो वन है उसको अनाउंसमेंट किया गया और वन विभाग की तरफ से अभी एक सदस्य ने कहा था 5 करोड़ पेड़ लगा दिए गए हैं, उस वक्त लगाए गए। 5 करोड़, 5 करोड़ का मतलब अगर पेड़ लग जाते तो समझ लो दिल्ली में गाड़ियां चलाने की जगह नहीं होती। झूठ पे झूठ, आर.डब्ल्यू.ए. को 10,000 हीटर बांटे गए। लेकिन मैं एक बात कह रहा हूं कि हीटर बिल्कुल सही जगह गए RWA के थ्रू और एमएलए की इंक्लूडिंग के साथ। और सबसे बड़ी बात मैं मुख्यमंत्री का धन्यवाद करता हूं, आभार प्रकट करता हूं जो मदन लाल खुराना जी का, साहिब सिंह वर्मा जी का जो सपना था वो मुख्यमंत्री आज पूरा कर रही है कि मेट्रो का विस्तार 9000 करोड़ रुपया मेट्रो को देने की बात कही है। उसके बाद साहिब सिंह वर्मा जी ने कितना बड़ा काम किया उस वक्त जो इंडस्ट्री एरिया बने हैं आज दिल्ली में वो साहिब सिंह वर्मा जी की देन थी, उनकी सोच थी। कोर्ट में से जाकर आर्डर लेकर आए चाहे वो रोहिणी हो, चाहे बवाना हो और जो इंडस्ट्री एरिया एक और बना है मनोली और सबसे बड़ी बात है रेखा गुप्ता जी भगवान को मानते हैं, राम को मानते हैं, सभी धर्मों को मानते हैं। उन्होंने आते ही यमुना का, आप लोगों ने क्या किया, बिहारी लोगों को बाहर का समझ के छठ पूजा वहां बंद करा दी। लेकिन बहुत बड़ा डिसीजन मुख्यमंत्री जी ने लिया। उन्होंने कहा चाहे कुछ हो जाए हम छठ पूजा में यमुना में जो महिलाओं को है वह स्नान करेंगी और छठ पूजा मनाएंगी। ये किसकी देन है, रेखा गुप्ता जी की देन है। इसी तरह दिवाली पर अभी कादियान तो जाट है हमारा, तगड़ा जाट है लेकिन कभी-कभी इनके बाकियों के चक्रव्यूह में फंस जाता है । दिवाली हमारे लिए पवित्र है। दिवाली रेखा गुप्ता जी ने मना के दिल्ली में एक नया इतिहास लिख दिया इससे बड़ी बात क्या है।

.....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: देख मैं बोलता नहीं हूं। झगड़ा करता हूं सीधा-सीधा। बोलना नहीं है बस पहले कह रहा हूं। हां मैं पहले कह रहा हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: तो और उन्होंने प्रण किया है मुख्यमंत्री जी ने और प्रवेश वर्मा जी ने और आशीष सूद जी ने सिरसा जी ने और मेरे भाई जो मंत्री हैं इनका नाम थोड़ा भूल जाता हूं मैं, नहीं नहीं इंद्र इंद्र इंद्रजी रविंद्र जी क्या है और पंकज, पंकज तो हमेशा हंसता ही रहता है, तो इन्होंने प्रण किया है कि हम जब तक और आज बहुत बड़ी बात मेरे खत्री भाई ने कही मुख्यमंत्री के लिए मैं उसको भी रिपीट एक बार करूंगा कि जो मेनिफेस्टो भारतीय जनता पार्टी का है रेखा

गुप्ता जी ने कहा है मैं एक-एक उस पर काम करूंगी, इससे बडी बात क्या हो सकती है और उन्होंने जब कर्जे बता दिए इनको पता ही नहीं अभी तो मैडम ने कम बताए हैं, हेल्थ का नहीं बताया, ट्रांसपोर्ट का नहीं बताया अभी तो आपने ये तो 80-90 लाख एक लाख करोड़ पे कर्जे पे डूबा के गए हैं सरकार को।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: अरे दो मिनट और दो पहले तो आपके बारे में।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: हो गये नहीं-नहीं, अब आपको बैठना होगा, देखिये आठ मिनट हो गये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: पहले तो मैं आपके बारे में बोला हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आठ मिनट हो गये आपको देखिये कितना मैं आपको कितना कॉपरेट करूं।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: पहले तो आपकी पैरवी की है मैंने तीन मिनट।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं मेरी पैरवी मत करो।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: ना-ना-ना पैरवी की है मैंने, हां।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मुद्दे पर बात करो।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: तो यह अब मैं दो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अभी एक महत्वपूर्ण मामला है वो मुझे बात करनी पड़ेगी यहां पहले ना।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: अब कि मैं बोलना नहीं चाहता था आपने जबरदस्ती बुला दिया, हां पहले कह रहा हूं। अब मैं दो जो लिख के लाया हूं बड़ी मेहनत की है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मेहरबानी का ये फल मिल रहा है।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह: चलो आज एक कसम खाएं हम, हां जी ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए बस धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाह:

''चलो आज एक कसम खाएं हम
सब मिलकर धरती को फिर से जीने लायक बनाए हम,
नदियां भी अब आईना देखने से डरती हैं,

जहर पीकर भी हमें जिंदगी देती है।''

अध्यक्ष जी आपने धन्यवाद किया लेकिन मेरे को समय दिया करो तो टाइम से, ये नहीं चलेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः कल आपको बीस, बीस मिनट बुलवाया था, बहुत अच्छा बोले थे आप।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः उनकी, उनकी नाकामी से, नहीं अध्यक्ष जी उनकी नाकामी से हम नहीं बोल पाए आज।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः नहीं ठीक है।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः हम नहीं, अगर चार घंटे बोलते, चार घंटे देते, तो हम आधा-आधा, बीस-बीस मिनट।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः बिल्कुल अगर, अगर ये कॉपरेट करते तो, सही कह रहे हैं।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः नहीं,ये नहीं, आपने उन पर कार्रवाई भी करनी है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद। अब माननीय सदस्य श्री गोपाल राय।

श्री वीर सिंह धिंगानः अध्यक्ष जी दो मिनट दे

....व्यवधान....

श्री अभय वर्मा, चीफ व्हिपः अध्यक्ष जी एक विषय है मेरे को रखना है।

श्री वीर सिंह धिंगानः सर मुझे भी दे दो ना।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः जी। एक मिनट,एक मिनट रूक जाईये।

<u>ध्यानाकर्षण</u>

श्री अभय वर्मा, चीफ व्हिपः अभी तुरंत एक रिपोर्ट मिली है कि पंजाब में जालंधर पुलिस ने एक एफ.आई.आर. दर्ज करी है कपिल मिश्रा जी जो ऑनरेबल मिनिस्टर हैं और हवाला यह है कि उनको टेप भी मिल गया जबकि यह सारा मामला हाउस के पास है। अभी हाउस के माध्यम से आपने फॉरेंसिक लैब में क्लिप भेजा भी है और जो मेरे पास ये रिपोर्ट आया है इसमें यह पता चल रहा है कि फॉरेंसिक लैब में जांच भी करा के और एफआईआर दर्ज करके कोई वहां का है व्यक्ति मतलब मेरे को यह नहीं समझ में आ रहा है कि यह जो इशू हाउस का है जिस इशू पे हाउस संज्ञान ले चुका है और यह मामला मेंबरों का है इसको पंजाब पुलिस से एफ.ई.आर दर्ज करा के एक जो प्रेशर बनाने का...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये जो विषय यहां पर संज्ञान में लाया गया है अभय वर्मा जी द्वारा ये इस सदन की ब्रीच का ब्रीच ऑफ प्रिविलेज का मामला है क्योंकि वह वीडियो इस सदन की है और उस पर इस तरह से एफआईआर lodge करना मंत्री के खिलाफ और conspiracy करना पुलिस के लेवल पे यह गंभीर मामला है और मैं इसकी कड़े शब्दों में निंदा करता हूं कि यह जिस तरह की स्थितियां सामने आई हैं ये श्री इकबाल सिंह जो।

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हिप): नहीं इकबाल सिंह के अलावा पुलिस कमिश्नर को यहां बुलाना चाहिए। पंजाब पुलिस कमिश्नर को बुलाना चाहिए।

....व्यवधान....

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हिप): ये सीधे-सीधे हाउस के खिलाफ ये।

....व्यवधान....

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हिप): बिल्कुल उसको अभी बिल्कुल।

....व्यवधान....

श्री हरीश खुराना: ये तो गुंडागर्दी है सर।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये जालंधर पुलिस कमिश्नर जो है उनके खिलाफ यह ब्रीच ऑफ़ प्रिविलेज का मामला बनता है सीधा तौर पे क्योंकि उन्होंने इस सदन की वीडियो के बारे में।

श्री अभय वर्मा(चीफ व्हिप): सदन के अंदर का वीडियो है अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सदन के अंदर का वीडियो है, सदन की ही रिकॉर्डिंग है, किसी और की रिकॉर्डिंग नहीं हो सकती यहां पर।

श्री अभय वर्मा(चीफ व्हिप): और दिल्ली विधानसभा से बिना कॉन्टैक्ट किये कैसे ये।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: तो ये किस तरह से, किस आधार पे यह जो दर्ज किया गया है इस पे सदन जो है संज्ञान ले और पुलिस कमिश्नर जालंधर के खिलाफ जो है यह सदन कार्रवाई करता है क्योंकि उन्होंने जिस तरह से इस सदन की प्रॉपर्टी के साथ छेड़खानी की है जो यह काम यह सदन कर रहा है, यह लोकतंत्र के मंदिर ने जो निर्णय लिया फॉरेंसिक साइंस पे और लैब को गया और वह विपक्ष की मांग पर गया है। उसके बाद यह इस तरह से एक मंत्री को दिल्ली सरकार के इस तरह से indulge करना फेक और malafide intention से, मैं इसकी कड़े शब्दों में निंदा करता हूं और जालंधर पुलिस कमिश्नर के खिलाफ सदन जो है कॉग्निजेंस ले रहा है।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: जी, और उनके खिलाफ ब्रीच ऑफ़ प्रिविलेज का सीधा मामला ये बनता है कि उन्होंने और इससे संबंधित जो भी लोग उसमें इनवॉल्व हैं सबकी जांच होगी। चलिए अब आगे।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : फिर एक बार मैं आपको स्पष्ट कर दूं यह वीडियो क्लिप इस सदन की प्रॉपर्टी है। सदन में रिकॉर्डिंग हुई है, इसका कॉग्निजेंस सदन लेगा। विपक्ष की मांग पर सिर्फ उनकी तसल्ली करने के लिए हमने फॉरेंसिक साइंस को भेजा है। रिकॉर्डिंग तो सदन की है, उसको कैसे आप कह सकते हैं टैम्पर्ड हुई है। यह टैम्पर्ड कहना सदन की मर्यादा के खिलाफ यह कदम उठाया गया है और इस कांस्परेसी में जो भी लोग इन्वॉल्व हैं उनके खिलाफ यह सदन सख्त कारवाई करेगा ।

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हिप): अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : चलिए।

श्री अभय वर्मा(चीफ व्हिप): अध्यक्ष जी जो मसला आपने प्रिविलेज कमेटी को भेजा है, यह जो एक्ट हुआ है पंजाब पुलिस के द्वारा वो मसला भी आप उस कमेटी के पास भेज दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष : यही तो, यही तो भेजा है।

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हिप): मैं प्रस्ताव, यही तो प्रस्ताव हां इसको प्रस्ताव मैं कर रहा हूं कि इसको भी वहां भेज दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आपने मामला उठाया है, सदन ने कॉग्निजेंस ले लिया है। सारी चीजें हमारे सामने आ गई है, लिखित में आ गई है। पूरा रिपोर्ट हमारे पास आ गई है, आपके माध्यम से ही आई है। "A spokesperson of the Jalandhar Police Commissionerate stated here today that the FIR has been registered on a complaint of Sh. Iqbal Singh regarding uploading and circulating an edited and doctored video of Ms. Atishi, MLA LOP, Delhi Vidhan Sabha, several social media posts containing a short video." तो यह सारा इसमें आ गया हमारे पास, इसके खिलाफ हमने पूरी कार्रवाई कर दी है।

श्री अभय वर्मा(चीफ व्हिप): ठीक है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए अब माननीय सदस्य श्री गोपाल राय जी।

श्री वीर सिंह धिंगान: सर मैंने ...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः आप, सदन में अगर इजाजत है तो, चलिए।

श्री वीर सिंह धिंगान: अध्यक्ष जी आपका विशेष तौर पर मैं धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे इस मुद्दे पर बोलने का समय दिया। मैं बहुत इधर-उधर की बात करना नहीं चाहता। मैं थोड़ी सी मेरी एक बात थी एक मिनट की मैं आपके और माननीय मुख्यमंत्री जी के, सरकार के संज्ञान में लाना चाहता था। हालांकि स्थिति अखबारों से साफ है कि प्रदूषण की जो हालत है आज की डेट में वो सही नहीं है, वो तो खतरनाक है इसमें कोई दो राय नहीं है सरकार माने ना माने इसकी कोई बात नहीं है। अखबार कह रहे हैं कोर्ट कह रहा है। मैं आपके और आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी के संज्ञान में एक चीज लाना चाहता हूं कि दिल्ली नगर निगम में सफाई का कार्य प्रदूषण के लिए, दिल्ली के लिए महत्वपूर्ण है और दिल्ली में 1990 में सफाई कर्मचारियों की भर्ती हुई थी। 35-36 साल के बाद आज तक वहां किसी एक कर्मचारी की भर्ती नहीं हुई है। उस 35-36 साल में बहुत हजारों लोग।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः ठीक है आगे आपका है।

श्री वीर सिंह धिंगान: मर भी गए हैं और हजारों लोग रिटायर भी हो गए हैं। एक-एक कर्मचारी से तीन-तीन।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः आप लिखकर दे दीजियेगा मामला नगर निगम का है यहां का नहीं है।

श्री वीर सिंह धिंगान: तीन-तीन लोगों का काम लिया जा रहा है। अन्य बातों के अलावा यह भी महत्वपूर्ण है। इसलिए मैं संज्ञान में लाना चाहता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी मेरे एरिया में गई थीं। मैंने समझा था कि प्रदूषण अभी खत्म हो जाएगा मेरे एरिया से लेकिन मैं माननीय मैडम को बताना चाहता हूं कि प्रदूषण का जो लेवल है आपके जाने के बाद, आप उद्घाटन करके आईं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री गोपाल राय जी।

श्री वीर सिंह धिंगानः ...अस्पताल में गई दो तीन बार लेकिन प्रदूषण की हालत जो है ना वो और ज्यादा बिगड़ गई है मैं आपको ये कहना चाहता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः आपने कह दिया रिपीट कर रहे हो अब आप।

श्री वीर सिंह धिंगान: आपसे प्रार्थना है इस पे संज्ञान ले आप।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः आपका विषय आ गया।

श्री वीर सिंह धिंगान: और दिल्ली के लोगों को संभालने की, उन्हें बीमारी से बचाने की आप कोशिश करें। हर 10वें में से तीन आदमी जो मर रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है धन्यवाद।

श्री वीर सिंह धिंगान: वो पोल्युशन से मर रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद।

श्री वीर सिंह धिंगान: बच्चे जो जो सिगरेट-बीडी नहीं पीते लोग उनके भी फेफड़े खराब हो रहे हैं। अध्यक्ष जी ये गंभीर मामला है। आपने बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद। एक बात के लिए और आपका धन्यवाद करता हूं कि आज आपने वंदे मातरम् को 150वें साल पूरे होने पर जो यहां पूरा गीत जो है सदन में उठाने के लिए जो आपने बात कही इसकी व्यवस्था दी है, उसके लिए भी मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूं, जय हिंद।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: थैंक यू, थैंक यू। माननीय सदस्य श्री गोपाल राय जी।

श्री गोपाल राय: माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने कहा कि सदन के अंदर कार्रवाई को लेकर के जब कमेटी की बैठक हुई थी उस बैठक में प्रदूषण पर चर्चा करने का निर्णय हुआ था लेकिन 05 तारीख से सदन शुरू हुआ और आज हम सदन के समाप्ति के आखिरी चरण में इस प्रदूषण पर चर्चा कर रहे हैं।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलो जो भी कारण रहे 7 तारीख तय हुआ था क्योंकि विवाद यहां चल रहा था तो अब एक दिन इसलिए बढ़ाया है। कोई एक्सीडेंट भी तो हो जाता है ना, पर चर्चा तो हो ही रही है। आप आगे चलिए, शुरू करिए।

श्री गोपाल राय: मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि ''बहुत देर से दर पे आंखें लगी थी हुजूर आते-आते बहुत देर कर दी,'' धीरे-धीरे 08:00 बजने जा रहा है और सारे हमारे सदस्यों को इस प्रदूषण की चर्चा के लिए इंतजार करते-करते आखिरी क्षण मिला। लेकिन मैं आपका इस तहे दिल से धन्यवाद करना चाहता हूं कि आज कम से कम जाते जाते प्रदूषण पर चर्चा करने का आपने समय दिया। अध्यक्ष महोदय माननीय पर्यावरण मंत्री जी ने काफी लंबा चौड़ा वाचन किया। सदन में होते तो ज्यादा अच्छा होता लेकिन जहां भी होंगे किसी जरूरी वजह से ही अपना वक्तव्य रख के चले गए होंगे अगर होते तो ज्यादा अच्छा होता। जहां भी होंगे...

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे एक मिनट आप शांत रहिए ना। हर बात में बोलना जरूरी नहीं होता।

श्री गोपाल राय: आप सब ने बोला, मैंने कुछ नहीं बोला। आप जब बोलोगे मैं चुप हो जाऊंगा। पर्यावरण मंत्री जी ने जब प्रस्ताव रखा है तो प्रस्ताव रखने के बाद पर्यावरण मंत्री जी की जिम्मेदारी है कि सभी सदस्यों की बात को सुनें, लेकिन हमें उम्मीद है कि जहां भी होंगे सुन रहे होंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं पर्यावरण मंत्री जी ने बहुत सारे ऐतिहासिक, बहुत सारे तात्कालिक और बहुत सारे भविष्य की कार्य योजनाओं के बारे में वाचन किया, पढ़ा। अध्यक्ष महोदय, लेकिन वह कई जगहों पर उन जरूरी तथ्यों को, जरूरी बातों को रखना या तो जानबूझकर के इग्नोर किए या फिर अधिकारियों ने जो लिख करके दिया था उन्होंने उसको पढ़ दिया। अध्यक्ष महोदय इस सरकार के दौरान सबसे जो जोर शोर से अनाउंसमेंट हुआ था दिल्ली के अंदर प्रदूषण कम करने के लिए आर्टिफिशियल रेन कराया जाए। मैं जानना चाहता हूं सदन के माध्यम से पर्यावरण मंत्री जी ने अपने पूरे वक्तव्य के दौरान आर्टिफिशियल रेन के बारे में चर्चा करना क्यों नहीं उचित समझा? हमने तो नहीं कराया था। आपकी सरकार ने कहा, आपकी सरकार ने किया। लेकिन पूरे वक्तव्य में पर्यावरण मंत्री के वक्तव्य से आर्टिफिशियल रेन क्यों फेल हुआ? कितना पैसा खर्च हुआ? आगे के लिए क्या कार्य योजना है? पर्यावरण मंत्री जी के पूरे वक्तव्य में इतने बड़े दस्तावेज मेरे ख्याल से आधे घंटे से ज्यादा वक्तव्य पर्यावरण मंत्री ने दिया लेकिन आर्टिफिशियल रेन के फेल के बारे में मौन हो गए। अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं। कई माननीय सदस्यों ने अपनी बात इस सदन पटल पर रखी। कई बार रखी कि दिल्ली के अंदर माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर स्मार्ट टावर बनाया आम आदमी पार्टी की सरकार ने और वह बंद हो गया। पैसे खा लिए, पैसे गायब हो गए, विज्ञापन पर खर्च हो गए। माननीय अध्यक्ष महोदय, जिम्मेदारी के साथ इस सदन पटल पर रखना चाहता हूं, सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर इस दिल्ली के अंदर दो smog tower बनाए गए। सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को एक smog tower बनाने का निर्णय दिया जो आनंद विहार में स्थापित किया गया। सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली सरकार को भी smog tower बनाने का निर्णय दिया और वो जो है क्नाट प्लेस में स्थापित किया गया। यह कैसे हो सकता है कि दिल्ली के पर्यावरण मंत्री को यह नहीं पता कि एक smog tower लगाया गया क्नाट प्लेस में और आनंद विहार का smog tower नक्शे से गायब हो गया। जितना पैसा आनंद विहार के smog tower में खर्च हुआ उतना ही पैसा क्नाट

प्लेस के smog tower में खर्च हुआ। उसी एजेंसी ने, केंद्र सरकार की एजेंसी ने ही आनंद विहार का भी smog tower बनाया। उसी एजेंसी ने ही क्नाट प्लेस का smog tower बनाया। अध्यक्ष महोदय बात होनी चाहिए तो पूरी होनी चाहिए। आप एक smog tower का इतिहास बता रहे हो और दूसरे smog tower का आपके वक्तव्य से वो गायब हो जाता है। आपके अधिकारियों ने नहीं बताया। कभी आप आनंद विहार नहीं गए। जहां पर वहां मॉनिटरिंग स्टेशन लगा है उसी के सामने smog tower केंद्र सरकार ने बनाया। अध्यक्ष महोदय मैं तीसरी बात आपसे कहना चाहता हूं। प्रदूषण की समस्या एक जिम्मेदार समस्या है। यह केवल अरविंद केजरीवाल को गाली देकर के नहीं खत्म हो सकती। मैं जिम्मेदारी से कहना चाहता हूं माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा हमारे ऊपर व्यक्तिगत टिप्पणी होती है और दर्द होता है। किसी के ऊपर भी व्यक्तिगत टिप्पणी होती है तो दर्द होता है। अगर आप सरकार बनने के बाद आप एक बार कभी इस रिकॉर्डिंग की ऑडिट करवाना जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है और सदन में माननीय सभी सदस्य आए हैं, चुन करके आए हैं, सभी सम्मानित सदस्य हैं। लेकिन अगर पांच बार मोदी जी का आपने नाम लिया होगा तो 50 बार केजरीवाल को गाली दिया होगा। इससे समस्या का समाधान नहीं होगा अध्यक्ष महोदय। मुख्यमंत्री कोई भी हो अभी माननीय हमारे सदस्य चले गए। जिस तरह के शब्द का एक पूर्व मुख्यमंत्री के बारे में उन्होंने उपयोग किया वो शब्द दोबारा दोहराया नहीं जा सकता। मेरा आपसे कहना है कि आप जो भी प्रश्न है, जो भी मुद्दा है, जो भी बात है, जो भी डाटा है, आप रखिए लेकिन इस तरह से व्यक्तिगत टिप्पणी जब आप किसी के बारे में करते हैं तो दर्द होता है।

.........व्यवधान.......

श्री गोपाल राय: माननीय अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर, सिरसा जी होते तो मैं उनसे जरूर पूछता। केंद्र सरकार का आंकड़ा, देश के पार्लियामेंट्री कमेटी का आंकड़ा, C.A.Q.M. का आंकड़ा, सी.पी.सी.बी. का आंकड़ा, डी.पी.सी.सी. का आंकड़ा और दिल्ली सरकार का आंकड़ा सारा उनके मंत्रालय के पास मौजूद है। उन्होंने आधा आंकड़ा पढ़ के बताया। मैं होते तो उनसे मैं पूछता कि 2016 में इसी दिल्ली के अंदर जो गुड और सेटिस्फेक्टरी डेट होते थे उसकी संख्या केवल 109 दिन थी ऑन रिकॉर्ड है। और माननीय किसी भी सदस्य से कहना चाहता हूं किसी को कंफ्यूजन होगा आप जाकर के चेक कर लेना। 2016 में सेटिस्फेक्टरी और गुड डे की संख्या केवल 109 थी। 2018 में हमें 209 तक पहुंचाया है। वह हवा में नहीं हुआ है। मैं हवाबाजी नहीं करता, आंकड़े की बात कर रहा हूं। अगर मंत्री जी होते तो मैं उनसे क्रॉस चेक कर देता। आप एक बार क्रॉस चेक कर लेना।

2016 का आंकड़ा नोट कर लो और 2018 का आंकड़ा नोट कर लो। 2016 में 109 दिन थे गुड और सेटिस्फेक्टरी डे के और 2018 में 209 दिन तक 100 दिनों की बढ़ोतरी हमारी सरकार ने किया है।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: माननीय गोपाल राय जी, जैसे बात कर रहे हैं ऐसा लग रहा है कि 100 चूहे खा के बिल्ली हज को चली। ये 11 साल ! यह जब अरे सुन लो भाई ...

श्री विजेन्द्र गुप्ता माननीय अध्यक्ष: कोई नहीं कोई नहीं , मैं उनको और एक्स्ट्रा समय दूंगा..

.........व्यवधान.......

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: यह पिछली सरकार में पर्यावरण मंत्री थे

.........व्यवधान.......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैं उनको एक्स्ट्रा समय दे दूंगा मैं उनको एक्स्ट्रा समय दे दूंगा कोई बात नहीं ...

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: अरे एक सेकंड सुन तो लो इनका समय हो चुका है उसके बाद बोल रहा हूं 7 मिनट उनके पूरे हो गए भई

....व्यवधान....

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: ये पिछली सरकार में पर्यावरण मंत्री थे हाउस के पहले दिन ये बड़ा-बड़ा मास्क पहन के आए थे। यहां पर ये बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं। मैं इनसे पूछना चाहता हूं दिल्ली में प्रदूषण को खत्म करने के लिए आपने किए हुए अपने पांच कामों के बारे में बता दीजिए। पांच काम। आपने प्रदूषण खत्म करने के लिए दिल्ली में अपने किए हुए पांच कामों के बारे में बता दीजिए, आपने क्या किया?

श्री गोपाल राय: मैं सम्मानीय मंत्री जी मैं 10 काम बता देता हूं। 1 सेकंड, 1 सेकंड, 1 सेकंड।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बस शॉर्ट रखना पड़ेगा।

श्री गोपाल राय: अब अध्यक्ष जी अब हमें तो बोलने नहीं दिया जा रहा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं हमने आपको देखो, नहीं मैं आपको मना नहीं कर रहा।

श्री गोपाल राय: आप मना करोगे मैं माइक।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: मैं नहीं मना कर रहा आपको। मैं समय दे रहा हूं। मैंने कहा ऑलरेडी पौने नौ मिनट हो चुके हैं। आप बोलिए। मैंने इतना ही कहा है। मैंने ये नहीं कहा मत बोलिए। मैं तो आपको मैंने खुद कहा।

श्री गोपाल राय: आप बता दो कितने मिनट बोलना है उतना बोल दूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं आप जितना कम से कम समय में।

श्री गोपाल राय: जब मैं बोल रहा हूं और बार-बार मतलब उनके पर्यावरण मंत्री जी बोले मैंने एक बार नहीं बोला। कितना बड़ा परखच्चा सुना हमने?

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए हम ये है कि नेता...

श्री गोपाल राय: जब बोल रहा हूं तो आपके 10 सदस्य बोल चुके। मैं कह रहा हूं आपने बंद कर दिया माइक, मैं ये काम नहीं करता। बोलने दोगे बोलूंगा।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: आपका समय हो गया। अरे मत करो भई। कोई एहसान थोड़े ही ना कर रहे हो हम पे। मतलब आप अगर नहीं बोल रहे, एहसान थोड़े ही ना कर रहे हो।

श्री गोपाल राय: नहीं, तो नहीं बोल रहे भाई।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: हां तो ठीक है मत बोलिए। बस ठीक है खत्म हो गई बात। भाई आपने कोई काम किया नहीं वो बताइए आपने क्या काम किया। कोई बोलेगा, मैं चुप हो जाऊंगा। मैं माइक बंद कर दूंगा, तो कर दीजिए।

श्री गोपाल राय: आपमें से किसी को सुनने की क्षमता नहीं है।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: तो कर दीजिए बंद। अरे तो कर दीजिए। 11 साल में आपने कितनी बार पोल्यूशन पर चर्चा कराई ये बताइये। 11 साल में आपने इस सदन में कितनी बार पोल्यूशन पर चर्चा कराई,

श्री गोपाल राय: सब बताउंगा, सब बताउंगा।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: कितनी बार चर्चा कराई।

श्री गोपाल राय: सारा बताउंगा लेकिन सुनोगे तभी तो बताउंगा।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: एक बार भी चर्चा नहीं कराई। आपका मुख्यमंत्री, आपका मुख्यमंत्री अपना शीश महल बनाकर बैठ गया। वहां पे 20-20 एयर प्यूरिफायर लगा दिया। एक बार भी शीश महल से बाहर नहीं निकला। आप यहां पे आके आप यहां के आके हमको ज्ञान दे रहे। यहां पर बैठ के हमको ज्ञान दे रहे हैं। अगर हम बोलेंगे तो माइक बंद कर दीजिए। कर दीजिए।

डॉ. अजय दत्त: अध्यक्ष जी ऐसे सदन चलेगा क्या?

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: अरे ऐसे ही चलेगा भई। ऐसे चलेगा। क्या किया आपने। यहां पे बकवास कर रहे हो।

डॉ. अजय दत्त: बकवास आप कर रहे हो।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: क्या कर रहे हो आप।

डॉ. अजय दत्त: आपको पता ही नहीं सदन कैसे चलेगा।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: आपने एक बार भी चर्चा नहीं करी पोल्यूशन पर, 11 साल में एक बार भी चर्चा नहीं करी। क्या बात कर रहे हो आप। बकवास कर रहे हो यहां पे बैठ के।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सभी बैठिये। अपना स्थान ग्रहण कीजिये।

श्री परवेश साहिब सिंह, माननीय जल मंत्री: मतलब वो माइक बंद कर देंगे तो कर दो। हम बोल रहे हैं वो माइक, अरे कर दो बंद। कोई हम पे एहसान कर रहे हो। कोई हमारे ऊपर एहसान कर रहे हो।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: बैठिए, बैठिए, बैठिए, बैठिए, बैठिये, बैठिये, बैठिए एक मिनट बैठिये, बैठिए, बैठिये सब लोग बैठिए। चलिए, चलिए कंक्लूड करिए आप फटाफट कंक्लूड करिए। कंक्लूड कर दीजिए। अब भाई देखो ये ऐसे तो ये चलेगा ऐसे फिर सदन खत्म नहीं हो पाएगा। वो कंक्लूड करें बस और फिर आशीष जी तैयार रहें। भई एक मिनट, एक मिनट।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: एक मिनट भई। आपस में बात नहीं करेंगे। आपस में बात नहीं करेंगे। बैठिए। चलिए कंक्लूड करिए।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए बस हो गया। करिए कंक्लूड करिए।

श्री गोपाल राय: माननीय अध्यक्ष महोदय...

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे भाई एक मिनट कंक्लूड करने दो अब एक मिनट की, एक मिनट का समय रह गया। आप उनको 1 मिनट में अपनी बात पूरी करने दो, खत्म करने दो फिर वो आगे शुरू करेंगे क्या दिक्कत है आपको। चलिए।

श्री गोपाल राय: माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मंत्री जी ने कहा सरकार ने क्या काम किया वो बता दीजिए। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर जब हमारी सरकार बनी दिल्ली का ग्रीन कवर 18% था, हमने उसे 23% पहुंचाया है। यह ऑन रिकॉर्ड बात मैं कह रहा हूं। चेक कर लेना आप। आप चेक कर लेना। मैं तो कह रहा हूं मैं जो भी, जो भी आंकड़ा बता रहा हूं लिख लो आप और चेक कर लेना। दूसरा दिल्ली के अंदर जितने कोयले पर चलने वाले थर्मल पावर प्लांट थे हमारी सरकार ने बंद किया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: सबको पता है ना, अभी बोलेंगे मंत्री जी, मुख्यमंत्री जी सब बात हो जायेगी उसमें क्या है। शांति रखिए।

श्री गोपाल राय: मेरे समझ में नहीं आ रहा अध्यक्ष महोदय इतनी बेचैनी क्यों हो रही है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: कोई नहीं आप।

श्री गोपाल राय: अरे सुन तो लो एक बार मुख्यमंत्री जी बोलने वाली हैं हमारे बाद मेरा आखिरी वक्तव्य थोडे ही है। बोल देंगी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: कंक्लूड करिए बस।

श्री गोपाल राय: क्योंकि आप बोलोगे तो मैं नहीं बोलूंगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए खत्म करिए।

श्री गोपाल राय: दिल्ली के अंदर अध्यक्ष महोदय, अभी कई माननीय मंत्री जी ने भी, पर्यावरण मंत्री ने भी, कई सदस्यों ने कहा दिल्ली के अंदर हम ई बसेज ला रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आज से नहीं है। दिल्ली अकेला राज्य नहीं है। दिल्ली के बगल में उत्तर प्रदेश है। दिल्ली के बगल में हरियाणा है। दिल्ली के बगल में राजस्थान है। दिल्ली के बगल में मध्य प्रदेश है। दिल्ली के अंदर पहली बार ई बसें लेकर के आई उसका नाम आम आदमी पार्टी की सरकार है, 2000 बसें लेकर आए हम। उत्तर प्रदेश से पूछो कितनी बसें आई उस दौरान। हरियाणा में पता करना कितनी बसें आईं। राजस्थान में कितनी बसें आईं पता कर लेना। पहली बार ई पॉलिसी लेकर के आई वो आम आदमी पार्टी की सरकार है जहां पर प्राइवेट गाड़ियों पर भी सब्सिडी देकर के ई व्हीकल को प्रमोट किया गया। ये हमारी सरकार ने किया और आज भी जिन बसों को आप गिना रहे हो उन सारे बसों का टेंडर, वर्क आर्डर हमारी सरकार का किया हुआ है, जिसको आप गिना रहे हो। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने कहा क्या किया गिना दो। दिल्ली के अंदर 1,727 पाल्युटेड फैक्ट्रियां थीं। सी.ए.क्यू.एम. ने पूरे देश के अंदर

ये आर्डर दिया था, जहां आपकी सरकारें थीं वहां भी आर्डर दिया था। सीएक्यूएम केंद्र सरकार का सीएक्यूएम है। 1727 जितनी पोल्यूटर फैक्ट्रियां थीं उनको पीएनजी पर चेंज करने का काम किया उसका नाम आम आदमी पार्टी की सरकार है हमने किया है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: थैंक यू जी थैंक यू।

श्री गोपाल राय: अध्यक्ष महोदय जी।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: भाई एक मिनट फिर ऐसे तो पूरा ही नहीं हो पाएगा, वो फिर ये ही रहेगा कि, वो मैं खत्म करवा रहा हूं। आप उनसे सवाल करोगे, फिर वो जवाब देंगे ऐसे थोड़ी ना। वो कह रहे हैं, कुछ भी कहेंगे, आप भी कुछ भी कहेंगे थोड़ी ना वो हो जाएगा। आप अपनी बात कहो, आप अपनी बात कहो। That's all. चलिए खत्म करिये।

श्री गोपाल राय: अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ भी नहीं कहता।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं, नहीं आप खत्म करिए।

श्री गोपाल राय: ऑन रिकॉर्ड कह रहा हूं और मैं चैलेंज के साथ कह रहा हूं। जो कह रहा हूं पर्यावरण मंत्री जी से कहना चेक करके मुझे जवाब जब भी सदन होगा दे देंगे। ऐसे मैं नहीं कुछ कहता। जो बोलता हूं तथ्यों के आधार पर बोलता हूं। जो आंकड़े दे रहा हूं दिल्ली के अंदर 1727 फैक्ट्रियां पीएनजी पर चेंज हमारी सरकार में हुआ या नहीं हुआ उनसे कह देना।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए रिपीट मत करिये ना।

श्री गोपाल राय: अध्यक्ष महोदय 24 घंटे जनरेटर का धुआं जो दिल्ली के अंदर गूंजता था 24 घंटे बिजली की गारंटी हमारी सरकार ने किया। 24 घंटे बिजली की गारंटी करके हमने जनरेटर का धुआं खत्म किया, हमारी सरकार ने किया। ये 109 से 209 दिन ऐसे नहीं हुए अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय अभी पर्यावरण मंत्री जी ने कहा दिल्ली के अंदर हमने पराली जलने की घटनाएं जीरो कर दी, उस पूसा बायो डीकंपोजर को लेकर के हम आए। हमने छिड़काव शुरू किया और वो पूरे उत्तर प्रदेश में गया, हरियाणा में गया, पंजाब में गया और आज पंजाब के अंदर भी 70% पराली कम हुई है।

(समय की घंटी)

श्री गोपाल राय: अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर पहली बार सचिवालय में आप जाते हो एक बार देख लेना। पंकज जी का जो फ्लोर है जो हमारे हमारे केबिन में उनका ऑफिस है अभी उनके

केबिन में पीछे पहली बार दिल्ली के अंदर पोल्यूशन को कंट्रोल करने के लिए वार रूम हमने खोला। 24 घंटे हमने खोला। इन्हीं के फ्लोर पर है। कभी आप टहलते हुए जाना देख लेना।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए ठीक है धन्यवाद।

श्री गोपाल राय: अध्यक्ष महोदय दिल्ली के अंदर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ठीक है। अब एक मिनट, अब गोपाल जी 14 मिनट हो गए।

श्री गोपाल राय: थैंक यू।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद। माननीय मंत्री श्री आशीष सूद जी।

डॉ. अजय दत्त: जो आतिशी जी के खिलाफ.......

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: वो शब्द हमने एक मिनट बैठ जाइए आप, आप, आप चलिए शुरू करिए। बैठ जाइए आप चलिए, उसपे आओ, वह कारवाई, करवा तो दिया है डिलीट।

....व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: हां, हां वो कारवाई से हटा दिया है। चलिए, आप बैठिए, चलिए, चलिए, बैठिए, बैठिए।

...व्यवधान...

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: आदरणीय अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: अरे आप बैठ जाइए ना, मैं आपको निकालूं क्या? आपको जाने का ही शौक है तो मैं करूं आपका इंतजाम।

...व्यवधान...

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: चलिए।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: अध्यक्ष जी।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये पोल्यूशन पे चर्चा कर रहे हैं आप?

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये कमाल है पोल्यूशन पे बात हो रही है।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: अध्यक्ष जी कोई बात नहीं, यहां पोल्यूशन पे चर्चा और खाली बेंचेस दिखने चाहिए, दिल्ली की जनता को पता चलना चाहिए कि असलियत क्या है। मैं आपका बहुत आभार व्यक्त करता हूं कि आपने समय सीमा को लांघ कर पॉल्यूशन पर चर्चा कराई और आपने बहुत अच्छा किया। माननीय गोपाल राय जी को बोलने का समय दिया और मैं तो बहुत गंभीर चर्चा की उम्मीद कर रहा था। मगर जिस प्रकार का lip service का काम पिछले तीन दिन से पोल्यूशन पर चल रहा है। मैं अचंभित हूं। आप मास्क पहन के आएंगे यह जताने के लिए कि आज बहुत पोल्यूशन है। सात दिन से किसी के पास मास्क नहीं है। ओनली लिप सर्विस और मैं बहुत विनम्रता के साथ आपको गोपाल राय जी कह रहा हूं। मैं गंभीर चर्चा की उम्मीद करता था आपसे, मैं उम्मीद करता था कि आप जैसा वरिष्ठ व्यक्ति जो एक दल का फाउंडर सदस्य है वो तो कम से कम इस तरह के सतही आक्षेप नहीं करेगा। मैं बाकी बातें तो बाद में कहूंगा, मेरे मित्र किसी एक जरूरी काम से गए हैं, आपने बहुत चुनौती देकर कहा। हां गोपाल राय जी दो smog tower लगे थे। आनंद विहार में भी smog tower है। आपके मित्र बार-बार दिखा रहे थे। मैं आपके सामने रिपोर्ट लाया हूं। आनंद विहार का, आनंद विहार का smog tower is functional यह रिपोर्ट है, यह रिपोर्ट है आपके सामने अखबार की और primary responsibility of Connaught Place Smog Tower was with Delhi Govt. आनंद विहार की smog tower की रिस्पांसिबिलिटी केंद्र सरकार के पास थी, फंडिंग का सोर्स कनॉट प्लेस में आपकी सरकार के पास था, आनंद विहार का केंद्र सरकार के पास था, आपने ₹23 करोड़ खर्चे, ₹22 करोड़ आनंद विहार पर खर्च हुए, current status of Connaught Place smog tower is not functional and Anand Vihar Tower is operational but ineffective दोनों की एजेंसी टाटा प्रोजेक्ट्स एन.बी.सी.सी. थी। इसलिए आपसे यह उम्मीद नहीं थी मुझे, आप आक्षेप लगाइए, खूब लगाइए आक्षेप, smog tower की टेक्नोलॉजी कनॉट प्लेस में वो लगाई गई जो अध्यक्ष जी आपके या इस कमरों की या बाथरूम के ए.सी. से सॉरी एग्जॉस्ट फैन से भी कम efficacy के smog tower लगे हैं और मैं तो चाहता हूं आप हर सदन में गोपाल राय जी को पूरा समय दें ताकि हम इनकी असफलता के, इनकी असफलता के स्मारक के रूप में कनोट प्लेस smog tower को रोज चर्चा करें। आपको ज्यादा से ज्यादा समय देना चाहिए गोपाल राय जी को, आज गोपाल राय जी बार-बार डाटा की बात कर रहे थे। मैं जाना नहीं चाहता था उस ओर आप बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं। मुझे याद नहीं आपने 109 से 150 कौन से साल के बारे में कहा था। मगर मैं आपको बता देता हूं। गुड टू मॉडरेट 2018 में 159, 2019 में 182, 2000 पूरे 25 तक पढ़ रहा हूं गोपाल जी 2020 में 227, 2021 में 197, 163, 206, 209, 200, गुड टू मॉडरेट ये हमारा पुअर

टू वेरी पुअर 186, 159, 124,144, 196, 144, 140, और आज 157 है। सीवियर टू सीवियर 401 पार 20, 24, 15, 24, 6, 15, 17 और 8, 15 और 17 पिछले 2 साल का आप देकर गए हैं और यह मेरा अपना प्रोड्यूस किया हुआ डाटा नहीं है गोपाल राय जी इसलिए डाटा की जगलरी हमारे साथ ना करें और बताइए कौन सा चाहिए, मैं तो पूरा लिए खड़ा हूं, मैं इसको सदन के पटल पे रखता हूं गोपाल जी से डाटा मंगा लीजिए इसलिए ये डाटा की जगलरी कर,

...व्यवधान...

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: गोपाल जी देखिए मैं, मैं आपके बीच में नहीं बिलकुल मैं आपके।

श्री गोपाल राय: ये बोलना गलत बात है मैं जगलरी नहीं करा रहा मैंने अपनी बात रखी है और अपनी बात रखूगां, मैं आपका सम्मान करता हूं जगलरी शब्द प्रयोग क्यों किया आपने।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: डाटा की जगलरी है ये।

श्री गोपाल राय: नहीं-नहीं गलत बात है ये।

...व्यवधान...

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं कहावत है, ये कहावत है गोपाल राय जी, ये कहावत है कुछ ऐसा नहीं है चलिए।

....(व्यवधान)...

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: गोपाल जी, गोपाल जी, गोपाल जी, सुनिए, सुनिए, सुनिए आप खूब कहिए आप भी इस बात को बहुत अच्छी तरह जानते हैं डाटा की जगलरी का कहने का अर्थ क्या है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: ये कहावत है ये।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: इसका अर्थ आपको जगलर नहीं कहा गया है, ये आप अपने अंदर से अच्छी तरह जानते हैं मगर आपकी मजबूरी है, एक मिनट देखिए।

श्री गोपाल राय: मैं आपका बहुत सम्मान करता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आशीष जी आप आगे बढ़िए, ऐसे नहीं बात बनेगी।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: मैं भी आपका सम्मान करता हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप बात पूरी कीजिए।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: इसलिए आपकी एक मजबूरी You have to defend the indefensible इसलिए आप आप कहेंगे मैं उसको सुन रहा हूं।

...व्यवधान...

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: हां फिर।

श्री गोपाल राय : डाटा को जो आपने कहा, पटल पर रख दो, 3 कैटेगिरी होती हैं Good होती है, Satisfactory होती है, Moderate होती है, तीनों के ऑकडे निकाल लेना, 2016 का हमने डाटा निकाल दिया है 2016 और 2018 का Good, Satisfactory, Moderate का डाटा निकाल कर टेबल पर रख देना ।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप प्लीज आपने अपनी बात कह दी, आप कहिए। चलिए।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: The month of February and July 25, चलिए डाटा ही रखता हूं जी, फिर भी मैं पढ़ के बता सकता हूं। इसलिए गोपाल राय जी जो भी आपने मांगा है, हर डाटा मेरे पास उपलब्ध है। जिस साल से आप कंपेयर करना चाहेंगे जिस महीने से जनवरी का, जनवरी का एवरेज ए.क्यू.आई. 2018 में 328 था, 2019 में 328 था, 2023 में 311 था, 2024 में 355 था और 2025 में 306 है एवरेज एक्यूआई। जब हवा चलती है तो कहते हैं हमने पोल्यूशन कम कर दिया और जब हवा नहीं चलती तो कहते हैं हमने प्रदूषण कर दिया, कमाल की राजनीति है। कमाल की राजनीति है और अध्यक्ष जी गंभीरता तो सामने विपक्षी बेंचेस को देख के पोल्यूशन के बारे में पता चलती है और मैं उम्मीद कर रहा था गोपाल राय जी जवाब देते। गोपाल राय जी जवाब देते। आदरणीय उपराज्यपाल साहब ने आज से 15 दिन पहले एक पत्र लिखा है। पत्र लिखा है, उसमें उन्होंने, एक मिनट।

श्री गोपाल राय : आशीष जी मैं अभी सब जवाब दे दूंगा, जब बोलने नहीं दोगे तो जवाब क्या दूंगा?

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं अब आप जवाब नहीं ना, वो तो वही बोलेंगे अब, आप बोल चुके हैं आप बोलिए और एक बात मैं स्पष्ट कर दूं जगलरी कोई अनपार्लियामेंट्री वर्ड नहीं है। विधानसभा के संदर्भ में जगरी ऑफ डाटा की बात अक्सर होती है उसको कहते हैं आंकड़ों की बाजीगरी, तो बाजीगरी कोई शब्द ऐसा नहीं है, ये कहावत है, आप पूरा करिए।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: आदरणीय एलजी साहब ने एक पत्र लिखा था, उस पत्र में माननीय एलजी साहब ने केजरीवाल साहब को कहा था, क्योंकि बार-बार आम आदमी पार्टी हमारी सरकार पे, मुख्यमंत्री जी पे, लेफ्टिनेंट गवर्नर साहब को बार-बार कह रही थी, तो केजरीवाल साहब

को एक पत्र लिखा 15 दिन में सब शांत हो जाता है। आज तक उसका जवाब नहीं आया। मैं उद्धृत कर रहा हूं, लेफ्टिनेंट गवर्नर साहब के पत्र के पांच नंबर के बिंदु को। इस संदर्भ में, मैं सर्वप्रथम मैं आपका ध्यान इस मुद्दे पर मेरे और आपके बीच नवंबर, दिसंबर 2022 में हुई चर्चा की तरह तरफ आकर्षित करना चाहता हूं। गंभीर वायु प्रदूषण के बीच मैंने हरियाणा और पंजाब के मुख्यंत्रियों को पत्र लिखा और पंजाब के मुख्यमंत्री के लिखे पत्र की प्रति आपको प्रेषित की थी। यह गवर्नर साहब ने पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को कहा। तदोपरांत जब मैंने आपसे इस मुद्दे की गंभीरता को देखते हुए इसके समाधान हेतु निर्णायक कदम उठाने के लिए कहा तो आपको याद होगा आपने मुझसे कहा था, सर हर साल ऐसा होता है 15-20 दिन मीडिया इसको उठाती है, एक्टिविस्ट कोर्ट इसको मुद्दा बनाते हैं, फिर सब भूल जाते हैं, आप भी ज्यादा ध्यान मत दीजिए। अब इससे ज्यादा दोयमता क्या होगी? ये एलजी साहब के पत्र को मैंने उद्धृत किया है। किसी आम आदमी पार्टी के नेता ने इसको कंडेम नहीं किया। ना सदन में, ना सदन के बाहर। यह एक संवैधानिक पद के व्यक्ति ने दूसरे संवैधानिक पद के व्यक्ति की बातचीत को कहा है। ेमैं गंभीर चर्चा की उम्मीद करता था। गोपाल राय जी ने कहा, पंकज जी बैठे हैं उस समय कहने वाले थे मगर गोपाल राय जी फिर टोक देते इसलिए मैंने इनको रोका। इन्होंने मुझे डाटा उपलब्ध कराया। बताइए इस सदन के सामने यह आ जाए सबसे पहला लॉट ई बसेस का कैसे आया है दिल्ली में, किसने दिया, किसके पैसे थे, किसके पैसे से वो बसें चली? फेम स्कीम के अंतर्गत 300 बसों का पहला लॉट नरेंद्र मोदी जी ने दिया, अरविंद केजरीवाल जी की सरकार ने सिर्फ उसके ऊपर अपनी फोटो लगा के उसे चलाई। यह तथ्य दिल्ली की सरकार की फाइलों में उपलब्ध है। प्रवेश वर्मा जी बार-बार पूछ रहे थे बताइए आपने क्या किया, बताइए आपने क्या किया?

...व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: सब्सिडी का पैसा, गोपाल राय जी ने कहा हम ई पॉलिसी लाए। हम ई व्हीकल पॉलिसी लाए। गोपाल राय जी शायद आपको मालूम नहीं होगा, आपको शायद मालूम नहीं होगा, ₹43 करोड़ पिछले 2 साल से आपने टू व्हीलर खरीदने वालों की सब्सिडी के नहीं दिए। मेरी सरकार, मेरी मुख्यमंत्री के माध्यम से वो ₹43 करोड़ अब हम देने जा रहे हैं। ई- व्हीकल पॉलिसी पिकअप नहीं हुई क्योंकि आपकी सरकार का विल नहीं था। आपकी सरकार के मन में राजनीतिक बेईमानी थी केवल और केवल विज्ञापन को लेकर। इसलिए 43 करोड़ का बैकलाग आप छोड़कर गए हैं। उसको हम पूरा कर रहे हैं। उस ई व्हीकल पॉलिसी को हम ठीक कर रहे हैं।

...व्यवधान....

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं एक मिनट।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: आपने सवाल किया आपने आरोप लगाया सरकार पर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: नहीं नहीं मेरे से एक तो चेयर से बात करिए। दूसरा आप अपनी बात कहिए।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: इन्होंने आरोप लगाया सरकार पर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: उनके सवालों के आप उनसे काउंटर मत करिए प्लीज।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: सर मैं काउंटर नहीं कर रहा सर।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: आप उनको मैं आपसे अनुरोध करूंगा आप शांत रहें।

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: मेरी सरकार पर, मेरी नेता के इंटेंट पर इन्होंने सवाल उठाया, मेरा फर्ज बनता है। मुझे दिल्ली को महान देश बनाना है। नहीं, गलत कह दिया। मैंने थोड़े ही ना कहा, केजरीवाल जी ने कहा था। दिल्ली को महान देश बनाना है। और तुम सबका इलाज जो है ना स्कूलों में होगा। ओहो यह भी मैंने नहीं कहा केजरीवाल जी ने कहा, केजरीवाल साहब ने कहा। इन्होंने अध्यक्ष जी किया क्या? देखिए जब प्रदूषण पे चर्चा होगी और हमसे हमारे 10 महीने का हिसाब मांगोगे तो हम भी तो 11 साल का हिसाब मांगेंगे ना या ऐसा चलेगा कि 11 साल में क्या हुआ उसे भूल जाओ और घर-घर खेल लो। ये क्या तरीका है, 11 साल में हम बात ना करें तो हमारे से 11 महीने हम भी देंगे 11 महीने का हिसाब हम देंगे 11 महीने का हिसाब हमारे सिरसा साहब ने दिया। उन्हें एक अति आवश्यक निजी कार्य से जाना पड़ा, हम पूरा कैबिनेट जवाब देने के लिए यहां उपलब्ध है, पूरी कैबिनेट उपलब्ध है। पी.आर. एक्सरसाइज से प्रदूषण पर अंतर नहीं पड़ेगा कभी भी। They spent Rs. 10 crore on PR exercise. क्या समझाने के लिए दिल्ली को कि इंजन स्विच ऑफ कर लोगे तो प्रदूषण कम हो जाएगा। ₹10 करोड़ और 2,700 रूपये प्रति व्यक्ति के हिसाब से इन्होंने वर्क फोर्स लगाई वहां तख्ती लेकर खड़े करने के लिए और 10.46 करोड़ रूपये लगे engine off- engine on, engine off- engine on और कोई भी मैं अनवेरिफाइड डाटा नहीं बोल रहा हूं। गोपाल राय जी बाद में कहते हैं कि आप वेरीफाई कर लीजिए। आप भी वेरीफाई करिए। आपकी डीपीसीसी का जमा किया हुआ डाटा है, आपके समय का। आरटीआई बताती है और "red light on gadi off" no data or knowledge of any scientific study नहीं है। यह डीपीसीसी ने अपनी आरटीआई में उपलब्ध कराया है।

...व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: हां no data on effectiveness of "red light on red light off" इसके अलावा अध्यक्ष जी एक एयर एंबियंस फंड होता है every time a citizen fills diesel in Delhi, they have to pay 25 पैसा प्रति लीटर exclusively for this fund उसका 547 करोड़ रूपया..... कोई बात नहीं, उनकी मर्जी है। सज्जन व्यक्ति हैं।

...व्यवधान....

श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री: सर यह दिल्ली के हालात ऐसे हुए क्यों, यह समझने की जरूरत है। केंद्र सरकार एक एयर एंबियंस फंड है, एयर एंबियंस फंड होता है जिसमें 25 पैसे प्रति लीटर जब आप जो भी आदमी डीजल भरवाता है उसमें से जाता है। उसके इंसेप्शन से आज तक 547 करोड़ इकट्ठे हो गए और 2015 तक 59 करोड़ यूज़ हुए और 2015 से 21 के बीच में 468 करोड़ यूज़ हुए। आरटीआई डाटा कहता है कि सैलरी देने में और एनवायरमेंट मार्शल लगाने में यह तख्ती पकड़ने के लिए और एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ लगाने के लिए और ₹12 करोड़ ऑड इवन स्कीम में लगाए। डीपीसीसी की आरटीआई ने यह बताया है और यह आरटीआई के बाद एनजीटी में यह डाटा सरकार ने, सीरियसनेस ही नहीं है अध्यक्ष जी, कोई गंभीरता नहीं है। National clean air program failure इसमें भी total fund released by Centre 42.69 crore specifically for immediate pollution combat और कुल 13 करोड़ खर्च हुए। 67% पैसा is rotting in the bank accounts साथियों, यह समझने की जरूरत है। 67% money is rotting in the bank account and MCD 24-25 में कौन था एमसीडी में मेयर? आम आदमी पार्टी का मेयर था। 23-24 में भी आम आदमी पार्टी का मेयर था। In the peak pollution of 2024, the MCD had 30.86 crores available for pollution control, spent, spent कितना? 1.34 करोड़ remaining साढे 29 करोड़ दिल्ली के किसी बैंक में धक्के खा रहा है जो कि दिल्ली की जनता के पॉल्यूशन को ठीक करने के लिए लगना चाहिए था। डीपीसीसी एक environmental compensation collect करता है जो सिटीजंस आपके मेरे जैसे परिवारों के लोगों में जहां जहां पर जुर्माना लगता है, फैक्ट्रियों पे collects fine from the business and construction sites कितना कलेक्ट हुआ 15 से 24 के बीच में 112 करोड़ रूपये। किस लिए इकट्ठा किया जाता है यह पैसा, यह पैसा इसलिए इकट्ठा किया जाता है कि इससे पॉल्यूशन के लिए लड़ाई लड़ी जाए। actually spent ₹36 crore और ₹0 have been spent on remediation of contaminated sites पॉल्यूशन को लड़ने के लिए जीरो और इस सदन में आप

सब की उपस्थिति में एक सीएजी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। CAG Report No. 2 of 2022 tabled in the Delhi Assembly April 2025 जो यह कहती है Delhi Govt. kept a budget provision for seven consecutive years to introduce eco friendly transport alternatives but not a single rupee was spent, it was a ghost budget to fool public और सीएजी रिपोर्ट के पैरा 3.3 पे डिटेल में एक पैरा में लिखा है लाइट L.R.T. is a medium capacity लंबा विषय है मैं आपके समक्ष CAG Report Para 3.3 through the availability of public transport buses was far less than the requirement, Govt. of Delhi did not take any action for implementation of its alternatives even after keeping budget provisions for last seven years or environmental compensation charges or ECC इसमें भी माननीय अध्यक्ष जी ₹709 करोड़ अनस्पेंट 1491 करोड़ रूपये इस सरकार के पास 15 से 23 के बीच में दिल्ली गवर्नमेंट ने कलेक्ट किए। यह इसमें से केवल और केवल ₹265 करोड़ 2019 में और ₹500 करोड़ 2023 में एनसीआर ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन को दिए गए। ये भी पैसा इस पैसे में से तीन बार कोर्ट के आदेश पर जबर्दस्ती पैसा सरकार ने खर्चा है। They took money. They took your money at the petrol pump, they took your money via fines on your business. They received money from centre. They even set aside money in the State Budget and the result was the money is either hoarded, wasted in failed experiments or diverted to salaries while citizens are left to buy their own purifiers. अध्यक्ष जी, आज विपक्ष के यह खाली बेंचेस विपक्ष के दावों की कि वो दिल्ली के प्रदूषण के संबंध में गंभीर हैं। उनके खोखलेपन को दिखाता है और विपक्ष के गोपाल राय जी जैसे गंभीर समझे जाने वाले लोग भी तथ्यात्मक रूप से ई-बसेस के बारे में, स्मोग टावर्स के बारे में झूठ बोले। मैं आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी की उपस्थिति में मैं आप सबसे इस सदन से निवेदन करना चाहता हूं। कनॉट प्लेस के फेल्ड smog tower को उनकी फेलियर के स्मारक के रूप में बनाकर उसको दिल्ली की जनता को दिखाने के लिए रखा जाना चाहिए ताकि 11 साल के फेलियर में क्या उनका जो फेलियर है उसके संदर्भ में पूरी जानकारी दिल्ली की जनता के सामने आए। आपने मुझे इस गंभीर मुद्दे पर बोलने दिया। मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण प्रदूषण जैसे महत्वपूर्ण मामले पर जब दो तारीख को बिजनेस एडवाइज़री कमेटी हुई तो उसमें क्योंकि सरकार का जो एजेंडा विधानसभा को प्राप्त हुआ था उसमें यह भी हमारे पास जानकारी आ गई थी कि सरकार इस पर चर्चा करवाना चाहती है और यह बात बिजनेस एडवाइज़री कमेटी जिसको स्पीकर चेयर करते हैं, डिप्टी स्पीकर भी उसमें होते हैं, और विपक्ष के सदस्य भी थे उस दिन एजेंडा डिसाइड हो गया था। उसके बाद

उप-राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में मास्क लगाकर आना और फिर शोर मचाना जिसका कोई अर्थ नहीं था। हमने उसके बावजूद भी अलाउड किया कि आप मास्क लगाया तो बैठिए कोई बात नहीं। अगर आपको लगता है तो लेकिन जब लगा कि मास्क लगाने के ऊपर कोई ऑब्जेक्शन नहीं हो रहा है तो फिर स्पीच को disruption करने लगे। उसके बाद फिर हमने उनको बताया कि चर्चा एजेंडे में तय कर दी गई है। बिजनेस का हिस्सा बन चुकी है। इतनी तारीख को इतने बजे चर्चा हो रही है। फिर उसके बाद अगले दिन फिर उसके बाद बार-बार बार-बार और आज मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि मुझे दिल से दुख है कि एक भी सदस्य उपस्थित नहीं है विपक्ष का।

श्री अभय वर्मा, माननीय मुख्य सचेतक: नहीं बाहर से आकर बुलाकर ले गये हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: जी एक भी सदस्य यहां पर उपस्थित नहीं है और नेता, प्रतिपक्ष तो उस दिन के बाद गायब भी हो गई। कितना भी जरूरी काम क्यों ना हो ये सदन जो है जनता के प्रति जवाबदेही है हर सदस्य की, हर पार्टी की जो भी पार्टी जो दल इसमें जिनके सदस्य हैं पक्ष हो या विपक्ष लेकिन आज यह स्थिति देख के यहां पर एक भी सदस्य का ना होना यह दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे लगता है कि प्रदूषण सिर्फ एक राजनीतिक दांवपेच से अलावा कुछ और जेहन में नहीं था। मैं इस बात की कड़े शब्दों में निंदा करता हूं ।

श्री अभय वर्मा, माननीय मुख्य सचेतक: एक बात और आना चाहिए रिकार्ड पर कि बाहर जाके मिडिया को मिसगाइड भी कर रहा है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्ष: कोई नहीं, कोई नहीं। ठीक है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी श्रीमती रेखा गुप्ता जी से कहूंगा।

श्रीमती रेखा गुप्ता (माननीया मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष जी, अभी जो बात आपने कही सच में हमारा हमारी सरकार का वही concern है क्योंकि पर्यावरण हमारे लिए कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है। हम सब इससे जुड़े हुए हैं। सबका परिवार उससे अफेक्ट होता है और सभी माननीय विधायक गण मैं, मेरे मंत्री हम सभी लोग दिल्ली के निवासी हैं और इसी हवा में हमें रहना होता है और इस सरकार की मुखिया होने के नाते मेरी जिम्मेवारी को मैं पूरी तरीके से महसूस करती हूं और इसीलिए विपक्षी सरकार पे या पड़ोसी राज्यों पे इल्जाम लगा करके भागने की हमारी आदत नहीं है। ये लोग वो लोग थे जो थूकते हैं और दौड़ जाते हैं। अपनी बात कही और चले गए। जबकि इतने दिनों से पोलूशन पोलूशन की चर्चा करवाइए करवाइए, बड़े-बड़े मास्क लगाके आ गए, यहां से निकलते ही मास्क उतर गए। जब मीडिया के आगे फोटो खींच रही थी तब उनको हवा गंदी

नहीं लगी। जब यहां बैठे थे तो हवा गंदी लग रही थी। उसके बाद से अब तक कौन सा मास्क लगाया इन्होंने? केवल और केवल फोटो खिंचवाने के लिए, केवल और केवल अगले दिन अखबार में हम छप जाए, इसके लिए यह जो हरकतें, यह जो दिल्ली की जनता को गुमराह करने का काम आम आदमी पार्टी ने ना केवल अपने कार्यकाल में किया बल्कि अभी भी लगातार कर रही है, ये सच में बड़े शर्म की बात है और दिल्ली की हवा साफ करना हमारी कमिटमेंट है। हमारा संकल्प है कि हम दिल्ली वासियों को बेहतर हवा दें। पर इस बात में भी कोई दो राय नहीं है कि पिछली सरकारों ने पर्यावरण को समग्रता से देखा ही नहीं। उन्होंने हमेशा कोई टेंपरेरी काम कर दिया और उसको कहा कि बस हमने तो बहुत कर दिया। सबने चर्चा में आया कि एक smog tower बना दिया ओड इवन कर दिया और उन्होंने कह दिया भई हो गया, हमारा तो यही था। रेड लाइट पर खड़े हो गए और बंद करिए इंजन खोलिए इंजन, यही था उनका स्टेप कि हमने कहा। अभी बात कर रहे थे कि जी इतने दिन अच्छे रहे, इतने दिन वो रहे, गोपाल राय जी जो स्वयं पर्यावरण मंत्री रहे। मैंने तुरंत पूरा डाटा मंगवाया। उन्होंने कहा 2016 में 110 दिन। बिल्कुल ठीक बात है। उसके बाद से 2017 में 152, 2018 में 159, फिर 182, 2020 में 227 फिर कम हो गए। 2021 में 197, 2022 में 163, 2023 में 206, 2024 में 209 और 2025 में 200। क्या फर्क है? ये प्रदूषण कोई उनके और हमारे उससे नहीं है। ये प्रदूषण दिल्ली की सड़कों पे लगातार जो व्हीकल बढ़ रहे हैं, जो हवाएं आसपास से पूरे एनसीआर से आती है, जो हमारे यहां धूल के कण होते हैं। तो ये हो सकता है किसी दिन हवा अच्छी चलती है तो ठीक हो जाता है। परंतु यह जो पूरा का पूरा डाटा है यह बता रहा है कि उनकी कोई वाह-वाही नहीं है कि वह कहें कि 2018 से हमने 2016 से 2018 में हमने 209 कर दिए 100 दिन बढ़ा दिए। हमने भी 200 कर दिए 2025 में हमने भी बढ़ा दिया। यह तो वही बात हो गई क्या किया आपने। पर पोलूशन की समस्या जो सिरसा जी ने बोला कि 1985 में जब एमसी मेहता वर्सेस यूनियन ऑफ इंडिया में पहली बार इस मुद्दे की सीरियसनेस ध्यान आई जब एमसी मेहता साहब ने एक्शन प्लान मांगा राज्य सरकार से भी और केंद्र सरकार से भी कि प्रदूषण पे कर क्या रहे हैं और मैं सही बताऊं कि यह प्रदूषण केवल इतना नहीं है कि हां भाई हम हवा की बात कर रहे हैं। ये प्रदूषण जो है हमें जल, जमीन, वायु हर एक पे तीनों पे काम करते हुए ही हम पूरा का पूरा पर्यावरण जो है वो बेहतर हो पाएगा क्योंकि सब चीजें जुड़ी हुई है। एक चीज खराब होती है तो आप सोचिए कि उसका असर बाकी की दोनों चीजों पे होने वाला है। आपका जल खराब है तो आपकी वायु, आपकी जमीन खराब हो जाएगी। तो ये सारी चीजों पे काम

करने की आवश्यकता थी। इसीलिए हमने अपनी वर्किंग में पूरी नीतियों के साथ में लॉन्ग टर्म प्लान, शॉर्ट टर्म प्लान, मिड टर्म प्लान बनाते हुए पहले दिन से ही काम शुरू किया। पहले दिन से ही जितनी बातें ये लोग कर रहे हैं। कोई कंपटीशन नहीं है 11 साल की सरकार के साथ 11 महीने की सरकार का। हमने जो काम किया अपना एक-एक दिन हमने उसका उपयोग किया। धूल और धुआं दो कारक है इस पर्यावरण को खराब करने के लिए। धूल और धुआं। जहां तक बात है धुएं की तो ईवी की बात यहां पर आई कि अभी साढे तीन हजार बसें ईवी की हमने चालू की है। 2026 के आखिरी तक 7500 का टारगेट है और उसके बाद 2029 तक यह पूरी की पूरी पब्लिक ट्रांसपोर्ट की fleet जो है दिल्ली सरकार की वो ईवी पे जाए ऐसा हमारा प्रण है और इसी दिशा में हम काम कर रहे हैं और उसके लिए हमने अभी से आर्डर भी प्लेस कर दिए हैं 2800 बसों का एक जगह पे और 3500 बसों का उसके बाद में। हमारा लगातार यह concern है कि 100% सड़कों पर जो भी गाड़ियां चले वो जीरो एमिशन पे चलनी चाहिए और वो सरकारी व्हीकल हो और या फिर प्राइवेट व्हीकल हो। प्राइवेट व्हीकल के लिए भी हमने ईवी पॉलिसी पे लगातार हमारी सरकार काम कर रही है। पर केवल सब्सिडी देना एक काम नहीं है। वो पूरा इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करना। वो यूज्ड बैटरीज का मैनेजमेंट क्या होगा, ये सारी चीजें हमें ध्यान करके ही हम ईवी पॉलिसी ले आ सकते हैं। यह धुंआ सड़कों पर कम हो इसके लिए हमने 9 मीटर की ईवी देवी buses चालू करी। हमने ई ऑटो, ईवी टैक्सीज और shared टैक्सी यह सारे काम हमारी प्लानिंग में है लगातार जिस पर सरकार काम कर रही है। यहां तक कि एक मोबाइल ऐप जो कार पूल को प्रोत्साहन देगी वो भी लगातार उस पे हम काम कर रहे हैं। प्राइवेट इलेक्ट्रिक व्हीकल के माध्यम से शेयरर्ड मोबिलिटी हम करना चाहते हैं ताकि जनता भी अपनी जिम्मेदारी समझे कि यह प्रदूषण केवल सरकारों के करने का काम नहीं है। हम सबको मिलकर के अपनी ओर से थोड़ा-थोड़ा सहयोग उसमें देना होगा और खाली नए व्हीकल की बात नहीं है। जो वर्तमान में व्हीकल सड़कों पर चल रहा है, उसका पोल्यूशन चेकिंग, उसकी फिटनेस भी एक बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है और इसके लिए हमने जो दिल्ली में आज तक कमी थी जो इनकी सरकारों ने पर्यावरण मंत्री जी चले गए अपनी बात कह कर के सुनने के लिए बैठे नहीं इतना माददा नहीं था उनके अंदर, पर दिल्ली में क्या पोलूशन चेकिंग के लिए, फिटनेस चेकिंग के लिए हमारे पास उतना इंफ्रास्ट्रक्चर था नहीं था अध्यक्ष जी नहीं था दिल्ली में डेढ़ करोड़ व्हीकल सड़कों पे दौड़ रहे हैं उसमें से कमर्शियल व्हीकल आज जो हमारी सरकार का प्रयास है इस 11 महीने में हमने दो नए ऑटोमेटेड टेस्टिंग स्टेशन नंद नगरी में और

तेहखंड में उसका शिलान्यास किया है वहां और उसके बाद बुराड़ी का जो फिटनेस सेंटर था उसको भी अपग्रेडेशन पे लगाया है। इन तीनों सेंटर्स के माध्यम से हमारा टारगेट है कि ढ़ाई लाख कमर्शियल व्हीकल्स उनकी ऑटोमेटिक टेस्टिंग हो पाएगी ताकि एमिशन फ्री होकर के वो दिल्ली की सड़कों पर चल पाएं जो कि पिछली सरकार के कार्यकाल में बिल्कुल जीरो था। नो एफर्ट्स, नो पीयूसीसी, नो फ्यूल। हमने पहले ही तय किया कि किसी भी गाड़ी को जिसके पास पोल्यूशन सर्टिफिकेट नहीं है, उसको हम नहीं देंगे फ्यूल। ये बिल्कुल तय है और इस बात को भी समझना होगा कि क्लीन कनेक्टिविटी के लिए और क्या-क्या काम करने हैं। हमने 17 मेट्रो स्टेशनस पे बाईसाइकिल सर्विजज, 50 स्टेशंस पे ई बाइक सर्विज चालू कर रखी है जिसके कारण से लोगों की कनेक्टिविटी में उन्हें सुविधा हो। इंटरस्टेट बसिसज की बात मैंने बताई कि इंटरस्टेट ईवी बसिसज होने के कारण से वो जो कमी रहती है जो अन्य राज्यों की बसें हमारे यहां आती है जो कि प्रदूषण करने वाली होती हैं उसको हम कम कर पाएंगे, रोक पाएंगे। मेट्रो की बात हमने बताई कि तीन नए कॉरिडोर्स मेट्रो के हमने उसकी परमिशन दी है और आगे भी और भी प्लानिंग हो रही है कि किन-किन नए रूट पे मेट्रो शुरू हो सके। हमारा लक्ष्य है कि जो आज वर्तमान में मेट्रो 394 कि.मी. है उसको हम 500 कि.मी. तक लेकर के जा पाएं। रोजाना रोजाना मेट्रो में लगभग 35 लाख लोग चलते हैं। क्या ये आम आदमी पार्टी की सरकार इस बात का दावा करती है कि ये मेट्रो किसने लाई। सारी दुनिया जानती है कि मेट्रो भारतीय जनता पार्टी की सरकार में आई जब मदन लाल खुराना जी मुख्यमंत्री होते थे। सारी दुनिया जानती है और उसके बाद से लगातार, लगातार जैसे जैसे मेट्रो दिल्ली में बढ़ती गई उसमें केंद्र सरकार का बहुत बड़ा रोल रहा। हमेशा, ना केवल उन्होंने अपना 50% शेयर दिया बल्कि दिल्ली राज्य की जो भी कमी रही चाहे वो कांग्रेस के समय में थी या आम आदमी पार्टी के समय में थी वो उन्होंने कोई प्रोजेक्ट रुकने नहीं दिया। दिल्ली में लगातार-लगातार मेट्रो बढ़ती गई जिसके कारण से आज दिल्ली सर्वाइव कर पा रही है। जिसके कारण से आज दिल्ली चल पा रही है। कैसे ये लोग कह सकते हैं कि हमने कुछ कर दिया। आज माइनस मेट्रो, दिल्ली चल नहीं सकती, इस बात को मैं कहना चाहती हूं। एक बहुत बड़ी सुविधा आरआरटीएस के माध्यम से जो दिल्ली को मिल रही है। दिल्ली, मेरठ, दिल्ली, पानीपत, करनाल, दिल्ली, अलवर इस पूरे रूट पे जब ये रैपिड रेल चलेगी तो इसमें बहुत बड़ा फायदा दिल्ली के लोगों को मिलेगा और हमारे ऊपर बहुत बड़ा दबाव भी कम होगा। यह इंटरस्टेट कनेक्टिविटी का एक शानदार उदाहरण होगा। इसलिए हम चाहते हैं कि सबके माध्यम से हम एक पब्लिक

ट्रांसपोर्ट कल्चर डेवलप करें जहां लोगों को ये शर्म नहीं आए कि मैं मेट्रो में जा रहा हूं कि मैं बस में जा रहा हूं। उसे ये लगना चाहिए मैं अपनी दिल्ली को संवारने के लिए अपना काम कर रहा हूं। इसलिए मैं पब्लिक ट्रांसपोर्ट में जा रहा हूं बजाय गाड़ी और स्कूटर के। इतने सारे काम करने के लिए है। केवल इतना काम नहीं है कि हां जी हमने इतना कर दिया, पानी छिड़क दिया या बाकी चीजें कर दी। बहुत सारे डायमेंशन पे काम करना होगा। हमें पोल्यूशन कम करने के लिए ट्रैफिक कंजशन को भी कम करना पड़ेगा। रोड मैनेजमेंट भी करनी पड़ेगी। और हमारी सरकार ने जिस दिन से हम आए हैं, लगातार ट्रैफिक कंजशन के जितने पॉइंट है, उन सब पे काम किया है। एक-एक पॉइंट को ठीक करने के लिए लगातार सरकार लगी है। चाहे कहीं पे बोटम नेक हो, चाहे कहीं पे डिवाइडर की प्रॉब्लम हो, चाहे कहीं गड्ढा हो, यूटर्न हो, ट्रैफिक मैनेजमेंट स्टडी के माध्यम से हम उन सारे ट्रैफिक कंजेशन के पॉइंट पे काम कर रहे हैं क्योंकि कंजेशन जो है सीधा-सीधा पोल्यूशन बढ़ाता है। इसलिए ट्रैफिक कंजशन को रोकना निहायत ही जरूरी है।

दूसरी बात है डस्ट। डस्ट के कारण से बाकी का हिस्सा जो है पर्यावरण का खराब होता है और इसके लिए जितनी वर्तमान में मशीनरी दिल्ली में चल रही हैं किसी भी विभाग के माध्यम से एनडीएमसी, पीडब्ल्यूडी, एमसीडी बाकी सभी डीडीए परंतु हमने उस रिक्वायरमेंट को समझ के एमसीडी को भी जो हमने बताया कि 70 एमआरएस मशीनें, 1000 लीटर पिककर यानी हर वार्ड पे चार लीटर पिककर और एक मशीन ये हमने एमसीडी को दिया बिना यह सोचे समझे कि हमें देना है या नहीं। दिल्ली को सुविधा मिले, दिल्ली में सफाई हो, दिल्ली में धूल कम हो इसलिए हमने ₹ 2300 करोड़ का ₹2300 करोड़ की सहायता राशि एमसीडी को दी और इसके अलावा भी कूड़ा उठाने के लिए 500 करोड़ इसके अलावा 175 करोड़ और हर साल 300 करोड़ ये लगातार हम दिल्ली नगर निगम को दे रहे हैं ताकि नगर निगम अपना काम ठीक से कर सके। उन्हें फंड की दिक्कत नहीं आनी चाहिए। हमने पीडब्ल्यूडी में भी अलग से मशीनें मंगाने की पूरी की पूरी योजना की है, उसके टेंडर लगाए हैं जिसमें एमआरएस मशीनें, वाटर, स्प्रिंकलर, एंटी स्मोग गंस ये सारी की सारी और टेम्पूज जो सॉलिड वेस्ट डिस्पोजल के लिए जरूरत पड़ेगी ये एडिशनल मशीनरी हमने दिल्ली की पीडब्ल्यूडी सड़कों के लिए ली है, परंतु आने में समय लग रहा है। जैसे ही वो आती हैं दिल्ली में और ये प्रदूषण कोई दो-तीन महीने का काम नहीं है कि हम सोचे कि सर्दियों में ही प्रदूषण है। ये बारहवों महीने का काम है। बारहवों क्या 12 महीने हमें सड़कों पे लगातार अपनी एजेंसीज को एक्टिव रखना पड़ेगा, उस पे काम करना पड़ेगा, तब जाकर के कहीं प्रदूषण में

कमी आ पाएगी, पर्यावरण बेहतर हो पाएगा। वॉल टू वॉल कारपेटिंग के लिए हमने पूरी की पूरी दिल्ली में जितनी सड़कें हैं, जिस भी एजेंसी की है, 100% सबसे संवाद करते हुए एक-एक सड़क को वॉल टू वॉल कारपेटिंग हो इसके लिए काम शुरू कर चुके हैं, टेंडर लग चुके हैं। लगातार धीरे-धीरे जैसे-जैसे काम कंप्लीट होगा, हम सब उसे देख पाएंगे। डस्ट फ्री रोड, गड्ढा फ्री रोड इन सब पे हम काम कर रहे हैं क्योंकि स्मूथ रोड, लेस डस्ट, लेस कंजेशन, लेस पोलूशन ये सारा का सारा इस सारी चीजों को लगातार दिल्ली सरकार काम कर रही है।

रिज एरिया की बात हमारे पर्यावरण मंत्री जी ने बताई। आज से पहले क्यों नहीं हुआ रिज कभी नोटिफाई क्या सोचा है किसी ने। वो फाइलें पड़ी रही इनकी टेबलों पे, कभी इनसे साइन नहीं हुए। पता नहीं इसके पीछे इनकी क्या मंशा थी। क्या ये उन एरियाज पे कब्जा करना चाहते थे, कॉलोनी कटवाना चाहते थे या क्या करना चाहते थे वो इनका ईमान जानता है। पर पहली बार दिल्ली के इतिहास में रिज एरिया को नोटिफाई करना भी अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है, बहुत बड़ी। 4200 हेक्टेयर जमीन को हमने अभी तक फॉरेस्ट नोटिफाइड किया है। दिल्ली को ये ग्रीन कवर मिलना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। और यह रुकेगा नहीं। इसमें अभी और भी एरियाज को हम संभालते जा रहे हैं और धीरे-धीरे और भी हम रिज एरिया को फॉरेस्ट एरिया में नोटिफाई करेंगे। नए मियावाकी जंगल बनाने की प्लानिंग, वर्टिकल प्लांटेशन, मेट्रो के पिलर पे, फ्लाई ओवर्स के नीचे पिलर्स पे, ये लगातार काम चल रहा है। हॉर्टिकल्चर के टेंडर भी इस प्रकार से किए गए हैं कि पेड़ लगाना केवल वन टाइम काम नहीं कि ठेकेदार ने पेड़ लगाया और चला गया। अब टेंडर की सारी प्रक्रिया हमारे मंत्री जी ने इस प्रकार से कराई है कि जो एजेंसी आएगी उसी को साल भर उस प्लांट को संभालना होगा और इस तरीके से जिम्मेवारी फिक्स की जाएगी दिल्ली को हरा-भरा करने के लिए। गैस चेंबर नहीं अब ग्रीन दिल्ली बनाने की और दिल्ली आगे बढ़ चुकी है। नए-नए समाधानों पे लगातार चर्चा हो रही है। वो बात कर रहे थे क्लाउड सीडिंग की। हम लगातार जो एक्सपर्ट हैं एनवायरमेंट के उनसे बात करते हैं। जब उनसे बात करते हैं वो कोई समाधान बताते हैं तो वो समाधान करना भी जरूरी होता है। अगर क्लाउड सीडिंग, 10 समाधानों में अगर एक समाधान क्लाउड सीडिंग सामने आया है तो क्यों नहीं करती दिल्ली सरकार, अगर उसमें 3 करोड़ रूपये के करीब खर्चा भी हुआ या हो रहा होगा तो उसको आप क्यों ऑब्जेक्शन कर रहे हैं? आप एक स्मोग टावर 25 करोड़ रूपये का लगाते हैं और वो 6 महीने भी नहीं चलता। आपसे कोई सवाल नहीं पूछ सकता और आप क्लाउड सीडिंग पे प्रश्न चिन्ह लगाते है, सफल भी हो सकता था

और नहीं हुआ तो भी कम से कम सरकार ने, विभाग ने, मंत्रालय ने प्रयास तो किया, इस बात को एप्रिशिएट करना चाहिए। हम लगातार- लगातार जितनी भी चीजें हमें लगता है कि पर्यावरण को बेहतर करने के लिए होनी चाहिए।

इंडस्ट्रीज की बात आई कि दिल्ली में जो इंडस्ट्रीज जिसे हम पॉल्यूटिंग इंडस्ट्री कहते हैं वो नहीं होनी चाहिए। सरकार पूरी सख्ती से चल रही है। सख्ती से चलते हुए परंतु वो बेचारे फैक्ट्री वाले लोग भी क्या करें, आज तक इंडस्ट्रियल एरिया डेवलप ही नहीं हुआ था, वो लोग वहां जाना ही नहीं चाहते थे। पहली बार सरकारों ने यह तय किया है कि भई इंडस्ट्रियल एरिया डेवलप करो ताकि ये फैक्ट्री वाले वहां जाएं। तो ये सारी चीजें वाइसे-वरसा जुड़ी हुई हैं। आज हम उनको बेहतर इंडस्ट्रियल एरिया देंगे, सुविधाओं के साथ में देंगे तो क्यों नहीं जाएंगे वो, उन्हें कौन सा शौक है अपनी फैक्ट्रियां सील करवाने का, परंतु कभी किसी सरकार ने काम ही नहीं किया उस दिशा में, कभी सोचा ही नहीं, काहे को करेंगे भाई।

तो ये सारी चीजें कूड़े के पहाड़ को कम करना हो या वाटर बॉडिज को रिवाइव करना, ये सारी चीजें आपस में जुड़ी हुई हैं। क्या इससे पहले किसी सरकार ने यह सोचा कि दिल्ली में जितनी वाटर बॉडीज हैं उनको हमें दोबारा से बनाना है, रिवाइव करना है, नहीं सोचा। यह सब जुड़ा हुआ है। पर्यावरण को बेहतर करना है तो हर दिशा में काम करना होगा और पूरे तरीके से उसको देखना पड़ेगा।

एक बहुत संवेदनशील विषय मैं आपको बताती हूं अध्यक्ष जी। दिल्ली में क्या मानते हैं आप, कितने मवेशी होंगे, हजारों की संख्या में, हजारों की संख्या में मवेशी होंगे, गाय, भैंस, बाकी पशु इत्यादि। क्या मानते हैं आप कि कितना काऊ डंग, कितना गोबर रोजाना का जनरेट होता होगा, कोई फिगर बता सकता है दिल्ली में, कोई नहीं बता सकता क्योंकि ऐसी कोई स्टडी ही दिल्ली ने नहीं की। मैं यह समझती हूं कम से कम 1500 टन गोबर रोजाना का दिल्ली में जनरेट होता होगा, ये गांव के जो हमारे जुड़े हुए विधायक लोग हैं यह बताते होंगे,

....व्यवधान....

श्रीमती रेखा गुप्ता- माननीया मुख्यमंत्री:कम से कम, मैंने भी कम से कम कहा है। परंतु क्या पिछली सरकारों की कोई योजना थी कि इस काऊ डंग को, इस गोबर को कैसे डिस्पोज करना है, कभी नहीं सोचा किसी ने। यह गोबर नालों के माध्यम से, नालियों के माध्यम से, सीवर के माध्यम से सीधा यमुना जी में पहुंचता था, यमुना भी खराब हो रही है, गंदी हो रही है और वहां पर पूरी तरीके से

नाले भी ब्लॉक हो रहे हैं। पहली बार, पहली बार हमारी सरकार आने के बाद दिल्ली में पहला बायोगैस प्लांट हमने नंगली सक्रावती में लगाया है 200 टीपीडी का। पहला, सोचिए आजादी को 78 साल हो गए, दिल्ली देश की राजधानी में पहला बायोगैस प्लांट लगना, क्या शर्म की बात नहीं है? अभी तक तो वो एरिया जहां- जहां हमारे पास ज्यादा मवेशी हैं उस एरिया में लग जाना चाहिए था 100 प्रतिशत। एक तो यह ऐसा काम है कि जहां पे आपका वो समस्या का भी समाधान है और आपको क्लीन, क्लीन फ्यूल भी मिल रहा है, यह कितनी बड़ी बात है, परंतु नहीं, पिछली सरकारों ने कभी इसके ऊपर काम ही नहीं किया।

हमने घोघा डेयरी में भी 100 टीपीडी का एक वेट वेस्ट टू सीबीजी यह शुरू किया है। देखिए कूड़े के पहाड़ क्यों खड़े हुए, क्योंकि कूड़े का जितना जनरेशन है, मान लीजिए 11,000 मीट्रिक टन कूड़ा रोज जनरेट हो रहा है, पर उसका निष्पादन उतना हो ही नहीं रहा। अगर आप 5, 6, 7 हजार मीट्रिक टन कूड़ा रोज की रोज बायोमाइनिंग कर भी रहे हो तो भी आपका जो बाकी का बचा हुआ कूड़ा है वो रोजाना उस कूड़े के पहाड़ को बढ़ाता रहता है, परंतु सरकारों ने सोचा ही नहीं कि भई हमारी कैपेसिटी को बढ़ाना पड़ेगा, जितना कूड़ा जनरेट हो रहा है उसको बायोमाइनिंग पे ले जाना पड़ेगा। नहीं, कोई ध्यान ही नहीं था। अब लगातार- लगातार सरकार अपनी बायोमाइनिंग की जो एफिशिएंसी है उसको आगे बढ़ा रही है।

सीएनडी वेस्ट, इसी प्रकार से दूसरी समस्या है जिससे धूल जनरेशन होता है। सरकार उस पे भी लगातार काम कर रही है और हमारे जितने सीएनडी प्लांट्स हैं उसको रिवाइव करके उसकी कैपेसिटी बढ़ाने का काम कर रही है।

ई- वेस्ट, आने वाले समय में हम सब जानते हैं कि ई- वेस्ट एक बहुत बड़ा सेगमेंट है जिसके कारण से प्रदूषण सीधा-सीधा बढ़ता है। आज दिल्ली- एनसीआर में गाजियाबाद, साहिबाबाद इस तरफ ई- वेस्ट कितनी बुरी तरीके से जलाया जाता है यह पूरी की पूरी दिल्ली जानती है और उसकी हवाएं जब दिल्ली की तरफ आती है तो पूरा का पूरा पर्यावरण दूषित हो जाता है। किसी ने नहीं सोचा कि ई- वेस्ट के लिए भी हमें कोई ना कोई प्लांट लगाना चाहिए। पहली बार सरकार ने इस पे विचार किया और अब हम होलंबी कलां में, यहां पे एक नया और पहला ई-वेस्ट प्लांट लगाएंगे जहां पे जो है इस तरह का हमारा ई- वेस्ट जो है उसको हम प्रोसेस कर पाएंगे।

ये सारे के सारे काम यमुना सफाई से लेके कूड़े के पहाड़ तक और वाटर लॉगिंग से लेके ट्रैफिक तक इन सब समस्याओं के समाधान आपस में जुड़े हुए हैं। जब तक इसे नहीं करेंगे पर्यावरण

बेहतर नहीं हो पाएगा और एक दिन में तो कम से कम नहीं होगा, 11 महीने में नहीं होगा, इस बात को हम सबको समझ लेना पड़ेगा, चाहे कोई अखबार दिखाए, न्यूज़ दिखाए, कुछ भी दिखाए। जब तक पूरी की पूरी दिल्ली, जब तक पूरी की पूरी दिल्ली का हर नागरिक यह नहीं समझ लेगा कि यह पर्यावरण मेरी जिम्मेदारी है, मेरी दिल्ली मेरी जिम्मेदारी है तब तक प्रदूषण पे समाधान नहीं निकलेगा।

मैं सच में यह जरूर बताना चाहूंगी कि हमारी सरकार ने जिस तरीके से पहले दिन से काम करना शुरू किया। मिंटो ब्रिज, कैसे इस बार पानी वहां नहीं रुका, हमने कुछ नया तो नहीं किया, वही समाधान कि वहां जाके खड़े हुए उसका समाधान निकालने की कोशिश की और इस बार दिल्ली ने देखा कि मिंटो ब्रिज पे वाटर लॉगिंग नहीं हुई। क्यों पिछली सरकारों ने नहीं करी, क्योंकि वाटर लॉगिंग, वाटर लॉगिंग से ट्रैफिक, ट्रैफिक से पॉल्यूशन सब चीजें तो जुड़ी हैं। क्यों इस बार आईटीओ पे पानी जमा नहीं हुआ? सुनहरी बाग ड्रेन इसके आसपास का पूरा एरिया, डिफेंस कॉलोनी, लोधी कॉलोनी, जंगपुरा एक्सटेंशन, कोटला पानी भर जाता था। सरकारें खड़ी-खड़ी देखती थी कि भई क्या हो रहा है, कैसे पानी निकलेगा? जब फरवरी माह में ही मैं पहली बार सुनहरी बाग गई, एलजी महोदय के साथ में गई, हमने देखा भई कोई, उस पूरी की पूरी एक किलोमीटर की ड्रेन है पर कोई ढक्कन ही नहीं है, सफाई कहां से करें, डिसिल्टिंग कहां से करें, तो नाला कटवाना पड़ा। नाला कटवा करके सफाई ही लगाई वहां पे करने के लिए, मतलब देखिए पढ़ी लिखी सरकार की करतूतें कि एक किलोमीटर बड़ा ड्रेन, इतना बड़ा ड्रेन उन्होंने सोचा ही नहीं कि कभी इसको सफाई भी करनी पड़ेगी। कॉमनवेल्थ गेम के टाइम, शीला दीक्षित जी के टाइम पर वो बना था परंतु पानी भरता रहा कॉलोनियों में किसी ने देखा नहीं। हमारी सरकार के टाइम हमने वहां पे अभी मेट्रो को लगाया, उन्हें पूरा टेंडर दिया सफाई का। आज उस ड्रेन से, अभी विधायक जी हैं नहीं, उस ड्रेन पे लगभग 15,000 मीट्रिक टन सील्ट निकल के बाहर पड़ी हुई है, इतनी सारी सील्ट थी उसमें। कभी किसी सरकार ने किया ही नहीं, भरते रहे कॉलोनी, भरते रहे दिल्ली। किसी को क्या तकलीफ थी, कोई तकलीफ नहीं थी। सही कहा परवेश जी ने कि बैठे रहो अपने शीश महल में, क्या करना है आपको। थर्मल पावर पे जिस तरीके से हमारी डिपेंडेंसी है उसको कम करने के लिए सोलर पे दिल्ली सरकार लगातार काम कर रही है। जितनी भी हमारी गवर्नमेंट बिल्डिंग्स हैं, आशीष जी के पास हमारे यह विभाग है, लगातार सोलर पे ना केवल हमने सब्सिडी बढ़ाई, ना केवल हमने अपनी सरकारी बिल्डिंगों पे सोलर रूफ टॉप लगाने का काम शुरू किया, दिल्ली की जनता को लगातार हम प्रेरित कर रहे

हैं, मोटिवेट कर रहे हैं कि हर व्यक्ति को सोलर पर जाना चाहिए। बिजली की खपत इससे कंपनसेट होगी और हम सबकी जो थर्मल पावर पे हमारी डिपेंडेंसी है वो भी कम होगी। यह सोलर क्लीन एनर्जी का, ग्रीन एनर्जी का एक बहुत बड़ा माध्यम है जिसका उपयोग हमें करना होगा और इसीलिए हम सरकार की ओर से एग्रीकल्चर लैंड पे भी सोलर प्लांट लग सके इस स्कीम को हम लेकर के आए हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा सोलर लगा के दिल्ली को हम पावर कंजमशन उसकी कम कर सके।

अध्यक्ष जी, मैं बातें सुन रही थी आम आदमी पार्टी के विधायकों की और कितनी बेशर्मी के साथ में अपने ही नाकामियों को वो हमें 10 महीने पहले आई हुई सरकार को इल्जाम दे रहे थे। और मैं यह बता रही हूं कि:

‘‘यह जो हालात हैं यह सब सुधर भी जाएंगे,
यह जो हालात हैं यह सुधर भी जाएंगे,
पर कई लोग दुनिया की निगाहों में उतर जाएंगे,
कई लोग दुनिया की निगाहों में उतर जाएंगे।’’

वो जो शोर मचा रहे थे, अब हम बैठे हुए हैं पक्ष के लोग, सवा नौ बजने जा रहे हैं, चर्चा कर रहे हैं यहां पे प्रदूषण पे, एक भी व्यक्ति नहीं है, कहां गए वो सारे ड्रामेबाज जो मास्क लगा-लगाके घूम रहे थे। प्रदूषण- प्रदूषण-प्रदूषण कहां चले गए पर्यावरण मंत्री जी, चले गए उनको कोई मतलब नहीं है क्योंकि जो न्यूज़ उनको बनानी थी वो न्यूज़ वाले तो बाहर खड़े थे। उनको तो खाली बातें करनी थी। तो हम लगातार, लगातार ये जो धुआंबाज केजरीवाल जी थे जिन्होंने अपने धुआंधार जो काम किए जिसके कारण से दिल्ली आज तक पीड़ित है इन सबको ठीक करने के लिए हमारी सरकार काम कर रही है। पर तकलीफ होती है। एक तकलीफ ये जरूर है कि फरवरी में सरकार चुन के आई तो हमें बोले भाई एडमिशन, एडमिशन प्रोसीजर चल रहा है जी फीस क्यों नहीं कम हो रही, फीस? अरे हम आए हैं अभी प्रोसीजर तुम्हारे टाइम से शुरू हो रहा है, स्कूल तुम्हारे टाइम से है, कानून तुमने बनाना था, हमसे पूछ रहे हो। फिर अप्रैल में ये आई नालों की सफाई नहीं हो रही जी, नालों की सफाई नहीं हो रही। भाई हमें 3 महीने, 2 महीने हुए हैं नालों की सफाई के टेंडर तुम्हारे टाइम में लगने चाहिए थे, नहीं लगाए तो तुम्हारी कमी है। चलो हमने आने के बाद लगाई तो जब तक पूरी हुई, हुई फिर भी हमने बहुत कोशिश करके इतनी 22,000 मीट्रिक टन सिल्ट जो है हमने अपने ड्रेंस में से निकाली। उसके बाद आपने जुलाई में कहा जी बारिश आ गई, वाटर

लॉगिंग हो गई, वाटर लॉगिंग हो गई। बाढ़ आ जाएगी, बाढ़ आ जाएगी हमारा कसूर था क्या? हमने पहली बार दिल्ली में मैक्सिमम काम करते हुए मिनिमम वाटर लॉगिंग पर दिल्ली को लेके आए ये हमारी सरकार की उपलब्धि है। सर्दी आई तो पोल्यूशन-पोल्यूशन। अब पोल्यूशन में हमनें वाटर स्प्रिंकलिंग करी तो कह रहे हैं डाटा मैनपुलेट कर रहे हैं। कमाल हो गया भैया। हॉटस्पॉट पे पानी डलेगा तो आप कहोगे जी डाटा मैनपुलेट कर रहे हैं। हमने उसके बाद मिस्ट शुरू करी तो उन्होंने कह दिया पानी बर्बाद कर रहे हैं। ट्रीटेड वाटर को यूज़ करके मिस्ट लगाई दिल्ली को आराम मिल रहा है डस्ट मिटिगेशन में तो उन्होंने कह दिया जी पानी बर्बाद कर रहे हैं। हम जो कुछ भी करें, हम जो कुछ भी करें उन्हें तो कमी निकालनी है क्योंकि उनकी आंखों पे जो पर्दा पड़ा हुआ है उसे कोई ठीक नहीं कर सकता। पर मुझे मालूम है, मुझे विश्वास है कि दिल्ली की जनता यह देख रही है कि जो काम हम कर रहे हैं लगातार, दिन रात दिल्ली के लिए और निश्चित रूप में इस पोल्यूशन की समस्या का भी समाधान होगा, दिल्ली में इंफ्रास्ट्रक्चर भी डेवलप होगा और मिलकर के हम लोग जो काम कर रहे हैं, जो मेहनत कर रहे हैं, वह दिल्ली के भविष्य को संवारने में मदद करेगा। और मैं अपनी बात को खत्म करते हुए यही कहना चाहूंगी कि:'' किश्ती चलाने वालों ने जब हार कर दी पतवार हमें, पूर्व पर्यावरण मंत्री जी निकल गए कि:

''किश्ती चलाने वालों ने जब हार के दी पतवार हमें
लहर-लहर तूफान मिले और मौज-मौज मझधार हमें,
लहर-लहर तूफान मिले और मौज-मौज मझधार हमें,
फिर भी दिखाया है हमने और फिर भी दिखा देंगे सबको
इन हालातों में भी, इन हालातों में भी आता है दरिया पार करना हमें
दरिया पार करना हमें।''

बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य गण, सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करने से पहले मैं आठवीं विधानसभा के चौथे सत्र के संचालन में सहयोग देने के लिए सदन की नेता एवं माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, सभी मंत्रीगण, माननीय नेता, प्रतिपक्ष श्रीमती आतिशी तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। इसके अलावा विधानसभा सचिवालय तथा दिल्ली सरकार के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के

साथ-साथ विभिन्न विभागों और सुरक्षा एजेंसियों तथा मीडिया का भी धन्यवाद करता हूं। अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे राष्ट्रगान के लिए खड़े हो।

(राष्ट्रगान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय अध्यक्षः अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की गई।)